

अथ पद्मावत ॥

स्तुतिखण्ड ॥

चौपाई ॥

सुमिरों[१] आदि[२] एक करतारू[३] । जैं जिवदीन्ह कीन्ह संसारू ॥
कीन्हेसिप्रथमें[४] ज्योतिपरकाशू[५] ।कीन्हेसितिनहिंप्रीतिकैलाशू[६] ॥
कीन्हेसिअग्निँ[७] पवनँ जलखेहाँ[८]। कीन्हेसि बहुतेरँग[९] औरेहाँ ॥
कीन्हेसिधरंती[११] स्वर्ग[१२] पतारू। कीन्हेसिवरणबरण[१३] अवतारू[१४]॥
कीन्हेसिदिनदिनेशँ[१५]शशि[१६] राती।कीन्हेसिनखततरायनँ[१७] पाती॥
कीन्हेसि धूपसेव[१८] औछांहा । कीन्हेसि मेघ[१९] बीजँ[२०] तेहिमांहा॥
कीन्हेसि सँत[२१] महीव्रहांडौं[२२][२३] । कीन्हेसि भवन चौदहोखंडौं[२४] ॥

दो० कीन्ह सबै अस जाकर, दूसर छाजन काहि ।
पाहिले ताकर नाउँले, कथा करों अवगाहि[२५] ॥

कीन्हेसि सात समँदर पारा । कीन्हेसि मेरे[२६] खखंड[२७] पहारा॥
कीन्हेसि नदी नार औ झरना । कीन्हेसिमगरमच्छबहुबरनाँ[२८] ॥
कीन्हेसि सीप मोति तहँ भरे । कीन्हेसि बहुते नग निरमरे[२९] ॥

याद करना १ सव से पहिले २ परमेश्वर ३ पहिले ४ उजियारा ५ नाम पहाड़ तथा स्वर्गलोक ६ आग ७ हवा ८ मारी ९ चित्रकारी १० ज़मीन ११-२२ आसमान १२-२३ रंगबरंग १३ पैदायश १४ सूर्य १५ चांद १६ छोटे नखत १७ जाड़ा १८ बादल १९ बिजुली २० सात २१ सातपरदा आसमान सातपरदा ज़मीन २४ शुरू २५ बीहड़ २६ राह मुश्किल २७ क़िस्म २८ जवाहिर साफ़ २९ ॥

कीन्हेसि बनखँड[1] औ जड़मूरी । कीन्हेसि तरवर[2] तार खजूरी ॥
कीन्हेसि सावज[3] आरण्[4] रहैं । कीन्हेसि पंख उड़ैं जहँ चहैं ॥
कीन्हेसि बरण[5] श्वेत औ श्यामा[6] । कीन्हेसि भूख नींद विशरामा[7] ॥
कीन्हेसि पान फूल बहु भोगू । कीन्हेसि बहु औषध[8] बहु रोगू ॥
दो० निमिष[9] न लाग करत वह, सबै कीन्ह पल एक ।
गगन[10] अंतरिक्ष[11] राखा, बाजे खंभ बिन टेक ॥
कीन्हेसि अगर कस्तूरी[13] बीनौ[14] । कीन्हेसि भीमसेन[15] औ चीना[16] ॥
कीन्हेसि नाग[17] जो मुख विष[18] बसा । कीन्हेसि मंत्र हरे जेहि डसा ॥
कीन्हेसि अमृत[19] जिये जो पाई । कीन्हेसि विष[20] मीचु[21] जेहि खाई ॥
कीन्हेसि ऊख मीठ रस भरी । कीन्हेसि करू बेल बहु फरी ॥
कीन्हेसि मधु[22] लावै लै माखी । कीन्हेसि भँवर पंख[23] औ पाखी ॥
कीन्हेसि लोवा[24] अंदर चांटी[25] । कीन्हेसि बहुत रहहिं घन मांटी ॥
कीन्हेसि राक्षस[26] भूत परेता । कीन्हेसि भूकस[28] देव दयंता ॥
दो० कीन्हेसि सहस[29] अठारह, वरण वरण[30] उपराज ।
भुक्ति दिहिस पुनि सबन कहँ, सकल[31] साज ना साज ॥
कीन्हेसि मानुष[32] दिहिसि बड़ाई । कीन्हेसि अन्न भुक्ति[33] तहँ पाई ॥
कीन्हेसि राजा भोजहि राजू । कीन्हेसि हस्ति[34] घोर तहँ साजू[35] ॥
कीन्हेसि तेहि कहँ बहुत बिरासू[36] । कीन्हेसि कोइ ठाकुर[37] कोइ दासू[38] ॥

जंगल १ पेड़ २ जंगलीजानवर ३ जंगल ४ रंग ५ सफ़ेद-सियाह ६ आराम ७ इलाज ८ पलकमारने में ९ आसमान १० बीचो बीच ११ नाम जानवर-परिन्द १२ मुश्क १३ क़िस्म काफ़ूर १४-१५-१६ सांप १७ ज़हर १८-२० जिसके पीने से मुरदा ज़िन्दा होजाय १९ मौत २१ शहद २२ उड़नेवाले जानवर २३ लोंवड़ी २४ चींवटी २५ शैतानकी क़िस्म २६-२७-२८ हज़ार २९ तरह तरह की पैदायश ३० सब ३१ आदमी ३२ रोज़ी ३३ हाथी ३४ सामान ३५ आराम ३६ मालिक ३७ गुलाम ३८ ॥

कीन्हेसि द्रव्य[१] गर्व[२] जेहि होई । कीन्हेसि लोभ[३] अघाइ न कोई ॥
कीन्हेसि जियन[४] सदा सब चहा । कीन्हेसि मीचु[५] न कोई रहा ॥
कीन्हेसि सुख[६] औ कोटि अनंदू । कीन्हेसि दुख[७] चिंता[८] औ दंदू ॥
कीन्हेसि कोइ भिखारि[९] कोइ धनी[१०] । कीन्हेसि संपति[११-१२] बिपति पुनि घनी[१३] ॥

दो० कीन्हेसि कोइ निभरोसी[१४], कीन्हेसि कोइ बरियार[१५] ।
छारहि[१६] ते सब कीन्हेसि, पुनि[१७] कीन्हेसि सब छार ॥

धनपति[१८] वही जेहि के संसारू । सबै देइ निति[२०] घटन भँडारू[२१] ॥
जानवंत जगत[२३] हस्ति[२४] औ चांटी[२५] । सब कहँ भुक्ति[२६] राति दिन बांटा ॥
ताकर दृष्टि[२७] जो सब उपराहीं । मित्र[२८] शत्रु[२९] कोइ बिसरे नाहीं ॥
पंख पतंग न बिसरे कोई । परगट[३०] गुप्त[३१] जहां लग होई ॥
भोग भुक्ति[३२] बहु भांति[३३] उपाई । सबै खवाइ आप नहिं खाई ॥
ताकर वही जो खाना पीना । सब कहँ देइ भुक्ति औ चैना ॥
सबै आश[३४] ताकर हरि श्वांसा । वहु न काहु की आश निरासा[३५] ॥

दो० युग युग देत घटा नहिं, उभय[३६] हाथ अस कीन्ह ।
औ जो दीन्ह जगत महँ, सो सब ताकर दीन्ह ॥

आदि[३७] एक बरणों[३८] सो राजा । आदि न अंत राज जेहि छाजा ॥
सदा सरबदा राज सो करै । और जेहि चहै राज तेहि दरै ॥
छत्रहि[४०] अछत[४१] निछत्रहि छावा । दूसर नाहिं जो सरवरि[४२] पावा ॥

दौलत १ गरूर २ लालच ३ जीना ४ मौत ५ खुशी ६ फ़िक्र ७ ग़म ८ ग़रीब ९ अमीर १० दौलत ११ दुःख १२ बहुत १३ कमज़ोर १४ ज़ोरवाला १५ माटी १६ फिरि १७ दौलतमन्द १८ जिसका १९ हमेशा २० खज़ाना २१ जहांतक २२ दुनिया २३ हाथी २४ चींवटी २५ खुराक २६—३२ निगाह २७ दोस्त २८ दुश्मन २९ ज़ाहिर ३० छिपा ३१ बहुत तरह पैदा किया ३३ उम्मेद ३४ नाउम्मेद ३५ दोनों ३६ सबसे पहिले ३७ बयान करना ३८ अव्वल ना आखिर ३९ हमेशा ४० छत्रधारी ४१ बिदूनछत्र ४२ बराबरी ४३ ॥

परबत[1] ढहिदेखत सबलोगू। चांटहि[2] करहिहस्ति[3] सरयोगू॥
बज्रहि[4] तिनकहि मार उड़ाई। तिनै बज्रे करि देइ बड़ाई॥
ताकर कीन्ह न जानै कोई। करैसोइ जो मनचिन्तन होई॥
काहू भोगभुक्ति[5] सुख सारा। काहू भूँख बहुत दुख मारा॥

दो॰ सबै नाशँ[6] वह इस्थिर[7], ऐसो साज जेहिकेर।
एक साँजी[8] औ भाजी, चहै सवारे फेर॥

अलखं[9] अरूप अवरन सो कर्त्ता। वह सबसों सब वह सों वर्त्ता[10]॥
प्रकट[11] गुप्त[12] सो सर्वव्यापी[13]। धर्मी चीन्ह न चीन्है पापी॥
ना वह पूत नहिं पिता न माता। नावहकुटुँब न कोइसंगनाता॥
जनों[14] न काहि न कोइ वैजनो[15]। जहँलगसब ताकी सिरजनों[16]॥
वे सब कीन्ह जहांलग कोई। वह नहिं कीन्ह काहुकर होई॥
हति[17] पहिले औ अबहै सोई। पुनि सो रहै रहै नहिं कोई॥
और जो होय सो बावरअन्धा। दिन दुइ चारि मरै कर धन्धा॥

दो॰ जो वह चहा सो कीन्हेसि, करै जो चाहै कीन्ह।
बरजनहोर[18] न कोई, सबै चाहि जेउ दीन्ह॥

बिनबुंधि[19] चहिजोकरहोय ज्ञानू। जसपुराणमहिं लिखावखानू॥
जीव नाहिं पै जिये गुसाई। करै[20] नाहीं पै करै सवाँई[21][22]॥
जीभ नाहिं पै सबकुछ बोला। तन नाहीं सब ठाहँर[23] डोला॥
श्रवण[24] नाहिं पै सबकुछ सुना। हियाँ[25] नाहिं पै सबकुछ गुना॥

पहाड़ १ चींवटी २ हाथी ३ पत्थर ४—५ रोज़ी ६ नाश होनेवाला ७ क़ायम ८ बनाना और बिगाड़ना ९ जिसको कोई न देखसके १० नज़दीक ११ ज़ाहिर १२ छिपा १३ सब चीज़में बिराजमान और सब चीज़ उसमें मौजूद १४ पैदाहोना १५—१६ पैदायश १७ पहिले था १८ मना करने वाला १९ अक़्ल २० हाथ २१ सब २२ जगह २३ कान २४ दिल २५॥

नयनं नाहिं पै सबकुछ देखा। कौनभांति असजाय बिशेखा॥
ना कोई है वह की रूपा। नावहसों कोइ आहिअनूपा॥
ना वह ठाँउँ न वह बिनठाऊँ। रूपरेख बिन निरमल नाऊँ॥
दो० ना वह मिला न बेहरा, ऐसो रहा भरिपूर।
दृष्टवन्तं कहँ नेरे, अंधहि मूरुख दूर॥
औरजो दीन्हेसिरतन अमोला। ताकर मर्म न जानै भोला॥
दीन्हेसिरसना औ रसभोगू। दीन्हेसिदशनजो बिहँसे योगू॥
दीन्हेसिजगदेखनकहँनयनाँ। दीन्हेसिश्रवणसुनेकहँबयनाँ॥
दीन्हेसिकण्ठ बोलजेहिमाहां। दीन्हेसि करपल्लव बरबाहां॥
दीन्हेसिचरण अनूप चलाहीं। सोजानै जेहि दीन्हेसि नाहीं॥
यौवन मरम जानिपै बूढ़ा। मिलानतरुणा या जग ढूंढ़ा॥
सुख कर मरम न जानै राजा। दुखीजानि जाकहँ दुखबाजा॥
दो० कायां कामरम जानिपै रोगी, भोगी रहैं निचन्त।
सबकर मरम गुसाईं जानै, जो घटघट रहै तन्त॥
अति अपार करताकर करना। बरणनं कोई पावे बरना॥
सात स्वर्ग जो कागद करै। धरती समंदर मसै भरै॥
जानवन्तजगसाखाबनढांखा। जानवंतकेशे रदनो पंखपांखा॥
जानवन्त खेहं रेहं दुनयाई। मेघ बूंद औ गगन तराई॥
सब लिख नीकीलिखसंसारा। लिखिनजायगतिसमुद्रअपारा॥

आंख १ कौन तरह २ मुक़ाबिल जिसका कोई नहीं ३ जगह ४ पाकसाफ़ ५ अलग ६ देखनेवाला ७ नादान ८ जवाहिर ९ भेद १० जीभ ११ दांत १२ हँसने के लिये १३ आंख १४ कान १५ आवाज़ १६ हाथ की अंगुली व हथेली १७ पैर १८ जिसकी मिसाल न हो १९ जवानी २०-२२ क़दर २१ भेद २३ २५-२७ बदन २४ बेफ़िक्र २६ ईश्वर २८ जिसका पारावार न हो २९ बयान करना ३० आसमान ३१ ज़मीन ३२ सियाही ३३ बाल ३४ दांत ३५ बालू ३६ माटी ३७ बादल ३८ आसमान ३९ नखत ४०॥

एतो कीन्ह सबगुण प्रकटी[1]। अबहुँ समुद्र महँ बूंद न घटा॥
ऐसो जानि मन गर्ब[2] न होय। गर्ब[3] करै मन बावर सोय॥
दो० बड़ गुणवंत गुसाँई[4], चही सँवारी बेग[5]।
औ असगुणी सँवारी, जो गुण चही अनेग[6]॥
कीन्हेसि पुरुष[7] एक निरमरा[8]। नाम मुहम्मद पूनों[9] करा॥
प्रथम ज्योति बिधि[10] ताकी[11] साजी। औ तेहि प्रीति[12] सृष्टि[13] उपराजी॥
दीपक[14] लेश जगत[15] कहिं दीन्हा। भा निरमल[16] जग[17] मारग[18] चीन्हा॥
जो न होत अस पुरुष उज्यारा। सूझि न परत पंथ[19] ऑंधियारा॥
दूसरे ठाँउँ[20] दीबी लिखी। वही धर्मी जो पाढ़त सीखी॥
जेहि न लीन्ह जन्म सो नाउँ। ताकहँ दीन्ह नरकमहँ ठाँउ[21]॥
जग[22] बसीठ दईवे कीन्ही। दुइजग[23] तरा नाउँ तेहि लीन्ही॥
दो० गुण अवगुण[24] बिधि[25] पूंछत, होय लेखे[26] औ जोख।
वेहिं बिनवब आगे होय, करै जगत[27] करमोख[28]॥
चार मीत[29] जो मुहम्मद ठाँउँ[30]। जेहि कदीन्ह जग[31] निरमल[32] नाउँ॥
अबूबक्र सद्दीक सयाने। पहिले सिदक़ दीन वहि आने॥
पुनि सो उमर खिताब सुहाये। भा जग[33] अदल[34] दीन जो आये॥
पुनि उसमान बड़ पण्डित गुनी। लिखा पुराण जो आयत सुनी॥
चौथे अली सिंह[35] बरियारू[36]। सौंहिं[37] ना कोइ रहा जुझारू[38]॥
चारो एकमते[39] एक बाना। एक पंथ[40] औ एक संघाना॥

ज़ाहिर करना १ ग़रूर २-३ ईश्वर ४ जल्द ५ बहुत ६ शख़्स ७ पाक ८ चौदहीं रातिका चांद ९ पहिले १० ईश्वर ११ मुहब्बत १२ दुनिया पैदाकी १३ चिराग़ १४ दुनिया १५ पाक १६ संसार १७ राह १८-१९ जगह २०-२१ दुनियाका क़ासिद २२ दोनों जहान २३ पाप और पुराय २४ ईश्वर २५ हिसाब २६ दुनिया २७ बन्द से छोड़ना २८ दोस्त २९ जगह ३० दुनिया ३१ पवित्र ३२ संसार ३३ न्याव ३४ शेर ३५ ज़बरदस्त ३६ सामना करनेवाला ३७ लड़नेवाला ३८ एकसलाह ३९ राह ४०॥

बचन एक जो सुनायहि सांचा। वही पुराण दुहू जग बांची॥

दो० जो पुराण बिधि पठवा, सोई पद्धति ग्रंथ।
और जो भूली आवत, सो सुन लागे पंथ॥

शेरशाह देहली सुलतानू। चारहुखंड तपी जसभानू॥
ओही छाज छाति औ पाटा। सब राजै भुइँधरा लिलाटा॥
जात शूर औ खांडे शूरा। औ बुधवन्त सबै गुण पूरा॥
शूर नवाई नवखंड वहे। सातद्वीप दुनी सब नये॥
तहँलगराजखड्ग करिलीन्हा। इसकंदरजुलकरनयनजोकीन्हा॥
हाथ सुलेमान केर अँगूठी। जग कहँदान दीनभरिमूठी॥
औ अतिगरु भूमिपति भारी। टेकभूमि सब सृष्टि सँभारी॥

दो० देहि अशीश मुहम्मद, करहु युग युग राज।
बादशाह तुम जगत के, जग तुम्हारमुहताज॥

बरनौं शूर भूमिपति राजा। भूमि न भार सहै जो साजा॥
हयमयसयन चलयजग पूरी। परबत टूटिउड़हिंहोय धूरी॥
परीरेणु होय रबि ही ग्रासा। मानुष पेखलेहिं फिरि बासा॥
भुइँउड़ अंतरिक्ष गईमृतमंडा। ऊपर होय छावा महिमंडा॥
डोलै गगन इन्द्रडर काँपा। बासुकि जाय पतालहिचाँपा॥
मेरु धसमसे समुद्र सुखाई। बनखँड टूटिखेह मिलिजाई॥
अगलहिं कहँ पानी गहिबांटा। पिछलेहिंकहँनहिंकाँदू आँटा॥

बात १ दुनिया २ पढ़ना ३ ईश्वर ४ किताब ५ राह ६ तरफ़ ७ सूर्य्य ८ तख़्त ९ माथा १० पठान ११ तलवार बहादुर १२ बहादुर १३ सारी दुनिया १४ मुल्क १५ तलवार १६ नाम बादशाह १७-१८ दुनिया १९ ख़ैरात २० बादशाह २१ ज़मीन २२ दुनिया २३-२४-२५ तारीफ़ करना २६ बहादुर २७ बादशाह २८ ज़मीन २९ घोड़े से भरी हुई फ़ौज ३० दुनिया ३१ पहाड़ ३२ धूरि ३३ सूर्य्य ३४ बीच ३५ आसमान ३६-३८ ज़मीन ३७ नाम राजा साँपोंका ३९ पहाड़ ४० जंगल ४१ राख ४२ चहला ४३॥

दो० जोगढ़[1] नयनहि[2] काहू, चलतहोय सब चूर ।
जो वह चढ़ै भूमिपति[3], शेरशाह जगशूर[4] ॥

अदल[5] कहौं प्रथमैं[6] जसहोय । चाँटा[7] चलत न दुखवैकोय ॥
नौशेरवाँ[8] जो आदिल[9] कहा । शाहअदल[10] सरि[11] सौहिंनरहा ॥
अदल[12] जोकीन्ह उमर[13] कीनाई । भई यहाँ सगरी दुनियाई ॥
परी नाथ[14] कोइ छुवै न पारा । मारग[15] मानुषसे उजियारा ॥
गऊ सिंह[16] रेंगहिं एक बाटा[17] । दोनों पानिपियैं एक घाटा ॥
नीर[18]क्षीर छानै दरबारा । दूध पानि सब करै निरारा[19] ॥
धर्म न्याव चलै संत[20] भाषा । दूबर[21] बैरी एक सम[22] राखा ॥

दो० सबै पृथिवी अशीशै, जोरि जोरिकै हाथ ।
गङ्ग यमुन जौलहि जल, तौलहि अमरनाथ[23] ॥

पुनि रूपवंत[24] बखानौं[25] काहा । जानवन्तजगत[26]सबैमुखजाहा ॥
शशि[27] चौदहजोदई[28] सँवारा । तबहूँ जाहि रूप उजियारा ॥
पापजाय जो दरशन दीशा । जग[29] जुहारके देत अशीशा ॥
जैसो भानु[30] जग[31] ऊपर तपा । सबै रूप वह आगे छिपा ॥
असभा शूर[32] पुरुष[33] निरमरा[34] । शूर[35] जाहि दशआकर[36] करा ॥
सौहिंदृष्टि[37] की हेर[38] न जाई । जेहिंदेखा सो रहा शिरनाई ॥
रूपसवाई दिन दिन चढ़ा । बिधि[39] सुरूप जग[40] ऊपरगढ़ा ॥

दो० रूपवन्त[41] मनमाथे, चन्द्रघाट वह बाढ़ि ।

क़िला १ टूटना २ बादशाह ३ दुनिया का सूर्य्य ४ न्याव ५ पहिले ६ चौंवटी ७ नाम बादशाह ८ न्याव करनेवाला ९ न्याव १०-१२ बराबर ११ नाम ख़लीफ़ा १३ नाथना १४ राह १५-१७ शेर १६ दूधपानी १८ अलग़ १९ सच्चा २० ज़बरदस्त २१ बराबर २२ हमेशाज़िंदा २३ ख़ूबसूरत २४ बयान करना २५ दुनिया २६-२९ चांद २७ ईश्वर २८ सूर्य ३० संसार ३१ बहादुर ३२-३५ मर्द ३३ पाकसाफ़ ३४ दशगुना ३६ सूधीनिगाह ३७ देखना ३८ ईश्वर ३९ दुनिया ४० खूबसूरत ४१ ॥

मेदनि दरश लुभानी, अस्तुति बिनवै ठाढ़ि ॥
पुनि दातार[3] दई[4] जग[5] कीन्हा । असजग[6] दान न काहूदीन्हा ॥
बलि[7] औ बिक्रमदानिबड़कहे। हातिमकरणँ बतागीअहे ॥
शेरशाह सरपौंच[11] न कोऊ । समुद्र सुमेरु[12] भँडारी दोऊ ॥
दान दाँग[13] बाजै दरबारा । कीरति[14] गई समुन्दर पारा ॥
कंचनपरस[15] शूर[16] जग[17] भयो । दारिदभाग दशान्तर[18] गयो ॥
जो कोइ जाय एक बेर माँगा । जन्मन होय न भूखा नाँगा ॥
दशअश्वमेधजग[20]तंजोकीन्हा । दानपुण्यसरि[21] सौहिनचीन्हा ॥
दो० ऐसो दानि जग[22] उपजौ, शेरशाह सुलतान ।
ना अस भयो न होय ना, कोई दै अरुदान ॥

तारीफ़सय्यदअशरफ़जहांगीरकी ॥

सय्यद अशरफ़ पीर पियारा । जेहिमोहिपंथ[24] दीन्हउजियारा ॥
लेसाहिये[25] प्रेम करि दिया । उठीज्योति भानिरमल[26] हियाँ[27] ॥
मारग[28] होत जो अँधेरा सूझा । भा उजेर सब जाना बूझा ॥
खारसमुद्र पाप मोर मेला । बोहित[29] धर्म लीन्ह कै चेला ॥
उन मोर कर[30] बूड़ि कै गहा । पायो तीर[31] घाट जो अहा ॥
जाके ऐसो होय कँधारा[32] । तुरत बेगि[33] सो पावै पारा ॥
दस्तगीर गाढ़े के साथे । वहअवगाहिदीन्हजेहिहाथे ॥
दो० जहांगीर वयाचिश्ती, निहकलंक जस चाँद ।
वयमखदूम जगत[34] के, हो वह घरकी बाँद ॥

आदमी १ तारीफ़ २ दान देनेवाला ३-६ ईश्वर ४ दुनिया ५-६-१७-२०-२२-३४ नाम राजा ७-८ नामसखी १० बराबर ११ पहाड़ का नाम १२ नगाड़ा १३ नेकनामी १४ पारसपत्थर १५ बहादुर १६ नाम जगह १८ घोड़ाकी यज्ञ १९ बराबर २१ पैदा हुआ २३ राह २४-२८ दिल २५-२७ पाक २६ नाव २९ हाथ ३० किनारा ३१ मल्लाह ३२ जल्द ३३ ॥

तारीफ़ सय्यदअशरफ़जहांगीरकेबेटेकी ॥

उनकर रतनं एक निरमरा। हाजी शेख सभा गुण भरा ॥
तेहिघर दुइ दीपक उजियारे। पन्थै दये कहँ दई सँवारे ॥
शेख मुहम्मद पून्यों[४] करा। शेखकमाल जगतं निरमरा[६] ॥
दोउ अचल ध्रुवँ डोलैं नाहीं। मेरखँ-खराड न भवा उपराहीं ॥
दीन्हरूप अरु ज्योति गुसाईं। कीन्हखम्भ दुइजग की ताईं ॥
दोऊ खम्भ टेके सब मही। दोनों के भारसृष्टि[१०] सबरही ॥
जिन दरशन औ परशनपाया। पापहरा निरमल[११] भइ काया ॥

दो० मुहम्मद तहांनिचंतपथै, जिन्ह सँगमुरशदपीर।
झहिरिनाव औखेवकें, बेगि[१५] लागिसो तीर[१६] ॥

गुरु मुहदी खेवकं मैं सेवा। चली उताहल जेहिके खेवा ॥
अगुवा भयो शेख बुरहानू। पंथ[१८] लाय म्वहिं दीन्होंज्ञानू ॥
अलहदाद भलतिन्हकर गुरू। दीन दुनी रोशन सुर्खुरू ॥
सैद मुहम्मद के वै चेला। सिद्धपुरुष संगमैं जिनखेला ॥
दानयाल गुरुपन्थ लखाई। हज़रतख्वाजाख़िज़िरतेहिंपाई ॥
भये प्रसन्न वै हज़रत ख्वाजे। ऐ मेरे जियें सय्यद राजे ॥
वै सेवन मैं पाय करेते। अखरी जीभ प्रेम कब बरते ॥

दो० वे सुगुरू हौं चेला, नितं बिनवों भा चेर।
उन हुत देखी पाउँ, दरश गुसाईं[२४] केर ॥

एक नयनं[२५] कबि मुहम्मदक़ने। सोई बिमोहों[२६] जें कबि सुने ॥

जवाहिर १ साफ़ २-११ राह ३-१३ चांद ४ संसार ५ पाकसाफ़ ६ नाम सितारा ७ बीहड़ ८ दुनिया जहान ९-१० बदन १२ मल्लाह १४ जल्द १५ किनारा १६ नावखेनेवाला १७ राह १८-२१ मर्दकामिल १९ सत्संगत २० खुश २२ हमेशा बिनती करना २३ ईश्वर २४ आंखें २५ मोहजाना २६ ॥

चांदजैसोजग[१] बिधि[२] अवतारा[३]। दीन्ह कलंककीन्ह उजियारा॥
जग[४] सूझा एके नयनाहां[५]। उआसूक[६] जस नखतनमाहां॥
जौलहि अंबहि[७] डाभ[८] नहोय। तौलहिसुगँध[९] बसाय न कोय॥
कीन्हि संसुद्र जो पानी खारा। तौ अतिभयोअसूझिअपारा[१०]॥
जो सुमेरु[११] त्रिशूल बिनाशा। भा कंचनगढ़[१२] लाग अकाशा॥
जो लहिघरी कलंक[१३] नहिं परा। कांच होय नहिं कंचन[१४] करा॥

दो० एकनयन[१५] जस दरपण[१६], औ निरमल[१७] तेहिभाव।
सब रूपवती[१८] पाउँगहि, मुखजोबन[१९] की चाव॥

चार मीत[२०] कवि मुहम्मदपाये। जोरि मिताई[२१] सर पहुँचाये॥
यूसुफमलिकपण्डितबहुज्ञानी। पहिली बात भेद उन जानी॥
पुनि सलारकादम मतिमाहां। खांड़ेशूर[२२] उभानते[२३] बाहां॥
मियां सलोनी सिंह[२४]वरयारू। वीरकहत रणखड्ग[२५] जुझारू॥
शेखबड़ीबड़िसिद्धि[२६] बखानाँ। के अदेश सिद्धि बड़ वाना॥
चारो चतुरदशौ[२७] गुण पढ़े। औसिंह[२८] योगगुसाईं[२९][३०] गढ़े॥
वृक्ष[३१] होय जो चन्दन पासा। चन्दनहोय बिबिधतेहिवासा॥

दो० मुहम्मद चारोमीत[३२] मिलि, भये जो एकैचित्त।
यहजग[३३] साथ जो बैठे, वहजग[३४] बिछुरन कित्त॥

जायसनगर धर्म अस्थानू[३५]। तहांजायकबि कीन्ह बखानू[३६]॥
औबिनती[३७] पण्डितनसोभजा। टूटिसँवारि[३८] मेरु बहु सजा॥

दुनिया १ ईश्वर २ पैदा किया ३ संसार ४ आंखें ५ नामसितारा ६ आंब ७ दाग ८ खुशबू ९ जिसका किनारा न हो १० नामपहाड़ जिसको महादेवजीने त्रिशूलसे खोदा था ११ सोनेका क़िला १२ दाग १३ सोना खालिस १४ आँख १५ आईना १६ पाकसाफ़ १७ खूबसूरत १८ मुंहदेखना १९ दोस्त २० दोस्ती २१ तलवार बहादुर २२ बलन्दहाथ २३ शेर ज़बरदस्त २४ तलवार २५ मर्दकामिल २६ मशहूर २७ चौदहों विद्या के जाननेवाले २८ शेर २९ ईश्वर ३० पेड़ ३१ यार ३२ दुनिया ३३-३४ मकान ३५ बयानकरना ३६ आजज़ी ३७ सब तरह आरास्ता, ३८॥

हौं पण्डितन केर पछलगा । कछुकहि चला तबलडीडगा ॥
हियें भंडारंग अहे जो पूँजी । खोली जीभ तारकी कूँजी ॥
रतनँ पदारथ बोले बोला । सुरसें प्रेममधु भरी अमोला ॥
जेहिकी बोल बिरहकी घाया । कहँतेहि भूख कहां तेहिमाया ॥
फेरै भेवँ रहै भा तपाँ । धूर लपेटा मानिकँ छपा ॥

दो० मुहम्मद कबिजो प्रेमकी, नातन रक्त न मांस ।
जें मुखदेखा सो हँसा, सुनि तेहि आये आंस ॥

सनँ नवसै सत्ताइस अहे । कथा अरम्भं वेनकवि कहे ॥
सिंहल द्वीप पद्मिनी रानी । रतनसेन चित्तौरगढ़ आनी ॥
अलाउद्दीन देहली सुल्तानू । राघवं चेतन कीन्ह वखानूं ॥
सुना शाह गढ़ छेंका आई । हिन्दू तुरकहि भई लड़ाई ॥
आँदिअन्त जस कथा अहै । लिखि भाषा चौपाई कहै ॥
कबि ब्यास रस कँवला पुरी । दूरहिं नेरे नेरे दुरी ॥
नेरे दूर फल जस कांटा । दूर जो नेरे जस गुड़ चांटीं ॥

दो० भँवर आय वनखण्डं सो, लेइ कमलकी बास ।
दादुरं बास न पावै, फूलहि जो आछीपास ॥

सिंहल द्वीप कथा अब गाऊँ । औ सुपद्मिनी बरणि सुनाऊँ ॥
निरमलं दरपणंभांतिबिशेखा । जिन्ह जसरूप सोतैसो देखा ॥
धनिसोद्वीप जिन्ह दीपक बारे । औ सुपद्मिनी जोदई संवारे ॥
सात द्वीप बरणे सब लोगू । एकौ द्वीप न वहिसरें योगू ॥
दया दीन नाहिंतस उजियारा । सरनद्वीप सर होय न पारा ॥

ढोलबजायके १ दिल २ ज़वाहिर ३ मीठे मुहब्बतके भरेहुये ४ शराब ५ सूरतबदले हुये ६ तप करनेवाले ७ मोती वग़ैरह ८ खून ९ शुरूकरना १० नाम भाट ११ बयान करना १२ क़िला १३ अव्वल से आखिर तक १४ चींटी १५ जंगल १६ मेढ़क १७ तारीफ़ करना १८ साफ़ १९ शीशा की तरह २० ईश्वर २१ बयान २२ बराबर २३ ॥

जम्बू द्वीप कहूँ तस नाईं। लङ्कद्वीप सरपोच न भाईं॥
द्वीपगुस सहल आरण परा। द्वीपमहो सिंहल बाँस हरा॥

दो॰ सब संसार औ पृथिवी, आये सातों द्वीप।
एक द्वीप नहिं आतिम, सिंहल द्वीप समीप॥

गन्धर्वसेन सुगन्ध नरेशू। सो राजा वह ताकर देशू॥
लंका सुना जो रावण राजू। तेहु जाहि बर ताकर साजू॥
छप्पन कोटिकटकै दलसाजा। सबै क्षत्रपति औ गढ़राजा॥
सोरह सहसै घोड़ घुड़शारा। श्यामकरणजसबांक तुषारा॥
सात सहसँ हस्ती सिंहली। इमि कैलासँ ऐरापति बली॥
अश्वपतिक शिर मौर कहावे। गजपतीकै आँकुशगजै नावे॥
नरपतीकै कहुँ और नरिन्दू। भूपतीक जग दूसरइन्दू॥

दो॰ ऐसो चक्कवे राजा, चहूँखण्ड भू होय।
सबै आय शिरनावहीं, सरबर करी न कोय॥

जोहि द्वीप नेरे भा जाय। जनु कैलासँ तीर भा आय॥
गहनै अँबराउँ लागचहुँपासा। उठी भूमि हतिलागिअकासा॥
तरवँर सबै मलयगिरि लाये। भइजगछांहिरँयनि ह्वैआये॥
मिली सुमेर सुहाइ छांहा। जेठ जाड़लागै तेहि माहां॥
वही छाहिं रँयनि ह्वै आवे। हरियर सबै अकास देखावे॥
पन्थकै जो पहुँचे सहि घामू। दुख बिसरे सुखहोय बिश्रामू॥
जिन्ह वह पाई छाहिं अनूपा। फिरि न आय सही यहिधूपा॥

बराबर १ राजा २ फ़ौज ३ हज़ार ४-७ अस्तबल ५ घोड़े की ज़ात ६ हाथी ८ बराबर ६ नाम पहाड़ १० नाम हाथी राजा इन्द्र ११ घोड़े सवार १२ हाथी सवार १३ हाथी १४ राजा १५-१६-१७ दुनिया १८ राजा इन्द्र १६ चक्रवर्त्ती २० तमाम दुनिया २१ बराबर २२ नाम पहाड़ २३ गुंजान २४ बाग २५ ज़मीन २६ पेड़ २७ चन्दन २८ रात्रि २६-३१ पहाड़ ३० मुसाफ़िर ३२ आराम ३३ बेमिसाल ३४॥

दो० असअँबराँउँ सघनघन, बरणि न पारौं अन्त ।
फरी फूली छयों ऋतु, जानहु सदा वसन्त ॥

फरे अम्ब अति सघन सुहाये । औजसफरी[3]अधिकशिरनाये ॥
कटहर दार पेड़ सो पाके । बड़हर सो अनूप अतिताके ॥
खिरनी पाकर खांड़ असमीठी । जामुनपाक भँवरअस दीठी ॥
तरवर फरे फरे खरहरे । फरे जानि इन्द्रासन परे ॥
पुनिमहुवाचुवअधिकै मिठामू । मधु[5] जसमीठपुहुप[6] जसवामू ॥
और खजहजाँ[7] उनकर नाउँ । देखा सब रानी अँवराँउँ[8] ॥
लागि सवै जस अमृत शाखा । रहै लुभाय सोई जो चाखा ॥

दो० लवँग सुपारी जायफल, सब फल फरे अपूर ।
आस पास घनै[9] ईमली, औ घनै[10] तार खजूर ॥

बसहिं पंखै[11] बोलहिं बहु भाखा । करहिंहुलासै[12] देखिके शाखा ॥
भोरहोत बासहिं चहि चुँहीं[13] । बोलहिं पांडुकै[14] एके तुहीं ॥
सारो[15] सुवा[16] जो रहचहिंकरहीं । करहिं पखेरू[17] और करोरहीं ॥
पिव पिवकर जो लाग पपीहा । तुही तुहीकर गड़रू[18] केहा ॥
कुहू कुहू कर कोयल राखा । औ बिहँगराजै[19] बोलबहुभाखा ॥
दही दही करि महारि पुकारा । हारिल अपनी बोली हारा ॥
कुहकहिं मोर सोहावन लागा । होय कराहर बोलहिं कागा ॥

दो० जानवन्त पक्षी बनके, फिरि बैठे अँवराँउँ[20] ।
अपनी अपनी भाषना, लीन्हदई[21] करनाउँ ॥

पैग[22] पैग[23] पर कुँवा बावरी । साजी बैठकै[24] औ पावरी[25] ॥

बाग़ १-८ बयान २ बहुत ३-४ शहद ५ फूल ६ नाम मेवा ७ गुंजान ९-१० चिड़ियाँ ११ खुशी करना १२ नाम चिड़ियाँ १३-१४ सारस १५ तोता १६ नाम चिड़ियाँ १७-१८ दहियड़ १९ बाग़ २० ईश्वर २१ क़दम २२-२३ बैठक २४ जीना २५ ॥

और कुंड बहु ठावहिं[1] ठाऊँ[2]। सब तीरथ औ तेहिके नाऊँ ॥
मठ मण्डप चहुँ पास सँवारे। तपी[3] जपी[4] सब आसन मारे ॥
कोइ सुऋषीश्वर कोइ संन्यासी[5]। कोइ रामयती[6] कोइ बिशवासी[7] ॥
कोइ ब्रह्मचर्य[8] पथ[9] लागे। कोइ सो दिगम्बर[10] आछहिं[11] नागे ॥
कोई सुमहेश्वर[12] योगी[13] यती[14]। कोई एक परखै देवी सती ॥
कोइ सरस्वती[15] संत कोइ योगी[16]। कोइ निराश[17] पथ बैठि बियोगी[18] ॥

दो० सेवरी[19] खेवनी[20] बानप्रस्थी,[21] शिष साधक[22] अवधूत[23]।
आसन मारे बैठि सब, पांच आत्मा भूत ॥

मानसरोवर[24] बरणों[25] काहा। भरा समुद्र अस अति अवगाहा[26] ॥
जल मोती अस निरमल[27] तासू। अमृत बरण[28] कपूर सुबासू[29] ॥
लंकद्वीपकी शिला अनाई। बांधा सरवर[30] घाट बनाई ॥
खण्ड खण्ड सीढ़ी भुइँ धेरे। उतरहिं चढ़हिं लोग चहुँ फेरे ॥
फूला कमल रहा है राता[31]। सहस[32] सहस पाखिन[33] के छाता ॥
उलटहिं सीप मोति उतराहीं। चुनहिं हंस औ केलि कराहीं ॥
खनि पतार पानी तहिं काढ़ा। क्षीरसमुद्र निकस तहँ ठाढ़ा ॥

दो० ऊपर पाल चहूंदिशि[34], अमृत फल सब रूख।
देखि रूप सरवर[35] का, गइ पियास औ भूख ॥

पानि भरी आवहिं पनिहारीं। रूपस्वरूप पद्मिनी नारीं ॥
पद्मगन्ध[36] तिन अङ्ग[37] बसाहीं। भँवर लागि तिन संग फिराहीं ॥
लंक[38] सिंहिनी सारँग[39] नयनी[40]। हंसगामिनी[41] कोकिलबयनी[42]

जगह १-२ तप करनेवाले ३ जप करनेवाले ४ क़िस्म योगियोंकी ५-६-७-८-१०-११ राह ६ क़िस्म योगी १२-१३-१४-१५-१६-१७-१८-१९-२०-२१-२२-२३ नाम तालाव २४ तारीफ़ २५ बहुत गहिरा २६ साफ़ २७ रंग २८ खुशबू २९ तालाव ३० सुर्ख ३१ हज़ार ३२ चिड़ियाँ ३३ चारोंतरफ़ ३४ नामतालाव ३५ कमलकी खुशबू ३६ बदन ३७ कमर शेरनी की तरह ३८ हिरण ३९ आँख ४० चाल ४१ आवाज़ ४२ ॥

आवहिं[1] झुरएडसोपांतिहिपांती। गवनेंसुहायसुभांतिहि[2] भांती॥
कनक[3] कलश[4] मुखचन्ददिपाहीं[5]। रहसकेलिसे[6] आवहिंजाहीं॥
जासों वै हेरैं[7] चख[8] नारी। बांके नयन जनुहनहिं कटारी॥
केश[9] मेघवर शिर ता पाहीं। चमकहिंदशन[10] बीजु[11] कीनाईं॥

दो॰ माथे कनक[12] गागरी, आवहिं रूप अनूप[13]।
जेहिकी ये पनिहारी, ती रानी केहि रूप॥

तालतलावा बरणि[14] न जाहीं। सूझै वारपार कुछ नाहीं॥
फूलीकुमुदि[15] केति[16] उजियारे।मानहुँ उये गगन[17] महँ तारे॥
उतरहिं मेघ चढ़हिं लै पानी। चमकहिं मच्छबीजु[18] कीबानी॥
तैरहिंपङ्छ[19] सुसंगहि संगा। श्वेत[20] पीत[21] राती[22] बहु रंगा॥
चकई चकवा केलि कराहीं।निशि[23] बिछोहदिनहिंमिलिजाहीं॥
करलहिंसारस करहिं हुलासा। जीवन मरनसुएकहिं पासा॥
कम्पासो[24] डहनक[25] बक[26] लेदी[27]। रही अपूरमीन[28] जलभेदी॥

दो॰ नगअमोल तेहितालहिं, दिनहिंबरहिं जसदीप।
जो मरजिया होयतेहि, सो पावे वह सीप॥

आसपास बहु अमृत बाँरी[29]। फरीं अपूर होय रखवारी॥
नारँग नींबू तुरँज जँभीरा। औ बदाम बहु बेद अँजीरा॥
गुलगुल तुरँज सदाफर फरे। नारँग अति रांती[30] रस भरे॥
किसमिस सेव फरे नौ बाता। दाड़िम[31] दाख देखि मनराता[32]॥
लागि सुहाई हरफारयौरी। उनयरहीं केला की घौरी॥

चलना १ तरह २ सोना-३ घड़ा ४ चमकना ५ खुशीसे उछलती कूदती ६ देखना ७ आँख ८-६ बाल १० दाँत ११ बिजुली १२-१६ सोना १३-बेमिसाल १४ तारीफ़करना १५ कोकावेली १६ नामनखत १७ आसमान १८ चिड़िया २० सफ़ेद २१ पीली २२ लाल २३ रात्रि २४ नामजानवरपरिन्द मछली पकड़कर खाजानेवाले २५-२६-२७-२८ मछली २६ बागीचा ३० लाल ३१-३३ अनार ३२॥

फ़रीतूल कमरख औ न्योजी। राय करौंदा बेर चिरौंजी॥
सुगन्धराव छुहारा दीठे[2]। और खजहजा[3] खाटे मीठे॥
दो० पानि देहिं खण्डवानी, कुवहिं खांड़ नहिं मेल।
लागी घरी रहँटकी, सींचहिं अमृत बेल॥
पुनि फुलवारि लाग चहुँपासा। बृक्ष बेदहिचन्दन भइबासा॥
वहुत फूल फूली घन बेली। क्योंड़ा चम्पा गोंद चमेली॥
सुरँग गुलाल कदम औ गूजा। सुगँध बकोरी गन्धब पूजा॥
जाहीजूही बगचन लावा। पुहुप सुदरसन लागसुहावा॥
नागेसर सदबर्ग हवारी। औ शिंगारहार फुलवारी॥
सुमन जर्द बहु खिली सेवती। रूपमंजरी और मालती॥
मोलसिरी बेली औ करना। सबै फूल फूले बहु बरना॥
दो० तेहि शिर फूल चढ़हिं वे, जेहि माथे मन भाग।
आछेन्ह सदा सुगन्धबहे, जनु बसंत औ फाग॥
सिंहलनगर दीख पुनि वसा। धनिराजा अस जाकर दसा॥
ऊँची पँवरी[9] ऊँच उड़ासी। जनु कैलास इन्द्रकर बासा॥
राउ रंक सब घर घर सुखी। जो देखे सो हँसता मुखी॥
रचि रचि साजे चन्दन चूरा। मोती अगँरै मेद करपूरा॥
सब चौपारहिं चन्दन खँभा। वहिं राजा तब बैठो सभा॥
जनु सभा देवतहिं की जुरी। परी दृष्टि इन्द्रासन पुरी॥
सबै गुणी औ पण्डित ज्ञाता। संस्कृत[13] सबके मुख राता[14]॥
दो० अलखहिं पन्थ सँवारँ, जनु शिवलोक अनूप[16]।
घरघरनारिपद्मिनीमोहहिं, सबअप्सरनँ केरूप॥

नाम मेवा १ देखना २ खजूर ३ माली ४ पेड़ ५ फूल ६ गेंदा ७ रंगबरंग ८ ज़ीना ९ महल १० केसर ११ निगाह १२ संस्कृत ज़बानके सब बोलनेवाले १३ लाल १४ ईश्वरकीराह १५ बेमिसाल १६ स्वर्गकी औरतें १७॥

पुनि देखी सिंहलकी बाटों[१]। नवोनिद्धि[२] लक्ष्मी सवहाटों[३]॥
कनक[४] हाट[५] सवकुहकँ[६]हिं लीपी। वैठि महाजन सिंहलद्वीपी॥
रचीहतोड़ाँ रूप न ढारे। चित्र[८] कटावअनेक[९] सँवाँरे[१०]॥
सोनरूप भल भयो पसारा। धवलें[११]शिरीपोतहिं घरवारा॥
रतन[१२] पदारथमाणिक[१३] मोती। हीरालाल सँवारे जोती॥
औ कपूर वेना कस्तूरी[१४]। चन्दन अगर रहा भरिपूरी॥
जिनयहिहाट[१५]न लीन्हविसाहीं[१६]। तिनकहँ आनहाट[१७] कितलाहीं[१८]॥

दो० कोई करै विसाहनी[१९], काहू केर विकाय।
कोई चलै लाभ[२०] सों, कोई मूर गँवाय॥

पुनि सुशृँगार हाट[२१] भलदेखा। किये शृँगार वैठितहँ वेश्याँ[२२]॥
मुख वीरी शिरचीर कुसुम्भी। काननकनक[२३] जड़ाऊखुंम्भी[२४]॥
हाथबीन पुनि मृगा[२५] भुलाहीं। नरमोहहिंसुनिपैग[२६] न जाहीं॥
भौंहधनुष तेहि नयन[२७] अहेरी[२८]। मारहिं वाणसान सों हेरी[२९]॥
अलकें[३०] कपोल[३१] होलहँसदेहीं। लाय कटाक्ष मारजनु लेहीं॥
कुच[३२] कंचुक[३३] जानहिंजग[३४] सारे। अंचल दीन्ह सुभावहि टारे॥
केते खेलार हार तेहि पांसा। हाथ झारि उठिचले निरासा॥

दो० चेटक[३५] लाय हरहिं मन, जवलहिहै गँठिफेट।
सांट[३६] नाट पुनि भई बटाऊ[३७], ना पहिचान न भेट॥

लैके फूल बैठि फुलहारी[३८]। पान अपूरव धरे सँवारी॥

राह १ दुनियाकी दौलत २ बाजार ३-५-१५-१७-२१ सोना ४-२३ केसर ६ दसनी ७ मुसव्वरी ८ बहुत ९ आरास्ता १० चूना ११ जवाहिर १२ मूंगा १३ मुश्क १४ मोललेना १६ फ़ायदा १८-२० खरीदारी १९ तवायफ़ २२ वाल २४ हिरण २५ कदम २६ आंख २७ शिकारी २८ देखाना २९ बाल ३० गाल ३१ छाती ३२ आँगिया ३३ संसार ३४ जादू ३५ मुफ़लिस ३६ मुसाफिर ३७ माली ३८॥

सोंधा[1] सबै बैठि ले कांधे। भल कपूर खरेरी[2] बांधे॥
कतहूँ पण्डित पढ़ैं पुराना। धर्मपंथ[3] कर करहिं बखानाँ[4]॥
कतहूँ कथा कहै कुछ कोई। कतहूँ नाचकूद भल होई॥
कतहुँ चरहटा[5] पंखी लावा। कतहूँ पाखँड नाच नचावा॥
कतहूँ नाद[6] शब्द[7] हो भला। कतहूँ नाटक[8] चेटक[9] कला॥
कतहुँ काहु ठगविद्या लाय। कतहूँ मानुष लीन बौराय॥

दो० चरपत[10] चोरदूत[11] गठछोरा, मिलेरहहिं तेहिपांच।
जोवहुभांतिसजग[12] भाअगमन, गँठे[13] ताकरपैबांच॥

पुनि आई सिंहल गढ़पासा। कावरणों[14] जनुलाग अकासा॥
तरहिं[15] करहिंवासुकि[16] कीपीठी। ऊपर इन्द्रलोकपर दीठी[17]॥
पराखोह[18] चहुँदिशि[19] सबबांका। कांपैजांघ जायनहिं झांका॥
अगम असूझ देखि डरखाये। परै सुसप्त पताराहिं जाये॥
नव पवँरी[21] बांकी नवखण्डा। नवो जो चढ़ै जायब्रह्मण्डा॥
कंचनकोट[22] जड़े नगशीशा। नखतहिंभरीबीज[23] पुनिदीशा॥
लङ्काजाहिऊँचगढ़[24] ताका। निरखि[25] न जाय दृष्टि[26] मनथाका॥

दो० हिये[27] नसमायदृष्टि[28] नहिं पहुँचै, जानहिंठाढ़सुमेर[29]।
कहँलग कहों उँचाई, कहँलग बरणों[30] फेर॥

ततगढ़वणिजे[31] चलैजगसूरू। नाहित होयवाजि[32] रथचूरू॥
पँवरी[33] नवों वज्र[34] की साजे। सहस[35] सहस[36] तहँ बैठे पाजे[37]॥

हलवाई १ लड्डू २ राह ३ बयान करना ४ बाज़ार ५ गाना ६ आवाज़ ७ करनाटक ८ जादू ९ मक्कार १० चुग़ुल ११ होशियार १२ गांठी १३ तारीफ़ १४ जड़ १५ नामसांप १६ देखना १७-२५ खाई १८ चारोंतरफ़ १९ मुश्किल २० सीढ़ी २१ सोनेका क़िला २२ बिजुली २३ क़िला २४ नज़र २६ दिल २७ निगाह २८ नामपहाड़ २९ तारीफ़ ३० सौदागर ३१ घोड़ा ३२ मकान ३३ पत्थर ३४ हज़ार ३५-३६ पियादा ३७॥

फिरैं पांच कुतवार सुभँवरी । कँपै पाँउ चापत वे पँवरी ॥
पँवरिहिं पँवरि सिंह गढ़ गाढ़े । डरपहिं रायँ देखि तहँ ठाढ़े ॥
वहु वनाव वे नाहर गढ़े । जनु गाजहिं चाहहिं शिर चढ़े ॥
टारहिं पूँछ पसारें जीहा । कुंजर डरहिं कि गुंजर लीहा ॥
कनक शिला गढ़ सीढ़ी लाई । जगमगाहिं गढ़ ऊपर ताईं ॥

दो० नवों खण्ड नव पँवरी, औ तहँ वज्र केवार ।
चार वसेरे सो चढ़ै, सत सो उतरै पार ॥

नव पँवरी पर दसों दुवारा । तेहि पर वाजि रहा घरियारा ॥
घड़ी सो वैठि गिनैं घरियारी । भरी सु अपनी अपनी वारी ॥
जो हि घड़ी पूजे वह मारा । घड़ी घड़ी घरियार पुकारा ॥
परा जो डांड़ जगत सब डांड़ा । कानिचिन्त माटी कर भांड़ा ॥
तुम तेहि चाक चढ़े हो कांची । अबहिं न फिरी न थिर रहु वांची ॥
घड़ी जो भरी घटी तुम आऊ । कानिचिन्त सोवे जो वटाऊ ॥
पहरहि पहर गजर नित होई । हिया न सोगा जागन नोई ॥

दो० मुहम्मद ज्यों जल भरत, रहँट घड़ी की रीति ।
घड़ी जो आई ज्यों भरी, ढरी जन्म गा वीति ॥

गढ़ पर नीर क्षीर दुइ नदी । पानि भरैं जैसे दुरपदी ॥
और कुण्ड एक मोती चूरू । पानी अमृत कीच कपूरू ॥
वहां का पानी राजा पिया । वृद्ध होय नहिं जव लग जिया ॥
कंचन वृक्ष एक तेहि पासा । जस कल्पतरु इन्द्र कैलासा ॥

महल १-२-३ शेर ४ मर्द ५ शेर ६ हाथीमस्त ७ सोना ८ क़िला ६ मकान १० पत्थर ११ मुक़ाम १२ सचाई १३ नव मकान तथा आंख कान नाक मुंह गुदा लिंग नव इंद्री बदनकी १४ दशवां दरवाज़ा तथा ब्रह्माण्ड १५ घाटा १६ दुनिया १७ ग़ाफ़िल १८-२१ आदमी १६ उमर २० मुसाफ़िर २२ हमेशा २३ पानी २४ दूध २५ बूढ़ा २६ सोने का पेड़ २७ नाम दरख्त जो स्वर्गलोक में है २८ ॥

मूल[1] पतार स्वर्ग[2] वहशाखा । अमरबेलिको पावको चाखा ॥
चन्द्रपात[3] औ फूल तराईं[4] । होय उजियार नगर जहँ ताईं ॥
वैफल पावै तप करि कोई । वृद्धखाय नवयौवन[5] होई ॥

दो० राजा भये भिखारी, सुनि वह अमृत भोग ।
जेंपावा सो अमर[6] भा, न कुछ व्याधि नहिं रोग ॥

गढ़[7] पर बसहिं चारि गढ़पती । अश्वपति[8] गजपति[9] भुवपति[10] नरपती[11] ॥
सबकधौरहिरे[12] सोने साजा । औ अपने अपने घर राजा ॥
रूपवन्त[13] धनवन्त[14] सभागी[15] । परसपषाण[16] पवँरि[17] तेहिलागी ॥
भोग परासे[18] सदा सबमाना । दुख चिन्ता कोई नहिं जाना ॥
मँदिर मँदिर सबके चौपारी[19] । बैठि कुँवर सबखेलहिं सारी[20] ॥
पांसा ढरहिं खेल भल होई । स्वर्ग बान सरपूजन कोई ॥
भाटबरन कहिं कीरति[21] भली[22] । पावहिं हस्ति[23] घोड़ सिंहली ॥

दो० मँदिर मँदिर सबकी फुलवारी, चोवाचन्दनबास ।
निशि[24] दिनरहै बसन्तवहँ, छहऋतुबारहमास ॥

पुनि चलि देखा राजदुवारा । मानुषफिरहिं पायनहिंबारा[25] ॥
हस्ति[26] सिंहली बांधे बारा[27] । जनुसजीव[28] सबठाढ़ पहारा ॥
कवन्योश्वेत[29] पीत[30] रतनारे[31] । कवन्योहरे धूम[32] असकारे ॥
बरनबरन[33] गगन[34] जसमेघा । उठहिं गगन[35] बैठिजनुठेघा[36] ॥
सिंहल के बरनें[37] सिंहले । इकइक चाहसो इकइकबले ॥

जड़ १ आसमान २ पत्ता ३ नखत ४ नवजवान ५ हमेशा ६ क़िला ७ घोड़ेका सवार ८ हाथीका सवार ९ ज़मीनका मालिक १० राजा ११ महल १२ खूबसूरत १३ दौलतमन्द १४ नसीबवर १५ पारस पत्थर १६ दरवाज़ा १७–२७ हँसीखुशी १८ चौसर १९ बराबरी २० तारीफ़ २१ नेकनामी २२ हाथी २३–२६ रात्रि २४ दखल २५ जानदार २८ सफ़ेद २९ ज़र्द ३० लाल ३१ धुवां ३२ रंगबरंग ३३ आसमान ३४–३५ पहाड़ ३६ बयान करना ३७ ॥

गिरि [1] पहाड़परवतकहिपेलहिं। बृक्षउचारिभारि मुखमेलहिं ॥
मत्त [2] मतँगसबगरजाहिंबांधे। निशि [3] दिनरहहिंमहावतकांधे॥
दो० धरती [4] भार अँगोही, पांव धरत उठ हाल।
कूर्महि [5] टूटिभुइँफाटी, तेहि हस्तिहि [6] की चाल॥
पुनि बांधे उजियार तुरंगा [7]। कावरणों [8] जस उनके रंगा॥
लेल [9] समन्द [10] चालजगजाने। हांसल [11] बोर [12] क्याहिबखाने [13] ॥
परी [14] कुरंग [15] मैहो [16] बहुभांती। करेरकोकलाहिंबलाहिंसुपांती॥
तीख [20] तुखार [21] चांद औ बांके। तड़पहिंतबहिंताजि [22] बिनहांके॥
मनते अगमन [23] डोलहिंबागा। देतउसास गगन [24] शिरलागा॥
पावहिं सांससमुदपर धावहिं। बूड़ि न पांव पार ह्वै आवहिं॥
थिरनरहैं रिस लोह चबाहीं। भाजहिंपूंछ शीश उपराहीं [25] ॥
दो० अस तुखार [26] सब देखे, जनु मनके रथबाहि [27] ।
नयन [28] पलक पहुँचावहीं, जहँ पहुँचाकोइचाहि॥
राजसभा सब देखे बैठे। इन्द्रसभा जनुपरगइ डीठे [29] ॥
धनि राजा अससभा सँवारी। जानहुँ फूलिरही फुलवारी॥
मुकुटबन्द सब बैठे राजा। दर [30] निशानसबजेहिकेसाजा॥
रूपवन्त [31] मनदिपै लिलाटा [32]। माथे छात बैठि सब राजा॥
जानो कमल सरोवर [33] फूले। सभाकि रूप देखि मन भूले॥
पान कपूर मेद [34] कस्तूरी [35]। सुगन्धबास भरिरही अपूरी॥
मांझ [36] ऊँच इन्द्रासन साजा। गन्ध्रबसेन बैठि तहँ राजा॥

पहाड़ १ मस्त २ रात्रि ३ ज़मीन ४ कछुवा ५ हाथी ६ घोड़ा ७ तारीफ़ ८ नामज़ात वा रंग घोड़ों के ९-१०-११-१२ बयान करना १३ नाम ज़ात व रंग घोड़ों के १४-१५-१६-१७-१८-१९ शोख २० घोड़ा २१-२२-२६ पहिले २३ आसमान २४ शिरउठाये हुये २५ गाड़ीवान २७ आँख २८ निगाह २९ फ़ौज ३० खूबसूरत ३१ माथा ३२ तालाब ३३ केसर ३४ मुश्क ३५ बीचों बीच ३६ ॥

दो० छत्र गगन लगताकर, सूर्यदिपै तस आप।
सभा कमल जनु विगसी, माथे बड़ परताप॥
साजा राजमँदिर कैलाशू। सोनेका सब भूमि अकाशू॥
सातखगड धवराहर साजा। वही सँवारसकै अस राजा॥
हीरा ईंट कपूर गिलावा। औनगलायस्वर्ग लयलावा॥
जानवन्त सबै उरेहे उरेहे। भांतिभांति नगलागउबेहे॥
भाकटाव सब आनहु भांती। चित्र कटावसो पांतहिपांती॥
लागखंभमणि माणिकजड़े। निशि दिनरहै दीपजनु बरे॥
देखि धौरहर कर उजियारा। छिपगये चांद सूर्य औ तारा॥
दो० साजीसाज वैकुण्ठजस, तससाजी खँडसात।
वीहर वीहर भाव तस, खंडखंड ऊपर जात॥
वरणौं राजमँदिर रनिवासू। अप्सरहिं भरा जान कैलासू॥
सोरह सहस पद्मिनी रानी। एक एकते रूप बखानी॥
अतिस्वरूप औ अतिसुकुमारी। पान फूलकी रहहिं अधारी॥
तेहि ऊपर चम्पावति रानी। महा स्वरूप पाट परधानी॥
पाट बैठिरहि किये शृँगारू। सब रानी वहँ करहिं जुहारू॥
नित नवरंग अङ्कमा सोई। प्रथमैवयस न शिर पर कोई॥
सिंहलद्वीप महँ जेती रानी। तिनमहँकनकै सुबारहबानी॥
दो० कुँवर बतीसो लक्षणी, अस सबमांह अनूप।
जानवन्त सिंहल द्विपी, सबै बखानी रूप॥

आसमान १-६ चमकना २ खिलना ३ ज़मीन ४ महल ५ मुसव्वरी ७ तरह बतरह ८-६ तसवीर १० जवाहिरात ११ रात १२ मकान १३ अलग १४ बयान करना १५ स्वर्गकी औरत १६ हज़ार १७ सहारा वा खुराक १८ महारानी १६ तख़्त २० हमेशा २१ पहिलीउमर २२ सोना खालिस २३ बेमिसाल २४ बयान करना २५॥

चम्पावत जो रूप मनमाहां । पद्मावतिकी ज्योति कि छाहां ॥
भइ चाहै असकथा जो होनी । मेटिनजाय लिखी जसहोनी ॥
सिंहलद्वीप भयो तबनाऊँ । जो असदिया बरा तेहिठाऊँ ॥
प्रथम सो ज्योतिगगनै निरमई । पुनि सुपितासाथे मनभई ॥
पुनिवह ज्योतिमातघट आई । तिनहिं उदरै आदर बहुपाई ॥
जस अवधानै पूरहै मासू । दिनदिन हिये होयपरकासू ॥
जस अंचल महँ छिपयेदिया । तस उजियार दिखावै हिया ॥

दो० सोने मंदिर सँवारा, औ चन्दन सब लीप ।
(५४) दियाजोमनशिवलोक महँ, उपजा सिंहलद्वीप ॥

भे दशमास पूरि भइ घरी । पद्मावति कन्या अवतरी ॥
जानो सूर्य किरण हतगाढ़ी । सूरज किरण घाट वह बाढ़ी ॥
भानिशि महँदिनकरपरकासू । सब उजियार भयो कैलासू ॥
इतनी रूप मूर्ति परगटी । पून्यो शशि सुखीनै ह्वैघटी ॥
घटतहिं बटत अमावस भये । दिनदुइ लाज गाडभुइँ गये ॥
पुनि जो उठी दुइज ह्वै उये । शशिनिकलंकविधिहि निरमये ॥
पद्मगन्धै बेधा जग बासा । भँवर पतंग भ्रमै चहुँपासा ॥

दो० इतनी रूपभई कन्या, जेहि स्वरूप नहिं कोय ।
(५५) धन सुदेश रुपवन्ता, जहां जन्म अस होय ॥

भई छठिरात छठी सुखमानी । रहस कूदसो रयनि बिहानी ॥
भा बिहान पण्डित सब आये । काढ़ि पुराण जन्म अरथाये ॥
उत्तम घड़ी जन्म भा तासू । चांदउआ भुइँ दिपा अकासू ॥

जगह १ पाहिले २ आसमान ३ पेट ४-५ हमल ६ रोशनी ७ दिल ८ पैदा होना ९-१० पांति ११ उजियारा १२ ज़ाहिर होना १३ पूर्णमासीका चांद १४ पतला १५ ब्रह्मा १६ कमलकी खुशबू १७ रात्रि १८ अच्छी १९ ॥

कन्याराशि उदय जग किया। पद्मावती नाम जस दिया॥
सूर पुरुष[1]सों भयो गुरेरा[2]। किरणयाम उपजो जगहीरा॥
तेहिते अधिक[4] पदारथकरा। रतनज्योति उपजो निरमरा[5]॥
सिंहलद्वीप भयो अवतारू। जम्बूद्वीप जाय जमवारू[6]॥
दो० रामा आय अयोध्या उपजे, लषणवतीसो संग।
राजाराउ रूप सब भूले, दीपक जैसो पतंग॥
आइ जन्मपत्री जो लिखी। दै आशीश फिरे ज्योतिषी॥
पाँच बरषमहँ भई जो वारी। दीन्ह पुराण पढ़े वै सारी॥
भइ पद्मावति पण्डित गुनी। चहूँ खण्डके राजहिं सुनी॥
सिंहलद्वीप राज घर बारी। महास्वरूप दई[11] अवतारी॥
इक पद्मिनी औ पण्डित पढ़े। वहि कहँ योग गुसाँइ[13] गढ़े॥
जाकहँ लिखी लक्षि[14] अस होनी। सो असपाव पढ़ी औलोनी[15]॥
सप्तद्वीप[16] के वर जो आवहिं। उत्तरपावहिं फिरफिरजावहिं॥
दो० राजाकहै गर्व[17] किये, हौं इन्द्र शिवलोक।
को सरवर[18] है मोसों, कासों करों बिरोक[19]॥
बारेह वरष माहँ भइ रानी। राजै सुना संयोग सयानी॥
सात खण्ड धवराहर[20] तासू। सो पद्मिनि कहँ दीन्हउ[21]डासू॥
औ दीन्हीं सँग सखी सहेली। जो सँग करैं रहस रसकेली॥
सबै नवल[22] पीसंग न सोई। कमलपास जनु बिगसीकोई[23]॥
सुआ एक पद्मावति ठाऊँ। महापण्डित हीरामणि नाऊँ॥
दई[25] दीन्ह पंखै[26] असजोती। नयन[27] रतनमुखमाणिकमोती॥

दुनिया १ सूर्य २ मुलाकात ३ पैदा होना ४-६-८-१० बहुत ५ पाक ७ मरना ९ ईश्वर ११-१३-२५ पैदाकिया १२ रेखा १४ खूबसूरत १५ सातोंमुल्क १६ गरूर १७ बराबर १८ टीका विवाहका १९ महल २० मकान २१ कुँआरी २२ फूलना कोकाबेलीका २३ जगह २४ जानवर २६ आँख २७ सुंगा २८॥

कंचनबरन[1] सुआ[2] अतिलोनाँ । मानोमिला सुहागहि सोना ॥

दो० रहहिं एक सँग दोऊ, पढ़ैं शास्त्र औ वेद ।
पढ़ना शीश[3] डुलावहीं, सुनतलाग तसभेद ॥

भई अनंत पद्मावति बारी । रचिरचिविधि[4] सबकलासँवारी ॥
जग[5] बेधा तेहि अंगसुबासा । भँवरआय लुब्धे[6] चहुँपासा ॥
बेनी[7] नाग मलयगिरि[8] पीठी । शशि[9] माथे होय दूइजपैठी ॥
भौंहैं धनुष साधि शर[10] फेरे । नयन[11] कुरंग[12] भूल जनुहेरे ॥
नासिक[13] कीर[14] कमलमुखसोहा । पद्मिनिरूपदेखिजग[15] मोहा ॥
माणिक[16] अधर[17] दशन[18] जनुहीरा । हियहुलसे[19] कुच[20] कनक[21] जँभीरा ॥
केहरि लंक[22] गवन गज[23] हरी । सुरनर देखि माथ भुइँ धरी ॥

दो० जग[24] कोउदृष्टि[25] न आवै, अप्सरन[26] होय अकाश ।
योगी यती संन्यासी, तप साधहिं तेहि आश ॥

राजै सुना दृष्टि[27] भइआना । बुधि[28] जोदेसँगसुआँ[29] सयाना ॥
भयो रजायसु[30] मारहिं सुआँ[31] । सबरे सुना चाँद जहँ उआ ॥
शत्रु[32] सुआँ[33] के नाऊ बारी । सुनि धाये जस धाय मँजारी[34] ॥
तब लग रानी सुआँ[35] छिपावा । जबलगआवमँजारि[36] नपावा ॥
पिता[37] कि आयसु[38] माथे मोरे । कहोजाय विनवै[39] कर[40] जोरे ॥
पंखन कोई होय सुजानू[41] । जाने भुक्ति[42] किजानिउड़ानू ॥
सुआँ[43] जोपढ़ै पढ़ाये बयनाँ[44] । तेहिकतवध[45] जेहिहियेननयनाँ[46] ॥

सोनेका रंग १ खूबसूरत २ शिर ३ ब्रह्मा ४ दुनिया ५-२४ गूंजना ६ चोटी ७ चन्दन ८ चाँद ९ तीर १० आँख ११-४६ हरिण १२ नाक १३ तोता १४-२९-३१-३३-३५-४३ संसार १५ मूंगा १६ होंठ १७ दाँत १८ खुशहोना १९ छाती २० सोना २१ चीताकी कमर २२ चालहाथी और सिंह की तरह २३ निगाह २५-२७ इन्द्रलोककी परी २६ अक़्ल २८ हुक्म ३०-३८ दुश्मन ३२ बिल्ली ३४-३६ बाप ३७ अरज़ करना ३९ हाथ जोड़ना ४० अक़्लमन्द ४१ खाना ४२ बोली ४४ मारना ४५ ॥

दो० माणिक[1] मोती देखावह, हिये[2] न ज्ञान करलेय।
दाड़िम[3] दाख[4] छांड़िकै, आंब ठौर फर लेय॥

वेतो फिरी उत्तर[5] अस पावा। बिन वा सुये हिये[6] डर खावा॥
रानी तुम युग युग सुख पाऊ। हो अज्ञाँ वनवासकहँ जाऊ॥
मोती जो मलीन होय कला। पुनि सोपानि कहाँ निरमला॥
ठाकुर अन्त चहो जेहि मारा। तेहि सेवक कहि कहां उबारा॥
जेहि घर काल मँजारी नाचा। पंखहि नाउँ जीव नहिं बांचा॥
मैं तुम राज बहुत सुख देखा। जो पूछहि दिये जाय न लेखा॥
जो इच्छा मन कीन्ह सुजेवा। यह पछताव चल्यों बिनसेवा॥

दो० मारे सोई निसोगा, डरे न अपनी दोस।
केला अकेल करै का, जो भयो बेर परोस॥

रानी उत्तर दीन्ह कै मया। जो जिव जायरहै किमिकया॥
हीरामणि तू प्राण परेवा। ओखनलाग करत तेहि सेवा॥
तुहिंसेवा बिछुरन नाहिं आँखों। पींजर हिये घालिकै राखों॥
हौं मानुष तू पंख पियारा। धर्म प्रीति तहां को मारा॥
का प्रीति तनहमाहँ बिलाय। सोई प्रीति जियसाथ जो जाय॥
प्रीतिभारली हिये न शोच। वही पन्थ भल होयकि पोच॥
प्रीति पहाड़ भार जो कांधा। कितनेहि छूटलाय जिवबांधा॥

दो० सुआ नरहै खुरक जी, अबहुँ कालसो आव।
शत्रु अहै जेहि करिया, कहूसो बूड़ा नाव॥

मोती १ दिल २-६-२०-२२ अनार ३ अंगूर ४ जवाव ५-१६ परवानगी ७ साफ़ ८ बिलार ६ जानवरपरिन्दा १० हिसाव ११ जो मनने चाहा सो खाना-खाया १२ वेग़म १३ पाप १४ बेरीका पेड़ १५ मेहरबानी १७ बदन १८ जानवर परिन्द १९-२१ तोता २३ अंदेशाभरा हुवा २४ दुश्मन २५ मल्लाह २६॥

खण्डतीसरा स्नानखण्ड पद्मावत ॥

एक दिवस[1] कवन्यो तहँआय । मानसरोवर[2] चली अन्हाय ॥
पद्मावति सब सखी बोलाई । जनुफुलवार सबै चलिआई ॥
कोइचम्पा[3] कोइगोंदे[4] सहेली । कोइ सुकेत[5] करुणा[6] रसवेली ॥
कोइँ सुगुलाल[7] सुदरशन[8] राती । कोइबकाउ[10] कोइबकचन[11] भांती ॥
कोइ सो बोलसर[12] पुहपावती[13] । कोइ जाही जूँही[14] सेवती[15] ॥
कोइ सुवर्न[16] जर्द ज्यों केसर[17] । कोइ शिंगारहार[18] नागेसर[19] ॥
कोइ कूजा[20] सतबर्ग[21] चँबेली । कोई[22] कदम सुरसर[23] रस बेली ॥

दो० चलीं सबै मालती[24] संगहि, फूले कमल कुमोद[25] ।
बेध रही गुण गन्धरब, बास बरमला मोद ॥

खेलत मानसरोवर[26] गई । जाय पाल[27] पुर ठाढ़ी भई ॥
देखि सरोवर[28] हँसली केली । पद्मावति सों कहहिं सहेली ॥
ए रानी मन देखु बिचारी । यहि नैहर रहना दिन चारी ॥
जबलग अहे पिताकर[29] राजू । खेलिलेहु जो खेलहि आजू ॥
पुनि सासुर हम गवनब[30] काले । कितहम कितयहसरवर[31] पाले[32] ॥
कितआवन पुनिआपन हाथा । कित मिलके आवब यकसाथा ॥
सासुननँद बोलहि जियलेहीं । दारुण[33] ससुर न निसरे देहीं ॥

दो० पीउ पियार सब ऊपर, सो पुनि करै वह काहि ।
तेहि सुख राखहिकी दुख, वह कस जन्म निबाहि ॥

सरवर[34] तीर पद्मिनी आई । खोपा[35] छोड़ि केश बिखराई ॥
शशि[36] मुखअंग[37] मलीगर[38] रानी । तामहँ झाप लीन्ह अरधानी ॥

दिन १ नाम तालाब २-२६ नामफूल ३-४-५-६-७-८-९-१०-११-१२-१३ १४-१५-१६-१८-१९-२०-२१-२२-२३-२४ ज़ाफ़रान १७ कोकाबेली २५ किनारा २७-३२ तालाव २८-३१-३४ बाप २९ जाना ३० मुश्किल ३३ चोटी ३५ चांद ३६ बदन ३७ चन्दन ३८ ॥

उनई घटा पराजगं छाहां । शशि की शरणलीन्ह जनुराहौं ॥
छिपगये दिनभानु कीदसा । तेहि निशि नखतचांदपरगसा ॥
भूल चकोर दृष्टि तेहि लावा । मेघघटा महँ चन्द दिखावा ॥
दशनं दामिनी कोकिलभाषैं । भौहैं धनुषं गगनं लैराखैं ॥
नयनं खँजन दुइ केल करेहीं । कुचं नारँग मधुकर रसलेहीं ॥

दो० सरोवर रूप विमोहा, हिये हिलोर करले ।
पाउँ छुवे मगँ पाउँ, तन मन लहरें दे ॥

धरी तीर सब कंचुकं सारी । सरवर महँ पैठीं सब बारी ॥
पानी तीर जानि सब वेलैं । हुलसैहिं करहिंकामकी केलैं ॥
करलं केशं विषहरं बिषभरे । लहरैं लेहिं कमल मुख धरे ॥
नवल वसन्त सँवारे करी । होय प्रकट जानहु रस भरी ॥
उठी कोंप जस दाँड़िम दाखैं । भई अनन्त प्रेमकी साखा ॥
सरवर नहिं समाय संसारा । चांद नहाय बैठिलिये तारा ॥
धनसों नीरं शशि तरई उई । अबकितदृष्टि कमलऔकोई ॥

दो० चकई बिछुर पुकारी, कहां मिलहो नांह ।
एकचन्दनिशि स्वर्ग महँ, दिनदूसरजलमांह ॥

लागीं केलकरें मँझ नीरा । हंस लजाय बैठिहैं तीरा ॥
पद्मावतिकौतुकं कहँराखे । तुमहिंशशि होहितराय नहिंराखे ॥
बाद मेल के खेल पसारा । हार देब जो खेलत हारा ॥

दुनिया १ चांद २-३१-४१ सूर्य ३ रात्रि ४ खिलना ५ निगाह ६-३३ दाँत ७ बिजुली ८ कोकिला कीसी बोली ९ कमान १० आसमान ११-३६ आँख १२ छाती १३-१८ भँवर १४ तालाब १५-१९-२१ दिल १६ शायद १७ लड़की २०खुशहोना २१ मुलायम २२ बाल २३ सांप २४ कली २५ ज़ाहिर २६ अनार २७ अंगुर २८ पानी ३०-३८ नखत ३२ कोकाबेली ३४ राति ३५ बीच ३७ किनारा ३९ तमाशा ४० नखत ४२ ॥

सँवरहिं सांवर गोरहिं गोरी। आपन आपन लीन्हमुजोरी॥
बूझौ खेल खेलौ एक साथा। हारि न होय पराये हाथा॥
आजहिं खेल बहुरि कित होय। खेलगई कित खेलै कोय॥
धनि सो खेल खेल रस प्रेमा। रवताई[1] और कुशल[2] क्षेमा॥

दो॰ मुहम्मदबारजो प्रेमकी, ज्योंभावे त्यों खेल।
तेलहिं फूलहिं बासज्यों, होय फुलायल तेल॥

सखी एक तैं खेल न जाना। भई अचेत[3] मनहारगँवाना॥
कमल डारगहि भई बिकरारा[4]। कासों पुकारों आपन हारा॥
कित खेले आयों एक साथा। हार गँवाय चल्यों ले हाथा॥
घर पैठत पूँछब यह हारू। कौन उतर[5] पावब पैसारू॥
नयन[6] सीप आंसू तस भरे। जानहु मोति गिरहिं सबढरे॥
सखिन कहा बौरी कोकिला। कौनपानी जेहिपवन[7] नहिं हिला॥
हार गँवाय सो ऐसे रोवा। हेरे हेराये लेब जो खोवा॥

दो॰ लागीं सबमिलि हेरी[8], बूड़ बूड़ यक साथ।
कोई उठी मोतीले, काहू घोंघा हाथ॥

कहा मानसरं[9] चहा सुपाई[10]। पारस रूप यहां लगि आई॥
भा निरमल[11] तेहिपायन परशे। पावा रूप रूप के दरशे॥
मलै[12] समीर बास तनआई। भा शीतल[13] तनतपनबुझाई॥
नाजानोंकौनपवन[14] लेआवा। पुण्यदशा भइ पाप गँवावा॥
ततछन हार बेगि[15] उतराना। पावा सखहिं चन्द बिहँसाना॥
बिकसा[16] कमलदेखिशशि[17] रेखा। भइतेहि रूप जहां जो देखा॥

ठकुराई १ खैरियत २ बेहोश ३ बेकरार ४ जवाब ५ आँख ६ हवा ७-१४ ढूंढ़ना ८-९ नाम तालाब १० पाक ११ चन्दन १२ ठंढा १३ जल्द १५ फूलना १६ चांद १७॥

पावा रूप रूप जस चहा। शशि मुख सब दरपन है रहा॥

दो० नयन जो देखे कमल भये, निरमल नीर शरीर।
हस्त जो देखे हँस भये, दशन जोति नग हीर॥

पद्मावति तहँ खेल दुलारी। सुआ मँदिर महँ देखि मँजारी॥
कहिसि चलौं जौ लहि तन पांखा। जिव ले उड़ा ताक बन ढांखा॥
जाय परा बन खँड जिव लीन्हा। मिले पंखे बहु आदर कीन्हा॥
आन धरी आगे फर शाखा। भुक्ति न मिटी जब लहि राखा॥
पाय भुक्ति सुख मन में भयो। दुख जो अहा बिसर सब गयो॥
ए गुसँइ तू ऐसो विधाता। जान वंत जिव सब का भुक्ति दाता॥
पाथर महँ नहिं पतंग विसारा। जहँ तहँ सँवर दीन्ह तुइँ चारा॥

दो० तौ लहि साग विछोह कर, भोजन पड़ा न पेट।
पुनि बिसरा भा सँवरना, जनु सपने भइ भेंट॥

पद्मावति पहँ आय भँडारी। कहिसि मँदिर महँ परी मँजारी॥
सुआ जो उतर देत अहा पूंछा। उड़गा पिंजर न बोलै छूंछा॥
रानी सुना जो सुख सब गयो। जनु निशि परी अस्त दिन भयो॥
गहने गही चन्द की किरा। आंसु गगन जस नखतहिं भरा॥
टूटि पार सरवर बह लागे। कमल बूड़ि मधुकर उड़ भागे॥
यहि विधि आंसु नखत हो चुये। गगन छांड़ सरवर महँ ज्ये॥
झरहिं चुवहिं मोतिन की माला। अब सँकेत बांधा चहुँ पाला॥

दो० उड़गा सो ठाँ कहँ बसा, खोज सखी सो तास।

चांद १ आंख २ पाक ३ पानी ४ बदन ५ हाथ ६ दांत ७ तोता ८-१६-२६ बिल्ली ९-१८ जंगल १० उड़नेवाले जानवर हमजिन्स ११ खुराक जंगली १२-१३ ईश्वर १४ रोजी देनेवाला सबका १५ मुलाक़ात १६ रसोईवरदार १७ जवाब २० राति २१ आसमान २२-२५ तालाब २३-२६ भँवर २४ रंज २७ चारों तरफ़ २८॥

वहहै धर्ती[1] की स्वर्ग[2] का, पवन[3] न पावै वास ॥

चहूं पास समझावहिं सखी । कहांसु अत्र पावेगा पखी ॥
जबलहि पिंजर अहा परेवाँ । अहा बांध कीन्हेसि नितसेवा ॥
तेहि बन घन जो छूटेपावा । पुनिफिरबांदं होयकितआवा ॥
वै उड़ान फुरहरी खाई । जो भा पंख पांख तनलाई ॥
पिंजर जेहक सौंप तेहिगयो । जो जाकर सो ताकर भयो ॥
दशबाटैं[6] जेहि पिंजरमाहां । कैसे बांच मँजारी[7] पाहां ॥
ये धर्ती अस केतन खीले । अश्वपति[8] गजपतिबहुवरकीले ॥

दो० जहँ न राति नहिंदिवस है, तहां न पान न खान ।
तेहि बन सोठां है बसा, फेरि मिलावै आन ॥

सुवैं[11] तहां दिनदश कलकाटी । आयो व्याधं ढका लै टाटी ॥
पैगं[13] पैग भुइँ चापत आवा । पंखहि[14] देखि सबै डर खावा ॥
देखो कुछ अचरज अनभला । तरवर[15] एक आवत होचला ॥
यह बन रहत गये हम आऊँ । तरवर[16] चलत न देखा काऊ ॥
आजजोतरवर चलभलनाहीं । आवहु यह बनछांड़ पराहीं ॥
वैतो उड़ैं और बन ताका । पण्डितसुआँ भूल मन थाका ॥
शाखा देखि राज जनु पावा । बैठिनिचिंत[22] चुला वह आवा ॥

दो० पांच[23] बाणकर खोंचा, लासा भरे सो पांच ।
पांखभरा तन उरझा, कित मारबिन बांच ॥

बन्दभौं[24] सुआँ[25] करतसुखकेली । चूरं[26] पांखमेलेसि घरठेली[27] ॥

ज़मीन १ आसमान २ हवा ३ उड़नेवाला जानवर ४–१४ तावेदार वा क़ैदी ५ दशराह तथा इन्द्री बदनके सूराख ६ बिल्ली ७ घोड़े का सवार ८ दिन ९ तोता १०–११–२१–२५ बहेलिया १२ क़दम बाक़दम १३ चुरा १५ पेड़ १६–१८–१९ उमर १७ भागना २० ग़ाफ़िल २२ कंपा २३ क़ैद २४ बाजू को तोड़के २६ झोरी २७ ॥

तहँवां बहुत पंखे[1] खरभरैं। आप आप महँ रोदन करैं ॥
बिष[2] दाना कित होय अँगूरे। जहँ आमरन[3] डहनै धरचूरे ॥
जो न होत चारा की आसा। कित चिड़हार ढकत लै लासा ॥
ये बिर्ष[4] चारा सबबिधि ठगी। औ भा काल हाथ लै लगी ॥
यहिं भूंठी माया मन भूला। चूरी पांख जैसो तन फूला ॥
यहिमन कठिन मरै नहिं मारा। काल[5] न देखि देखिपै चारा ॥

दो० हम तो बुद्धि[6] गँवाई, बिष[8] चारा अस खाय।
तू सोठा[9] परिडत हता, तू कित भा निठुराय[10] ॥

सुवै[11] कहा हमहू अस भूले। टूटिहिं डोल गर्ब[12] जेहिभूले ॥
केला के बन लीन्ह बसेरा। पड़ा साथ तन बैरी केरा ॥
सुखै करवार फेरी खाना। बिर्ष[14] भा जोहि व्याधं[15] तुलाना ॥
काहेक भोग[16] बृक्ष अस फरा। अड़ा लाय पंखहिं कहँ हरा ॥
सखीनिचिंत[17] जोखधनकरना। यह निचिंत[18] आगे है मरना ॥
भूले हमहुं गर्ब[19] तेहि माहां। सो बिगरा पावा जहँ पाहां ॥
होय निचिंत[20] बैठि तेहि अड़ा। तब जाना खोंचा हियें[21] गड़ा ॥

दो० चरत न खुरके[22] कीन जब, तबरेचरासुख सोय।
अब जो फांद परा गैं[23], तब रोये का होय ॥

सुनिके उतर[24] आंसु पुनि पोछे। कोन पंख बांधी बुध[25] ओछे ॥
पंखिन जो बुधि[27] होयउजियारी। पढ़ा सुआ[28] कितधरै मँजारी[29] ॥
कित तीतर बन जीभ उघेला। शक्ति हंकार फांदगये[30] मेला ॥

उड़नेवाले जानवर १-२६ जहर २-४-८-१४ बाजू ३ पर मड़ोरके ५ मौत ६ अक़ल ७-२५-२७ तोता ६-११-२८ बेदर्द १० गरूर १२-१९ खुशी १३ बहेलिया १५ पेड़ खाने का १६ गाफ़िल १७-१८-२० दिल २१ अंदेशा फ़िक्र २२ गर्दन २३-३० जवाब २४ बिल्ली २९ ॥

तादिन ब्याध[1] भयो जिवलेवा । उठी पांख भा नाउँ परेवा[2] ॥
भईब्याध[3] तृष्णा[4] सुखस्वाधू । सूझी भुक्ति[5] न सूझै ब्याध[6] ॥
हमहिं लोभ वह मेला जारा । हमहिं गर्व[7] वह चाहे मारा ॥
हम निचिंत[8] वह आवछिपाना । कौन ब्याध[9] है दोष[10] अयानो ॥

दो० सो अवगुण[12] कित कीजिये, जिवदीजे जेहिकाज ।
अब कहना कुछ नाहीं, मुँदे[13] भले पक्षिराज[14] ॥

चित्रसेन चित्तौरगढ़ राजा । कइगढ़कोटिचित्र[15] सम[16] साजा ॥
तेहिकुल रतनसेन उजियारा । धनि जननी जन्मी अस वारा[17] ॥
पण्डित गुण सामुद्रिक देखहिं । देखिरूप औ लगन विशेखहिं ॥
रतनसेन यहि कुल निरमरा[18] । रतनज्योति मन माथे परा ॥
पद[19] के पदारथ लिखी सो जोरी । चांद सूर्य जस होय अंजोरी[20] ॥
जसमालतीकहँ भँवरवियोगी[21] । तस वह लागहोय यह योगी ॥
सिंहलद्वीप जाय वह पावा । सिद्ध होय चित्तौर लै आवा ॥

दो० भोग भोज[22] जसमानी, विक्रम[23] शाका कीन्ह ।
परख रतन जो पारखी, सबै लिखन लिखदीन्ह ॥

चित्तौर गढ़ कर एक बँजारा । सिंहलद्वीप चला ब्योपारा ॥
ब्राह्मणहुतएकनिपट[24] भिखारी । सो पुनि चला चलत ब्योपारी ॥
ऋण[25] काहूकर लीन्हेंसि काढ़े । संग[26] तेहिगये होय कछु बाढ़े ॥
मारग[27] कठिन[28] वहुत दुख भये । नांघ समुद्र द्वीप वह गये ॥
देखि हाट[29] कुछ सूझै न ओरा । सबै वहुत कुछ देखि न थोरा ॥

चिड़ीमार १-३ उड़नेवाले जानवर २ दुनियाकी हवा हवस ४ रोज़ी ५ बहेलिया ६-६ ग़रूर ७ ग़ाफ़िल ८ क़सूर १० नादानी ११ बुरा काम १२ चुप १३ उड़नेवाले जानवरों के राजा १४ तसवीर १५ बराबर १६ लड़का १७ पाक १८ लाल जवाहिर १६ रोशनी २० दुःखी २१ नामराजा २२ राजा विक्रमादित्य २३ बहुत ग़रीब २४ क़र्ज़ २५ शायद वा कदाचित् २६ राह २७ मुश्किल २८ बाज़ार २६॥

पै सुठ ऊँच नीच तेहिकेरा। धनी पाव निधनी मुख हेरा॥
लाख करोरहि बस्तु बिकाई। सहसनै केर न कोउ ओनाई॥

दो० सबहिं लीन्ह बिसहना, औ घर कीन्ह बहोर।
ब्राह्मण तहां ले का, गांठ सांठ सुठथोर॥

झुरी ठाढ़ हौं काहेक आवा। बनजँ न मिला रहा पछतावा॥
लाभै जानि आयों यह हाटा। मूर गँवाय चल्यों यह बाटा॥
का मैं मरन सिखावन सिखी। आयों मरै मीचँ हत लिखी॥
आपनचलत सो कीन्हा झाँनी। लाभै न देखि मूरभइ हाँनी॥
का मैं बोआ जन्म औ भूँजी। खोय चल्यों घरहू की पूँजी॥
जेहि ब्योहरिया कर ब्योहारू। कालै देब जो छेकैहि बारू॥
घर कैसे पैठब मैं छूँछे। कौन उतरै देहौं तेहि पूँछे॥

दो० साथचला सतँ बिचला, भये बिच समुद्रपहार।
आशनिराशाहीं फिरों, तूविधि देहि उधार॥

तबहीं ब्याधै सुआं लैआवा। कंचनबरनै अनूपै सुहावा॥
बेंचै लाग हाटै लै ओही। मोल रतनमाणिकै जेहिहोही॥
सुअहिं कोपूँछपतंग मँडारें। चलन देख आछे मन मारें॥
ब्राह्मण आय सुआँ सों पूंछा। वह गुणवन्तकिनिरगुणछूंछा॥
कहुपंखी जो गुणतोहिपाहां। गुणन छिपाये हृदये माहां॥
हम तुम जात ब्राह्मण दोऊ। जात जात पूंछै सब कोऊ॥
पण्डित हौ तो सुनावहु बेदू। बिन पूंछे पाई नहिं भेदू॥

दौलतवाला १ बेदौलत २ देखना ३ हज़ार ४ लौटना ५ बेपूंजी ६ माल ७ फ़ायदा ८-१३ बाज़ार ९-२३ राह १० मौत ११ होशियारी १२ नुक़सान १४ रोकना दरवाज़ा का १५ जवाब १६ ईमान १७ ग्रहा १८ बहेलिया १९ तोता २०-२५-२७-२८ सोने का रंग २१ बेमिसाल २२ जवाहिरात २४ उड़नेवाले जानवर २६ दिल २९॥

दो० हौं ब्राह्मण औ पण्डित, कहि आपन गुण सोय ।
पढ़ेके आगे जो पढ़ै, दून लाभ[1] तेहि होय ॥

तब गुण मोहिं अहा हो देवा । जब पिंजर[2] हुत छूट[3] परेवा ॥
अबगुणकौनजोबंद[4] यजमाना । घाल मँजूसा[5] बेंचै आना ॥
पण्डित होय सो हाट[6] नहिं चढ़ा । चहौं बिकाय भूलगा पढ़ा ॥
दुइ मारग[7] देखौं यह हाटा[8] । दई चलावै तेहि केहि बाटा[9] ॥
रोवत रकत[10] भयो मुख राता[11] । तनभा पियर कहों का बाता ॥
राती[11] श्याम[12] कण्ठ दुइ ग्रीवा[13] । तेहि दुइ फन्द डरों शठ जीवा ॥
अबहूं कण्ठ फन्दके चीन्हा । दुहूंके फन्द चाहै का कीन्हा ॥

दो० पढ़ि गुण देखा बहुत मैं, है आगे डर सोय ।
धुन्धजगत[14] सबजानकै, भूलरहा बुधि[15] खोय ॥

सुनि ब्राह्मणबिनवा[16] चिरहारू[17] । करि पंखहि[18] कहँ मया[19] न मारू ॥
कतयेनिठुर[20] जिवबधेसि[21] परावा । हत्याकेर न तोहिं डेरावा ॥
कहेसिपंख[22] का दोष[23] जनावा । निठुर[24] सोई सो परमँस[25] खावा ॥
उनहिं रोय जानिके रोना । तहूँन तजहिं[26] भोग सुखसोना ॥
औ जानहिं तन होय यह नासू । पोषै मांस पराये मांसू ॥
जो न होहिं अस परमँस खाधू । कितपंखन[28] कहँ धरै बियाधू[29] ॥
जोरी ब्याध[30] पंखनि[31] नितधरै । सो निचिन्त[32] मन लोभ[33] न करै ॥

दो० ब्राह्मण सुआ[34] बेसाहा, सुनि मत बेदगरंथ[35] ।
मिलाआय सोसाथिनकहँ, भा चितौरकी पंथ[36] ॥

फ़ायदा १ जानवरपरिन्द २ क़ैद ३ संदूक़ ४ बाज़ार ५–७ राह ६–८ ख़ून ९ लाल १०–११ काला १२ गला १३ दुनियां १४ अक़्ल १५ ख़ुशामद १६ चिड़ीमार १७ उड़नेवाले जानवर १८–२२–२८–३१ मेहरबानी १९ बे दर्द २०–२४ मारडालना २१ पाप २३ पराया मांस खानेवाले २५–२७ छोड़ना २६ बहेलिया २९–३० ग़ाफ़िल ३२ लालच ३३ तोता ३४ पोथी ३५ राह ३६ ॥

तबलग चित्रसेन शिवसाजा। रतनसेन चित्तौर भा राजा॥
आय बात तेहि आगे चली। राज बणिज आये सिंहली॥
हैं गज मोति भरी सब सीपी। और बस्तु बहु सिंहलदीपी॥
ब्राह्मण एक सुआ लै आवा। कंचनबरण अनूप सुहावा॥
राती श्याम कण्ठ दुइ कांठा। राती डहन लिखा सब पाठा॥
औ दुइ नयन सुहावन राता। राती ठोर अमीरसबाता॥
मस्तक टीका कांध जनेऊ। कबि ब्यास पण्डित सहदेऊ॥

दो० बोल अर्थ सों बोली, सुनत शीश सब डोल।
राजमन्दिरमहँ चाही, अस वह सुआ अमोल॥

भयो रजायसु जन[12] दौड़ाये। ब्राह्मण सुआ बेगि[13] लै आये॥
बिप्र[14] अशीश बिनत औधारा। सुआजीवनहिं करों निरारा॥
पै यह पेट महाबिश्वासी[16]। जेंसबनावा तपी[17] संन्यासी॥
दारे सेज जहां कुछ नाहीं। भुइँ पर रही लाय गै बाहीं॥
अन्धहिरही जो देखननयना। गूंगरही मुख और न बयना॥
बहिररही जो श्रवण नहिं सुना। पै यह पेटन रहे निरगुना॥
कइ कइफेरा नित यह दोषै। बारहिं बार फिरै सन्तोषै॥

दो० सो मोहिं लिये मँगावै, लावै भूख पियास।
जो न होत अशन[25] बैरी, केहि काहूकी आस॥

सुऐ अशीश दीन्ह बड़साजू। बड़ परताप अखण्डितराजू॥
भागवन्ताविधि[27] बुधि[28] अवतारा। जहांभागतहँरूपजोहारा॥

मरना १ सौदागर २ हाथी ३ सोना ४ लाल वा काला ५ आंख ६–११ लाल ७ लालचोंच ८ अमृत ९ शिर १० हुक्म ११ नौकरलोग १२ जल्द १३ ब्राह्मण १४ अलग १५ ज़बरदस्त १६ तपकरनेवाले १७ औरत १८ आवाज़ २० कान २१ नादान २२ हमेशा २३ दरवाज़ा २४ पेट २५ हमेशा राज क़ायम २६ ब्रह्मा २७ अक़्ल २८ पैदा करना २९ देखना ३० ॥

कोइ केहिपास आसके गवना। जोनिराशदृढ़ आसनमवना ॥
कोइ बिन पूंछे बोल जो बोला। होय बोल माटी के मोला ॥
पढ़िगुणिजितने पण्डितमतिभेऊ। पूँछे बात कहै सहदेऊ ॥
गुणी न कोई आप सराहा। जो सो बिकाय ज्ञानसो जाहा ॥
जबलग गुण प्रकट नहिं होय। तबलग मर्म न जानै कोय ॥

दो० चतुरबेद हों पण्डित, हीरामन मोहिं नाउँ।
पद्मावति सों मेरदों, सेवकरों तेहि ठाँउँ ॥

रतनसेन हीरामन छीना। एकलाख ब्राह्मण कहँ दीन्हा ॥
बिप्र अशीशजोकीन्हपयानो।सुआ जो राजमँदिरमहँआना ॥
बरणो काहि सुआ की भाखा। दीन्ह सुनाउँ हीरामन राखा ॥
जो बोलै राजा मुखजोवों। जानौ मोतिन हार पिरोवा ॥
जो बोलै सब माणिक मूंगा। नाहित मवनै बांध है गूंगा ॥
जनुहि मारमुख अमृत मेला। गुरुहै आप कीन्ह जगचेला ॥
सूर्य्य चांद की कथा कहा। प्रेमकी कहनलाय चितगहा ॥

दो० जो जो सुनै धुनै शिर राजा, प्रीति होय अगाह।
असगुणवन्त नाहिं भल, सोठाँ बावर कीजे काह ॥

दिन दशपांच तहां जो भये। राजा कतहुँ अहेरे गये ॥
नागवती रूपवन्ती रानी। सब रनिवास पाटपरधानी ॥
कियशृंगार करैं दरपनलीन्हा। दरपन देखिगर्ब जेहि कीन्हा ॥
बोलहु सुआ पियारे नाहों। मोरे रूप कोउ जग माहा ॥

जाना १ मज़बूत २ चुप ३-१५ राजायुधिष्ठिर के भाई ४ तारीफ़ ५ ज़ाहिर ६ भेद ७ चारोंवेद ८ मुलाक़ात ६ जगह १० ब्राह्मण ११ कूच १२ तारीफ़ १३ देखना १४ दुनियां १६ तोता १७-२३ शिकार १८ महारानी १६ हाथ २० ग़रूर २१ ख़ाविन्द २२ संसार २३ ॥

हँसत सुआ पुनि आय सुनारी। दीन्ह कसौटी औ पनवारी॥
सुआ बाँनि तोरी कस सोना। सिंहलद्वीप तोरकस लोना॥
कौन दृष्टि तोरे रुपमनी। वहिं हौं लोने कि वै पद्मिनी॥

दो० जोनकहेसि सत सोठाँ, तोहि राजाकी आनँ।
है कोई यह जग महँ, मोरे रूप समानँ॥

सँवरिरूप पद्मावति केरा। हँसा सुआ रानी मुख हेरां॥
जेहि सरवर महँ हंस न आवा। बगुला तहँ जलहंस कहावा॥
दई कीन्ह अस जगत अनूपा। एक एकते आगर रूपा॥
कै मन गर्व न छाजा काहू। चांदघटा और लाग्यो राहू॥
लोन बिलोन तहां को कहै। लोनी सोइ कंत जेहि चहै॥
काहि पूँछ सिंहलकी नारी। दिनहिंनपूजैनिशि आँधियारी॥
कनकै सुगन्ध सु तोहिंकी कायाँ। जहां माथ का बरणों पाया॥

दो० गढ़ी सुसोने सोंधी, भरे सो रूपे भाग।
सुनत रोष भइ रानी, हिये लोन असलाग॥

जो यह सुआ मँदिरमहँ अहै। कोन होय राजा सों कहै॥
सुनि राजा पुनि होय बियोगी। छांड़ै राज चलै होय योगी॥
विषराखे नहिं होत अँगूरू। शब्द न दे बहुर हम चूरू॥
धाँयँ दामिनी बेगि हँकारी। वहसौंपाहिय रिसनसँभारी॥
देखोयहसोठाँ है मुंडचालौं। भयो न ताकर जाकर पाला॥
मुखकी आनि पेटबस आना। तेहि अवगुण दसहाटबिकाना॥

चुनोटी १ आवाज़ २ खूबसूरत ३–५–१६ निगाह ४ सच ६ तोता ७ क़सम ८ बराबर ९ देखना १० तालाब ११ दुनियां १२ बेमिसाल १३ ग़रूर १४ खूबसूरत या बदसूरत १५ खाविन्द १७ राति १८—२१ सोना १९ बदन २० गुस्सा २१ दिल २२–२९ दुखी २३ आवाज़ २४ लौंड़ी २५ बिजुली २६ जल्द २७ बोलाया २८ तोता ३० बदराह ३१॥

पंख न राखी होय कुभाखी । लेतहँ मारि जहां नहिं साखी[1] ॥

दो० जेहि दिनका मैं डरतहौं, रयनि[2] छिपानो सूर[3] ।
सो लैदे कमलै[4] कहँ, मोकहँ होय मयूर[5] ॥

धाय[6] सुआ ले मारै गई । समुझि ज्ञान हिरदे[7] मत भई ॥
सुआ सुराजा करि बिशरामे[8] । मारन जाय चहै जेहि स्वामे[9] ॥
यह पण्डित खण्डित बैरागू । दोष[10] ताहि जेहि सूझि न आगू ॥
जो तिरियों[11] के काज न जाना । परे धोख पाछे पछताना ॥
नागमती नागिन बुधि[12] ताऊ । सुआ मयूर[13] होय नहिं काऊ ॥
जो नहिं कंत[14] की आयसु[15] माहां । कौन भरोस नारि[16] की बाहां ॥
मगँ[17] यहि खोज होय तस आय । तुरी[18] रोग हरि[19] माथे जाय ॥

दो० दुइ सो छिपाये ना छिपे, इक हत्या अरु पाप ।
अन्तहि करहिं बिनाश यह, मैं साखी दै आप ॥

राखा सुआ धाय मति साजा । भयो खोज तस आयो राजा ॥
रानी उतर[20] मानें सों दीन्हा । पण्डित सुआ मँजारी[21] लीन्हा ॥
मैं पूंछयो सिंहल पद्मिनी । उतर[22] दीन्ह तुम्हको नागिनी ॥
का तोर पुरुष रैयनि[24] कर राऊ । उलुन जानि दिवस[25] कर भाऊ ॥
बैज सदिन तू निशि[26] अँधियारी । जहां बसन्त करील कोवारी[27] ॥
का वह पंखि[28] कूट[29] मुहँ कूटे । अस बड़बोल जीभ मुख छोटे ॥
ज़हर चुवै जो जो कहि बाता । अस हत्यार लिये मुख राता[30] ॥

दो० माथे नहिं बैसारी[31], जो शठ सुआ सलोन[32] ।

गवाह १ राति २-२४-२६ सूर्य ३ पद्मावति ४ मोर ५-१३ लौंडी ६-२० दिल ७ आराम ८ मालिक ९ पाप १० औरत ११-१६ अक़्ल १२ खाविन्द १४ हुक्म १५ शायद १७ घोड़ा १८ बन्दर १९ जवाब गरूर से २१ बिल्ली २२ जवाब २३ दिन २५ बाग़ीचा २७ उड़ने वाले जानवर २८ ज़हर २९ लाल ३० बैठालना ३१ खूबसूरत ३२ ॥

सत कहि सती सँवारै सरा। आगलाय चहुँदिशि सतजरा॥
दुइजग तरा सत्य जें राखा। और पियार दीन्ह सतभाखा॥
सो सतछांड़ि जो धर्म बिनाशा। कामतिकीन्हहिये सतनाशा॥

दो० तुम सयान औ पण्डित, असत न भाषो काउ।
सत्य कहो मोसों वह, काकर अपनाउँ॥

सत्य कहत राजा जिव जाउ। पै मुखअसत न भाषौं काउ॥
हौं लिय सत्य निसरौं यहिंते। सिंहलद्वीप राजघर जेहिंते॥
पद्मावत राजा की बारी। पद्मगन्ध शशि दईसँवारी॥
शशि मुख अंग मलयगिरि रानी। कनक सुगन्धहि द्वादश बानी॥
है पद्मिन जो सिंहलमाहां। सुगंध स्वरूपसो वहकी छाहां॥
हीरामन हौं तिहके परेवा। कांठा फूटि करत तेहि सेवा॥
औ पायों मानुष की भाखा। नाहीं तो पंख मूठभर पांखा॥

दो० जबलहिं जियों रातदिन सँवरों, मरों वही लै नाउँ।
मुखरातौ तनहरिहर कीन्हा, दुहू जगतै लैजाउँ॥

हीरामन जो कमल बखानो। सुनि राजा होय भँवरभुलाना॥
आगे आव पंख उजियारे। कहै सुदीप पतंग किय मारे॥
रहा जो कनक सुवासके ठाँउ। कस न होय हीरामन नाउँ॥
को राजा कस दीप अतंगू। जेहिरे सुनत मन भयो पतंगू॥
सुनिसुसमुद्रचख भये कलकला। कमलवाहिभँवरहोय मिला॥
कहौसुगंधधनि कसनिरमली। भाअलि संगकिअबहींकली॥

चारोंतरफ़ १ दोनों जहान २ बोली ३ नाश ४ दिल ५ झूंठ ६–८ क़सूर ७ लड़की ९ कमलकी खुशबू १० चांद ११–१२ बदन १३ चन्दन १४ सोना १५–२४ ख़ालिस १६ उड़ने वाले जानवर १७–१९–२३ आवाज़ १८ लाल २० दुनियां २१ बयान करना २२ जगह २५ आंख २६ नाग जानवर २७ पद्मावत २८ पाकसाफ़ २९ भँमर ३० ॥

औकहुतहां जोपद्मिनी लोनी[1]। घरघर सबके होहिं जस होनी॥
दो० सबै बखानैं तहां कर, कहत सो मोसों आव।
चहौं दीप वह देखा, सुनत उठा तस चाव॥
का राजा हौं बरनों तासू। सिंहलद्वीप अहै कैलासू॥
जो गा तहां भुलाना सोय। गये युगबीत न बहुराकोय॥
घर घर पद्मिन छत्तिस जाती। सदा बसंत दिवसैं अरु राती॥
जेहिं जेहिं बरनैं फूल फुलवारी। तेहिंतेहिं बरनं सुगन्धसुनारी॥
गन्ध्रपसेन तहां बड़ राजा। अप्सरँहिं माहिंइन्द्रासनसाजा॥
सो पद्मावत ताकी बाँरी। औ सब द्वीपमाहिं उजियारी॥
चहूंखण्ड के बर जो आहीं। गर्वहिं[10] राजा बोलहिं नाहीं॥
दो० उदित सूर[11] जसदेखी, चांद छिपै जेहि धूप।
ऐसे सबै जाहिं छिप, पद्मावत की रूप॥
सुनि रबि[12] नाउँ रतनैं[13] भा राती। पण्डित वही फेर कहु बाता॥
तुइ सुरङ्ग मूरति वह कही। चितमहँ लाग चित्र[15] ह्वैरही॥
जनु होय सूर्य्य आय मनवसे। सब घटपूर हिये[16] परगँसे॥
अबहूं सूर्य्य चांद वह छाया। जलबिन मीनं[18] रक्तबिन काया॥
करनैं[20] कशन भा प्रेमअँगूरू। जो शशि स्वर्ग चढ़ौं होय सूरू[23]॥
सहँसं किरान रूपमन भूला। जहँजहँदृष्टि[25] कमलजनुफूला॥
तहां भँवर जहँ कमलागन्धी। भइशशि[26] राहुकेर ऋणबन्धी॥
दो० तीन लोक खण्ड चौदह, सबै परे मोहिं सूझ।

खूबसूरत १ तारीफ़ २-३ दिन ४ रंग ५-६ इंद्रलोककी परी ७ लड़की ८ चारोंतरफ़ ९ गरूर १० सूर्य ११-१२-२३ राजारतनसेन १३ दीवाना १४ तसवीर १५ दिल १६ खिलना १७ मछली १८ बदन १९ नसनस में २० चांद २१-२६ आसमान २२ हज़ार ज्योति तथा पद्मावत २४ निगाह २५॥

कान टूटि जेहि आभरणं¹, का लै करब सुसोन ॥
राजा सुनि बियोगं² तसमाना। जैसेहियं³ बिक्रमं⁴ पछिताना ॥
वह हीरामन पण्डित सुवा। जो बोलै मुख अमृत चुवा ॥
पण्डित दुखखण्डित निरदोषा। पण्डित हिये⁵ परै नहिं धोखा ॥
पण्डित केर जीभ मुख शोधे। पण्डित बात न कहैं बियोधे⁶ ॥
पण्डित सुमति दै पन्थहि⁷ लावा। जोकुपंथ⁸ तेहिपण्डितनभावा॥
पण्डित राती बदन सरेखा। जो हत्यार रुहिरं⁹ पै देखा ॥
की प्रान घट आनहि मती¹⁰। की जलिछोहिं सुआ संग सती ॥
दो० जन जानहुकि ये अवगुण, मंदिर होय सुखराज।
आयसु¹¹ मेट कन्त¹² कै, काकर भय न अकाज ॥
चांद जैस धनि¹³ उजेर अहे। भा पिउरोष गहन अस गहे ॥
परमसुहाग निबाहन पारी। भांवै¹⁴ धाग सेवा जब हारी ॥
इतनक दोषं¹⁵ बीरज पिउ रूठा। जो पिउ आपन कहै सुझूठा॥
ऐसे गर्व नहिं भूलै कोई। जेहिं डर बहुत पियारो सोई॥
रानी आय धाय के पासा। सुआ भवा सेमर की आसा॥
पराप्रीति कंचन महँ सीसा। बिथरन मिलै श्यामपै दीसा॥
कहां सुनार पास जेहि जाऊँ। दे सुहाग करै इक ठाँऊँ ॥
दो० मैं पिय प्रीति भरोसे, गर्व कीन्ह जिव माहँ।
तेहिरिस हों परहेली²³, नगररोप की नाँहँ ॥
उतर²⁵ धाय²⁶ तब दीन्ह रिसाई। रिसआपहिंबुधि²⁷ अवरहिंखाई ॥

ज़ेवर १ दुख २ दिल ३-५ राजा विक्रमादित्य ४ बेहूदा ६ राह ७ बद राह ८ लालमुँह ९ खून १० नागमती रानी ११ हुक्म १२ खाविन्द १३-२०-२४ रानी १४ छोड़ना १५ क़सूर १६ गरूर १७ लौंड़ी १८-२६ सोना १९ जगह २१ अहंकार २२ दूर २३ जवाब २५ अक़्ल २७ ॥

मैं जो कहा रिस करहु न बालो । कोनगयोयहिरिसकरघालों ॥
बिरस बिरोध रसहि पै होई । रिस मारै तेहि मार न कोई ॥
तुइ रिस भरी न देखेसि आगू । रिसमहँ काकहँ भयो सुहागू ॥
जेहि रिस तेहिरस जोगनजाई । बेरस हरैंदि होय पीराई ॥
जेहिके रिस मिलाय रस दीजै । सो रस तज रिस कोहनकीजै ॥
कंतै सुहाग की पाई साधा । पावै सो जो वही चितबांधा ॥

दो० रहै जो पियकी आयसु[5], और वरती होय हीन ।
निरमल[6] देखै चांद जस, जन्म न होय मलीन[7] ॥

जुबाहार मन समुझी रानी । सुआ दीन्ह राजाकहँ आनी ॥
नागमती हौं गर्ब[8] न लीन्हा । कंत तुम्हार मर्म[9] पिय लीन्हा ॥
सेवा करै जो बारहमासा । अतनाकिअवगुणकरैनियासां[11] ॥
जो तुम देइ नाय के ग्रीवां[12] । छांड़हि नहिं बिन मारे जीवा ॥
मिलतहि महँ जन अहो निरारे[13] । तुमसो अहो अदेशे[14] पियारे ॥
मैं जाना तुम मोहे साहां । देखों ताक तो हौ सबमाहां ॥
का रानी का चेरी कोई । जेहिकहँ मयां[15] करै भल सोई ॥

दो० तुम सों कोई न जीता, हारा बिक्रम[16] भोज[17] ।
पहिले आपहिं खोयकर, करै तुम्हारा खोज ॥

राजै कहा सत्य कहु सुआ । बिनसत कस जस सेमरभुआ ॥
हो सुख रांती[18] कहो सत बाता । जहाँ सत्य तहँ धर्म सँघाता ॥
बांधी सृष्टि[19] अहै सतकेरी । लक्ष्मी अहै सत्य की चेरी ॥
सत्यजहाँसाहससिधि[20] पावा । औ सतबादी[21] पुरुष[22] कहावा ॥

औरत १ खराब २-११ हल्दी ३ खाविन्द ४-६ हुक्म ५ पाकसाफ़ ६ मैला ७ गरूर ८ भेद १० गरदन १२ अलग १३ सारा जहान १४ मुहब्बत १५ राजा बिक्रमाजीत १६ नामराजा १७ लाल १८ दुनियां १९ कामिल २० सच बोलनेवाला २१ मर्द २२ ॥

कहों लिलाट दुइजकी जोती। दुइजहिज्योतिकहांजगओती॥
सहस किरणिजोसूर्य्येदिपाये। देखि लिलाट सोउ छिपजाये॥
का शिर वरणों दिपै मयंकू। चांद कलंकी वह निकलंकू॥
औवचांद पुनि राहु गरासा। वह बिन राहु सदा परकासा॥
तेहिलिलाटपर तिलकजो वैठा। दुइजपास जानहुध्रुवं दीठा॥
कनकै पाट जनु वैठो राजा। सवै सिंगार अस्त्र लै साजा॥
वह आगे थिर रहैन कोऊ। वह काकहिं अस जुरा सँजोऊ॥

दो० खड्ग धनुष औ चक्रबान, दुइजग मारन नाउँ।
सुनिके परा मुरछके राजा, मोकहँ भये यकठाउँ॥

भौंहिं श्याम धनुष जनुताना। जासों हेर मारि बिष बाना॥
ओहि धनुष वह भौंहिं चढ़ा। कै हत्यार काल अस गढ़ा॥
ओहि धनुष कृष्ण पै अहा। ओही धनुष राघव कर गहा॥
ओहि धनुष रावण संहारा। ओहि धनुष कंसासुर मारा॥
ओहि धनुष वेधा हत राहू। मारा वही सहस्राबाहू॥
ओहि धनुषमें उपनहि चीन्हा। धानिकै आपपनचे जग कीन्हा॥
वहिभौंहहिशर कोइ न जीता। अप्सरहिं छिपी छिपी गोपिता॥

दो० भौंहँधनुष धनधानकै, दूसर सर न कराय।
गगनं धनुष उगवै, लाजहि सो छिपजाय॥

नयनंवान सरं पूचन कोऊ। जनुसमुद्र अस उलटहिं दोऊ॥
राती कमल करहिं अलभवां। गुंजहिं मातनकरहिंअपसवां॥

शिर १-४-६ दुनियां २-२४ हज़ार ३ तारीफ़ ५ चांद ६ ऐब ७ रोशन ८ नाम नखत १० सोना ११ हथियार १२ क़ायम १३ मिलना १४ सियाह १५ कमान १६ देखना १७ मौत १८ हाथ १९ मारडालना २० नामराजा २१ तीर अंदाज़ २२ निशाना २३ यान २५ इन्द्रलोककी परी २६ गोपी २७ पद्मावत तीर अंदाज़ २८ बराबर २९-३२ आसमान ३० आंख ३१ लाल ३३ भँवर ३४॥

उठहिं तुरंग लेहिं नहिं वागा। जानौं उलट गगन कहँलागा॥
पवन झकोरें देहिं हिलोरा। स्वर्ग लाय भुइँ लाइ बहोरा॥
जँग डोलै डोलत नयनाहाँ। उलट अोड़ार चहै पलमाहाँ॥
जबहिं फिराये कङ्गन वूरा। असवै भौंह भँवरकी जोरा॥
समुद्र हिलोर करहिं जनु भूले। खंजन लरहिं मिरगँ वन भूले॥

दो० भरे समुद्र अस नयनै दुइ, माणिक भरे तरङ्ग।
आवहिं तीर जाहिंफिर, काल भँवर तेहि सङ्ग॥

बरुनी का बरणौं इमि वनी। साधे बान जानु वहिं अनी॥
जुरी राम रावणकी सैनौं। बीच समुद्र भयें वह नयना॥
वारहि पार नयावर सांधे। जासों हेरें लाग विये वांधे॥
उन्ह बानहिं असकौन न मारा। वेध रहा सगरा संसारा॥
गगनें नखत जस जाहिं न गिने। वै सब बान वही कै हने॥
धरती बान वेध सब राखे। शाखा ठाढ़ वही सब शाखे॥
रोवँ रोवँ मानुष तन ठाढ़े। सूतहिं सूत वेधँ अस गाढ़े॥

दो० वरुनि बान जसे उपनहिं, वेधी रन वन ढंख।
सो जेहि तन सब रोवां, पंखहि तन सब पंख॥

नासकं खँग देवोंकेहि योगू। खँग खीनि वह वदन सँयोगू॥
नासकं देखिलजान्यो सुआ। शूकं आय वेसर होय उआ॥
सुआजोपियर हीरामनलाजा। और भावका वरणों राजा॥
सुआसुनाक कंठोर नवौरी। वह कोमलं तिलपुहुपं सँवारी॥

घोड़ा १ आसमान २-३-१८ दुनियां ४ आँख ५-८ ममोली ६ हिरन ७ जवाहिर ६ लहरि १० किनारा ११ पलक १२-२० तारीफ़ १३ इसतरह १४ फ़ौज १५-१६ देखना १७ सूराख १६ जानवर परिन्द २१ नाक २२-२७ तलवार २३-२५ बराबरी २४ पतली २६ नाम नखत २८ बयान करना २९ सख़्त ३० टेढ़ी ३१ मुलायम ३२ फूल ३३॥

प्रेम छोड़ि कुछ और नहिं, लुना जो देखौं मनबूझ ॥
प्रेम सुनत मनभूल न राजा। कठिनप्रेम शिरदियतेहिछाजा ॥
प्रेम फन्द जो पड़ा न छूटा। जीव दीन्ह पै फांद न छूटा ॥
गिरगिट[1] छन्द[2] धरै दुखतीता[3]। खनहो पीत[4] रौति खन सीता[5] ॥
जानिपुछार[6] जो भयबनबासी। रोवँरोवँपरी फांदनँ[7]कोआसी ॥
पांख फरेरा सोई फांदू। उड़ न सकहिं उरझै भये बांदू ॥
मेउँमेउँ निशि[8] दिन चिल्लाय। वही रोषँ[9] नागिन धरखाय ॥
पांडुकँ[10] सुआकण्ठवह चीन्हा। ज्यहिं गैं परा चाहि जिवदीन्हा ॥
दो० तीतर गयैं[11] जो फांद है, नितहि[12] पुकारैं दोष।
मुक्ति[13] हँकारैं[14] फांदगैं[15], मेले कित मारे पुनमोषै[16] ॥
राजा लीन्ह ऊबके श्वासा। ऐसे बोल नहिं बोल निरासौं[17] ॥
पहिल प्रेमहै कठिनँ[18] दुहेलौं[19]। दोजगँ तरा प्रेम जेहि खेला ॥
दुख भीतर प्रेम मधुँ[20] राखा। किंचन मरन चहै सो चाखा ॥
जेहिंनहिंशीशँ[22] प्रेमपंथ[23] लावा। सो पृथ्वी[24] महँ काहेक आवा ॥
अब मैं पीय प्रेमपंथ मेला। पायन ठेल राख कै चेला ॥
प्रेमबारसो[26] कहै जो देखा। जें न देखि का जानि बिशेखा ॥
तबलग दुख प्रीतम नहिं भेटौं[27]। मिलातोगाजरमकै[28] दुखमेटा ॥
दो० जस अनूप तुइ बरणी[29], नखशिख[30] बरणौं[31] शिंगार।
है मोहिं आश मिलन की, जो पुरवै करतार[32] ॥

रंग १ गर्म २ पीला ३ लाल ४ सफ़ेद ५ मोर ६ प्रेमका फन्दा ७ रात ८ ग़ुस्सा ९ कुमरी १० गरदन ११–१५ हमेशा १२ चुप १३ बोलाना १४ नजात १६ नाउम्मेद १७ मुश्किल १८ भारी १९ दोनों जहान २० शराब २१ शिर २२–२५ राह २३–२५ ज़मीन २४ दरवाज़ा २६ मुलाक़ात २७ बहुत दिन २८ बयान करना २९ नाख़ून से शिरकी चोटी तक ३० तारीफ़ ३१ ईश्वर ३२ ॥

खण्ड सातवां शृंगारखण्ड पद्मावत॥

का शिंगार वह बरणौं राजा। वहक शिंगार वही पै छाजा॥
प्रथम[1] शीश[2] कस्तूरी[3] केशा[4]। बलि[5] बासुकि[6] को और नरेशा[7]॥
भँवर केश[8] वह मालति रानी। बिषहर[9] लरहिं लेहिं अरघानी॥
बेनी[12] छोरि झार जो बारा। स्वर्ग[13] पताल होय अँधियारा॥
कोमल[14] कुटिल[15] केश[16] नगकारे। लहरे भरी भुअंग[17] बैसारे[18]॥
बेधी जानि मलयगिरि[19] बासा। शीश[20] चढ़ी लोटहिं चहुँ पासा॥
घुंघुरवार अलकैं[21] बिष[22] भरे। संकर[23] प्रेम ज्यों गैयें परे॥
दो० असफँदवार केश[25] वै राजा, पराशीश[26] गें[27] फांद।
अष्टोकुलीनाग[28] सब डरके, भये केश के बांदे[30]॥
बरनौं[31] मांग शीश[32] उपराहीं। सेंदुर अबै चढ़ा जेहि नाहीं॥
बिन सेंदुर अस जानहिं दिया। उजेर पंथ[33] रैयनि[34] महँ किया॥
कंचन[35] रेख कसौटी कसी। जनु घन महँ दामिनि[36] परगँसी[37]॥
सूर्य्यकिरण जनु गगन[38] बिशेखी। यमुना मांझ सरस्वती देखी॥
खांड़े धार रुधिर[39] जनु भरा। करवट[40] ले बेनी[41] पर धरा॥
तेहि पर पूर धरे जो मोती। यमुन मांझ गङ्गा की सोती॥
करवट[42] तपा[43] लीन्ह होय चूरू। मगँ[44] सुरुधिर[45] ले देइ सेंदूरू॥
दो० कनक[46] द्वादश[47] बानि होय, चही सुहाग वह मांग।
सेवा करहिं नखत[48] शशि[49] तरई, उवै गगन[50] तस मांग॥

तारीफ़ १ पहिले २ शिर ३-२०-२६-३२ मुश्क ४ बाल ५-६-१६-२१-२५-२९ न्योछावर ६ नामसांप ७ आदमी ८ सांप १०-१७-१८ खुशबू ११ चोटी १२-४१ आसमान १३-३८-५० मुलायम १४ पेचदार १५ चन्दन १९ ज़हर २२ ज़ंजीर २३ गरदन २४-२७ नाम सांप २८ गुलाम ३० तारीफ़ ३१ राह ३३ रात ३४ सोना ३५-४६ बिजुली ३६ चमक ३७ खून ३९-४५ लोटके ४० नाम जगह जहाँ शिर कटाते हैं ४२ फ़क़ीर ४३ शायद ४४ ख़ालिस ४७ चांद ४८ नखत ४९॥

पुहुपं सुगन्ध करहि सबआसा । मगँ हरकाथलेइ हमपासा ॥
अधरं दशनं परनासकं शोभा । दाड़िमं देखिसुआमनलोभा ॥
खंजनं वेहिदिशं केलिकराहीं । बेहिंवहरसकोपावकोउनाहीं ॥
दो० देखिअमीरसं आधरन्हं, भयोनासकौ कीर[13] ।
पवनं[14] बास पहुँचावे, आश्रमछाड़न तीर[15] ॥
अधरं[16] सुरंग अमीरस भरे । बिम्बं[17] सुरंग लाज बन फरे ॥
फूल दुपहरी जानहु राता[18] । फूल झरहिं जो जो कहिबाता ॥
हीरा लीन्ह सुविद्रुमं[19] धारा । बिहँसंत[20] जगतं[21] होय उजियारा ॥
भइ मँजीठ[22] बातहिं रँगलागें । कुसुमरंग थिरं[23] रहैन आगें ॥
वहिके अधरं[24] अमी[25] भरराखे । अबहिं अछूतिन काहू चाखे ॥
मुख तंबोलं[26] धार नहिं रसा । केहि मुखयोग सो अमृतवसा ॥
राता जगत देखरँगरांती । रुधिरं[28] भरी आछहिं बिहँसांती ॥
दो० अमीअंधर असराजा, सब जगं[31] आस करेइ ।
केहिका कमल बिकासा[30], को मधुकरं[33] रसलेइ ॥
दशनं[34] चौक बैठे जनु हीरा । औविचविचरँगश्यामं[35] गँभीरा ॥
जनु भादौंनिशि[36] दामिनि[37] दीसी[38] । चमकउठैतसतहींबतीसी ॥
वहसो ज्योति हीरा उपराहीं । हीरा वेहिसों तेहि परछाहीं ॥
जेहिदिनदशनं ज्योतिनिरमंई[39] । बहुतें ज्योति ज्योतिदाभई ॥
रवि[41] शशि[42]नखतदीन्हवहज्योती । रतनं[43] पदारथमाणिकमोती ॥
जेहिंतेहिंविहँसि[44] सभामहँहँसी । तहँतहँछिटकज्योतिपरकँसी ॥

फूल १ शायद २ बोलना ३ हौंठ ४–११–१६–२४–३० दांत ५–३४–३१ नाक ६–१२ अनार ७ ममोला ८ तरफ़ ६ अमृत १०–२५ तोता १२ हवा १४ किनारा १५ कुन्दरू १७ लाल १८–२७ मूंगा १६ हँसना २०–२६–४४ दुनियां २१–३१ लाख २२ क़ायम २३ पान २६ खून २८ खिलना ३२ भँवरा ३३ बहुत काला ३५ रात ३६ बिजुली ३७ देख पड़ना ३८ बनाई गई ४० सूर्य ४१ चांद ४२ जवाहिरात ४३ उजियारा ४५ ॥

दामिनि[१] चमकन सरवरि[२] पूजा। पुनिवहज्योतिहोयकोदूजा॥

दो० वेहँसत हँसत दशन[३] तस, चमकी पाहन[४] उठीझुके[५]।
दाड़िम[६] सर[७] जो नकैसका, फाट्यो हिया दरके[८]॥

रसना[९] कहौं जो कहि रसबाता। अमृत बचन सुनत मनराता॥
हरीशिशिर[१०] चातक[११] कोकिला। बीनवंशिवेबैन[१२] जेहि मिला॥
चातक[१३] कोकिलरसहिंजोनाहीं। सुनिवै वयन[१४] लाजछिपजाहीं॥
भरे प्रेम मधु[१४] बोलहिं बोला। सुने सो मातु घूमके डोला॥
चतुर[१५] वेदमति सब वह पाहां। ऋगयजुसामअथर्वणमाहां॥
इकइक बोल अर्थ जो गुना। इन्द्र मोहि ब्रह्मा शिरधुना॥
भागवतभ्रंथ[१६] पिंगलऔगीता। अर्थजोजेहिपण्डितनहिंजीता॥

दो० भावसँती औ व्याकरन, सुनी पिंगल पाठ पुराण।
वेद भेदसों बात कहि, जनुलागें हिये[१८] बाण॥

पुनि बरनौं का सुरँग कपोलौं। इक नारँगके दो किये मोला॥
पुहुप[२१] पंगरस अमृतसांधे। कै अस सुरँग खरोरा[२२] बांधे॥
तेहि कपोल[२३] बायें तिल परा। जो तिल देखि सो तिलतिलजरा॥
जनु घुंघुंची वह तिलकरमुँहा। बिरहबान सांधो सामुहा॥
अगिनबान तिल जानहु सूझा। इककटाक्ष लाख दुइजूझा॥
सो तिलकाल मेट नहिं गयो। अब वह कालकाल जग भयो॥
देखत नयन[२५] परी परछाहीं। तेहिते रात[२६] श्याम[२७] उपराहीं॥

दो० सोतिल देखि कपोल पर, गगन[२९] रहाध्रुव गाड़।

बिजुली १ बराबर २ दांत ३ पत्थर ४ लूक ५ अनार ६ बराबरी ७ जीभ ८ दूरकरना जरदीका ९ पपीहा १०-१२ आवाज़ ११-१३ शराब १४ चार १५ महाभारत पुराण १६ पोथी १७ दिल १८ बयान करना १९ गाल २०-२३-२९ फूल २१ लड्डू २२ कालामुँह २४ दुनियां २५ आंख २६ लाल २७ सियाह २८ आसमान ३० नामनखत ३१॥

खनहि उठै खन बूड़ै, डोलै नहिं तिलछाड़ ॥

श्रवण सीप दुइ दीप सँवारे । कुण्डल कनक रचे उजियारे ॥
मणिकुण्डलचमकहिंअतिलोने । जनुकौंधालवकहिंदुइकोने ॥
दोउदिशचांदसूर्य्यचमकाहीं । नखतहँभरीनिरखिं नाहिंजाहीं ॥
तेहिपर खूंट दीप दुइ बारे । दुइ ध्रुव दुहूं खूंट वैसारे ॥
पहिरे खूंटी सिंहलद्वीपी । जानहु भरे कहजही सीपी ॥
खन खन जाहि चीर शिरगहा । कांपतबीज घौलं दिशि रहा ॥
डरहिं देव लोक सिंहला । पड़ैन बीज टूटि तेहि कला ॥

दो० करहिं नखत सब सेवा, श्रवण दीन्ह अस दोउ ।
चांद सूर्य्य अस कहैं, और जगतें का कोउ ॥

बरणोंग्रीव कोंव कीरीसा । कंचन तारजनुलाग्योसीसा ॥
कुंदे फेर जानुगेंय गाढ़े । हरी पुछार ठगे जनु ठाढ़े ॥
जनु हिये काढ़ि परेवा ठाढ़ा । तेहिते अधिक भावगेये बाढ़ा ॥
चाक चढ़ाय सांच जनु कीन्हा । बाग तुरंग जानगाहिलीन्हा ॥
गये मयूर तमचोर जोहारा । उन्हें पुकारे सांझ सकारा ॥
पुनितेहिठाउँपरी त्रिय रेखा । घूंट जो पीक लीक तसदेखा ॥
धनवहग्रीव दीन्हविधि भाउ । वहिंकाकहिं लेकरे मिराउ ॥

दो० कण्ठश्री मुक्तावनमाला, सोहै अभरन ग्रीव ।
की होय हारकण्ठ लागे, कै तप साधा जीव ॥

कनक दण्ड दुइ भुजा कलाई । जानहु फेर कँडेरे भाई ॥

कान १–१२ सोना २–१८–२७ खूबसूरत ३ देखना ४ वाली ५–७ नाम नखत ८ खेंचना ८ बिजुली ६–१२ सफ़ेद १० तरफ़ ११ दुनियां १४ तारीफ़ १५ गरदन १६–२०–२५–३०–३६ कलंगी १७ खरादी १६–३८ मोर २१–२७ दिल २२ कबूतर २३ बहुत २४ घोड़ा २६ मुरगा २८ जगह २६ ईश्वर ३१ मुलाक़ात ३२ नाम ज़ेवर ३३ मोतीका हार ३४ ज़ेवर ३५ ॥

कदल गाभकी जानौ जोरी । औ राती वह कमल हथोरी ॥
जानौ रक्त[1] हथोरी बूड़ी । रवि[2] प्रभातें[3] तातें वै जूड़ी ॥
हियाँकाढ़ि जनु लीन्हेसि हाथा । रुधिरैं भरी अँगुरी तुहिसाथा ॥
औ पहिरें नगजड़ी अँगूठी । जग[8] विनजीव जीव वह मूठी ॥
बाहूं कंगन ताड़ सलोने[10] । डोलत वाहु भावगत लोने[11] ॥
जानो गति वेरन[12] देखराय । वाहुँ डुलाय जीव लेजाय ॥

दो० भुजउपमा[13] पौ[14] नारी[15] नपूजी, खीन[16] भई तेहि चिन्त ।
ठाँवहिं ठावँ वेध[18] भइ हृदय, ऊव सांसले निन्त ॥

हियो[21] थार कुच[22] कंचन[23] लाडू । कनक[24] कचूर उठे कै चाडू ॥
बेधे[25] भँवर कंट[26] केतकी । चाहैं वेध[27] कीन्ह कंचुकी[28] ॥
कुन्दन बेल साज जनु गूंदे[29] । अमृत भरे रतन दुइ मूंदे ॥
यौवन बाण लेहिं नहिं वागा । चाहहिं हुलसहिये[30] में लागा ॥
अगिन वाण दुइ जानों सांधे । जग[31] वेधे जो होहिं न वांधे ॥
उतंग जंभीर[32] होय रखवारी । छुइको सकै राजाकी वाँरी[33] ॥
दाड़िम[34] दाखें[35] फरी अव चाखा । असनारँग वेहिका कहिराखा ॥

दो० राजा बहुत सुये तप, लाय लाय भुइँ माथ ।
काहूं छूय न पारी, गये मरोरत हाथ ॥

पेट पतरि जनु चन्दन लावा । कहकहकेसरैं[36] वरणँसुहावा ॥
क्षीर[37] अहार न कर सुकमारा । पान फूल लेरहै अधारा ॥
श्यामभुअंगिनि[38] रोमावली । नाभी निकस कमलकहँ चली ॥

लाल १ लोहू २-७ सूर्य ३ भोर ४ गर्म ५ दिल ६-२०-३० दुनियां ८-३१ नामज़ेवर ९ खूबसूरत १०-११ तवायफ़ १२ बराबरी १३-१५ कमलकी नाल १४ पतली १६ शोच १७ जगह १८ छेद १९-२५-२७ छाती २१-२२ सोना २३-२४ नोक छाती के दएडो की २६ आँगिया २८ पोशाक २९ नीवू ३२ बेटी ३३ अनार ३४ अंगूर ३५ खुशबू ३६ रंग ३७ दूध ३८ कालीनागिनि ३९ ॥

आय दोहों नारँग बिच भये । देखि मयूर ठमक रहिगये ॥
आय जुरी भँवरन्न की पांती । चन्दन गाभ बास की माती ॥
गइ कालिन्दी[१] बिरह सताई । चलपराग अरबेल बिचआई ॥
नाभी कुंड सो बानारसी । सौंह[३] को होय मीचं[४] तेहिलिखी ॥
दो० शिरकरवँटतनकाशी लैलै, बहुतसधिक तेहिआश ।
बहुत धूम घुँट मैं देखी, उतर न देइ निराँश ॥
ओंटी पीट लीन्ह वे पाछें । जनु पहिर चली अप्सरा काछें ॥
मलेयागिरि की पीठि सँवारे । बेनी[११] नाग चढ़ा जनु कारे ॥
लहरें देत पीठ जनु चढ़ा । चीर उढ़ावा केंचुल मढ़ा ॥
वेहिंकाकहँअसबेनी[१२] कीन्हीं ।चन्दनवास भुअंगहि[१३] लीन्हीं ॥
कृष्णकरा चढ़ा वह माथे । तब सो छूटि अब छूटन नाथे ॥
कारे कमल गहे[१५] मुख देखा । शशि[१६] पीछे जनु राहु विशेखा ॥
को देखै पावै वह नागू । सो देखै माथे मन भागू ॥
दो० पन्नग[१७] जो पंकज[१८] मुखगहे, खंजन[२०] तेहिशिर बैठ ।
छात सिंहासन राजधन, ताकहँ होइ जो दीठ ॥
लंक[२१] खीन[२२] असआहिनकाहू । केहरि[२३] कहूँन वह सरताहू ॥
बसा[२५] लंकपखनीगजभीनी[२६] । तेहितेअधिकलंकवहखीनी[२९] ॥
परहँस[३०] पिवर भये तहँ बसा । लिये डंख मानुष कहँ डसा ॥
मानहुँ नलिन[३२] खंड दुइ भये । दुहँबिच लंक[३३] तार रहिगये ॥
हिये[३४] सोमूड़परचलीवहनागा ।पैगदेत कितसहसँके[३५] लागा ॥

यमुना १ नाममुक़ाम २ बराबर ३ मौत ४ धुआं ५ जवाब ६ नाउम्मेद ७ इन्द्रपरी ८ धोती ९ चन्दन १० चोटी ११–१२ काला नाग १३–१४ पकड़ना १५–१६ चांद १६ सांप १७ कमल १८ ममोला २० कमर २१–२५–२८–३३ पतली २२ चीता २३ भँवरा २४–३१ बहुत पतली २६ बहुत २७ बारीक २९ डाह ३० कोकाबेली ३२ छाती ३४ डर ३५ ॥

छुद्रघण्ट[1] मोहहिं नरराजा। इन्द्र अखाड़ आय जनु बाजा[2]॥
नाभ बीन गहे[3] कामिनी। लाकहिं सबै राग रागिनी॥
दो० सिंहै[4] नजीता लंक[5] शर, हार लीन्ह बनवास।
तेहि रिस रक्तपिये मानुष, खाय मारके मांस॥
नाभी कुण्डसो मलयसमीरू[6]। समुद्र भँवर जस भवै गँभीरू[7]॥
बहुते भँवर बौंडर भये। पहुँच न सके स्वर्ग[8] कहँ गये॥
चन्दनमांझ कुरंगिन खोजू[9]। वेहिंको पाव को राजा भोजू॥
को वह लागहि वंचल सींझा। काकहिं लिखी ऐसको रीझा॥
सोहै कमल सुगन्ध शरीरू। समुद्र लहर सोहै तन चीरू[10]॥
झूलहि रतन पाटके झोपां। साज मदन[11] वहिकाकहँ कोपा॥
अबहिं सो अहै कमलकी करी। नजनों कौन भँवर कहँ धरी॥
दो० बेधरही जग बासना, निरमल[12] मेद[13] सुगन्ध।
तेहि अरघान भँवर सब लुब्धे, तजैं[14]हिं न दियेबन्ध॥
बरणों[15] तम्ब[16] लंक[17] की शोभा। औ गज[18] गवनदेख सबलोभा॥
जुरे जंघ शोभा अति पाये। केला खंभ फेर जनु लाये॥
कमल चरण अतिरात[19] विशेखी। रहै पाट[20] पर भूमि[21] नदेखी॥
देवता हाथ हाथ पगलेहीं[22]। जहँ पगपरे शीश[23] तहँ देहीं॥
माथे भागन कोउ अस पावा। चरणकमल लै शीशैं[24] चढ़ावा॥
चौरा चांद सूर्य्य उजियारा। पायल बीच करहिं झनकारा॥
अननट बिछिया नखत[25] तराईं। पहुँच सकै को पांइन ताईं॥

करधनी १ नामबाजा २ पकड़ेहुये ३ चीता ४ कमर ५ चन्दनकी हवा ६ गहिरा ७ आसमान ८ हरिनके पांवका निशान ९ लहँगा १० कामदेव ११ पाकसाफ़ १२ केसर १३ छोड़ना १४ तारीफ़ करना १५ चूतर १६ कमर १७ हाथी १८ बहुत लाल १९ तख़्त २० ज़मीन २१ क़दम २२ शिर २३-२४ छोटे नखत २५॥

दो० बरन शिंगार न जान्यो, नखशिख जैस अभोग।
तस जग कछू न पायों, उपमा देव वह योग॥
सुनिके राजा गयो मुरझाय। जानो लहर सूर्य्य के पाय॥
प्रेम घाव दुख जानि न कोई। जेहि लागै जानै पै सोई॥
परा सुप्रेम समुद्र अपारा। लहरहिं लहर होय बिसभारा[1]॥
बिरह भँवर होय भांवर देय। खनखन जीव हिलोरहिं लेय॥
कितहिं निसांसँ बूड़ि जिवजाइ। कितहि उठै निसांसै बौराइ॥
कितहिं पीत[2] खन हो मुखसेता[3]। कितहिंचेत खनहोयअचेता॥
कठिन मरन ते प्रेम व्यवस्था। नान जिये न जाय अवस्था॥
दो० जनु लैं हारहिंलीन्ह जिव, हरहिं त्रासहि ताहि।
इतना बोल न आव मुख, करैं त्राहि त्राहि॥
जहँलग कुटुँब लोग औ नेगी। राजारायआय सब बेगी[12]॥
ज्ञानवन्त गुणी कारणी आये। ओझा बैद्य सयान बुलाये॥
चरचहिं चेष्टा[13] परखहिं नारी। नेरे[14] नाहिं औषध तहिं बारी॥
है राजा लक्ष्मण के करा। शक्ती बान मोह है परा॥
तहँ सो राम हनुमन्त बलदौरी। को लै आव सजीवनमूरी॥
बिनय करहिं जेतो गढ़पती[15]। का जीव कीन्ह कौन मतमती॥
कहोसो पियर काहि पुनि खांगा। समुदसुमेरु औरतुमहिंमांगा॥
दो० धावन[16] तहां पठावैं, देहिं लाख दशरोक[17]।
होयसो बेल जेहिबारी, आनहिं सबै बरोक[18]॥
जो भा चेत उठा बैरागा। बावर जनो सोय उठि जागा॥

दुनियां १ मिसाल २ बेकरार ३ बेदम ४-५ पीला ६ सफ़ेद ७ होश ८ बेहोश ६ हाल १० दुखदेना ११ जल्द १२-१६ चेहरेकी हालत १३ नजदीक १४ मानिन्द १५ राजा १६ दूत १७ नक़द १८॥

आय जगत[1] बालक जस रोवा । उठा रोय हा ज्ञान सो खोवा ॥
हौं तो अहा अमर[2] पुर जहां । यहां मरन पुर आयों कहां ॥
कै उपकार[3] मरन पर कीन्हा । सुंकि जगाय जीव हर लीन्हा ॥
सोवत रहा जहां सुख साखा । कस न तहां सोवत विधि राखा ॥
अब जिव वहां यहां तन सूना । कबलग रह यहि प्रान बहूना ॥
जो जिव घटे कालके हाथा । कठिन नेक पै जीवन साथा ॥

दो० उठहिं हाथ तन सरवर, हियाँ कमल तेहि माहिं ।
नयनहिं जानहु नेरे, कर पहुँचत अवगाहिं ॥

सबहिं कहा मन समझो राजा । काल[12] सेते कुछ जूझ[13] न छाजा ॥
तासों जूझ[14] जात जो जीता । जात न कृष्ण तजें हिं गोपिता ॥
उनहिं नेह[16] काहू से कीजे । नाउँ मेटि काहे जिव दीजे ॥
पहिलहिं सुख नेह[17] जब जोरा । पुनि हो कठिन[18] निबाहत ओरा ॥
रहत हाथ तन जैसे शरीरू[19] । पहुँच न जाय परातस फेरू ॥
गगन[20] दृष्टि सो जाई पहुँचा । प्रेम अदृष्टि गगन[23] ते ऊँचा ॥
ध्रुव[24] ते ऊँच प्रेम ध्रुव[25] उआ । शिर दै पाउँ दिये सो छुआ ॥

दो० तुम राजा औ सुखिया, करो राजसुख भोग ।
यह रे पंथ[26] सो पहुँचै, सहै जो दुःख वियोग[27] ॥

सुवैं कहा मन समझो राजा । करत प्रीति कठिन[28] है काजा ॥
तुमहिं अबहिं जेइ घर पोई । कमलन भेटहिं[29] भेटहिं कोई[30] ॥
जानहि भँवर जो तेहि पंथ लूटै । जीव देहि औ दिये न छूटै ॥

दुनियां १ वैकुंठ २ अहसान ३ चुपचाप ४ ईश्वर ५ अलग ६ तालाव ७ दिल ८ आंख ९ हाथ १० गहरा ११ मौत १२ लड़ाई १३-१४ छोड़ना १५ मुहव्वत १६-१७ मुश्किल १८-२८ बदन १९ आसमान २०-२३ निगाह २१ अदेख २२ नाम नखत २४-२५ राह २६-३१ विरह २७ मुलाक़ात २९ कोकावेली ३० ॥

कठिनें[1] आह सिंहलकर साजू। पाई नाहिं जो भौंके साजू ॥
वह पंथै जाय जो होय उदासी। योगी यती औ तपी संन्यासी॥
भोग किये पायत वह भोगू। तर्जे सो भोग कोइ करत न योगू॥
तुम राजा चाहो सुख पावा। योगहि भोग करत नहिं आवा ॥

दो० साधन सिद्धन पाई, जौलौ साधि न तप्प।
सोपै जानहिं बापुरो, शीशँ जो करनहिं कल्प ॥

का भाखे कहानी कथा। निकसे घीव न बिन दधि मथा ॥
जो लह आप हेराय न कोई। तौलहि हेरत पाव न सोई ॥
प्रेम पहाड़ कठिनें[11] बिधि[12] गढ़ा। सोपै जाय शीशँ[13] सों चढ़ा ॥
पंथ[14] सूरि नगर उठा अँगूरू। चोर चढ़ाकै चढ़ि मंसूरू[15] ॥
तुइ राजा का पहिरेसि कंथा[16]। तोरेघरहिमांझ[17] दश[18] पंथा ॥
कामक्रोध[19] तृष्णा मनसाया। पांचौ चोर न छांड़हिं काया ॥
नव सेंधै[22] गढ़[23] के मँझियारी[24]। घरमूसहिं निशि[25] केउ जियारा॥

दो० अबहूँ जागि अयानी[26], होत आवनिशि[27] भोर।
पुनि कुछ हाथ न लागै, मूसजायँ जब चोर ॥

सुनि सो बात राजासन जागा। पलकन मारि टकटका लागा॥
नयनँहिं ढुरहिं मोति औ मूँगा। जसगुड़ खाय रहाहै गूँगा ॥
हियँ की ज्योति दीपवह सूझा। यह जो दीप अँधेरा बूझा ॥
उलटि दृष्टि[30] माया सो रूठी। पलक न फिरी जानकै झूठी॥
जो पै नाहीं इस्थिर दसा। जग उजारि का कीजे वसा॥

मुश्किल १-११ लड़ाई २ राह ३ क़िस्मफ़क़ीर ४-५-६-७ छोड़ना ८ फ़क़ीर ९-१५ शिर १०-१३ ईश्वर १२ राहसूलीकी १४ गुदड़ी १६ बीच १७ राह तथा नाक कान आँख मुहँ गुदा लिंग १८ गुस्सा १९ हवस २० बदन २१ सूराख २२ क़िला २३ दरमियान २४ रात २५-२७ नादान २६ आंख २८ दिल २९ नज़र ३० ॥

गुरू बिरह चिनगी पै मेला । जो सुलगाय लिये सो चेला ॥
अबकी पतङ्ग भृङ्ग की करा । भँवर होउँ जेहि कारन जरा ॥
दो० फूल फूल फिर पूंछौं, जो पूंछौं वह केतै ।
तनन्यौछावर कै मिलौं, ज्यों मधुकर जिउदेत ॥
हिन्दू मीत बहुत समझावा । मान न राजा गवन भुलावा ॥
उपजै प्रेमपीर जेहि आये । परबुधि होत अधिक सोआये ॥
अमृत बात कहत बिष जाना । प्रेमको वचन मीठ कै माना ॥
जो वह बिषे मारिकै खाय । पूंछौ ताही प्रेम मिठाय ॥
पूंछौ बात भरथरिहि जाय । अमृतराज तजो विषखाय ॥
औ महेश[12] बड़ सिद्ध कहावा । उनहूँ विषे कण्ठ पै लावा ॥
होतउयो रबि[13] किरण निकासा । हनुमन्तहोय को देइसुआसा ॥
दो० तुमसब सिद्धि मनावहु, होय गणेश सिधिलेहु ।
चेला कौन चलावै, तुलै गुरू जेहि भेहु ॥
तजो राज राजा भा योगी । करै किंकरी तन कियो वियोगी[16] ॥
तन बिसभँर मनबावरलटा । उरझा प्रेम परी शिर जटा ॥
चन्द्रबदन औ चन्दनदेहा । भस्म चढ़ाय कीन्ह तनखेहा ॥
मेखल सिंहे चक्र ढिंढारे । लीन्ह हाथ तिरशूल सँभारे ॥
कंथा पहिर दण्ड कर गहा । सिद्धि[22] होयकहँ गोरख कहा ॥
मुद्रा श्रवण कण्ठ जपमाला । करउहियां कांध सिंहछाला ॥
पांवर पायलीन्ह शिर छाता । खप्पर लीन्ह भेष कै राता ॥

परवाना १ नामकीड़ा २ मानिन्द ३ केतकी ४ भँवरा ५ दोस्त ६ नसीहत ७ बहुत ८ बात ९ राजाभरथरी १० छोड़ना ११–१४ महादेवजी १२ सूर्य १३ हाथ १५–२२ दुःखी १६ बेक़रार १७ मुँह १८ राख १९ मस्तहाथी २० गुदड़ी २१ पकड़ना २२ पूराहोना २४ नामफ़क़ीरकामिल २५ वाला २६ कान २७ गरदन २८ सुमिरनी २९ चीतेकीखाल ३० खड़ाऊँ ३१ सूरत ३२ लाल ३३ ॥

दो० चला भक्ति मांगने कहँ, साजकिया तप योग।
सिद्धिहोय पद्मावत पाये, हृदय[3] जबाकि बियोग[4] ॥

गणक[5] कहहिं करगवननआजू। दिनलै चलहिं होय सिध[6] काजू॥
प्रेमलुब्ध[7] दिन घड़ी न देखा। तब देखी जब होय सरेखा[8] ॥
जेहितन प्रेम कहां तेहि मासू। कायां रक्त न नयनहि आंसू॥
पण्डित भुलान न जानहिचालू। जीवलेत दिन पूँछ न कालू॥
सती कि बौरी पूंछै पांड़े। औ घर बैठि नसैं तैं भांड़े॥
मरिजो चलै गङ्गा गति लेइ। तेहि दिन कहां घड़ी को देइ॥
मैं घर वार कहां कर पावा। घरकायां पुनि अन्ते परावा॥

दो० होरे परवेरू पंखी, जेहि बन मोर निवाहि।
खेलचला तेहि वन कहँ, तुम अपने घरजाहि॥

चहुँदिशि[11] आनसो डौंड़ी फेरी। भइ कटकाई[13] राजा केरी॥
जानवन्त अहहि सकलै[14] दरकानो। सांभरलेहु दूरहै जाना॥
सिंहलद्वीप जायसब चाहा। मोल न पावब जहां बिसाहा॥
सबनिबहै पुनि आपन सांठी[16]। सांठी[17] बिनसोरहँ मुखमाठी॥
राजा चला साज कै योगू। साजो वेग[18] चलैं सबलोगू॥
गर्बजो चढ़ी तुरी[20] केपीठी। अबभुइँचलहुस्वर्ग सोडीठी[22]॥
मंत्री लीन्ह होहुसँग लागू। गुदरजाय सबहो यह आगू॥

दो० का निचिन्त[24] रे मनै, अपनी चिन्ता आछु।
लेह सजग[26] भा आगमन[27], पुनि पछतास न पाछ॥

कामिल १-२ दिल ३ दुःख ४ नजूमी ५ पूरा ६ दीवाना ७ होशियार ८ बदन ९-१० आख़िर ११ चारोंतरफ़ १२ फ़ौज १३ सब १४ अरकानदौलत १५ पूंजी १६-१७ जल्द १८ गरूर १९ घोड़ा २० आसमान २१ निगाह २२ सलाह २३ गाफ़िल २४ फ़िकिर २५ होशियार २६ पहिले २७ ॥

बिनवै रतनसेन की माया। माथेछात पाटे नितै पाया॥
बर्षहिंनवनिधि[4] लक्षपियारी। राजछांड़ि जन होहिं भिखारी॥
नितै चन्दन लागै जेहि देहा। सो तन देखि भरबअबसेहा॥
सब दिन रहे करत तुम भोगू। सो कैसे साधव तप योगू॥
कैसे धूप सहब बिन छाहां। कैसे नींद पड़ै भुइं माहां॥
कैसे ओढ़ब कांथर कंथां। कैसे पांय चलब भुइं पंथां॥
कैसे सहब खनहि खन भूखा। कैसे खाव करकटा सूखा॥

दो० राज पाट दर पुरुष सब, तुमहीं सों उजियार।
बैठि भोग रस माहिंके, नचल तेहि अँधियार॥

मोहिं यह लोभ सुनावन माया। काकर सुख काकर यह काया॥
योनियानें तन होइ यहछारी। माटी पोष मरै को भारा॥
का भूलों यहि चन्दन चोवा। वैरी जहां अंग के रोवा॥
हाथ पांय श्रवणें औ आंखी। ये सब भरहिं आय पुनि साखी॥
सूति[16] सूतितन बोलहिं दोखा। कहो कहँहो यह गति मोखा॥
जो भलहोत राज औ भोगू। गोपिचन्द नहिंसाधत योगू॥
उन्हें सृष्टि[20] जो देख परेवा। तजौ राज कजरी बनसेवा॥

दो० देखि अन्तै अस होयहि, गुरू दीन्ह उपदेश।
सिंहलद्वीप जावमें माता, तुमसों मोर अँदेश॥

रोवहिं नागमती रनवासू। कै तुम कन्तै दीन्ह बनवासू॥
अबको हमहिं कोहि भोगिनी। हमहूँ साथ होयहहिं योगिनी॥
की हम लावहु आपनसाथा। की अब मार चलहु संहाथा॥

अरज़करना १ तख़्त २-१० हमेशा ३-५ सब दुनियांकी दौलत ४ राख ६-१३ गुदड़ी ७ राह ८ टुकड़ा रोटी ९ फ़ौज ११ आखिर १२-२२ कान १४ गवाही १५ सूराख़ १६ पाप १७ नजात १८ नामराजा १९ संसार २० छोड़ना २१ सलाम २३ ख़ाविन्द २४॥

तुम अस बिछुड़े पीव पिरीता। जहँवां राम तहां सँगसीता॥
जबलहिजिवसँग छांड़िनकाया। करिहौं सेव पखारिहुँ पाया॥
भली पद्मिनी रूप अनूपा[3]। हमते कोइ न आगरि रूपा॥
भौंहें भली पुरुषन[5] की दीठी[6]। जहँ जाना तहँ दीन्ह न पीठी॥
दो० दीन्ह अशीश सबै मिलि, तुम माथे नितँ छात।
राजकरो चित्तौरगढ़, राखो पिय अहिवात॥
तुम तिरियाँ मतिहीन तुम्हारी। मूरख सोइ मता घर नारी॥
राघव जो सीता सँग लाई। रावणहरी कौन सिधि पाई॥
यह संसार स्वप्न जस हेरा। अन्तै न आपनको कहिकेरा॥
राजाभरथरिहिं नहिंसुनीअयांनी। जेहिके घर सोरहसै रानी॥
कुचैं लीन्हे तरवा सहराई। भा योगी कोउ संग न लाई॥
योगी काहि भोग से काजू। चही न मेहरी चहै न राजू॥
जूड़ि करकटा पै भीखहिचाहा। योगी तातै भात सों काहा॥
दो० कहा न मानी राजा, तजी सबांई भीर।
चला छांड़िकै रोवत, फिरके दीन्हन धीर॥
रोवत माता फिरै न बारा। रतनचला जग भा अँधियारा॥
बारे मोर जियावँर रता। सो लैचला सुआ परवता॥
रोवहिं रानी तजेहिं पराना। फोरहिंवरी करहिं खरिहाना॥
चूरहिंगे अभरन उर हारू। अब काकहँ हम करब शिंगारू॥
जाकहँ कही रहसिके पीव। सोई चला काकर यह जीव॥

बदन १ धोना २ बेमिसाल ३ खूबसूरत ४ मर्द ५ देखना ६-१० हमेशा ७ औरत ८ कामिल ६ आखिर ११ नादान १२ छातीकीदंडी १३ ठंढीरोटीका टुकड़ा १४ गर्म १५ छोड़ना १६-२४ सब १७ धीरज १८ लड़का १६-२१ डलियां २० ज़िन्दगी का सबब २२ तोता २३ चूड़ी २५ गरदन के ज़ेवर २६ छाती २७॥

मरीचहहिं पै मरै न पावहिं । उठै आग सबलोग बुझावहिं॥
घड़ी एक सुट भयो अँदूरो[1] । पुनि पाछे बीता होय रूरो[2] ॥

दो० टूटि मने नव मोती, फूट मने दस कांच ।
लीन्ह समेट सबै आभरनै[3], होयगा दुखकर नांच ॥

निकसा राजा सुनके पूरे । छांड़ि नगर मेला होय दूरे ॥
रायँ शंग सब भये बियोगी[5] । सोरह सहसँ कुँवरभये योगी॥
माया मोह हरी सैंहाथा । देखि न बूझ नियार्न न साथा ॥
छांड़हिं लोग कुटुम्ब सबकोऊ । भयेनिराशदुखसुखतर्जदोऊ॥
सँवरहिं राजा सोइ अकेलाँ । जेहिरे पन्थे[11] खेलेहोय चेला ॥
नगरनगरऔ गांवहिं गांवां । छांड़ चला सब ठांवहिं[12] ठांवां॥
काकर गढ़ काकर मठ माया । ताकर सब जाकर जिवकायाँ[13] ॥

दो० चलाकटर्कं[14] योगिनके, करके गेरुवा भेस ।
कोसबीस[20] चारिहुँ[15] दिश, जानहु फूला टेसं[16] ॥

आगे सगुन सगुनँ यहिंतका । दहीमांझ रूपे[17] कर टका ॥
भरे कलश तरुनी[18] चलिआई । दही लिये ग्वालन गुहराई ॥
मालिन आय मौर ले गाथे । खंजनं[19] बैठ नागके माथे ॥
दाहिन मिरगं[21] आयगाधायें । प्रतीहारं बोला घर बायें ॥
बिरषं[23] सवरिया दाहिनबोला । बायें दिशं[24] गीदरं[25] नहिं डोला ॥
बायें अकाशी धूरे आये । लोवाँ दरश आय देखराये ॥
बायें कुरेरी[27] दाहिन कोचाँ[28] । पहुँची भुक्ति[30] जैस मनरोचाँ[31] ॥

शोर १-२ ज़ेवर ३ शेर ४ राजा के भाई ५ दुःखी ६ हज़ार ७ आख़िर ८ छोड़ना ९ परमेश्वर १० राह ११ जगह १२ वदन १३ फ़ौज १४ चारोंतरफ़ १५ टेसू १६ नजूमी १७ रुपया दही में रखके १८ जवान औरत १९ ममोला २० हिरन २१ तीतर २२ सांड़ २३ तरफ़ २४ सियार २५ चील्ह २६ लोंवड़ी २७ कौवा २८ उल्लू २९ रोज़ी ३० चाहना ३१ ॥

दो० जाकहँ सगुनहोहिं अस, औगवनै[1] जेहि आस।
अष्टोमहाँसिद्धि[2] पंथहि[3], जस कबि कहा ब्यास॥

भयो पयान[4] चला तब राजा। शंखनाद[5] योगिनकर बाजा॥
कहिन आज कुछथोर पयाना[6]। काल्ह पयान[7] दूर है जाना॥
वह मिलान[8] जो पहुँचै कोई। तब हम कहब पुरुष[9] भल सोई॥
है आगे परवतकी बाटैं[10]। विषम[11] पहाड़ अगम[12] सठघाटैं॥
बिचबिच खोह नदी औ नारा। ठांवहि[13] ठांव बैठि बटपारा[14]॥
हनुमंत[15] केर सुनत पुनि हांका। वहिको पार होयको थाका॥
असमन जानि सँभारहु आगू। अगवा[16] केर होहु पछलागू॥

दो० करहिं पयान[17] भोरउठि, नितहि[18] कोसदश जाहिं।
पंथी[19] पंथा[20] जो चलहिं, ते कितरहैं औठाहिं॥

करहु दृष्टि[21] थिर[22] होय बटाऊ[23]। आगू देखि धरहु भुइँ पांऊ॥
योगिओबेंट[24] भुइँ परी भुलाय। कीमारि पंथ[25] चले न जाय॥
पांयन पहिरलेहु सब पँवरी[26]। कांट न चुभै न गड़ै अँकरोरी॥
परी आय अबबनखँड[27] माहां। डंडो[28] कारन बीच निबाहां॥
सघन[29] ढांखबन चहुँदिशि[30] फूला। बहुदुखमिलै वहांकर भूला॥
झांखरजहांसु छांड़हु पन्था[31]। हिलगम कोयनफारहु कन्था[32]॥
दहिने बिदर[33] चँदेरी[34] बायें। वहिकहँ होब बाँट[35] दुइठायें[36]॥

दो० एक बाँट[37] गई सिंहल[38], दूसर लंक[39] समीप[40]।

जाना १ कामिल २ राह ३–१०–२०–२५–३१–३५–३७ कूच ४ शंखकी आवाज़ ५ कूच तथा मौतका दिन ६ कूच दूर तथा क़यामतका दिन ७ मिलना ८ जवाँमर्द ९ टेढ़ा ११ जहां कोई न पहुँचसके १२ जगह १३–३६ राहलूटनेवाले १४ वन्दर १५ गुरू १६ कूच १७ हररोज़ १८ राहचलनेवाले १९ निगाह २१ कायम २२ मुसाफ़िर २३ राह बतलानेवाला २४ खड़ाऊँ २६ जंगल २७ नाम जगह २८ गुंजान २९ चारोंतरफ़ ३० गुदड़ी ३२ नाम मुल्क ३३–३४ जगह ३६ नाममुल्क तथा स्वर्ग ३८ नाम मुल्क तथा नरक ३९ बराबर ४०॥

है आगे पंथ दो वनहिं, गवनबे[3] केहिद्वीप ।
ततखन बोला सुआ सरेखा[2] । अगवा[3] सोई पंथ जेहिं देखा ॥
सोका उड़े न जेहि तन पांखू । लैसोपलाश[4] हि बोले शाखू ॥
जस अंधा आँधीकर संगी । पंथ[6] न पाव होय सहलंगी ॥
सुनिर्मति[7] काजचहसि जो साजा । बीजा[8] नगर विजैगिरराजा ॥
पूंछा जहां कुण्ड औ गोला । तजि[10] बायें अंध्यारै खटोला ॥
दखिन दाहिने रहै तिलंगा[12] । उत्तरमांझ होय करहांकटंगा[13] ॥
मांझरतनेपुर[14] सौंह दुवारा । झारखण्ड वे वायें पहारा ॥
दो० आगें बाउँ उड़ीसा[15], वायें देहिसु बाट[16] ।
दहिनावरत लायके, उतर समुद्रकी घाट ॥
होत पयानँ[17] जाय दिनकेरा[18] । सिरगारन[19] महिं कीन्ह बसेरा ॥
कुश सांथर भइ सूरि[20] सपेती । करवटे आय वनी भुइँसेती ॥
क्यामिलीजसभूमि[22] गलीजा । चलिदसकोस ओसतनभीजा ॥
ठांव[23] ठांव सब सोवहिं चेला । राजा[24] जागै आप अकेला ॥
जेहिके हिये[25] प्रेम रँग जामा । का तेहि नींदभूँखविशरामा[26] ॥
बन अँध्यार रयनि अँधियारी । भादों बरख भयो अतिभारी ॥
किंगरी[27] गहे हाथ बैरागी । पांचतन्त[28] धुनिओही लागी ॥
दो० नयनँ[30] लाग तेहि मारगा[31], पद्मावत जेहि दीप ।
जैसे स्वाति बूँदकह, बन चातृक[32] जलसीप ॥

राह १-६-१६-२१ जाना २ तोता होशियार ३ राहवतानेवाला ४ नाम दरख़्त ५ भोलामाराहुआ ७ सलाह ८ नाम मुल्क ६ छोड़ना १० नाम मुक़ाम तथा योग की क्रिया ११-१२-१३ नाम मुल्क तथा मुक़ाम मतलब १४ नाम मुल्क १५ कूच १७ शामकेवक्त १८ जंगल तथा कवरिस्तान १६ तोशक और लिहाफ़ २० तकिया २१ ज़मीन २२ जगह २३ रतनसेन मुराद परमेश्वर २४ दिल २५ आराम २६ रात २७ नाम वाजा २८ पाँचतार २६ आँख ३० पपीहा ३२ ॥

मासके लाग चलत तेहिबाटा। उतरे जाय समुद्र की घाटा ॥
रतनसेन भा योगी यती। सुनि भेटे आवा गजपती ॥
योगी आप कटक सब चेला। कौनद्वीप कहँ जाहहिखेला ॥
भली आय सब माया कीजै। पहुँनाई कहँ आयसु दीजै ॥
सुनहु गजपती उतरं हमारा। हम तुम एकै भाव निरारा ॥
सो तेहिकहँ जेहिमहँ यहभावा। जोनिराशै तेहिलाइनशावा ॥
यही बहुत जो बोहित[13] पाऊँ। तुमते सिंहलद्वीप सिधाऊँ ॥

दो॰ जहां मोहिं निजजाना, कटकै हौं लिये बार[15]।
जो रेजियों तौ लै फिरों, मरौं तो वहकी बार[16]॥

गजपती[17] कही शीश[18] वरमांगा। इतनी बोल न होइहै खांगा ॥
यहि सब देउँ आन पै गढ़ी। फूल सोई जो महेश्वर[19] चढ़ी ॥
पै गुसाईं सो एक नवांती। मारग[21] कठिन[22] जाव केहिभांती[23] ॥
सात समुद्र असूझ अपारा। मारहिं मगरमच्छ घड़ियारा ॥
उठे हिलोर न जाय सँभारी। भागहि कोइ निबहै ब्योपारी ॥
तुम सुखया अपने घर राजा। एते दुख जो सहो केहिकाजा ॥
सिंहलद्वीप जाय सो कोई। हाथ लेहें आपन जिव होई ॥

दो॰ खारि[25] क्षीर[26] दधि[27] उदधि[28] सुरा[29], जलपुनिकिल[30] किलाकूत[31]।
कोचढ़ि नांघ समुद्रये सातों, है काकर असपूत ॥

गजपति यहिमन सकती[32] सेवा। पैजेहिप्रेम कहां तेहि जीवा ॥
जो पहिले शिरदेपग[33] धरिये। मुये केरका मीचै[34] करीये ॥

एकमहीना १ राह २–२१ नाम राजा ३–६–१७ फ़ौज ४–१४ जाना ५ मेहरबानी ६ ज्याफ़त ७ हुक्म ८ जवाब १० नाउम्मेद ११ नुक़्सान १२ नाव १३ दरवाज़ा १५–१६ शिर १८ महादेवजी १६ अर्ज़ करना २० मुश्किल २२ किसतरह २३ क़िस्मत २४ खारी २५ दूध २६ दही २७ मीठापानी २८ शराब २६ नाम समुद्र ३०–३१ सख़्ती ३२ क़दम ३३ मौत ३४ ॥

सुख संकल्प दुख सांभरे[1] लीन्हा । तौ पयान[2] सिंहलकहँ कीन्हा ॥
भँवरजानि पै कमल पिरीती । जेहि महँ बिथा प्रेमकी वीती ॥
औ जें समुद्र प्रेमकर देखा । तें यहि समुद्र बूँदवरे[3] लेखा ॥
सातौं समुद्र सतलीन्ह सँभारू । जो धरती[4] का गरू[5] पहारू ॥
जो पै जीव बांध सत बेरा । परजिव जाय फिरै नहिं फेरा ॥

दो० रंगनाथ हौं जाकर, हाथ वही के नाथ ।
गहै नाथ सो खींचै, फिरै न फेरे माथ ॥

प्रेम समुद्र जो अति अवगाहा[6] । जहां न वार न पार न थाहा ॥
जो वह समुद्र गाह यहि परे । जो अवगाहे हंस होइ तरे ॥
हौं पद्मावत कर भिखमङ्गा । दृष्टि न आव समुद्र औ गङ्गा ॥
जेहिकारण[9] गे[10] कांथर[11] कंथा[12] । जहां सो मिलै जाउँ तेहि पंथा[13] ॥
अब यह समुद्र परो होय मरा । प्रेम मोर पानी के करा[14] ॥
मरभा कोइ कतहूँ लै जाऊँ । वहकी पंथ[15] कोऊ धर खाऊँ ॥
असमन जान समुद्रमहँ पस्यो । जोकोइखायवेग[16] निसतस्यो ॥

दो० स्वर्ग[17] शीश[18] धर धरती[19], हियौ[20] सों प्रेम समुन्द ।
नयन[21] कौड़ियौं[22] होयरही, लैलै उठ तेहि बुन्द ॥

कठिन[24] बियोग[25] योगदुखदाहू[26] । जन्मजरतहौं और न पाहू ॥
डर लज्जा तहँ दोउ गँवानी । देखै कछू न आग न पानी ॥
आग देखि वह आगे धावा । पानिदेखिवहसौंहिं[27] धसावा ॥
जस बावर न बुझाये बूझा । कौनभांति[28] जायका सूझा ॥

तोशा १ कूच २ बराबर ३ खारी, मीठा, पानी, दही, दूध, शराब, किलकिलाकूत ये सात समुद्र हैं ४ ज़मीन ५ पकड़ना ६ गहिरा ७-८ निगाह ९ वास्ते १० गरदन ११ गुदड़ी और कण्ठा १२ राह १३-१५ मानिंद १४ जल्द १६ छूटजाना १७ आसमान १८ शिर १९ ज़मीन २० दिल २१ आँख २२ नाम जानवर २३ मुश्किल २४ जुदाई २५ जलना २६ सामने २७ किसतरह २८ ॥

मगर मच्छ डर मने न लेखा । आपहिं चहौं पारभा देखा ॥
औ नहिं खाय वह सिंहासिंदूरी । काठै जाहि अधिकै यह भूरी ॥
काया माया सङ्गन आथी । जेहि जिव सौंपा सोई साथी ॥
दो० जो कुछ दर्व अहा सङ्ग, दान दीन्ह संसार ।
काजानी केहिकी सत, दई उतारै पार ॥
धन जीवन औ ताकर जिया । ऊँच जगत महि जाकरदिया ॥
दियासो सब जप तप उपराहीं । दिया बराबर कुछ जग नाहीं ॥
एक दियातें दशगुन लाहा । दियादेखि सबको मुख जाहा ॥
दिया करै आगे उजियारा । जहां न दिया तहां अँधियारा ॥
दियामँदिर[11] निशि[12] करै उजोरा । दिया नाहिं घर मूसहिं चोरा ॥
हातिम करण दिया जो सिखा । दिया रहा धर्मन महँ लिखा ॥
दिया सो काज दोहूँ जग आवा । यहां जो दिया वहां सब पावा ॥
दो० निरमल[15] पंथ[16] कीन्ह तेहि, जेहिरे दिया कुछ हाथ ।
कुछ नहिं कोइ लैजायही, दिया जाय पै साथ ॥

खण्डग्यारहवां बोहितखण्ड ॥

सत नडोल देखा गजपती । राजादत्त सत दोनों सती ॥
आपन नाहिं कयों पी कंथा । जीवदीन्ह अगमन तेहि पंथा ॥
निश्चै चला भर्म डर खोय । साहस जहां सिद्धि तहँ होय ॥
निश्चै चला छांड़िकै राजू । बोहित[26] दीन्ह दीन्ह सब साजू ॥
चढ़ा वेग[28] औ बोहित[29] पेली । धन वह पुरुष प्रेमपंथ खेली ॥

शेरलाल १ ज्यादा २ वदन ३-२१ दुनियां दौलत ४ रुपया ५ ईश्वर ६ ज़िन्दगानी ७ दुनियां ८-१० ऊपर ९ मकान ११ रात १२ नाम सखी १३-१४ पाकसाफ़ १५ राह १६-२३-३१ ईमान १७ नाम राजा १८ सखावत १९ सचाई २० पहिले २२ बहादुर २४ कामिल २५ नाव २६ सामान २७ जल्द २८ जहाज़ २९ मर्द ३० ॥

प्रेम पंथ जो पहुँचै पारा। बहुरे न आय मिलै यहि छारा॥
तेहि पावा उत्तम कैलासू। जहां न मीचु सदा सुख बासू॥

दो० यहि जीवनकी आशका, जैसे स्वप्न तिल आध।
मुहम्मद जीतहि जो मुये, ते पूरुष सिध साध॥

जस दिनरयँनि चलै गर्ज भांती। बोहित चली समुद्रकी पांती॥
धावहि बोहित मन उपराहीं। सहस कोसएकपलमहँ जाहीं॥
समुद्र अपार स्वर्ग जनुलागा। स्वर्ग नखाल गिनै बैरागा॥
ततखन एकचाल्ह दिखराये। जनु धौलागिरि पर्वतआये॥
उठै हिलोर जो चाल्ह निरांजे। लहर अकाशलागि भुइँबाजे॥
राजा सितें कुँवर सब कहैं। अस अस मच्छ समुद्रमहँ अहैं॥
तेहिरे पंथ हम चाहत गवनों। होहुसचेत बहुरे नहिं अवना॥

दो० गुरु हमार तुम राजा, हम चेला तुम नाथ।
जहां पाउँ गुरु राखै, चेला राखै माथ॥

केवट हँसे सुनत को बंजों। समुद्र न जानि कुवांकर मंजों॥
यहि तो चाल्ह न लागै कोहू। का कहियो जब देखब रोहू॥
सो अबहीं तुम देखे नाहीं। जेहि मुख ऐसे सहस समाहीं॥
राजपंख तेहिपर मँडराहीं। सहस कोस तिनकी परछाहीं॥
तेवै मच्छ ठौर गैहि लेहीं। शावके मुख चारा ले देहीं॥
गरजे गगन पंख जो खोलहिं। डोले समुद्र डहन जो डोलहिं॥
तहां न सूर्य न चांद असूझा। चढ़ै सोई जेहि अगमन बूझा॥

राह १-२०-३४ लौटना २-२३ मिट्टी ३ वैकुण्ठ ४ मौत ५ मर्द ६ रात ७ हाथी ८ नाव ९-१० हज़ार ११-२८-३० आसमान १२-३३ ऊँचा १३ नीचा १४ यकायक १५ नाम जानवर १६-१८-२७ नाम पहाड़ १७ हिलना १९ जाना २१ होशियार २२ मल्लाह २४ बातचीत २५ मेढक २६ सीमुर्ग २९ पकड़ना ३१ बच्चा ३२ तथा परमेश्वरकी दूरन्देशी ३५॥

दो० दशमहँ एक जायकोइ, कर्म धर्म सत नेम।
बोहित पार होइ जो, तौहो कुशल[2] औ खेम ॥

बात कहत भइ देश गुहारी। केवटहि[3] चाल्हें समुद्रमहँ मारी ॥
हस्ती[5] लाय सिंह[6] सब दीला। दौड़आय इक चालँहि लीला ॥
केवट[7] लागिलागि सब वली[8]। फिरैन चाल्हें[10] जाय बहिचली ॥
बोहित[11] सहस[9] जाहिं चहुँओरा। होयकलोल[13] जाहिं तारि[14] बोरा ॥
सुनिके आप चढ़ौसे राजा। औ सबलोग देशमिलबाजा[16] ॥
मालवांस खांड़े[17] बहु परहीं। जान पखाल[18] बाजके चढ़हीं ॥
चारालील जो माछर बाझी। कहां जाय जो जाकर खौंझी ॥

दो० माछरकर भूखहि हृदयं, तेहि साधे बिष[20] बान।
सबहिं पहुँचकै मारा, चालहि[22] तजौ[21] परान ॥

जस धौलागिरि[24] परवत होई। तेही भांति उतरान्यो सोई ॥
सबै देश मिलि तैरहिं आना। लिये कुल्हाड़ी लोग जहाना ॥
जनु परबत कहँ लागहि चांटी[25]। लेगये मांस रही सब कांटी ॥
मांजर परी कोसदस वेंड़ी। मांजरि करस जस श्वेत[26] बरेंड़ी ॥
नयन[27] सोजानिकोटकी पँवरे[28]। कितअसगहे[29] फिरेतोहिभँवरे ॥
रतनसेन से संघी कहैं। अस अस मच्छ समुद्र महँ अहैं ॥
राजातुमचाहो तहिंगवनौं[31]। होइके सजग[31] बहुरि[32] नहिं अवना ॥

दो० तुम राजा औ गुरु, हम सेवक औ चेर[33]।
कीन्ह चहैं सब आयसु[34], अबगवनी[35] तहिफेर ॥

नाव १-११ खैरियत २' नाखुदा अर्थात् मल्लाह ३-८ नाम जानवर ४-७-१०-२२ हाथी ५ ज़ंजीर ६ ज़बरदस्त ९ हज़ार १२ सैर १३ पानी के नीचे १४ फ़ौज १५ पहुँचना १६ तलवार १७ नासजानना १८ खूराक १९ पेट २० ज़हर २१ छोड़ना २३ नाम पहाड़ २४ चूंटी २५ सफ़ेद २६ आंख २७ क़िलेका दरवाज़ा २८ पकड़ना २९ जाना ३०-३५ होशियार ३१ लौटना ३२ गुलाम ३३ हुक्म ३४ ॥

राजैं कहा कीन्ह मो प्रेमा । जहां प्रेम तहँ कूशल[1] क्षेमा ॥
तुम खेवो जो खेवहि पारहिं । जैसे आप तरहिं मोहिं तारहिं ॥
मोहिंकुशल[2] करशोच न ओता । कुशल[3] होतजोजन्मनहोता ॥
धर्ती[4] स्वर्ग[5] जांट[6] पर दोऊ । जो यहिबिच जिव राखनकोऊ ॥
हौं अब कुशल एक पै मांगौं । प्रेमपंथ सतबांधि न खाँगौं ॥
जो सतहिये[8] तो पंथहि[10] दिया । समुद्रन डरै देखि मरजिया ॥
तहँलग हेरों[11] समुद्र ढिंढोरौं । जहँलग रतन[12] पदारथ जोरौं ॥

दो॰ सप्तपताल[13] खोजके, काढ़ौं वेद गॅरंथ ।
सातसमुद्र चढ़ि धावौं, पद्मावत जेहि पंथ[15] ॥

खण्ड बारहवां सात समुद्र खण्ड ॥

सायर[16] तरे हिये[17] सतपूरा । जो जीसत[18] कायर[19] पुनि सूरा ॥
तहँ सब बोहित[20] पूर चलाई । जहँ सतपवन[21] पंख जनुलाई ॥
सतसाँथी सतगुरु हम वारू । सत्त गहीले लावे पारू ॥
सती नाक सब आगू पाछू । जहँ जहँ मगर मच्छ औ काछू ॥
उठै लहर जनु उठै पहारा । चढ़ै स्वर्ग[23] औ परै पतारा ॥
डोलहिं बोहित[24] लहरें खाईं । सहस[25] कोस इक पलमहँ जाईं ॥
राजें सो सत हिरदय[26] बांधा । जेहि सत टेक करगुर कांधा ॥

दो॰ खारिसमुद्र सब नांघा, आये समुद्र जहँ क्षीर[27] ।
मिले समुद्र वै सातौं, बेहर[28] बेहर नीर[29] ॥

क्षीरसमुद्र का बरणौं[30] नीरू । श्वेत[31] स्वरूप पियत जस क्षीरू[32] ॥

---

[1] खैरियत १-२-३ ज़मीन ४ आसमान ५-२३ चक्कीकापिल ६ राह ७-१०-१५ कमी ८ दिल ९-१७-२६ देखना ११ लाल जवाहिर तथा पद्मावत १२ सात पाताल १३ पोथी १४ बहादुर १६ सचाई १८ नामर्द १९ नाव २० हवा २१ मददगार २२ जहाज़ २४ हज़ार २५ दूध २७-३२ अलग २८ पानी २९ तारीफ़ ३० सफ़ेद ३१ ॥

उलटहिं माणिक मोती हीरा। दर्ब देखि मन होय न धीरा ॥
मनो अनचाह दर्ब औ भोगू। पंथ भुलाय बिनाशै योगू ॥
योगी मनहिं उही रिस मारहिं। दर्ब हाथकै समुद्र पयारहिं[1] ॥
दर्ब लेइ जो इस्थिर[2] राजा। जो योगी तेहिके केहि काजा ॥
पंथी[3] पंथ[4] दर्ब रिपु होई। ठग बटपार[5] चोर सँग सोई ॥
पंथी[6] सोई दर्ब सो रुसे[7]। दर्ब समेट बहुत अस मूसे ॥

दो० क्षीरसमुद्र सब नांघा, आये समुद्रदधि[8] माहिं।
जोहै पंथ[10] के बावरे[9], नातेहिं धूप न छाहिं ॥

दधि समुद्र देखत तसदहा[11]। प्रेमके[12] लुब्ध[13] दगर्ध[14] पैसहा ॥
प्रेम जो डाढ़ा[15] धन वह जीव। दधि[16] जमाय मथि काढ़ै घीव ॥
दधि[17] इकबूंद जामि सबक्षीरू[18]। कांजी[19] बूंदबिनशिहोयनीरू[20] ॥
स्वांस डाढ़[21] मनमथनी गाढ़ी। हिये[22] ज्योति बिनफूटिनसाढ़ी[23] ॥
जेहिजियप्रेम चंदन तेहि आगे। प्रेमगवर्नै[24] फिर डर नहिंभागे ॥
प्रेमकी आग जरै जो कोय। ताकर दुख नाहिं मिथ्यों होय ॥
जोजानहि सत आपहिं जारा। नास्तै[25] हिये[27] सत करै न पारा ॥

दो० दधि[28] समुद्र पुनि पारभै, प्रेमहि कहा सँभार।
भावै पानी शिरपरै, भावै परहि अँगार ॥

आय उदधिजल[26] समुद्रअपारा। धर्ती[30] स्वर्ग[31] जरै तेहि झारा ॥
आग जो उपँजी[32] ओही समुन्दा। लंका जरी वही एकबुन्दा ॥
बिरह जो उपजाँ[33] ओही काढ़ा। खनन बुझाय जाय तन बाढ़ा ॥

राह १-५-१० तैरना २ क़ायम ३ मुसाफिर ४ राह लूटनेवाले ६ राह चलनेवाले ७ अर्थात् माल वा दौलत पास अपने न राखै ८ दही ९-१६-१७-२८ दीवाने ११ जलताहुआ १२ आशक १३ आंच १४ औटाहुआ १५ दूध १८ खटाई १९ पानी २० रस्सी २१ दिल २२-२७ चालाई २३ मकान २४ खराब २५ कमहिम्मत २६ नामसमुद्र २९ ज़मीन ३० आसमान ३१ पैदा होना ३२-३३ ॥

जेहिसोबिरहतेहिआगनदीठी[१] । सौहिं[२] जरैफिरदेहि न पीठी ॥
जग[३]महँ कठिन[४] खड्ग[५] की धारा । तेहिते अधिक[६] बिरहकी झारा ॥
अगम[७] पंथ[८] जो ऐस न होई । साधु कहै पावै सब कोई ॥
तेहि समुद्र महँ राजा परा । जरा चहै पै रोवँ न जरा ॥

दो० तलफैतेल कराह जिमि[९] ; इमि[१०] तलफै सबनीर[११] ।
वहि जो मलयागिरि[१२] प्रेमका, सुबुन्दसमुद्र शरीर ॥

सुरा[१३] समुद्र पुनि राजा आवा । महुवामधु[१४] छाती देखरावा ॥
जो तेहि पिये सो भांवर लेय । शीश[१५] फिरै पंथ[१६] पैग[१७] न देय ॥
प्रेमसुरा[१८] जेहिके जिय माहां । कित[१९] बैठे महुवा की छाहां ॥
गुड़की पास दाखं रस रसा । बेरी[२१] बेर मार मन गसा[२२] ॥
बिरहिन दग्[२३]धकीन्ह तन भाठे । हाड़ जराय दीन्ह जस काठे ॥
नयन[२५] नीर[२६] सों पोते कया[२७] । तस मधु चुवै बरै जस दिया ॥
बिरह सुरा[२९]गें भूंजे माँसू । गिर गिर पड़ैं रक्त[३०] के आँसू ॥

दो० मुहम्मद जो प्रेमका, हिये[३१] दीप तेहि याख ।
शीश[३२] न देइपतंग[३३] ज्यों, तबलग चाखन वाख ॥

पुनिकिलकिला[३४] समुद्रमहँ आई । गा धीरज देखत डर खाई ॥
भा किलकिल अस उठै हिलोरा । जनु अकाश टूटै चहुँ ओरा ॥
उठै लहर परबत की नाई । फिर आवै योजन लखताई ॥
धर्ती लेत स्वर्ग[३५] लहि बाढ़ा । सकल[३६] समुद्र जानो भाठाढ़ा ॥
नीर[३७] होय तरि ऊपर सोई । महा[३८] अरम्भ समुद्रमहँ होई ॥

देखना १ सामने २ दुनियां ३ मुश्किल ४ तलवार ५ ज्यादा ६ जहां कोई न पहुँचसकै ७ राह ८–१६ जिसतरह ९ इसतरह १० पानी ११ चन्दन १२ शराब १३–१४–१८–२८ शिर १५ क़दम १७ क्योंकर १९ अंगूर २० बेर नाम मेवा फ़सली २१ लेना २२ गर्म २३ भट्ठी २४ आंख २५ आंसू २६ बदन २७ सीख २९ खून ३० दिल ३१–३२ पांखी ३३ नामसमुद्र ३४ आसमान ३५ सब ३६ पानी ३७ शेर ३८ ॥

फिरत नीर योजन लख ताका । जैसे फिरै कुम्हार का चाका ॥
भापरलौ नेराना जबही । मरै सो ताकहँ परलौ तबही ॥

दो० गये औसानें सबनके, देख समुद्रकी बाढ़ ।
नेरिहोत जनु लीले, रहा नयनै अस काढ़ ॥

हीरामन राजासों बोला । यही समुद्र आय सतडोला ॥
सिंहलद्वीप जो नाहिं निबाहू । यही ठाँउ सांकर सबकाहू ॥
यहिकिलकिलै अससमुद्र गँभीरू । जेहिंगुनहोयसोपावैतीरू ॥
यही समुद्रपंथ मँझधारा । खांड़े की असरेख हजारा ॥
तीस सहस कोसनकी बाटा । अस साँकर चलिसकै न चांटा ॥
खांड़े[16] चाहि[17] पैन पैनाई । बारै चाहि पातर पतराई ॥
वही पंथ सब काहू जाना । होय दुसरे बिश्वास नदानाँ ॥

दो० मरन जियन यहि पंथहि[21], येही आशैं निराशैं ।
पड़ा सो गयो पतालहि, तरा सो गा कैलाशैं ॥

राजे दीन्ह कटक कहँ बीरा । सपुरुष होहु करहु मनधीरा ॥
ठाकुर जेहिक शूरँ भा कोई । कटक शूरं पुनि आपहिं होई ॥
जौलहि सतीन जिय सतबांधा । तौलहि देइ कहार न कांधा ॥
प्रेम समुद्र महँ बांधा बेरा । यहि सब समुद्र बुन्द जेहिं केरा ॥
नाहीं स्वर्ग न चाहों राजू । ना मोहिं नरक सितें कुछकाजू ॥
चाहों वह कर दरशन पावा । जेहिमो आन प्रेमपंथ लावा ॥
काठ काहि गाढ़ का ढीला । बूड़न समुद्र मगर नहिं लीला ॥

चारलाख कोस १ क़यामत २–३ हवास ४ आंख ५ नामतोता ६ बद-हवास ७ जगह ८ मुश्किल ९ नाम समुद्र १० गहरा ११ किनारा १२ राह १३–१५–१९–२० धार १४ तलवार १६ ज्यादा १७ पानी १८ नादान २० रास्ता २१ उम्मेद २२ नाउम्मेद २३ नाम वैकुण्ठ २४–२६ फ़ौज २५ क़ायम २६ बहादुर २७–२८ ॥

दो॰ कान्ह[1] समुद्रधस लीन्हेंसि, भा पीछे सब कोय।
कोइ काहू न सँभारे, आपन आपन होय॥

कोइबोहित[2] जस पवन[3] उड़ाहीं। कोई चमकवीजं[4] परजाहीं॥
कोई भल जस धाव तुषारू[5]। कोई जैस वैल गरियारू[6]॥
कोई हरूँ[7] जानि रथ हांका। कोई गरू पहाड़भा थाका॥
कोई रेंगहिं जानहु चांटी[8]। कोई टूटि होहिं सर माटी॥
कोई खाय पवन[3] कर झोला। कोई गिरहिं पात ज्यों डोला॥
कोई परहिं भँवर जल माहीं। फिरत रहहिं कोइ दियेन वाहीं[9]॥
राजा कर भा अगमन[10] खेवा। खेवक[11] आगे सुवा परेवा॥

दो॰ कोइ दिन मिला सवेरें, कोइ आवा पछरात।
जाकर हुत जस साजू[12], सो उतरा तेहिभांत॥

सतें समुद्र मानसर[13] आये। सत जो कीन्ह सहँसं[14] सिधिपाये॥
देखि मानसर[15] रूप सुहावा। हिये[16] हुलास[17] पुरइन[18] होयछावा॥
गा अँधियार रयन[19] मसि[20] छूटी। भा भिनसार किरनरवि[21] फूटी॥
अस्त अस्त[22] सबसाथी बोले। अन्ध जो अहे नयन[23] विधि[24] खोले॥
कमल बिकसं[25] तसबेहँसी[26] देहीं। भँवर दरश होयहोयरसलेहीं॥
हँसहिं हंस औ करहिं कुरेरा[27]। चुनहिं रतन[28] मुक्ताहल[29] हेरा॥
जो अस आवसाधि तपयोगू। पूजी आस मानरस भोगू॥

दो॰ भँवर जो मंसा[30] मानसर[31], लीन्ह कमलरस आय।
घुनजो हियाँव[32] न कैसका, झूर काठ तस खाय॥

श्रीकृष्णचन्द्रजी १ नाव २ हवा ३–६ बिजुली ४ घोड़ा ५ भारी ६ हलकी ७ चूंटी ८ आगे १० मल्लाह ११ सामान १२ नाम तालाब जिसमें हंस रहते हैं १३–१५ हज़ारतरह की आराम १४ दिल १६ खुश १७ कमल १८ रात १९ सियाही २० सूर्य २१ वाहवाह २२ आंख २३ ईश्वर २४ खिलना २५–२६ कुलेलकरना २७ जवाहिर जिसकी पैदाइश खानिसे होती है २८ मोती २९ हिम्मत बांधना ३० नामतालाब ३१ दिलेरी करना ३२॥

खण्ड तेरहवां सातसमुद्रपार भाव सिंहलद्वीपखण्ड ॥

पूँछा राजै कहु गुर सुवा। न जनों आज कहां दिन उवा ॥
पवन[1] बास शीतल[2] लै आवा। कया[3] दहत[4] चंदन[5] जनु लावा ॥
कबहुँन ऐसोजुड़ान शरीरू। पड़ा आगिनमहँ जानहु नीरू[6] ॥
निकसत आव किरन रबि[7] रेखा। तिमिर[8] गई निरमल[9] जग[10] देखा
उठै मेघ जस जानहु आगे। चमके बीज[11] गगन[12] परलागे ॥
तेहिऊपर जनु शशि[13] परकासा[14]। औसोगवीचहँ[15] भयोनिरासा
औ‍र नखतचहुंदिश[16] उजियारी। ठावहिंठांव[17] दीप असबारी ॥

दो० और दखिनादिश नेरे, कंचन[18] मेरु[19] दिखाउ।
जैसे वसंतऋतु आवे, तैसिबास जग[20] आउ ॥

तुइँ राजा जस बिक्रम[21] आदी। तुइँ हरिचंद बैन[22] सतबांदी[23] ॥
गोपिचंद[24] तुइँ जीता योगा। औ भरथरी[25] न पूज बियोगी[26] ॥
गोरख[27] सिद्ध दीन्ह तुहि हाथू। तारी गुरू मुछन्दर[28] नाथू ॥
जीति प्रेम तुइँ भूमि[29] अकाशू। दृष्टि[30] परा सिंहल कैलाशू॥
वै जो मेघ गढ़[31] लाग अकासा। बजेरी[32] कटी कोट[33] चहुंपासा॥
औ‍र नखत वेहिके चहुँपासा। सब रानिन की अहैं उडासी[34] ॥
तेहिपरशशि[35] जोगग्रहचहिं[36] भरा राजमंदिर सोने नगजरा ॥

दो० गगन[37] सरोवर[38] सहस[39] कमल, कुमुद[40] तराई[41] पास।

हवा १ ठंढी २ वदन ३-५ जलना ४ पानी ६ सूर्य ७ अँधियारा ८ पाक साफ़ ९ दुनियां १०-२० बिजुली ११ आसमान १२-३७ चांद १३-३५ रोशनी १४ छोटे नखत १५-३६ चारों तरफ़ १६ हरजगह १७ सोना १८ नाम पहाड़ १९ राजाविक्रमाजीत २१ नाम राजा २२-२४-२५ सच बोलनेवाला २३ दुखी २६ नाम योगी २७-२८ ज़मीन २९ निगाह ३० क़िला ३१-३३ बुर्ज ३२ महल ३४ तालाव ३८ हज़ार ३९ कोकाबेली ४० नखत ४१ ॥

तुइँ रबि उवा भँवर होय, पवनै मिलाले बास॥
सो गढ़ देखि गगनै ते ऊंचा। नयनै देखिकर ज्ञानन पहुँचा॥
बिजुरी चक्र फिरैं चहुँ फेरे। औ जमकात फिरहिं यम घेरे॥
धाय जो बाजा कियमनसाधा। मारा चक्र भयो दुइ आधा॥
चांद सूर्य औ नखत तराई। तेहिडर अंतरिक्ष फिरैं सबाई॥
पवनजाय तहँ पहुँचा चहा। मारा तैसो लोटि भुइँ रहा॥
अगिन उठे जरिबुझे नियानों। धुवांउठा उठि बीच मिलाना॥
पानि उठा उठिजाय न छुवा। फिरा रोय आय भुइँ चुवा॥
दो० रावत चहा सौंहिं के हेरों उतर दशोगयेमाथ।
शंकरधरा ललाट भुइँ, और को योगी नाथ॥
तहां देख पद्मावत रामा। भँवर न जाय न पंखे नामा॥
अबसिखँ एक देउँ तुहि योगी। पहिले दरशन होय तो भोगी॥
कंचन मेरु दिखावे जहां। महादेव कर मण्डफ तहां॥
वह खखएड जस परवत मेरू। मेरुहि लाग होय तस फेरू॥
माघमास पाछल पख लागें। श्री पंचमी होय यहि आगें॥
उघरै महादेव कर बारू। पूजनजाय सकल संसारू॥
पद्मावत पुनि पूजन आई। हैहै वह दिन दृष्टि मिलाई॥
दो० तुम गवनो वह मण्डफ कहँ, हौं पद्मावत पास।
पूजे आय बसन्त जो, पूजे मन की आस॥
राजै कहा दरश जो पाऊँ। पर्वत काहि गगनै कहँ धाऊँ॥

सूर्य १ हवा २ आसमान ३-२६ आंख ४ बिजुली ५ रौंद ६ यमराज ७ दौड़ना ८ पहुँचना ९ बीचोबीच १० सब ११-२३ आख़िर १२ सामने १३ देखना १४ शिर १५ उड़नेवाले जानवर १६ सलाह १७ सोने का पहाड़ १८-२०-२१ बीहड़ १९ दरवाज़ा २२ दीदार २४ जाना २५॥

जेहि परबतपर दरशन लीन्हा। शिरसों चढ़ो पायँकाकीन्हा॥
मोहिं सो भावै ऊँचे ठाऊँ। ऊँचे लेवों प्रीतम नाऊँ॥
पुरुषै चाहिये ऊँच हियाऊँ। दिन दिन ऊँचे राखे पांऊ॥
सदा ऊँच पैसेये बारू। ऊँचे से कीजे ब्योहारू॥
ऊँचे चढ़ै ऊँच खँड सूझा। ऊँचे पास ऊँच मति बूझा॥
ऊँच सङ्ग सङ्गत नितं कीजे। ऊँचे लाय जीव बलि दीजे॥

दो० दिन दिन ऊँचहोय सो, जेहि ऊँचे पर जाव।
ऊँच चढ़े जो खसिपड़े, ऊँच न छांड़ें काव॥

नीच संग नितं होय निचाई। जैसे हंस काग की नाई॥
नीच से कबहु न होय भलाई। नीचाहिसों पर होय मुड़ाई॥
नीच न कबहू जिय महँ तांके। नीच नहीं कबहूँ मुखभांखे॥
नीच न कबहूँ आवे काजा। नीचहि अहै न एको लाजा॥
नीचेका सँग कबहु न कीजे। नीचे पंथै पाउँ नहिं दीजे॥
नीचे नहिं कीजे ब्योहारू। नीच न कबहू दीजें भारू॥
नीचे केर न कीजे साथा। नीचगहे कुछ आव न हाथा॥

दो० होयनीच नहिं कबहू, जेहि ऊँचे मन भाव।
नीच ऊँचते हँसी, नीचे केर स्वभाव॥

हीरामनैं दे बचा कहानी। चला जहां पद्मावत रानी॥
राजा चला सँवारि सो लता। परबतकहँ जो चला परवता॥
का परबत चढ़ि देखै राजा। ऊँच मण्डफ सोने सबसाजा॥
अमृत फर सबलागि अपूरे। औ तहँलागि सजीवननमूरे॥

जगह १ मर्द २ हिम्मत ३ दरवाज़ा ४ हमेशा ५-७ कुर्बान ६ गुमनामी ८ ख्यालकरना ९ मुँहसे बोलना १० राह ११ बोझा १२ पकड़ना १३ नामतोता १४ क़ौल १५ बन १६ तोता १७ सामान १८ नामबूटी १९॥

चौमुख मण्डफ चहूँ केवारा। बैठे देवता चहूँ दुवारा॥
भीतर मण्डफ चारखम्भ लागे। जेहि वे छुवे पाप तेहि भागे॥
शंख घंट निति बाजहिं सोई। औ बहु होम जाप तहँ होई॥

दो० महादेव कर मण्डफ, सकल[1] यात्रा आव।
जस इच्छा मन जेहिकी, सो तैसो फल पाव॥

खण्ड चौदहवां गवन मण्डफ खण्ड राजा रतनसेन॥

राजा बावर बिरह बियोगी[4]। चेला सहस[5] तीस सँग योगी॥
पद्मावत की दरशन आसा। दण्डवतकीन्ह मण्डफचहुँपासा॥
पूर्बद्वार[6] होयके शिरनावा। नावतशीश[7] देव पुनि आवा॥
नमो नमो नारायण देवा। कामैं योग सकौं कै सेवा[8]॥
तुइँ दयालु सबके उपराहीं। सेवाकेर आश तुहिनाहीं॥
नामोहिं गुन[13] न जीभ रसबाता। तुइँदयालु[9] गुन[14] निरगुन[15] दाता॥
पुरवहु मोर दरश की आसा। हौं मारग[16] जो करौं श्वासा॥

दो० तेहि बिधिबिनय[17] न जान्यो, जेहिबिधिअस्तुति तोर।
कर सुदृष्टि औ कृपा, इच्छा पूजै मोर॥

कै अस्तुति जो बहुत मनावा। शब्द[18] कोटिमण्डफमहँआवा॥
मानुष प्रेम भयो बैकुण्ठी। नाहत काहि छार[19] एकमूठी॥
प्रेमहि माहिं बिरह रसरसा। प्रेमके घर मधु[20] अमृतबसा॥
नेष्टे[21] धाय जो मरै तो काहा। सतजो करै बैठि तेहिलाहा[23]॥
एकबार जो मन दै सेवा। सेवहि फल प्रसन्न[24] ह्वै देवा॥

चार १ हमेशा २ सब ३ दुखी ४ हज़ार ५ दरवाज़ा ६ शिर ७ खिदमत ८ दया करनेवाला ९–१३ ऊपर १० उम्मेद ११ हुनर १२ दाना १४ नादान १५ अर्थात् उसी तरह का दम बदम ढूंढ़नेवाला हूं १६ तारीफ़ १७ निगाह अच्छी १८ आवाज़ १९ माटी २० शराब २१ बदराह २२ फ़ायदा २३ खुश २४॥

सुनिकै शब्द[1] मण्डफ झंकारा । बैठो आय पुरब के द्वारा ॥
पिंड[2] चढ़ाय छार[3] चित आंटी । माटी होय अन्त जो माटी ॥
दो० माटी मोल न कछुलहै, औ माटी सब मोल ।
दृष्टि[4] जो माटी सो करै, माटी होय अमोल ॥
बैठि सिंह छाला होय तपा । पद्मावत पद्मावत जपा ॥
दृष्टि[5] समाधि वही सों लागी । जेहि दरशन कारण[6] बैरागी ॥
किंगरी गहे[7] बजावे झूरी । भोर सांझ सुनिके नित[8] पूरी ॥
कन्था[9] जरै अगिन जनु लाये । बिरहढंढोर[10] जरत न बुझाये ॥
नयनराते[11] निशि[12] मारग[13] जागे । चषे[14] चकोर जानु शशि[15] लागे ॥
कुण्डल गहे[16] शीश[17] भुइँलावा । पांवरे[18] होउँ जहां वैपावा ॥
जटा छोरके बार[19] बहारों । जेहिपंथ[20] आवशीश तहँवारों[21] ॥
दो० चारहुचक्र[22] फिरेमनखोजत, डंड[23] नरहूंथिर[24] बार ।
होयके भस्मपवन[25] सँग धाऊं, जहांसो प्रानअधार ॥
पद्मावत तहँ योग[26] संयोगा । परी प्रेमवश गहे[27] बियोगा[28] ॥
नींद न परी रयन[29] जो आवे । सेजकेवांच जानु कोइलावे ॥
दहै[30] चन्द औ चन्दनचीरू[31] । दगधे[32] करै तन बिरहगँभीरू[33] ॥
कल्पसमान[34] रयनही वाढ़ी । तिलतिल[35] भरयुगयुग परगाढ़ी ॥
गहे[36] बीनमगँ[37] रयन बिहाये[38] । शशिवाहन[39] नित[40] रहै उनाये ॥
पुनि धुनि[41] संग औरही लागे । ऐसी विथा रयन सब जागे ॥

आवाज़ १ चंदन २ विभूति ३ निगाह ४-५ वास्ते ६ पकड़ना ७-१६-३६ हररोज़ ८ गुदड़ी ९ जंगल १० आंखलाल ११ रात १२-२९ राह १३-२० आंख १४ चांद १५ शिर १७ खड़ाऊं १८ दरवाज़ा १९ न्योछावर २१ चारों तरफ़ २२ घड़ी २३ क़ायम २४ हवा २५ अर्थात् फ़क़ीरीका हाल २६ लेना २७ दुख २८ जलना ३०-३२ कपड़ा ३१ भारी ३३ बराबर ३४ तिलके बराबर कम और करन से ज्यादह ३५ पकड़ा ३६ शायद ३७ आख़िर ३८ हिरन चांद के रथका ३९ हमेशा ४० आवाज़ ४१ ॥

कहां सो भँवर कमल रसलेवा। आय परीहोय घरन परेवो[1]॥
दो० सो धन[2] विरहपतंग भइ, जरा चहै तेहि दीप।
कंत[3] न आव भृंग होय, को चन्दन तन लीप॥
परी विरह बन जानो घेरी। अगम असूझ जहांलग हेरी[4]॥
चतुरदिशा चितवे जनु भूले। सो बन कौन जो मालति फूले॥
कमल भँवर ओही बन पावे। कोमिलाय तनतपन बुझावे॥
अंग अंग अस कमल शरीरा। हियं[5] भा पियर प्रेम की पीरा॥
चहीदरशरवि[6] कीन्हविकासू[7]। भँवरदृष्टि[8] मनलागअकासू॥
पूंछे धायं[9] बारि[10] कहु बाता। तुइंजस[11] कमल करी रँगराता[12]॥
केसरबरन[13] रंग भा तोरा। मानहुँ मनहि भयो कुछ फोरा॥
दो० पवन न पावै संचरी, भँवर तहों नहिं बैठि।
भूलकुरंगिनि[14] कसभई, जानु सिंह[15] तुइ डीठि॥
धाय सिंह[16] धरै खात्यों भारी। कीतसँ[17] रहत अहे जसवारी॥
जो वनसुनो कि नवल[18] वसन्ता। तेहिवन परा हस्तमैमन्ता[19]॥
अब जोवन वांरी को राखा। कुञ्जर विरहविथा से शाखा॥
मैं जानो जातन रस भोगू। जोवनकठिन[20] सतापवियोगू[21]॥
जोवन गरुआ पेल पहारू। सहि न जाय जोवनकर भारू[22]॥
जोवन अस मनमत्त[23] न कोई। नवे हस्त[24] जो आंकुश होई॥
जोवन भरि भादों जस गङ्गा। लहरें देइ समाय न अङ्गा॥
दो० पस्रों अथाह धायहों, जोवन उदधिगँभीर[25]।

कबूतर १ पद्मावत २ खाविन्द ३ मुश्किल ४-२२ देखना ५ दिल ६ सूर्य ७ खिलना ८ निगाह ९ लौंडी १० लड़की ११-२० लाल १२ पीला १३ हिरनी १४ शेर १५ शेर ने क्या मारा है १६ अर्थात् लड़काई में कैसी थी १७ नया १८ हाथी मस्त १९-२१-२६ दुख २३ बोझ २४ मस्त २५ समुद्र गहरा २७॥

तहँ चितवों चारहुदिशि[1], को गहि[2] लावे तीर[3] ।

पद्मावत तुइ समुद्र सयानी । तुइ सरि[4] समुद्र न पूजी रानी ॥
नदी समाय समुद्र महँ आई । समुद्रडोल कहु कहां समाई ॥
अवहीं कमलकरी हिय तोरा । अइहै भँवर जो तोकहँ जोरा ॥
जोवन तुरी[5] हाथ गहि लीजे । जहां जाय तहँ जाय न दीजे ॥
जोवनँ[6] जोर माँते गज[7] अहे । गहहु ज्ञान अंकुश जिमि रहे ॥
अवहिं वार[8] तुइँ[9] प्रेम नखेला । काजानिस कस होय दहेला[10] ॥
गगनँ[11] दृष्टि[12] करपाय तराहीं । सूर्य देखकर आवत नाहीं ॥

दो० जब लग पीउ मिले तुहि, साधि प्रेमकी पीर ।
जैसे सीप स्वातिकहँ, तपै समुद्र मँझ[13] नीर[14] ॥

दहत[15] धाय[16] जोवन औ जीव । जानहु परा अगिनिमहँ घीव ॥
करवट सहों होत दुइ आधा । सही न जाय बिरहकी दाधा ॥
बिरह समुद्र बिपहर अस भारा । भँवरमेल जिवलहरनमारा ॥
बिरह नाग होय शिर चढ़डसा । वही अगिन चन्दनमहँ बसा ॥
जोवन पंखी[17] बिरह बियाधू[18] । केहरि[19] भयो कुरङ्गिनं[20] खाधू[21] ॥
कनक[22] पानि[23] कित जोवनकीन्हा । औटनकठिन[24] बिरहवहदीन्हा
जोवनजलहि बिरहमसि छुवा । फूलहिं भँवर फिरहिंभासुवा[25][26] ॥

दो० जोवन चन्द उवाजस, बिरह भयो सँग राहु ।
घटतहि घटत खीन[27] भय, कहेन पारों[28] काहु ॥

नयन[29] जो चक्र फिरे चहुँओरा । चरची[30] धाय समाय न कोरा ॥

चारों तरफ़ १ पकड़ना २ किनारा ३ बराबर ४ दिल ५ घोड़ा ६ जवानी ७ हाथी मस्त ८ लड़की ९ मारी १० आसमान ११ नज़र १२ बीच १३ पानी १४–२३ जलना १५ दाया १६ परदार जानवर १७ बहेलिया १८ शेर १९ हिरन २० खाना २१ सोना २२ मुश्किल २४ सियाही २५ तोता २६ बारीक २७ कहि नहीं सकता २८ आंख २९ दाया ३० ॥

कहेसि प्रेम उपजा[1] जो बारी[2]। बांधि सत्तमन डोलन भारी ॥
जेहिजिय[3] मनहिं सत्त होय भारू। परे पहार नहिं बांके बारू ॥
सती जो जरी प्रेम पै लागी। जोसतहिये[3] तो शीतल[4] आगी ॥
जोबन चांद जो चौदस[5] करा। विरहकीचिनगी सो पुनिजरा ॥
पवन[6] बन्धु सो योगी यती। कामबन्ध सो कामिन[7] सती ॥
आव बसन्त फूल फुलवारी। देव बार[8] सब जोहहिं बारी ॥

दो० तुम पुनि जाहु बसन्त लै, पूज मनावहु देव ।
जीव पाय जग जन्म है, पिय पाई कै सेव[10] ॥

जबलगअवधिआय नियराई[11]। दिनयुगयुगविरहिनकहँजाई ॥
नींद भूंखनिशि[12] दिनगइदोऊ। हिये मांझ जस कलपे[13] कोऊ ॥
रोमरोम जनु लागहिं चांटे[13]। सूतँ सूत जनु बेधे कांटे ॥
दगँध[15] कराह जरे जस घीव। बेगँ[16] न आव मलयगिरि[17] पीव ॥
कौन देवकहँ जाय परांसों[18]। जेहि सुमेरु[19] हियें लाय गिरासों ॥
गुप्त जो फलसासहि परगटे। अब होय सुभ्र चहहिं हम घटे ॥
भइ संयोगँ[24] जुरा अस मरना। भूखहि गई भोगका करना ॥

दो० यौवन चञ्चल ढीठ है, करे न कीजै[25] काज ।
धन कुलवन्त जो कुलधरे, की जीवन मनलाज ॥

तेहिं वियोगँ[26] हीरामनँ आवा। पद्मावत जानहु जिव पावा ॥
कण्ठ लगाय सुआँ सों रोई। अधिकमोह[29] जो मिले विछोई[30] ॥
आगउठी दुखहिये[31] गँभीरू[32]। नयनँहिं[33] आय चुवा होय नीरू[34] ॥

पैदा होना १ लड़की २-६ दिल ३-२०-३१ ठंढा ४ चांद चौदहीं के बराबर ५ हवा ६ औरत ७ दरवाज़ा ८ ख़िदमत १० हद ११ रात १२ चीज १३ सूराख़ १४ गर्म १५ जल्द १६ चन्दन १७ पूजन १८ नाम पहाड़ १९ छिपा २१ ज़ाहिर २२ हर रगमें भरा है कि दम बदम घटती है २३ मुलाक़ात २४ कामवाला २५ दुःख २६ नाम तोता २७-२८ बहुत पियारा २९ बिछुड़ाहुआ ३० भारी ३२ आंख ३३ पानी ३४ ॥

रही रोय जब पद्मिनि रानी। हँसि पूँछहिं सब सखी सयानी॥
मिले रहस[१] भा चाहे दूना। कित रोई जो मिले बिछोना॥
तेहिक उतर[२] पद्मावत कहा। बिछुरन दुख जो हियँ[३] भर रहा॥
मिलत हिये[४] आये सुख भरा। वह दुख नयननीर[५] होय ढुरा॥

दो० बिछुरंता जब भेंटे, सो जाने जेहि नेह[६]।
सुक्ख सुहेला उगवे, दुःखझरे जिमि[७] मेह[८]॥

खण्ड पन्द्रहवां मुलाकात खण्ड

पद्मावत औ हीरामन॥

पुनि रानी हँसि कुशलै[९] पूँछा। कित[१०] गे वनहिंकै पिंजर छूँछा॥
रानी तुम युगयुग सुखपाटू[११]। छाजे न पंखी[१२] पिंजर ठाटू॥
जो भा पंख कहां थिर[१३] रहना। चाहे उड़ा पंख जो डहनो[१४]॥
पिंजर महँ जो परेवा घेरा। आय मँजोरि[१५] कीन्ह तहँ फेरा॥
दिवसके[१७] आय हाथ पै मेला। तेहि डर बनोबासकहँ खेलो[१८]॥
तहां जाय ब्याध नर सांधा। छूट न जाय मीच कर बांधा॥
वे धर बेचा ब्राह्मण हाथा। जम्बूद्वीप गयो तेहि साथा॥

दो० तहां चित्र[१९] चित्तौरगढ़, चित्रसेन कर राज।
टीका[२०] दीन्ह पुत्रकहँ, आप लीन्ह शिवसाज[२१]॥

बैठि जो राज पिता[२२] कर ठाँऊ। राजा रतनसेन तेहि नाऊं॥
का बरणों धन देश दुवारा। जहँ असनगउपजा[२३] उजियारा॥
धन माता औ पिता बखाना। जेहिके वंश अंश[२४] असआना॥

खुश १ जवाब २ दिल ३-४ आंसू ५ मुहब्बत ६ जिस तरह ७ बादल ८ खैरियत ९ कहां १० तख्त ११ सोहना १२ जानवर परिन्द १३-१६ क़ायम १४ बाज़ू १५ बिल्ली १७ एक दिन १८ जाना १९ तसवीर २० राजतिलक २१ मरना २२ बाप २३ जगह २४ तारीफ़ २५ पैदाहोना २६ अक़बालवाला २७॥

लक्षन बतीसों कुल निरमला[1] । बरणि[2] न जायरूप औ कला ॥
वेहौं लीन्हें[3] अहा अस भागू । चाहै सोने मिला सुहागू ॥
सुनग देख इच्छा भइ मोरी । है यह रतनें पदारथ जोरी ॥
है शशि[5] योग यही पै भानू[6] । तहँ तुम्हार मैं कीन्ह बखानू ॥

दो० कहां रतन रतनागढ़, कंचनें कहां सुमेर ।
दैव जो जोरी दुहुँलिखी, मिली सो कौनहि फेर ॥

सुनिके विरह चिनग वह परी । रतन पाव जो कंचनकरी ॥
कठिनें प्रेम बिरहा दुख भारी । राज छांड़िभा योगि भिखारी ॥
मालति लाग भँवर जस होय । होयबावरे[11] निसरा बुधिखोय ॥
कहेसि पतंग होय रस लेऊं । सिंहलद्वीप जाय पग[12] देऊं ॥
पुनि वह कोउ न छांड़ अकेला । सोरहसहँस[13] कुँवर भयचेला ॥
और गिनै को संग सहाई । महादेव मँढ़ मेला जाई ॥
सूर्य पुरुष[15] दरशन की ताईं । चितवे चन्द चकोर की नाईं ॥

दो० तुम बारी[16] रस योग जेहिं, कमलहि जस अरघान ।
तस सूरज परकाशैँ कै, भँवर मिलायो आन ॥

हीरामनें[18] जो कही यहि बाता । सुनिके रतन पदारथ राता ॥
जैसे सूर्य्य देख ह्वै ओपाँ । तसभा विरह कामदल कोपाँ ॥
सुनिके योगी केर बखानूं । पद्मावत मनभा अभिमानूं[22] ॥
कंचनकरी[23] न काचहि लोभा । जो नगजड़े होय तस शोभा ॥
कंचन जो कसिये कै ताता । तब जाने वह पीत[24] कि राता[25] ॥

पाक साफ़ १ बयान करना २-७ उसका मोल लियाहुआ ३ जवाहिर लाल ४ चांद ५ सूर्य ६ सोना ८ सोने की अंगूठी ९-२३ मुश्किल १० दीवाना ११ क़दम १२ हज़ार १३ फ़ौज १४ मर्द १५ लड़की १६ उजियारा १७ नाम तोता १८ उदय होना १९ गुस्सा करना २० तारीफ़ २१ गरूर २२ पीला २४ लाल २५ ॥

नगकरमर्म[1]सो जड़िया जाना। जड़े जो असनग देखै[2] बखानौ[3]॥
को अस हाथ सिंह[4] मुख घालै। को यह बात पिता[5] सों चालै॥

दो० स्वर्ग[6] इन्द्र डर कांपै, बासुकि[7] डरै पतार।
कहँ ऐसो वर[8] पृथ्वी[9], मोहिं योग संसार॥

तुइँरानी शशि[10] कञ्चन कला। वह नगरतन सूर[11] निरमला[12]॥
बिरह बिजागि[13] बीजगा कोई। आग जो छुवै जाय जर सोई॥
आगबुझाय धोय जल गाढ़े। वह न बुझाय आग अतिबाढ़े॥
बिरहकी आग सूर[14] जरकपा। रातहि दिवस[15] जरे औ तपा॥
खनहि[16] स्वर्ग खनजाय पतारा। थिर[17] न रहै यहि आग अपारा॥
धनि सो जीव दग्ध[18] इमि[19] सहा। ऐसो जरे दूसर नहिं कहा॥
सुलगसुलग भीतर होय श्यामा[20]। प्रगट[21] होय नहिं काढ़ै नामा॥

दो० काह कहों ओही सों, जो दुख कीन्ह निमेट।
तेहिदिनआगकरोंयहबाहर, जेहिदिनहोयसुभेट॥

सुना जो असधनि[22] जारा कया[23]। तनभा सांचै[24] नयन[25] भामया[26]॥
देखों जाय जरै जसभानू[27]। कञ्चन[28] जरै अधिक[29] होय बानू[30]॥
अब जो जरै सुप्रेम वियोगी[31]। हत्यामोहिंजेहिकारण[32]योगी॥
हीरामन सो कही रस बाता। सुनिके रतन[33] पदारथ राता॥
योगी योग सँभारहिं छाला। देहों भुक्ति[34] देहों जैमाला[35]॥
आव बसन्त कुशल सो पाऊं। पूजा मिस[36] मण्डफ कहँ आऊँ॥

भेद १ देखना २ तारीफ़ ३ शेर ४ बाप ५ आसमान ६ नाम राजा सांपों का ७ खाविन्द ८ ज़मीन ९ चांद १० सूर्य ११–१४–२७ पाकसाफ़ १२ आग १३ दिन १५ कभी १६ क़ायम १७ जलन १८ इसतरह १९ सियाह २० ज़ाहिर २१ औरत तथा पद्मावत २२ बदन २३ सांचा २४ आंख २५ मोम २६ सोना २८ बहुत २९ खरा ३० दुखी ३१ सबब ३२ जवाहिर ३३ मुख ३४ जिसके गलेमें पड़े उसी के साथ शादी हो ३५ बहाना ३६॥

गुरु के बचन फूल हिये गाथे। देखों नयनं चढ़ाऊँ माथे॥

दो० कमल चरणं तुम बरना, मैं माना पुनि सोय।

चांद सूर्य्य कहँ चाही, जोरी सूर्य्य वह होय॥

हीरामनं जो कही रस बाता। पाय पान भयो मुख राता॥

चला सुआ तब रानी कहा। भा जो पराउ जो कैसे रहा॥

जो नित चलै सँवारहि पाखा। आज जो रहा काल्हको राखा॥

नाजनो आजकहां दिनउवा। आयहिमिलै चलहिमिलसुवा॥

मिलके बिछुर मरनकी आनां। कत आयहु जो चलहि निदानां॥

अनरानी जो रहतों रांधां। कैसे रहों बचनं करे बांधा॥

ताकर दृष्टि ऐसो तुम्ह सेवा। जैसे कुञ्ज मन सेज परेवा॥

दो० बसै मीनं जल धरती, अम्बा वर्ष अकास।

जोप्रीति पै दोउ महँ, अन्त होहिं एकपास॥

आवा सुआ बैठिजहँ योगी। मारगं नयनं वियोगं वियोगी॥

आय प्रेमरस कहा संदेशू। गोरखं मिला मिला उपदेशू॥

तुमकहँ गुरु मया बहुकीन्हा। कीन्ह अदेशं आवकहँ दीन्हा॥

शब्दी एक होय कहा अकेला। गुरुजसभृङ्ग पतंगं जस चेला॥

भृङ्गी ओही पंखं पै लेइ। एकहि बार चहै जिव देइ॥

ताकहँ गुरु मया भलकीन्हा। नवअवतारं ज्ञानं बहुदीन्हा॥

होय अमरं अस मरके जिया। भँवरकमल मिलके मधु पिया॥

दो० आवै ऋतुबसन्त जब, तब मधुकरं तवबास।

दिल १ आंख २–२१ रंग ३ नाम तोता ४ लाल ५ हररोज़ ६ तोता ७ बराबर ८ कहां ९ जल्द १० ऐ रानी ११ नज़दीक १२ क़ौल १३ निगाह १४ नाम जानवर परिन्द १५ मछली १६ ज़मीन १७ पानी १८ आख़िर १९ राह २० जुदाई २२ दुखी २३ नाम फ़क़ीर २४ नसीहत २५ मेहरबानी २६–३३ सलाम २७ बात २८ नाम कीड़ा २९–३०–३१ पांखी ३२ नया जन्म ३४ अफ़ल ३५ हमेशा ज़िन्दा ३६ भँवरा ३७॥

योगीयोग जो इमि[1] सहै, सिद्ध[2] समापत तास ॥

खण्डसोलहवां बसन्तखण्ड ॥

दई दई कर सुरत गँवाई । श्रीपञ्चमी पूजि तब आई ॥
भयो हुलास[3] नवलें[4] ऋतुमाहां । क्षण न सुहाय धूप औ छाहां ॥
पद्मावत सब सखी हँकारी[5] जानवन्त[6] सिंहलकी बाँरी[7] ॥
आज बसन्त नवल ऋतुराजा । पंचम होय जगत[8] सबसाजा ॥
नवल[9] शृंगार बनाहंत[10] कीन्हा । शीशै[11] परास[12] हिं सेंदुर दीन्हा ॥
बिकसे[13] कमल फूल बहुबासा । भँवरआय लुबधे[14] चहुँ पासा ॥
पियर पात दुख झरे निपाते[15] । सुख पलहा उपजी[16] होय रातें[17] ॥
दो० अवधि[18] आय सो पूजे, जो इच्छा मन कीन्ह ।
चलहु देवमढ़ गोहनें[19], चहो सो पूजा दीन्ह ॥
फिरे आन ऋतु बाजन बाजे । औ शृंगार बाँरि[20] हि सब साजे ॥
कमल करी पद्मावत रानी । होय मालति जानो बिगसानी[21] ॥
तारामन्डे[22] पहिर भल चोला । भरी शीशै[23] सबनखत अमोला ॥
सखी कुमोदं[24] सहस[25] दश सङ्गा । सबै सुगन्ध चढ़ाये अङ्गा[26] ॥
सब राजा रायनकी बाँरी[27] । बरन बरनें[28] पहिरें सब सारी ॥
सबै स्वरूप पद्मिनी जाती । पान फूल सेंदुर सब राती[29] ॥
करैं कलोलें[30] सुरङ्ग रँगीली । औ चोवा चन्दन सब खेली ॥
दो० चहुँदिशि[31] रही वासना, फुलवारी अस फूल ।
वे बसन्त सों फूली, गा बसन्त वहि भूल ॥

इसतरह १ कामिल २ खुशी ३ नया ४-९ बुलाना ५ जहांतक ६ लड़की ७-२०-२७ दुनियां ८ पेड़ १० शिर ११-२३ ढाख १२ खिलना १३-२१ लपिटना १४ झरना १५ पैदा १६ लाल १७-२९ हद १८ साथ १९ नाम कपड़ा २२ कोकावेली २४ हजार २५ बदन २६ रंगबरंग २८ खुशी ३० चारों तरफ ३१ ॥

भई अहा पद्मावत चली । छत्तिसकुंरि भइ गोहन भली ॥
भई गौरि संग पहिर पटोरा । ब्रह्मनिआय सहसे अँग मोरा ॥
अग्रवारि गजगवन करेई । बैसि पांव हंस गत देई ॥
चन्देलिनि ठमकहिं पग ढारा । चल चौहान होय झनकारा ॥
चली सुनारि सुहाग सुहाती । औ कलवारि प्रेममधुमाती ॥
बानिनि चली सिंदुर दियेमांगा । कैथिनि चली समायन आंगा ॥
पटयानि पहिरि सुरंग तन चोला । औ बरइन मुखखात तमोला ॥

दो० चली पवन सँग गोहनै, फूल डार लिये हाथ ।
विश्वनाथ की पूजा, पद्मावत के साथ ॥

ठठेरिन बहु ठाठर कीन्हा । चली अहीरिन काजर दीन्हा ॥
गूजरि चली गोरस की माती । बढ़यनि चली भागकी ताती ॥
चली लुहारिन बांके नयना । भाटिन चली मधुर अतिबयनाँ ॥
गन्धिन चली सुगन्ध लगाये । छीपिन चली सो चीर रँगाये ॥
रँगरेजिन बहु राती सारी । चली युक्ति सो नाउनि बारी ॥
मालिनि चली हार लिये गाथे । तेलिनि चली फुलायलमाथे ॥
किये शृंगार बहु बेश्या चली । जहँलग मूँदी बिकसी कली ॥

दो० नटनी डोमिनि ढारिन, सहनायन परकार ।
निरतत नाद बिनोद सों, बिहँसत खेलत नार ॥

कमल सुभाय चली फुलवारी । फर फूलन की इच्छा बारी ॥
आप आप महँ करहिं जोहारू । यह बसन्त सबकहँ त्योहारू ॥
चही मनोरा झूमक होई । फर औ फूल लियो सब कोई ॥

छत्तीस क़ौम १ साथ २–११ गौरब्राह्मण ३ हज़ार ४ वदन ५–६ हाथी की चाल ६ क़दम ७ शराब ८ हवा १० ईश्वर १२ मोठी, १३ चाल १४ लाल १५ खिलना १६ नाचना १७ गाना १८ खुशी १९ साहिब सलामत २० रस्मगाने औ बजाने की २१ ॥

फाग खेलि पुनि दाहवै होली । सेतत खेह उड़ावब झोली ॥
आज छांड़ पुनि दिवस[3] न दूजा । खेल बसन्त लेहु कै पूजा ॥
भा आयसु पद्मावत केरा । फेरन आय करब हम फेरा ॥
तस हम कहँ होयहै रखवारी । पुनि हम कहां कहां यह बारी ॥

दो० पुनिरे चलब घर आपने, पूज विश्वेश्वर[5] देव ।
जेहिको होय खेलना, आजखेल हँस लेव ॥

काहू गही अम्ब[8] की डारा । कोई बिरह जम्बु[9] अति छारा ॥
कोइनारँग[10] कोइझार[11] चिरौंजी । कोइ कटहर[12] बड़हर[13] कोइ न्यौजी ॥
कोइ दाड़िम[14] कोइ दाख[15] खरेरी[16] । कोइ सदाफर[18] तुरँज जँभीरी ॥
कोइ जैफर[20] कोइ लौंग सुपारी । कोइ कमरख कोइ कोवा[21] छारी ॥
कोइ बिजोर[22] कोइ नरियर चूरी[23] । कोइ इमली कोइ महुवा खजूरी ॥
कोइ हरफा कोइ चोर करौंदा । कोइ अनार कोइ बेरि किसौंदा ॥
काहू गही केला की घौरी । काहू हाथ पड़ी निमकौरी ॥

दो० काहू पाई नेरे, काहू कहँ गये दूर ।
काहू खेल भयो विष[24], काहू अमृत मूर ॥

पुनि बीनहिं सब फूल सहेली । जो जेहि आस पास सब बेली ॥
कोइ क्योंड़ा कोइ चम्पनेवारी । कोइ केतकि मालति फुलवारी ॥
कोइ सतबर्ग[25] गोंद औ करना । कोइ चमेलि[27] नागेसर[28] बरना ॥
कोइ सुगुलाब[29] सुदरशन[30] कूजो । कोइ सोन जर्द[31] भलपूजा ॥
कोइ सोवोलसर[32] पुहुप[33] बकौरी । कोई रूपमँजरी औ गोरी ॥
कोइ शृँगार हार[34] तेहि पाहां । कोइ सेवँती कदम[35] की छाहां ॥

जलाना १ राख धूर २ दिन ३ हुक्म ४ बागीचा ५ नामदेवता ६ लेना ७ आंब ८ जामुन ९ नाम मेवा फ़सली १०-११-१२-१३-१४-१६ अनार १५ अंगूर १६ खिरनी १७ नाम मेवा १८-२०-२१-२२ टुकड़ा २३ ज़हर २४ नाम फूल २५-२६-२७-२८-२९-३०-३१-३२-३३-३४-३५-३६-३७-३८ ॥

कोइ चन्दन फूलहिं जनुफूली। कोइ अजाने बिरवातर भूली॥
दो० कोइ फूलपाव कोइ पाती, जेहिकहाथ जेहिआंट।
कोइहार चीरै उरझानी, जहांछुवे तहँ कांट॥
फरफूलन सब डार भिराई। झुण्ड बांध के पंचम गाई॥
बाजत ढोल[3] दुंद[4] औ भेरें[5]। मन्दिरतूर[6] झांझ[7] चहुँफेरें॥
सींगी[8] शंख[9] डफसंगम बाजे। बंसकार[10] महुवर[11] सुरसाजे॥
और कहा जित बाजन भले। भांति भांति सब बाजत चले॥
रथहिं चढ़ी सब रूप सुहाई। लिये बसन्त मड़मँडफ सिधाई॥
नवल[11] बसन्त नवल वै बारी[12]। सेंदुर बूका करें धमारी॥
खनैंहिं चलहिं खन चांचर होई। नाचकूद भूला सब कोई॥
दो० सेंदुरखेह[14] उठीतस, गगनै[15] भयोतस रांतै।
राति सकल[16] महि[18] धर्ती, राति वृक्षवनपांत॥
यहिविधि खेलत सिंहलरानी। महादेव मठ जाय तुलांनी॥
सकल[17] देवता देखन लागे। दृष्टि[21] पाप सब उनके भागे॥
ये कैलास सुनें अप्सरी। कहांते आय टूटि भुइँ परी॥
कोई कहे पद्मिनी आई। कोइ कह शशि औ नखत तराई॥
कोई कहे फूल फुलवारी। फूली सबै देखके बारी[24]॥
एक स्वरूप औ सेंदुर सारी। जानहु दिया सकल[25]महि वारी॥
मुरछ परे जोई मुख जोहे। मानहु मिरग[26] दवारहिं मोहे॥
दो० कोई परा भँवर होय, बास लीन्ह जनु चांप[27]।
कोइ पतङ्ग भा दीपक, कोइ अधजर तन कांप॥

नाम फूल १ कपड़ा २ नाम बाजा ३-४-५-६-७-८-९-१० नया ११ लड़की १२-२४ कमी १३ धूर १४ आसमान १५ लाल १६ सब १७-२० ज़मीन १८-२५ पहुँचना १९ निगाह २१ चांद २२ छोटे नखत २३ हिरन २६ चम्पा २७ पांखी २८॥

पद्मावत गई देव दुवारा। भीतर मँडफ कीन पैसारा॥
देवै संशय भा जिय केरा। भागों केहिदिशि मगडफ घेरा॥
एक जुहारे कीन्ह औ दूजा। तिसरे आय चढ़ायसि पूजा॥
फर फूलन सब मँडफ भरावा। चन्दन अगर देव अन्हवावा॥
भरि सेंदुर आगे भइ खरी। परसि देव पुनि पांयन परी॥
और सहेली सबै बिवाहीं। मोकहँ देवकि तुहुँवरै नाहीं॥
हौं निरगुनै जें कीन्ह न सेवा। गुनै निरगुनै दाता तुम देवा॥

दो० वरसंयोगै मोहिं मिरवहु, कलश जातहौं मान।
जा दिन इच्छा पूजे, बेगै चढ़ाऊं आन॥

इच्छं इच्छ बिनती जस जानी। पुनि करे जोरिठाढ़ भइ रानी॥
उतरै को देय देव सोगयो। शब्दै कोट मगडफ महँ भयो॥
काटिपयारो जैसे परेवा। सोगयो ईशै उतरै को देवा॥
भये जीव बिन नाउत ओझा। बिषभइ पूरि कालभये गोझा॥
जो देखे जनु बिषहर डसा। देख चरित पद्मावत हँसा॥
भल हम आय मनावा देवा। गाजन सोय को मानै सेवा॥
को इच्छा पुरवे दुख खोवा। जहिंमन आय सो तनतन सोवा॥

दो० चहुँदिशि सखी उठावहिं, शीशै बिकल नहिं डोल।
धर कोइ जीवन जानो, मखरे बकत कुबोल।

ततखनै आय सखी बेहँसानी। कौतुक एक न देखहु रानी॥
पूर्ब द्वारे मठ योगी छाये। नाजनो कौन देश ते आये॥
जनु उन योग तन्त अब खेला। सिद्धै होय निसरे सब चेला॥

सलाम १ खाविन्द २ बेहुनर ३-५ हुनर ४ देनेवाला ६ खाविन्द लायक़ ७ आरजू ८-१० जल्द ९ हाथ ११ जवाब १२-१६ आवाज़ १३ छोड़ देना १४ देवता १५ सांप १७ खिदमत १८ चारों तरफ़ १९ शिर २० यकायक २१ दरवाज़ा २२ कामिल २३॥

उन महँ जो एक गुरू कहावा। जस गुड़दे काहू बौरावा॥
कुँवर बतीसो लक्षण राता। दशयें लषन कहे एक बाता॥
जानो आहि गोपचन्द[३] योगी। की सुआय भरथैरी वियोगी॥
वे पिङ्गल[४] गये कजरी आरन[६]। ये सिंहल सोवहिं केहिकारन॥

दो० यह मूरत यह मुद्रा, हम न देख अवधूत।
जानहुँ होहिं न योगी, कोइ राजा के पूत॥

सुनि सुबात रानी रथ चढ़ी। कहँ अस योगी जो देखों मढ़ी॥
लै सँगसखी कीन्ह तहँफेरा। योगिआयजनु अपछरनहिं घेरा॥
नयन कचूर प्रेम मधु भरे। भइ सुदृष्टि योगी सो ढुरे॥
योगीदृष्टि[११] दृष्टिसों लीन्हा। नयन[१२] रूप नयनहिं जिवदीन्हा॥
जो मधु[१३] छकतपरा तेहिपाले। सुध न रही वह एक पियाले॥
पड़ा मांत गोरख[१४] कर चेला। जिवत न छांड़ि स्वर्ग[१५] कहँ खेलौं[१६]॥
किंगरी[१७] गही[१८] जो हुत बैरागी। मरती बार वही धुन लागी॥

दो० जेहि धन्ध जाकर मन बसे, सपने सूझ सुगन्ध।
तेहिकारण[१९] तपसी तपसाधहिं, करहिंप्रेम चितबन्ध॥

पद्मावत जस सुना बखानूं[२०]। सहस[२१] किरा देखे तस भानू[२२]॥
मेलिस[२३] चन्दन मकु[२४] खनजागा। अधिको[२५] सोतसीर[२६] तनलागा॥
तब चन्दन आखर[२७] हियँ[२८] लिखी। भीख[२९] लई तुम योग न सिखी॥
बार[३०] आय तबगा तुइँ सोई। कैसे मुक्ति[३१] परापत होई॥

बत्तीस हुनर जाननेवाला १ अंदाज से बात करता है २ नाम योगी ३-४-१४ नाम रानी ५ जंगल ६ इन्द्रलोक की परियां ७ आंख पियाले की तरह ८ शराब ९-१३ निगाह १०-११ आंख १२ आसमान १५ जाना १६ बाजा १७ पकड़ना १८ वास्ते १९ तारीफ़ २० हज़ार २१ सूर्य २२ फा० २३ शायद २४ बहुत २५ ठंढा २६ हर्फ़ २७ दिल २८ भीख २९ दरवाज़ा ३० रोज़ी ३१॥

अब जो सूरे[1] अहेशशि[2] राता । आये चढ़ सुगगन[3] पुनिसाता ॥
लिखसो बात सखिन सो कही । यही ठांवँ हों बरिते रही ॥
परगटे हों तो होय असभंगू । जगते दियाकर होय पतंगू ॥

दो० जासों चख हेरों[10], सोई ठांव जिव देय ।
यह दुख कतहुँ न निसरों, को हत्या अस लेय ॥

कीन्ह पयाने[11] सबहिं रथ हांका । पर्वत छांड़ सिंहलगढ़ ताका ॥
बलि[12] भये सबै देवता बैली[13] । हत्यारिन हत्या लै चली ॥
को असहितू मुवे गहि बाहीं । जोपै जिय आपन तन नाहीं ॥
जौ लह जिव आपन सब कोई । बिन जिवकोइन आपन होई ॥
भाई बन्धु औ मीत पियारा । बिन जिवघड़ी न राखै पारा ॥
बिन जिवपिण्डै छार करकूरा । छार मिलावै सो हित पूरा ॥
तेहि जिव बिना अमर भा राजा । को उठि बैठि करब सो काजा ॥

दो० परिकायो भुइँलोटै, कहांरे जिव बलिभीव ।
को उठाय बैठारे, बाजें पियारे जीव ॥

पद्मावत सो मंदिर पैठी । हँसत जाय सिंहासन बैठी ॥
निशै सोती सुनि कथा बहारी । भा बिहान सब सखी हँकारी ॥
देवपूज जस आयों काली । स्वप्न एक निश देख्यों आली ॥
जनुशशि उदय पूर्वदिशलीन्हा । औरवि[26] उदय पश्चिमदिशकीन्हा ॥
पुनि चलि सूर चांद पहँ आवा । चांद सूर्य दुहुँ भयो मिरावा ॥
दिन औ रात जानहु भय एका । राम आय रावण गढ़ छेका ॥

सूर्य१-२६ चांद अर्थात् रात को आवें २ आसमान अर्थात् क़िला ३ जगह ४ वक्त ५ ज़ाहिर ६ नुक़सान ७ दुनियां ८ पांखी ९ आंख से देखों १० कूच ११ क़ुर्बान १२ ज़बरदस्त १३ दोस्त १४-१६-२० मरे की बांह पकड़े १५ रख नहीं सक्ता १७ बदन १८-२१ राख १९ पहुँचना २२ रात २३ बुलाया २४ चांद २५ मुलाक़ात २७ ॥

तस कुछ कहा न जाय निवेदा । अर्जुन बान राहु को बेधा ॥

दो० जनहुँ लङ्क सब लूसी, हनूँ बिधांसी[3] बार ।
जाग उठ्यों अस देखत, कहु सखि स्वप्न विचार ॥

सखी सो बोली स्वप्न बिचारी । काल्ह जो गई देवँ करबारी ॥
पूजि मनायो बहुत बिनौती । परसन[6] आय भयो तुम्हराती ॥
सूरज पुरुषँ चांद तुम रानी । अस बर देव मिलावै आनी ॥
पछों खण्ड कर राजा कोई । सो आवै बर तुम कहँ होई ॥
कुछ पुनि जूझ लाग तुम रामा । रावण सेते होयँ संग्रामा ॥
चांद सूर्य सों होय बिवाहू । वीर[11]बिधां सब बेधै राहू ॥
जस ऊषा[12] कहँ अनिरुध मिला । मेट न जाय लिखा परबला[13] ॥

दो० सुख सुहाग है तुम कहँ, पान फूल रस भोग ।
आजकाल्हभा चाहे, अस सपने का संयोग[14] ॥

खण्ड सत्रहवां सतीखण्ड राजा रतनसेन ॥

किये बसन्त पद्मावत गई । राजा तब बसन्त सुध भई ॥
जो जागा न बसन्त न बौरी । ना सो खेल न खेलनहारी ॥
नावहँ की वह रूप सुहाई । गइ हिराइ पुनिदृष्टि[16] न आई ॥
फूल झड़ी सूखी फुलवारी । दृष्टि[17] परी उकटी सब छौंरी ॥
कैं यह बसत बसन्त उजारा । गा सो चांद अथवा ले तारा ॥
अबतोंहिबिनजग[19] भा अँधकूपा । वह सुखछांह जरादुखधूपा ॥
बिरहदवां[21] को जरत सिरावा । को पीतम सों करै मिलावा ॥

दो० हिये[22] देख जो चन्दन, मिलके लिखा बिछोहँ[23] ।

लूटना १ हनुमानजी २ दरवाज़ा तोड़ना ३-११ महादेव के मंडफ ४ आजज़ी ५ खुश ६ मर्द ७ खाविन्द ८-६ लड़ाई १० नाम लड़की १२ ज़बरदस्त १३ तावीर १४ बाग़ १५ निगाह १६-१७ जलजाना १८ दुनियां १६ कुवां २० आग २१ दिल २२ जुदाई २३ ॥

हाथमींज शिरधुन रोवे, जो निचिन्त अस सोय ॥

जसबिछोहे जलमीनं दुहेला[1]। जलहतिकाढ़अगिनमहँमेला ॥
चन्दन अंकं दाग होय परे। बुझहिं न ते आखर परजरे ॥
जेहि शिरआगे होयहोय लागी। सब तन दाग सिंहँबनदागी॥
जरैमृगं वनखण्ड वह ज्वाला। औतीजरहि बैठि तेहि छाला ॥
कितते अंकलिखे जहँ सोहा। मंग अंकित तेहि करत विछोहा॥
जैसे दुखित कंसा कोतला। माधौ नलहि कामकन्दला ॥
भयो अंक नल जैसोदमावत। नयनां मूंद छिपी पद्मावत ॥

दो० आय वसन्ता छिपरहा, होय फूलन की भेश।
केहिविधिपाऊं भँवरहोय, कवनसो करों उपदेश ॥

रोवत रतन माल जनु चूरा। जहँ होय ठाढ़होय तहँ कूरा ॥
कहां वसन्त सो कोकिल वैनां। कहां कुसुमअंलि बेधी नयना ॥
कहां सुमूरति परी जो डीठी। काढ़िलिहेसिजिवहृदयेपैठी ॥
कहँसो दरश परश जेहिलहा। जोसो वसन्तकरी लंहि कहा ॥
पात विछोह रूख जो फूला। सो महुवा रोवै अस भूला ॥
टपकहिं महुव आंसु तसपरहीं। होयमहुवा वसन्तज्यों झरहीं॥
मोर वसन्त सो पद्मिनि नारी। जेहिविन भयो वसन्त उजारी॥

दो० पावा नवलं वसन्तपुनि, वहु आरतं वहुचोप।
ऐसो न जाना अन्तं होय, पातझरहिं होय कोप ॥

जुदाई १ मछली २ भारी ३ आग ४ हर्फ़ ५–६ शेर ७ हिरन ८ शायद मुलाक़ात न हो ९ राजा कंस रानी कोतलाके लिये १० माधोनल रानी कामकन्दला के लिये ११ राजा नल रानी दमयन्ती के लिये दुःखी १२ आंख १३ तद्‌बीर १४ टूटना १५ आवाज़ १६ भँवर १७ नज़र १८ दिल १९ दीदार या स्वमयोसी २० जिसका उलटा कांटा होता है २१ नया २२ दुःख २३ आख़िर २४ ॥

अहो महा बिश्वासी देवा। कित मैं आय कीन्ह तू सेवा॥
आपन नाव चढ़ै जो देइ। सो तो पार उतारै खेइ॥
सुफलजानि पग[1] टेक्यों तोरा। सुआँका सेमर तू भा मोरा॥
पाहन[2] चढ़ि जो चहिभा पारा। सो ऐसे बूड़ै मँझधारा॥
पाहन सेवों[4] कहां पसीजा। जन्मत पलवै जो जलभीजा॥
बावर सोई सुपाहन पूजा। सकत[5] कीमार लई शिरदूजा॥
काहे न पूजे सोई निराशाँ। मुये जीत मन जाकर आशा॥

दो० सिंह तरेंदा जेहिं गहाँ, पार भये ते साथ।
तेपै बूड़े बारहिं, भेंड़ पूछ जेहि हाथ॥

देव कहा सुनि बौरे राजा। देवहि अगमन[11] मारागाजों[12]॥
जो पहिले अपने शिर परी। सो का काहुक धरधरै[13] करी॥
पद्मावत राजा की बौरी[14]। आय सखिन सो मंडफ उघारी॥
जैस चांद गोहन[15] सब तारा। पस्यों भुलाय देख उजियारा॥
चमके दशन[16] बीज[17] की नाई। नयन[18] चक्र चमकात भवाई[19]॥
हों तेहि दीप पतङ्ग होय परा। जिवजिमि[20] काढ़ स्वर्ग[21] लैअरा॥
फेर न जाना वहँ का भई। वहँ कैलास कि कहँ अपसई[22]॥

दो० अबहूँ मरों निसौंसी[23], हिये[24] न आवै सांस।
रुगिया की को चालै, बैदहि जहां उपास॥

अनहों दोष देउँ का काहू। सुनिके कया[25] मया[26] नहिं ताहू॥
हितू[27] पियारा मीत[28] बिछोई[29]। साथ न लाग आपगा सोई॥

पैर १ तोता २ पत्थर ३-४ खिदमत ५ मुश्किल समय का बोझ कौन दूसरा उठाता है ६ नाउम्मेद ७ मरना ८ शेर ९ पकड़ना १० पहिले ११ बिजुली १२-१७ दस्तगीरी १३ लड़की १४ साथ १५ दांत १६ आंख १८ घूमना १९ जिसतरह २० आसमान २१ छिपना २२ वेदम २३ दिल २४ बदन २५ मेहरबानी २६ दोस्त २७-२८ जुदाई २९॥

कामैं कीन्ह जो कायापोषी । दोषं न मोहिं आपं निरदोषी ॥
फाग बसन्त खेल गइ गोरी । मोहितनलाग आग जस होरी ॥
अबअसकाहिछारै शिरमेलों । छारेहनों फाग तस खेलों ॥
कित तप कीन्ह छांड़िके राजू । आहुरै गयों न भा सिधिकाजू ॥
पायों न होय योगी यती । अब सरं चढ़ों जगैं जस सती ॥

दो० आय पीतम फिरगया, मिला न आय बसन्त ।
अबतन होरी लायके, जार करों भसमन्त ॥

कुकनों पंख जैसो सँरि साजा । तस सरिबैठि जराचहिराजा ॥
सकल देवता आय तुलाने । वहिं कस होय देवअस्थांने ॥
बिरह अगिन बज्रांगे असूझा । जरैं शूरं न बुझाये बूझा ॥
तेहिके जरत जो उठै बिजोगी । तीनों लोक जरहिं तेहि लागी ॥
अबकी घड़ी चिनग तेहिं छूटै । जरहिं पहाड़ पहनैं सब फूटै ॥
देवता सबै भस्म होय जाहीं । छार समेटे पावत नाहीं ॥
धर्ती[15] स्वर्ग[16] होय सब तातो[17] । है कोई यहि राखि बिधातो[18] ॥

दो० मुहम्मद चिनग प्रेमसुनि, गगनैंऔमही[20] डिराय ।
धन बिरहिन औ धनहियो, जहँयहअगिन समाय ॥

हनुमत वीर लङ्क जे जारी । पर्वत उही अहा रखवारी ॥
बैठि तहां भा लङ्का ताका । छठये मासैं वही उठ हांका ॥
तेहिकी आग वहू पुनि जरा । लङ्का छांड़ि पलङ्कै परा ॥
तहां जाय यह कहा सँदेशू । पार्वती औ जहां महेशूं ॥

वनपालना १ क़सूर २ राल ३ उमर ४ चिता ५–७ नाम चिड़िया ६ सच ८ पहुँचना ६ मकान १० सख़्त ११ बहादुर १२ लूक १३ पत्थर १४ ज़मीन १५–२० आसमान १६–१६ गर्म १७ ईश्वर १८ दिल २१ महीना २२ कहां २३ महादेवजी २४ ॥

योगी आय बियोगी[1] कोई। तुम्हरे मँडफ आग तेहि बोई॥
जरी लँगूर सुराती उहां। निकस जो भाग भये करमुहां॥
तेहिं बज्राङ्ग जरेहों लागा। बजरङ्गी जरउठा तो भागा॥
दो० रावण लङ्का मैं दही, वै मोहिं डाढ़ी आय।
गगन पहाड़ होत है रावट, को राखे गँहि पांय॥

खण्ड अठारहवां पार्वतीमहेशखण्ड॥

ततखन पहुँचे आय महेशू। वाहन बैल कुष्ठिकर भेशू॥
कांथरें कथा हड़ावरें बांधे। मुण्डमाल औ जनेऊ कांधे॥
शेशनागें सोहै कण्ठमाला। तन विभूति हस्ती कर छाला॥
पहुँची रुद्र कमलकी कटा। शशि[14] माथे औ शिरपर जटा॥
चँवरघंट[15] औ डमरू हाथा। गौरा पार्वती धनि साथा॥
औ हनुमन्त वीर सँग आवा। धरे भेष जनु बन्दर छावा॥
औ तेहि कहिन न लावहु आगी। ताकर शंप जरहि जेहि लागी॥
दो० कीतप करेन पारँहि, कीरि नसायँहि योग।
जियत जीव कस काढ़ेसि, कहो सो मोसों बियोग॥
कहेसि को मोहिं बातहि बिलँभावा। हत्या केर न तोहि डिरावा॥
जरे देहु दुख जरों अपारा। निसितिरे[20] परों जाय यकबारा॥
जस भरथेरी लाग पिंगला। मोकहँ पद्मावत सिंहला॥
मैं पुनि तजों राज औ भोगू। सुनि सुनाउँ कीन्हों तपयोगू॥
यहि मठ सेयों[24] आय निराशा। कीसु पूज मन पूजन आशा॥

दुखी १ लाल २ पत्थरसा बदन ३ जलाना ४–५ राख ६ पकड़ना ७ गुदड़ी ८ बदन ९ हाड़ों की माल १० सांप ११ गरदन १२ हाथी १३ चांद १४ घण्टी १५ क़सम १६ निबाहना १७ बरबाद १८ दुःख १९ रिहाई २० नामयोगी २१ नामरानी २२ छोड़ना २३ ख़िदमत २४॥

ते यह जिव डांढ़े परदाधा। आधा निकसरहाघट आधा॥
जो अधिजरसोंनिलँबन लावा। करत बिलम्ब बहुतदुख पावा॥

दो० एतना बोल कहत मुख, उठी बिरहकी आग।
जोमहेशं नहिंअमीबुझावत, सकलं जगतहतलाग॥

पार्वती मन उपजा चाऊ। देखो कुँवरकेर सत भाऊ॥
वहिं यह बीच किप्रेमहि पूजा। तन मन एककिमारगँ दूजा॥
भईस्वरूप जानहु अप्सरा। बिहँसि कुँवरकर आँचरधरा॥
सुनो कुँवर मोसों एक बाता। जस रंगमोर न दूसर राता॥
औ विधि रूपदीन्ह है तोका। उठासुशब्द जाय शिवलोका॥
तबहों तोकहँ इन्द्रपठाई। की पद्मिन तुइँ अप्सेर पाई॥
अबतजि जरनभरनतपयोगू। मोसोमानि जन्म भर भोगू॥

दो० हौं अप्सेर कैलासकी, जेहि सेर पूजनकोय।
गोतजि सँवरजोवहमरिस, कौनलाभ तेहिहोय॥

भलहिंरंगतुहि अप्सर राता। मोहिं दुसर सो भावनबाता॥
मोहिंवहसँवरि मुयेअसलहा। नयनं जोदेखिसिपूँछसिकहा॥
अबहिंताह जिवदिये न पावा। तेहि अस अप्सरठाढ़मनावा॥
जो जिवदेहों वहकी आशा। नजनों काह होय कैलाशा॥
हों कैलास काहि ले करों। सो कैलास लाग जेहिमरों॥
वहकी बाँर जीय निरवारों। शिर उतार न्योछावर डारों॥
ताकर चाँहे कहे जो आई। दोउ जगतं तेहिदेउँ बड़ाई॥

दो० वह न मोर कछुआशा, हों वह आश करेउँ।

जलाना १ महादेवजी २ अमृत ३ सब ४ पैदाहोना ५ चाहना ६ राह ७ इन्द्रलोककी परी ८-१४-१६ हँसना ९ लाल १० ईश्वर ११ आवाज़ १२ इन्द्रतक भेजोंगी १३ छोड़ना १५-१८ बराबर १७ फ़ायदा १९-२१ लाल २० आंच २२ दरवाज़ा २३ न्योछावर २४ खबर २५ जहान २६॥

तेहि निराश प्रीतम कहँ, जिवनदेउँ का देउँ॥

गौरी हँसि महेश[1] सों कहा। निश्चैयहि विरहानल[2] दहा[3]॥
निश्चै यहि वह कारनैं[4] तपा। प्रबल[5] प्रेम न आछे छिपा॥
निश्चै प्रेम पीर यहि जागा। कसें कसौटी कंचन[6] लागा॥
बदनपियर जलटपकै नयना। प्रकट[7] दोउ प्रेमके बयना[8]॥
यहि वह जन्म लागके सीझा। चही न औरहि ओही रीझा॥
महादेव देवन के पिता। तुम्हरे शरण राम रणजिता॥
येहूँ कहँ तस मया[9] करेहू। पुरवहु आश कि हत्या लेहू॥

दो० हत्या चढ़ायहि कांधदुइ, औ तिनके अपराध।
तिसरेलेहु कि माथे, जोरिलिये किये साध॥

सुनि के महादेव की भाखा[10]। सिद्धपुरुष[11] राजैं मनलाखा॥
सिद्धहि अंग[12] न बैठे माखी। सिद्धिपलकनहिंलावहिंआंखी॥
सिद्धिहि अङ्गहोय नहिं छाया। सिद्धहोय नहिं भूखनमाया[13]॥
जो जग[14] सिद्धि गुसाईंकीन्हा। प्रकट[15] गुप्त[16] रहै कोचीन्हा॥
बैल चढ़ा कुष्ठी कर भेष[17]। कहिराजासत आहिमहेश[18]॥
चीन्हेसोइ रहै तेहि खोजा। जसबिक्रम[19] औ राजाभोजा॥
केजिवतन्त[20] मन्त[21] सों हेरा। गयोहिराय जो वह भा मेरा॥

दो० बिनगुरु पन्थ[22] न पावै, भूलासोइ जो मेट।
योगीसिद्धहोय तब, जब गोरख[23] सों भेट॥

ततखन[24] रतनसेन घाबरा। छांड़ि डफार पांय लैपरा॥

महादेवजी १-१८ विरहकी आग २ जलना ३ सबब ४ ज़बरदस्त ५ सोना ६ ज़ाहिर ७-१५ आवाज़ ८ मेहरबानी ९ बातचीत १० मर्दकामिल ११ बदन १२ दुनियांदौलत १३ दुनियां १४ छिपा हुआ १६ सूरत १७ राजाबिक्रमाजीत १९ तलाश २० देखना व ढूंढ़ना २१ राह २२ नाम योगी २३ यकायक २४॥

माता पिता जन्म कित पाला। जो अस फांद प्रेमगों[1] घाली॥
धर्त्ती[2] स्वर्ग[3] मिले हत दोऊ। कितनिरारे[4] करदीन्ह बिछोऊ॥
पदक[5] पदारथ कर[6] हुतखोवा। टूटहिं रतन[7] रतनतस रोवा॥
गगन[8] मेघ जस वर्षहिं भली। धर्त्ती पूर सलिल[9] होय चली॥
सायर[10] उवटशिखरकी पौटी। चढ़ीपानि पाहन[12] हिय[13] फाटी॥
बूँद पानि होय होय सब गिरे। प्रेम फन्द कोऊ जन परे॥

दो॰ तसरोवे जस जिव जरै, गिरै रक्त[14] औ मांस।
रोम रोम सब रोवहिं, सूतै सूत भर आंस॥

रोवत बूड़ उठा संसारू। महादेव तब भयो मयारू[15]॥
कहसि न रोव बहुत तैं रोवा। अब ईश्वर भा दारिद खोवा॥
जो दुख सहै होय सुखओका। दुखबिनसुखनजायशिवलोका॥
अब तू सिद्ध[16] भया सुख पाई। दर्पण[17] कया[18] छूटिगइ काई॥
कहूं बात अबहूं उपदेशी[20]। लाग पंथ[21] भूले परदेशी॥
जो लहि चोर सेंध नाहिं देई। राजा केर न मूसै पेई[22]॥
चढ़ै तो जाय पार वह खूंदी[23]। परै तो सेंध शीश[24] सों मूंदी॥

दो॰ कहूंतोहिं सिंहलगढ़हि, है खंड सात चढ़ाव।
फिरा न कोई जीते जिय, स्वर्ग पंथदे पांव॥

गढ़[25] तसवांक[26] जैसतोर काया[25]। पुरुष[27] देखि ओहीकी छाया॥
पाई नाहिं जूझ हठ कीन्हे। जें पावा तें आपहिं चीन्हे॥

गर्दन १ ज़मीन २ आसमान ३-८-२५ अलग ४ लाल वा जवाहिर ५ हाथ ६ आंसू ७ पानी ९ तालाब १० धोबी का पाटा ११ पत्थर १२ छाती १३ खून १४ सूराख १५ मेहरबानी करनेवाले १६ कामिल १७ आईना १८ बदन १९-२८ नसीहत २० राह २१ पूंजी २२ खाई २३ शिर २४ क़िला तथा वदन आदमी २६ पेंचदार २७ मर्द २९॥

नौ पँवरी[1] ते गढ़ मझियारा[2] । औ तहँ फिरहिंपांचकुतवारा[3] ॥
दशोंद्वार गुप्त[4] एक नाके । अगम[5] चढ़ाव वाट[7] सुठबांके[8] ॥
भेदी जाय कोई वह घाटी । जौ लहिभेद चढ़ै होयचांटी[9] ॥
गढ़तारि कुरड सुरंग तेहि माहां । ते वे पंथ कहों तोहि पाहां ॥
चोर पैठि जस सेंध सवारी । जुवा पैंत[10] जस लाय जुवारी ॥

दो० जसमरजिया समुद्रधस, मारेहाथ आव तस सीप ।
ढूँढ़ि लेहु जो स्वर्ग द्वारे, चढ़ै सो सिंहलदीप ॥

दशोंदुवारे[11] ताल का लेखा । उलट दृष्टि[12] जो लावसोदेखा ॥
जायसोजायश्वासे[13] मनबन्दी । जसधसिलीन्हकान्हे[14] कालिन्दी[15] ॥
तू मनमाथ मारके श्वासा । जो पै मरहि आप कर नासा ॥
प्रकट[16] लोकचार कहुँ वाता । गुप्त[17] लाव मन जासों राता[18] ॥
होंहूँ[19] कहत सबैमति[20] खोई । जो तू नाहिं आहि सबकोई ॥
जीतहि जुरी मरै इकबारा । पुनि को मीचै[21] मरै को पारा ॥
आपहिं गुरू सो आपहिं चेला । आपहिं सब औ आप अकेला ॥

दो० आपहिं जीवन[22] मरनपुनि, आपै तनमन सोय ।
आपहिं आप करै जो चाहै, कहां सो दूसर कोय ॥

नौ दरवाज़ा तथा नौ सूराख़ वदन के आंख़ २ कान २ मुँह एक १ नथुना २ गुदा १ लिंग १-१ दरमियान २ पांच कोतवाल यहां मुराद काम क्रोध अहंकार लोभ वग़ैरह से है ३ दशइंद्रिय वदनकी कर्मइंद्रिय ५ ज्ञानइंद्रिय ५-४ छिपा हुआ ५ जहां किसी का दख़ल न हो ६ राह ७ बहुतटेढ़ा ८ चींटी ९ दांव १० दश दरवाज़े वदन आदमी के ११ निगाह १२ योग की क्रिया बांयें पैरकी रग दाहिने पैरसे पकड़ श्वास को तोंदी के नीचे से रोक दो अँगुली से होंठ वीच की अँगुली से दोनों नथुने दोनों शहादत की अँगुली से आंख दो अँगुली से कान के सूराख़ बन्द कर ईश्वर का नाम तोंदी से खींच कर ब्रह्मांड को श्वास चढ़ाये १३ श्रीकृष्णजी १४ यमुना १५ ज़ाहिर १६ छिपा १७ लाल १८ मैं १९ अक़्ल २० मौत २१ जीना २२ ॥

खण्ड उन्नीसवां राजा गढ़ छेंका खण्ड ॥

सिधि गुटका राजैं जो पावा । औ भइ सिद्धि गणेश मनावा ॥
जब शंकर सिधि दीन्ह कुटेका । परी हूल योगिन गढ़ छेका ॥
सबै पद्मिनी देखहिं चढ़ी । सिंहल घेर गइ उठि मढ़ी ॥
जस घर फिरा चोर मतकीन्हा । तेहिविधिसेंधचाहिगढ़दीन्हा ॥
गुप्त चोर जो रहै सो सांचा । परगट होय जीव नहिं बांचा ॥
पँवरपँवरे गढ़ लाग केवारा । औ राजा सों भई पुकारा ॥
योगी आय छेंक गढ़ मेली । नाजनों कौन देश कहँ खेली ॥

दो० भयो रजायसु देखो, को भिखार अस ढीठ ।
वेगँ वरज तेहि आवहिं, जन दुइचार बसीठँ ॥

उतर बसीठँ[5] दुइआय जुहारी[6] । की तुम योगी की बनजारी ॥
भयो रजायसुँ आगेंखेलहिं[8] । गढ़ँ[9] तरुछांड़िअन्तँ[10]होयमेलहिं ॥
असलागहिकेहिकेसिखे[11] दीन्हें । आयहिमरहिहाथजिवलीन्हें ॥
यहां इन्द्रासन राजा तपा । जाहि रिसाय सूर[12] डरछिपा ॥
हो बनजार तो बनजँ[13] बिसाहो । भर व्योपार लेहु जो चाहो ॥
योगीहोहु तो जुक्ति[14] सो मांगहु । भुक्ति[15] लेहु लैभारगँ[16] लागहु ॥
यहां देवता आश के हारी । तुम पतङ्ग[17] को आहि भिखारी ॥

दो० तुम योगी वैरागी, कहत न मानी कोह ।
लेहु मांग कछु भिक्षा, खेल अन्तकहँ होहँ[18] ॥

आन जो भीखहों आयोंलिये[19] । कसन लेउँ जो राजा दिये ॥
पद्मावत राजा की वारी[20] । हों योगी वह लाग भिखारी ॥

दरवाज़ा १ हुक्म २-७ जल्द ३ वकील ४-५ सलाम ६ जाना ८ क़िला ९ और जगह १० सिखाना ११ सूर्य १२ माल १३ तदबीर १४ रोज़ी १५ राह १६ पांखी १७ चले जाउ और कहीं १८ भीखके वास्ते १९ लड़की २० ॥

खप्पर लिये बारे भा मांगों। भुक्ति[1] देइ लै मारग[3] लागों॥
सोई भुक्ति परापत पूजा। कहां जाउँ असबार न दूजा॥
अब धर यहां जीव वह ठाँऊ। भस्म होहुँ पै तजों न नाऊँ॥
जस बिनप्रान पिण्ड है छूँछा। धर्म लाग कहिये जो पूँछा॥
तुम सों बसीठ राजा की ओरा। शाखँ होहु यह भीख निहोरा॥

दो० योगीबार आवसो, जेहि भिक्षा की आस।
जो निराश दृढ़ आसन, कितगवँने केहिपास॥

सुनि बसीठ मन अपने रिसा। यव पीसत घुनजायहि पिसा॥
योगी ऐस कहै नहिं कोई। सो कहुबात योग तेहि होई॥
वह बड़ राज इन्द्र कर पाटों। धर्ती परे स्वर्ग को चाटा॥
जो यह बात जाय तहँ चली। छूटहिं अबहिं हस्ति[12] सिंहली॥
औ छूटहिं तहँ वज्र के कूटों। बिसरे भुक्त[14] होय सबखूटों[15]॥
जहँलग दृष्टि[16] न जाय पसारी। तहां पसारसि हाथ भिखारी॥
आगे देखि पांवधरि नाथा। तहां न देखि टूटि जहँ माथा॥

दो० वहरानी जेहिजुगतमहँ, तेही राज औ पाट।
सुन्दर जाय राजघर, योगिहि बन्दर काट॥

जो योगी सत बन्दर काटा। एके योग न दूसर बाटा[18]॥
और साधना आवै साधे। योग साधना आपहिं दाधे[19]॥
सरँ पहुँचाउ योग कर साथू। दृष्टि[21] चाहिअगमनें[22] होय हाथू॥
तुम्हरे जोर सिंहल के हाथी। हमरे हस्ति[23] गुरू है साथी॥

दरवाज़ा १ भीख २ रास्ता ३ जगह ४ छोड़ना ५ वदन ६ शाख मेवा भरी ७ कहां जाउँ ८ लायक़ ९ तख़्त १० आसमान ११ हाथी १२ पत्थरके गोले १३ भीख मांगना १४ चारों तरफ़ १५ निगाह १६ तख़्त १७ राह १८ जलाना १९ आख़िर २० नज़र से ज्यादा २१ पहिले २२ हाथी २३॥

हस्तनेस्त[1] वह करतन बारा। परबत करै पांव की छारा[2]॥
जोरगिरे[4] गढ़ जानवन्त[5] भये। जो गढ़ गर्ब करहिं ते नये॥
अन्त जो चलना कोउ न चीन्हा। जो आवा सो आपन कीन्हा॥

दो० योगिहि कोह न चाही, तब न मोहिं रिस लाग।
योग तन्त ज्यों पानी, काहि करै तेहि आग॥

बसीठहिं[10] जायकही सबबाता। राजा सुनत कोह भा राता॥
ठांवहिं[12] ठांव कुँवर सबभांखे। के अबलहिं ये योगी राखे॥
अबहूँ वेगहि[14] करो सँयोऊ[15]। तस मारहु हत्या किन होऊ॥
मन्त्रिन[16] कहा रहो मनबूझे। प्रति[17] न होय योगिहिसों जूझे[18]॥
वे मारे तो काह भिखारी। लाज होय जो मानी हारी॥
ना भल मुये[19] न मारे मोखू[20]। दुहूँ बात तुम्ह लागहि दोखू[21]॥
रहे देहु जो गढ़तर[22] मेली। योगी कित[23] आछे पुनि खेली॥

दो० आछेदेहु[24] जो गढ़तरे, जनि चालहु यह बात।
नितहिं[25] जो पाहन[26] भखकरहिं, असकेहिकेमुखदांत॥

गये बसीठ[27] पुनि बहुरि न आये। राजे कहा बहुत दिन लाये॥
नाजनों स्वर्ग[28] बात धौं काहा। काहु न आयकही फिर चाहा॥
पंख न कायाँ पवन[30] न पाया। केहिविधिमिलोंहोउँकेहिछाया॥
सँवर रक्त नयनहि भर चुवा। रोय हँकारेसि[32] मांझी[33] सुवा[34]॥
परी जो आंसु रक्त[35] की टूटी। रेंग चली जस बीरबहूटी॥

नाश १ देर २ राख ३ पहाड़ ४ जहां तक ५ गरूर ६ मरना ७ खुदबीनी की ८ गुस्सा ९ वकील १०-२७ लाल ११ जगह १२ बुलाया १३ जल्द १४ तदबीर १५ सलाहकार १६ बड़ाई १७ लड़ाई १८ मरना १९ नजात २० पाप २१ क़िलेके नीचे २२ कितने आये और चले गये २३ रहने दो २४ हर रोज़ २५ पत्थर २६ आसमान तथा क़िला २८ खबर २९ बदन ३० हवा अर्थात् ज़ोर ३१ बुलाया ३२ दरमियानी ३३ तोता ३४ खून ३५॥

रहीरक्त लिख दीन्हीं पाती। सुवा जो लीन्ह चोंच[२] भइरांती॥
बांधी कंठ[३] पड़ा जस कांथा[४]। बिरहिके जराजायकहँ नाथा॥

दो० ससिनयनी लिखनीबरन[५], रोयरोयलिखाअकत्थ[६]।
आखरँ[७] दहे न कोई छुवै, दीन्ह परेवा हत्थ॥

औ मुख बचन सो कहेसिपरेवा। पहिले मोर बहुतके सेवा॥
पुनिरे सँवारकहेसि अस दूजी। जेउ बल[१०] दीन्ह देवतन पूँजी॥
सो अबहीं तब से बलखागा। वल जिवरहा न तनसो जागा॥
भलहि ईश[१२] हूँ तुमबल दीन्हा। जहँ तुम तहाँ भावबल कीन्हा॥
जो तुम मया[१३] कीन्ह पग धारा। दृष्टि[१४] दिखाय वान विषमारा॥
जो असजाकर आशा सुखी। दुख महँ एसन मारै दुखी॥
नयन[१५] भिखार न मानहिं सीखा। अगमन[१६] दौरे लीन्हपैभीखा॥

दो० नयनहिं[१७] नयन जो बेधगये, नहिं निकसैं वे वान[१८]।
हिये[१९] जो आखरं तुम लिखी, ते शठ घटहिं परान॥

ते बिष बान लिखूँ कहँ ताईं। रक्त[२१] जो चुआ भीज दुनियाई॥
जान सुकारी[२२] रक्तपसेऊ[२३]। सुखी न जान दुखीकरभेऊ[२४]॥
गिननपीरतिनकाकर चिन्ता[२५]। प्रीतमनिठुर[२६] होहिं अस निन्ता[२७]॥
कासों कहूँ बिरह की भाखा। जासों कहों होय जरराखा॥
बिरह आग तन जरमैं जरै। नयननीर[२८] सायर[२९] सब भरै॥
पाती लिखी सँवर तुम नामा। रक्तलिखे आखरभयश्यामा॥
आखर जरहिं न कोई छुवा। तब दुख देख चला लै सुवा॥

लाल १ गरदन २ निशान ३ आशिक़ ४ काजल आंखका ५ पलक ६ हाल ७ हर्फ़ ८–२० जलना ९ ज़ोर १० मौजूद ११ ईश्वर १२ मेहरबानी १३ नज़र १४ आंख १५–१७ आगे १६ तीर १८ छाती १९ खून २१ कालासांप २२ लाल पसीना २३ भेद २४ अंदेश २५ बेदर्द २६ अर्थात् हमेशा से होते आये हैं २७ आँखका पानी तथा आँसू २८ तालाब २९ अर्थात् कालेहर्फ़ ३०॥

॥ दो० अय शठ मरों छूछि गई पाती, प्रेमपियारेहाथ ।
भेंटहोत दुख रोय सुनावत, जीव जात जो साथ ॥
कञ्चनतार[2] बांधगये[3] पाती । लैगा सुवा जहां धनराती ॥
जैसे कमल सूर्य की आसा । तोर कंथ वेहु मरे पियासा ॥
बिसरा भोग सेज सुख बासू । जहां भँवर सब तहां हुलासू ॥
तबलगि धीर सुना नहिं पीउ । सुना तो घड़ी रहै नहिं जीउ ॥
तबलग सुख हियँ प्रेम न जामा । जहीं प्रेमका सुख विश्रामा ॥
अगर चँदन दुखदहे शरीरू । औ भा अगिनकयों करचीरू[12] ॥
कथा कहानी सुनि सुठ जरा । जानो घीव बसन्दर[13] परा ॥
दो० विरहन आप सँभारे, मैल चीर[14] शिर रूख ।
पिउपिउ करत रातदिन, पपिहा मुख भै सूख ॥
ततखन गा हीरामन[15] आई । मरत पियास छांह जनु पाई ॥
भल तुम सुआ कीन्ह है फेरा । गाढ़ न जानहु प्रीतम केरा ॥
बातहिं जानो विषम पहारा । हृदय नमिला न होय निरारा ॥
मर्म पांनि कर जानि पियासा । जो जल महँ ताकहँ काआसा ॥
का रानी यहि पूँछहु बाता । जन कोइ होय प्रेमकर राता[23] ॥
तुम्हरे दरशनलाग बियोगी[24] । अहा सो महादेव मठ योगी ॥
तुम वसन्तलै तहां सिधाई । देव पूज पुनि औ फिर आई ॥
दो० दृष्टि[25] बान तस मारेहु, खाय रहा तेहि ठांव[26] ।
दूसर बार न बोलहि, लै पद्मावत नांव ॥

खाली १ सोनेकातार २ गरदन ३ अर्थात् पद्मावत ४ खाविन्द ५ खुशी ६ दिल ७ आराम ८ जलना ९ बदन १०-११ कपड़ा १२-१४ आग १३ उसी वक्त १५ नाम तोता १६ मुशकिल १७ टेढ़ा १८ दिल १९ अलग २० भेद २१ पानी २२ अर्थात् दीवाना २३ दुःखी २४ निगाह २५ जगह २६ ॥

रोम रोम बान वे फूटी। सूतहिं सूत रुधिर मुख छूटी ॥
नयनँहि[3] चली रक्तकी धारा। कन्थाँ भीज भयो रतनारा ॥
सूरज बूड़ उठा परभाता। औ मंजीठ[8] टेसू बनराता ॥
भयो बसन्त राती बनपती। औ जतने सब योगी यती ॥
भूमि[10] जो भीज भयो सब गेरू। औ राती तहँ पंक्षिपखेरू ॥
राती सती अगिन सबकाया। गगनँ[13] मेघ राती तहँ छाया ॥
ईंगुरभा पहाड़ जो भीजा। पै तुम्हार नहिं रोम पसीजा ॥

दो॰ तहां चकोर औ कोकिला, मयों हिये तेहि पैठ।
नयनन रक्त भरायहि, तुम फिर कीन्ह न डीठ ॥

ऐसो बसन्त तुम्हीं पै खेलहु। रक्त पराये सेंदुर मेलहु ॥
तुम तो खेल मन्दिर कहँआई। वह का मर्म[16] जसजान गुसाँई ॥
कहेसि मरै को वारहि बारा। एकहि वार होहुँ जरछारा ॥
सर रच चहा आग जो लाई। महादेव गौरी सुधि पाई ॥
आय बुझाय दीन्ह पँथ[20] तहां। मरनखेलकर आगमें जहां ॥
उलटा पंथ प्रेमकी वारा। चढ़ै स्वर्ग जो परै पतारा ॥
अब धसलीन्ह चहौ तेहिआशा। पावै श्वास कि मरै निराशा ॥

दो॰ पाती लिख सो पठाई, लिखा सबै दुख रोय।
धौं जिवरहै कि निसरै, कहा रजायसु होय ॥

कहिके सुआ छोड़ दइ पाती। जानहु दब्बै छूट तसतांती ॥
गेउँ[27] जो बांधा कञ्चन[28] तागा। रातीश्यामै कण्ठ जर लागा ॥

सूराख १ खून २-१५ आँख ३ गुदड़ी ४ लाल ५-८ भोर ६ लाख ७ जंगल की बूटी ६ ज़मीन १० परिन्द जानवर ११ बदन १२ आसमान १३ मेहरवानी १४ भेद १६ ईश्वर १७ राख १८ चिता १६ राह २० पहिले २१ दरवाज़ा २२ आसमान २३ हुक्म २४ निहाई २५ गर्म २६ गरदन २७ सोना २८ लाल वा काला २६ ॥

अगिन श्वास मुख निसरै ताती। तरवर[1] जरहिं तहां को पाती॥
रोय रोय सुवे कही सो बाता। रक्त कि आंशु भयो मुख[2] राता॥
देख कण्ठ जरलाग सो केरा। सो कस जरै बिरह अस घेरा॥
जर जर हाड़ भये सब चूना। तहां मांस को रक्त बहूना॥
वैं तोहिं लाग कयों सब जारो। तपत मीनै जल रहै न पारो॥
दो० तुहि कारनै वह योगी, भसम कीन्ह तनदाहँ।
तू अस निठुर निछोई, बात न पूँछी ताह॥
कहेस सुआ मोसों सुनि बाता। चहोंतो आज मिलों जसराता॥
पैसो मर्म न जानै भोरा। जानै मर्म जो मर के होरा॥
हों जानतहूँ अबहू कांचा। नाजेहि प्रीति रंग थिर[12] रांचा॥
नाजेहिभयो मलयगिरि[13] बासा। नाजेहिरबि[14] होयचढ़ेउ अकासा॥
ना जेहि होय भँवरकर रंगू। ना जेहि दीपक भयो पतंगू॥
ना जेहि किरा भृंग[15] की होई। ना जेहि आप जिये मर सोई॥
ना जेहि प्रेम औट इक भयो। ना जेहि हिये मांभ डरगयो॥
दो० तेहिंका का कहिये रहनै, जो है प्रीतम लाग।
जो वह सुने लेइ धस, का पानी का आग॥
पुनिधनि कनक[18] बानमसि[19] मांगी। उत्तर[20] लिखत भीजतन आँगी॥
तस कञ्चनै कहँ चही सुहागा। जोनिरमल[21] नगहोयसुलागा॥
हों योगी मठ मण्डफ बहोरी[22]। तहवां कसन गांठ तुम जोरी॥
गा बिपभोरे देखके नयना। सखिनलाजका बोलों बयनों॥

पेड़ १ बदन २ मछली ३ बेक़रार ४ वास्ते ५ जलाना ६ बेदर्द ७-८ भेद ९ नादान १० मरके जलना ११ क़ायम १२ चन्दन १३ सूर्य १४ नाम कीड़ा १५ तिसको रहने के वास्ते क्या कहूँ १६ पद्मावत १७ क़लम १८ सियाही १९ जवाब २० सोना २१ पाक साफ़ २२ जाना २३ बेहोश २४ आवाज़ २५॥

खेल मिसैं[1] मैं चन्दन घाला। मगँ जागेसि तो देवों जैमाला॥
तबहुँ न जागा गा तू सोई। जागे भेट न सोये होई॥
अब शशि[2] होय चढ़ै आकासा। जो जिव देय सो आवै पासा॥

दो० तबलागि भुक्ति न लैसका, रावनसिय इकसाथ।
कौन भरोसे अब कहों, जीव पराये हाथ॥

अब जो सूर[3] गगन[4] चढ़ आवै। राहु होय तो शशि कहँ पावै॥
बहुतेहिं ऐसो जीवपर खेला। तू योगी किनमाहँ अकेला॥
बिक्रम[5] धसा प्रेमके बारा। सम्पावत[6] कहँ गयो पतारा॥
सुदीपच्छ[7] खण्डरावत[8] लागी। गगन[9] पूर होयगा बैरागी॥
राजकुँवर[10] कंचनपुर[11] गयो। मिरगावत[12] कहँ योगी भयो॥
साधुकुँवर[13] खण्डावत[14] योगू। मधु[15] मालतिकहँ कीन्ह वियोगू[16]॥
प्रेमावत[17] कैसुरसर[18] साधा। ऊषा[19] लगि अनिरुध[20] वरबांधा॥

दो० हों रानी पद्मावत, सात स्वर्ग पर वास।
हाथ चढ़ों सो तेहिंके, प्रथम करै अपनास॥

हौं पुनि अहों ऐस तुम राती[21]। आधी भेट पिरीतम पाती॥
तोहूँ जो प्रीति निबाँहै[22] आंटा। भँवरन देख केतमहँ कांटा॥
होहु पतङ्ग अावगहुँ[23] दिया। लेहसमुद्रधसहोय मरिजिया॥
रात[24] रंगजिमि[25] दीपकवाती। नयन[26] लावहोयसीपसेवाती॥
चात्रिक[27] होहु पुकारपियासा। पियो न पानि स्वातिकी आसा॥
सारस हो बिछुरी जस जोरी। रैनि[28] होयजलचकइ चकोरी॥

बहाना १ शायद २ चाँद ३-७ भीख ४ सूर्य ५ आसमान ६ राजा बिक्रमाजीत ८ दरवाजा ९ नामरानी १०-१२-१६-१८-२१ राजाभोज ११ नाम जगह १३-१५ नाम राजा १४-१७-२२ भँवर १९ दुखी २० बेटी बाणासुर २३ पोता श्रीकृष्णचन्द्रजी २४ पहिले २५ लाल तथा खुश २६ निबाह करना २७ पकड़ना २८ सुर्ख २९ जिस तरह ३० आँख ३१ पपीहा ३२ रात ३३॥

होहु चकोर दृष्टि[1] शशि[2] पाहां। औ रवि[3] होहु कमल वहमाहां॥

दो० होहुँ ऐस तुहि राती, सकेसि तो प्रीति निबाह।
राहु बेध अर्जुन हे होय, जीत दुरपदी ब्याह॥

राजा यहां तैसे तप भूरा। भा जर बिरह छार कर कूरा॥
जिव गँवाय सो गयो बिमोही। भा बिन जिव जिव दीन्हेसि ओही॥
कहां पिङ्गलो सुखमन[4] नारी। सुन्न समाधि लाग गइ तारी॥
बूँद समुद्र जैसो हो मेरा। गा हेराय तस मिलै न हेरा॥
रंगहि पान मिला जस होय। आपहिं खोय रहा होय सोय॥
सुवे आय देखा भा नाशू। नयन रक्त भर आये आंशू॥
सदा प्रीतम गाढ़[6] करेई। वह न भूल भूला जिव देई॥

दो० मूरि संजीवन आनके, औ मुख छिड़का नीर[8]।
गरुड़ पंख जस झारै, अमृत बरसा कीर[9]॥

मुवा जिया अस बास जो पावा। लीन्हेसि श्वास पेट जिव आवा॥
देखिसि जाग सुआ शिर नावा। पाति दीन्ह मुख बचन सुनावा॥
शब्द सुनाय अमी मुख मेला। गुरू बुलाय वेग चल चेला॥
तोहि[13] अलि कीन्ह आप भा केवां[14]। हों पठवा गुरु बीच[15] परेवा॥
पवन[16] श्वास तोसों मन लाई। जोवै[17] मारग[18] दृष्टि[19] बिछाई॥
जस तुम काया कीन्हों दाहू। सो सब गुरु कहँ भयो अगाहू॥
तपावन्त[22] छाला[23] लिख दीन्हा। बेग चलाव चहूँ सिधि[25] कीन्हा॥

दो० वेग चल आवो अस कहेउ, जीव बसे तुम नाउँ।

निगाह १ चाँद २ सूर्य ३ नाम भाई राजा युधिष्ठिर ४ रग ५-६ जुल्म ७ नाम बूटी ८ पानी ९ तोता १० बोल ११ जल्द १२-२४ भँवर १३ केतकी १४ बिचवानी १५ हवा १६ ढूंढ़ना १७ राह १८ निगाह १९ जलाना २० खबर २१ दिन मिला २२ खत २३ काम पूरा २५॥

नयनंहि[1] भीतरपन्थ[2] है, हिरदय[3] भीतर ठाँउ[4] ॥

सुनि पद्मावत की अस मया[5] । भावसन्त उपजी[6] नइ कया[7] ॥
सुआका बोल पवन होयलागा । उठासोय हनुमत होय जागा ॥
चांदमिलनकहँ दीन्हेसि आशा । सहस[8] किरानसूर्यपरकाशा ॥
पाति लीन्ह लै शीर्श[9] चढ़ावा । दृष्टि चकोर चांद जस पावा ॥
आश पियासा जो जेहि केरा । जो भिझकार वही सो हेरैं[10] ॥
अब यहि कौन पानि मैं पिया । भै तन पांख पतङ्ग मरजिया ॥
उठा फूल हिरदय न समाना । कन्थां[11] टूक टूक भर आना ॥

दो० जहां प्रीतम वै बसहिं, यहि जिबबलैं[12] तेहिबाटैं[13] ।
जो सो बुलावे पांव सों, हम तहँ चलैं ललाटैं[14] ॥

जो पन्थ मिला महेशहि[15] सेई । गयो समुद्र ओही धसलेई ॥
जहँ वह कुण्ड बिषम[16] औगाहाँ । जायपरा तहँ पाव न थाहा ॥
बावर अन्ध प्रेम कर लागू । सौंहैं[17] धसा कुछ सूझ न आगू ॥
लीन्हेसि धसजोश्वासमनमारा । गुरू मुछन्दर नाथ सँभारा ॥
चेला परी न छांड़हि पाछू । चेला मच्छ गुरू जस काछू ॥
जस धसलीन्ह समुद्र मरजिया । उघरे नयन बरे जस दिया ॥
खोज लीन्ह सो स्वर्ग[18] दुवारा । बज्र[19] जो मूँदे जाय उघारा ॥

दो० बांकचढ़ाव स्वर्ग[21] गढ़, चढ़त गयो होय भोर ।
भइ पुकार गढ़ ऊपर, चढ़े सेंध दै चोर ॥

राजैं सुनि योगी गढ़ चढ़े । पूँछी पास पांडित जो पढ़े ॥
योगी गढ़ जो सेंध दै आवहिं । बोलहु शब्द[22] शुद्धजसपावहिं ॥

आँख १ राह २ दिल ३ जगह ४ मेहरबानी ५ पैदा होना ६ बदन ७ हज़ार ८ शिर ९ देखना १० गुदड़ी ११ न्योछावर १२ राह १३ माथा १४ महादेवजी १५ टेढ़ा १६ खबर १७ सामने १८ आसमान १९-२१ पत्थर २० कहो क्या दण्ड २२ ॥

कहहिं बेद पण्डित पढ़ बेदी। योग भँवर जसमालति भेदी॥
जैसे चोर सेंध शिर मेलहिं। तस ये दोउ जीव पर खेलहिं॥
पन्थ नहिं चलहिंबेदजसलिखी। स्वर्गजाय शूलीचढ़ सिखी॥
चोर होय शूली पर मोषू। देजो शूरी तेहि नहिं दोषू॥
चोर पुकार बेध घर मूसा। खोलो राज भँडार मँजूसा॥
दो० जसयहि राजमँदिर कहँ, दीन्हरयन होय सेंध।
तैसो इन्ह कहँ मोषहोय, मारहु शूली बेध॥

खण्डबीसवां मन्त्रीखण्ड गन्धर्बसेन॥

राध जो मन्त्री बोले सोई। एसो जो चोर सिद्ध पै कोई॥
सिद्ध निशङ्क रयनदिन भोहीं। ताकौं जहां तहां अपसोहीं॥
सिद्ध निडरपै अपने जीवा। स्वर्ग देख वो नावहि ग्रीवा॥
सिद्ध जाय पै जिव बधतहां। औरहिं मरन पंख अस कहां॥
सिद्ध अमर कायां जसपारा। जरहिं मरहिं परजाय न मारा॥
चढ़ा जो कोप गगन उपराहीं। थोरे साज मरे ते नाहीं॥
जम्बुक जूझचढ़े जो राजा। सिंह साजके चढ़े सो छाजा॥
दो० छरहि काज कृष्ण करसाजा, राजा चढ़े रिसाय।
सिद्धगिद्धजहँदष्टि गगनमहँ, बिनछरकुछनबिसाय॥
आवहु करहुकदर मससाजू। चढ़हिं बजाय जहांलगिराजू॥
होहसँजोवल कुँवरजो भोगी। सब दलछेंकधरहु अब योगी॥
चौबिसलाख छत्रपति साजे। छपनकोटि दर बाजनबाजे॥

राह १ नजात २ पाप ३ सन्दूक़ ४ मर्दकामिल ५ फिरना ६ देखना ७ पहुँचना ८ गर्दन ९ हमेशाज़िन्दा १० वदन ११ आसमान १२ सियार १३ शेर १४ फ़रेब १५ निगाह १६ लश्कर तय्यार हो १७ मुक़ाबिला १८ राजा १९ फ़ौज २० ॥

बाइससहस[1] सिंहली चाले । गिरि[2] पहाड़ पेई सब हाले ॥
जगत बराबर वैं सब चांपा । डराइन्द्रबासुकि हियँ कांपा ॥
पदमकोटिरथसाजेआवहिं । गदहोयखेह[5] गगन[6] कहँधावहिं ॥
जनु भौचाल जगत महँ परा । कुर्महि[7] पीठ टूटि हिय डरा ॥
दो० छत्रहि स्वर्ग छायगा, सूरय भयो अलोप ।
दिनहि रात अस देखी, चढ़ाइन्द्र होय कोप ॥
देखकटक[8] औमनमत[9] हाथी । बोले रतनसेन के साथी ॥
होतआव दल बहुत असूझा । अस जानव कुछ होयहैजूझा ॥
राजा तुइँ योगी होय खेला । यहीदिवस[11] कहँहमभयेचेला ॥
जहां गाढ़े ठाकुर[12] कर होई । सङ्ग न छांड़े सेवक सोई ॥
जो हम मरन दिवसमनताका । आजआय पूजी वह शाका ॥
पर जिव जाय जायनहिंबोला । राजा सतसुमेरु नहिं डोला ॥
गुरु केर जो आयसु पावहिं । सौंहँ[15] होहिंऔचक्र[16] चलावहिं ॥
दो० आजकरहिं रण भारथ, सत बाचादे राख ।
सत्त गुरु सत कौतुक[17], सत्तभरैं पुनि साख ॥
गुरु कहा चेला सिध होहू । प्रेमबार[18] है करो न कोहू ॥
जा कहँ शीश[20] नायके दीजै । रङ्ग न होय जूझ जो कीजै ॥
जेहिं जिय प्रेमपानि भासोई । जेहि रँगमिलै वही रँगहोई ॥
जो पै जाय प्रेम सों जूझा । कितनतपमरहि सिद्ध जेहिबूझा ॥
यहिसतबहुतजूझ[22] नहिंकरिये । खड्ग[23] देख पानी है हरिये ॥
पानी कहा खड्ग की धारा । लौट पानि सोई जो मारा ॥

हज़ार १ पहाड़ २ नामराजासांपोंका ३ दिल ४ राख ५ आसमान ६-८ कछुवा ७ फ़ौज ६ मस्त १० दिन ११ मुसीबत १२ मालिक १३ हुकम १४ सामने १५ नामहथियार १६ तमाशा १७ दरवाज़ा १८ गुस्सा १६ शिर २० पानी २१ लड़ाई २२-२३ तलवार २४ ॥

पानी से ते आग का करई। आये बुझाय पानी जोपरई॥

दो० शीश[1] दीन्ह मैं आगमन[2], प्रेमपानि शिरमेल।
अवसो प्रीति निवाहूँ, चलौं सिद्धहोय खेल॥

राजै छेंक धरा सब योगी। दुखऊपर दुखसहै वियोगी[3]॥
नाजिय धड़क हिये[4] डरकोई। नाजियमरन जिवनकसहोई॥
नागफांस उन्हमेली ग्रीवां[5]। हर्ष[6] न विसमो[7] अबकोजीवां॥
जोजिव दीन्ह सोलेव निरासा। विसरेनहिंजोलहतनश्वासा॥
करैं[8] किंगरी तेहि तन्तवजावा। यही गीत वैरागी गावा॥
भलहिं आनगये मेली फांसी। हिये[10] नशोचऐसीरिसनासी॥
मैंगये फांद वही दिन मेला। जेहि दिन प्रेमपन्थ खेला॥७

दो० परगट[11] गुप्त[12] सकल[13] महँ, पूररहा सोनाउँ।
जहँ देखों वह देखों, दूसर नहिं कहुँ जाउँ॥

जबलग गुरु मैं अहानचीन्हा। कोटिअन्तरपट[14] विचहुतदीन्हा॥
जो चीन्हा तौ और न कोई। तनमन जिव यौवन सबसोई॥
होंहों कहत धोख अन्तराहीं। जो भा सिद्ध कहां परछाहीं॥
मारै गुरु कि गुरु जियावा। और को मारमरै सब आवा॥
सूरी मेल हस्ति[15] गुरु परू। हौं नहिं जानौं जानै गुरू॥
गुरू हस्ति परवदेसोपेखों[16]। जगतँ[17] जोनास्तै[18] नास्तसबदेखा॥
आंधिमीन[19] जसजलमहँधावा। जलजीवन[20] जलदृष्टि[21] नआवा॥

दो० गुरूमोर मोरे हिये, दिये तुरङ्गहिठाँठ[22]।
भीतर करहि डुलावै, बाहर नाचै काठ॥

शिर १ पहिल २ दुखी ३ दिल ४-१० गरदन ५-९ खुशी ६ दुःख ७ हाथ ८ ज़ाहिर ११ छिपा हुआ १२ सब १३ करोरों परदाका बीच १४ हाथी १५ देखना १६ दुनियां १७ नाश होनेवाला १८ मछली १९ ज़िन्दगी २० निगाह २१ घोड़ेकी बाग २२॥

सो पद्मावत गुरुहौं चेला। योगतन्त जेहिकारने खेला॥
तजे[1] वह बारे[2] न जानौंदूजा। जेहि दिन मिलै यात्रा पूजा॥
जीवकाढ़ भुइँधरौं ललाटू[3]। वहिकहँ देउँ हियाँ महँपाटू[4]॥
को मोहिंलै सो छुवावे पाया। नौ अवतारँ देइ नइ[6] कायाँ[7]॥
जीवचाँहि सोअधिक[8] पियारी। मांगे जीव देउँ वलिहारी॥
मांगे शीश[11] देउँ मैं ग्रीवां[12]। अधिक ते रे जो मारै जीवां॥
अपने जिवकर लोभ न मोहीं। प्रेम वार होय मांगौं ओहीं॥

दो० दरशन वहकादिया जस, हों सुभिखारी पतंग।
जो करवंटे[13] शिर सारी, मरत न मोरों अंग॥

पद्मावत कमलाशँशि[14] ज्योती। हँसै फूल रोवै तब मोती॥
परजापतें[15] हँसी औ रोजू[16]। लायेदूत होय नितँखोजू॥
जबहिं सूर्य्य[17] कहँलागाराहू। तबहिंकमल[18] मनभयो अगाहूँ॥
बिरह अगस्तै[21] जोविसँमो[22] भयउ। सरवँरे[23] हरषै[24] सूखसब गयउ॥
परगंटे[25] ढारसकै नहिं आंशू। घुटघुट मांसगुप्त[26] होयनाशू॥
जस दिनमांझ रयनिहोयआई। बिगसतकमल गयो मुरझाई॥
रातौं बदन गयो होय सेतौं[27]। भवँत भँवर रहिगई अचेता॥

दो० चितहिं[28] जो चित्रं[30] कीन्हधुनं[31], रौंरोंअङ्ग समीप।
सहँसं[32] सालदुख आहभर, मुरछे[33] परीकामीप॥

पद्मावत सँग सखी सयानी। गनकेनखत पीरशँशि[34] जानी॥

वास्ते १ छोड़ना २ दरवाज़ा ३ शिर ४-११ दिल ५ तख़्त ६ नया जन्म ७ बदन ८ ज्यादा ६-१० गरदन १२ शिर उतारना १३ चाँद १४ बाप पद्मावत १५ रोना १६ हररोज़तलाश १७ तथा राजारतनसेन १८ तथा पद्मावत १६ खबर २० आग २१ तेज २२ तालाव २३ खुशी २४ ज़ाहिर २५ छिपा २६ लाल २७ सफ़ेद २८ याद २६ तसवीर ३० पद्मावत ३१ हज़ार ३२ बेहोशी दूरहोती ३३ चाँद तथा पद्मावत ३४॥

जानेहुमर्मै कमलकर कोई। देख बिथा बिरहिन की रोई॥
बिरहा कठिन काल की कला। बिरहन सही कालपर भला॥
काल काढ़ लैजीव सिधारा। बिरह काल मारे पर मारा॥
बिरह आग पर मेलै आगी। बिरहघावपर घावबिजागी॥
बिरह बानपर बान पसारा। बिरह रोग पर रोग सँचारा॥
बिरहसालै परसाल नवेला। बिरहकाल परकाल दहेला॥

दो॰ तनरावन होय शिरचढ़ा, बिरह भयो हनुमन्त।
जारे ऊपर जरै, तजै न कै भसमन्त॥

कोइकुमोदपरसहिंकरपाया।कोइमलयागिरि छिड़कहिंकाया॥
कोइ मुख शीतलनीर चुवावै। कोइ अंचलसों पवनडुलावै॥
कोइमुखअमृत आननिचोवा।जनुबिषदीन्हअधिकं धनसोवा॥
जोवहिंश्वास खनहिखनसखी।कब जिव फिरै पवन औ पँखी॥
बिरहकाल होयहिये[13] जो पैठा। जीव काढ़ लै हाथे बैठा॥
खनकमवन्नबांधा खनखोला।गहेसि[14] जीभमुखजायनबोला॥
खनहि बीज[15] की बानन मारा। कँपकँप नारिमरै बिकरारा[16]॥

दो॰ कतहू बिरह न छांड़े, भा शशिगहन[17] गिराश।
नखत चहूंदिशि रोवहिं, अँधरे धरत अकाश॥

घड़ीचारइमि[18] गहनगिराशी।पुनिविधि[19] हिये ज्योतिपरकाशी[20]॥
निसँसै ऊभभर लीन्हे श्वासा। भइ अधार जीवनकी आसा॥
बिनवहिं सखी छूटशोशि राहू।तुम्हरी ज्योति ज्योतिसबकाहू॥

भेद १ कोकाबेली २-७ आग ३ सूराख ४ भारी ५ छोड़ना ६ चन्दन ८ ठण्ढापानी ९ बहुत १० पद्मावत ११ हरघड़ी १२ दिल १३ रुकना १४ बिजुली १५ बेकरार १६ चाँदगहन १७ इस तरह १८ ईश्वर १९ दिल २० रोशनी २१ बेहोश २२ कछु खाया २३ चाँद २४॥

तूँशशिबदन जगतं उजियारी। कै हरलीन्ह कीन्ह अँधियारी॥
तूगजगामिनि गर्व गहेली। अबकसअस सतछांड़दहेली॥
तूहर लंक हेराई केहर। अब कसहार करेसि है हर॥
तू कोकिल बैनी गजमोहा। कौनव्याधहोयगहीनिछोहा॥
दो० कमलकरी तू पद्मिन, गइ निशि भयो विहान।
अबहुँ न सम्पुट खोलिसि, जोरिउठाजगभान॥
भाननाउँ सुनिकमल बिकासा। फिरकै भँवरलीन्ह मधुवासा॥
शरदचन्द मुखजीभ उघेली। खंजननयन उठी करकेली॥
बिरह न बोल आव मुखमाई। मरमर बोल जीवबरियाई॥
डोलबिरहदारुणं हियें कांपा। खोलनजाय बिरहदुखझांपा॥
उदधिसमुद्रजसतरँगें दिखावा। चंपघूमहिंमुखबातन आवा॥
यह शठ लहर लहर परधावा। भँवरपरा जिव थाह न पावा॥
सखी आन विष देवतो मरनू। जीव न पेट मरन का डरनू॥
दो० खनै उठै खनबूड़ै, अस हिय कमल सकेत।
हीरामनहिं बुलावहि, सखी कहन जिव लेत॥
चेरी धाय सुनत खन धाई। हीरामन लै आय बुलाई॥
जनहु बैद्य औषध लैआवा। रोगियें रोग मरतजिव पावा॥
सुनत अशीश नयनधनखोली। बिरहबैनकोकिलाजिमि बोली॥
कमलहि बिरहबिथा जसबाढ़ी। केशरै बरनपीर हिय काढ़ी॥
कित कमलहि भा प्रेम अँगूरू। जो पै गहन लेह दिन सूरू॥

चाँद कैसा मुँह १ दुनियां २ हाथीकी चाल ३ गरूर ४ भारी ५ कमर ६ चीता ७ आवाज़ ८ बेदर्द ९ रात १० सूर्य्य ११ कातिककी पूरनमासीका चांद १२ ममोलाकी आंख १३ भारी१४मुश्किल१५दिल १६ नामसमुद्र १७ लहर १८ आंख १९ कभू २० बन्द २१ जिसतरह २२ पीला २३ सूर्य्य २४॥

पुरयन छाहिं कमल की करी । सकल विथा मुनि असतु महरी ॥
पुरुष गँभीर न बोलहिं काहू । जोबोलहिं तो और निबाहू ॥

दो० एतना बोल कहत मुख, पुनि होइगई अचेत ।
पुनिकै चेत सँभारी, वही बकत मुखलेत ॥

और दग्ध का कहौं अपारा । सतीजोजरेकठिन असझारा ॥
होय हनुमन्त पैठहै कोई । लङ्का दाहै लाग तन सोई ॥
लङ्काबुझी आग जो लागी । यहिनबुझैतसआंचविजागी ॥
जनहु अगिनके उठहिं पहारा । वैसब लागहिं अंग अँगारा ॥
कट कट मांस सरागँ पुरोवा । रक्की आंसु मांस सबरोवा ॥
खनकँ वार मांस अस भूँजा । खनहिंचपायसिंह असगूँजा ॥
यहरी दग्ध हत अतममरीजे । दग्ध न सही जीवपर दीजे ॥

दो० जहँलगचन्दनमलयागिरि[10], औसायर[11] सबनीर[12] ।
सबमिल आय बुझावहिं, बुझहि न आगशरीर ॥

हीरामन जो देखेसि नारी । प्रीति बेल उपजी[13] हियँ[14] बारी ॥
कहेसिनतुमकस होहु दहेली[15] । उरझी प्रेम प्रीतिकी बेली ॥
प्रीतिवेल जन उरझै कोई । उरझा मुये न छूटै सोई ॥
प्रीति वेल ऐसे तन डाढ़ा । पलहत सुख बाढ़त दुख बाढ़ा ॥
प्रीति वेलकी अमर को बोई । दिनदिनबढ़ै क्षीण[16] नहिंहोई ॥
प्रीतिवेल सँग विरह अपारा । स्वर्ग[17] पतार जरै तेहिझारा ॥
प्रीति अकेल वेल जहँ छावा । दूसर वेल न सरवँर[18] पावा ॥

दो० प्रीतिवेल उरझाय जब, तब सुजान सुखसाख ।
मिले प्रीतम आयके, दाखँ[19] वेल रस चाख ॥

सब १ अच्छेलोग २ जलन ३ मुशकिल ४ जलाना ५ आग ६ सीख ७ कभी ८ शेर ९ चन्दन १० तालाव ११ पानी १२ पैदा १३ दिल १४ भारी १५ घटना १६ आसमान १७ बराबरी १८ अंगूर १९ ॥

पद्मावत उठि टेके पाया। तुमहुँ तो देखौ प्रीतम छाया॥
कहतलाज औरहिये न जीव। इकदिशि आगदुसरदिशपीव॥
तुमसो मोर खेवक गुरु देवा। उतरों पार तेही विधि खेवा॥
सूर उदयगढ़ चढ़त भुलाना। गहने गहा कमल कुँभलाना॥
औ हत होय मरों नहिं भूरी। यह शठ मरों जो नेरहि दूरी॥
घट महँ वकत वकतभा मेरू। मिलहिन मिलहिपरातसफेरू॥
दमनहिं नलहिं जोहंसमिलावा। तब हीरामन नाउँ कहावा॥

दो० मूरि सजीवन दूर है, सालै शक्ती वान।
प्राण मुक्ति अवहोतहै, वेग देखावहिआन॥

हीरामन भुइँ धरा ललाटू। तुमरानीयुगयुग सुखपाटू॥
जेहिके हाथ जरी औ मूरी। सो योगी अब नाहीं दूरी॥
पिता तुम्हार राज कर भोगी। पूजे विप्र मरावे योगी॥
पँवरि पँवर कुतवाल सो वैठा। प्रेमकलुंधे सुरँगहोय पैठा॥
चढ़त रयनिगढ़ होयगा भोरू। आवत वीर धराके चोरू॥
अब लैगये देय वह शूरी। तेहिसो अगाहि विथातुमपूरी॥
अब जिव तुम कायां वहयोगी। काया रोग जान पै रोगी॥

दो० रूप तुम्हार योगी आपन, पिंड कमावा फेर।
रहा हेराय खंड तेहि आपै, कालन पावत हेर॥

हीरामन जो बात यहि कही। सूर्यकीगहन चांद पुनिगही॥
सूर्यकीदुखजोशशि होयदुखी। सो कित दुखमाने करमुखी॥
अबजो योगि मरै मोहिं नेहों। मोहिं वह साथ धतंगगनेहों॥

छाती १ इकतरफ़ २ मल्लाह ३ सूर्य्य ४ मुलाक़ात ५ रानीदमन ६ नाम राजा ७ नाम बूटी ८ सूराख ९ आखिर १० जल्द ११ शिर १२ हमेशा १३ तख़्त १४ जड़ १५ ब्राह्मण १६ड्योढ़ी १७ प्रेमका भराहुआ १८ दरवाज़ा १९ खबर २० वदन २१ चांद २२ मुहब्बत २३ ज़मीन-आसमान २४॥

रहै तो करों जन्म भर सेवा। चलैतो यह जिव साथ परेवा ॥
कौनसो करे लेगहि[2] गुरुसोई। पर कायाँ[3] प्रबेश जो होई ॥
पलटसो कौन पंथ बिधिखेला। चेला गुरू गुरू होय चेला ॥
कौन खगड अस रहा लुकाई। आवै काल हेरै फिर जाई ॥
दो० चेला सिद्ध सो पावै, गुरुसों करेअछेद।
गुरू करै जो कृपा, कहै सो चेला भेद ॥
अनरानी तुम गुरु वह चेला। मोहिं पूँछहु कै सिद्ध नवेला॥
तुम चेला कहँ परशन भई। दरशन देय मँडफ चलगई ॥
रूप गुरू कर चेलहि डीठा। जितसमायहोयचित्रं सोपैठा ॥
जीव काढ़ ले तुम अपसई[11]। वह भा काया जिव तुम भई ॥
कया जो लाग धूप औ सेऊँ[12]। कया न जान जानि पै जीऊ॥
भोग तुम्हार मिला वह जाई। जो वहबिथा सोतुमकहँआई॥
तुम वहकी घट वह तुम माहां। काल कहां पावै वह छाहां ॥
दो० अस वह योगी अमर[13] भा, परकाया परवेश।
आवकाल गुरुतनदेखी, फिर सोकरे अदेशू[14] ॥
सुनि योगी की आमर करनी। न्योरी[15] बिरहबिथाकीमरनी॥
कमलकरीहोय बिकसा[16] जीव। जनु रविउदय छूटगासीव[17] ॥
जो भा सिद्धको मारै पारा। नींबूरसते होय जो छारा[18] ॥
कहो जाय अब मोर सँदेशू। तजो[19] योगअबहोहु नरेशू ॥
जन जानहु हौं तुमसों दूरी। नयनहिं मांझ गड़ी वहशूरी ॥
तुम प्रेस्वेत घटै घट केरा। मोहिंघटजीव घटतनहिंबेरा[22] ॥

हाथ १ पकड़ना २ बदन ३ राह ४ देखना ५-६ कमाल ६ दुईनराखै ७ नया ८ तसवीर १० छिपना ११ जाड़ा १२ हमेशा ज़िन्दा १३ सलाम १४ आख़िर १५ खिलना १६ सूर्य्यके उदय जाड़ा जाय १७ राख १८ छोड़ना १९ बहादुर २० पसीना २१ देर २२ ॥

तुम कहँ पाटे हिये[२] में साजा। अब तुम मोर दुहू जगराजा॥

दो॰ जोरीजियहिंसिलगलरहै, मरहिं तोएकहिं दोउ।
तुमपै जियजनहोयकुछ, मोजियहोयसोहोउ॥

खण्डइक्कीसवांशूलीखण्डरतनसेन॥

बाँधतपा आनी जहँ शूरी। जुरेआय सब सिंहल पूरी॥
पहिले गुरुदेव कहँ आना। देखरूप सबकोउ पछताना॥
लोगकहैं यहि होय न योगी। राजकुँवर कोउअहैवियोगी[४]॥
काहू लाग भयो है तपा। हिये[५] गुमाल केर मुखजपा॥
जस मारे कहँ बाजा तूरू। शूरीदेख हँसा मन्सूरू॥
चमके दशनै भयो उजियारा। जो जहँ तहां बीजै असमारा॥
योगी केर करो पै खोजू। मंगे यहिहोय न राजा भोजू॥

दो॰ सब पूँछहिं कहु योगी, जात जन्म औ नाउ।
जहाँ ठाँव रोवकर, हँसा सो कहु केहिभाउ॥

का पूँछो अब जात हमारी। हम योगी औ तपा भिखारी॥
योगी जात कौन हो राजा। गारिन कोहमारे नहिं लाजा॥
निलज भिखारलाजजेहिं खोई। तेहिकी खोज परे जन कोई॥
जाकर जीव मरे पर बसा। शूरीदेख सो कसनहिं हँसा॥
आज नेहसों होय निबेरा। आजभूमि[१४] तजे गगनै वसेरा॥
आज कयाँ पिंजर बँद टूटा। आजहिं प्रान परेवा छूटा॥
आज नेह सो होय नियारा। आज प्रेमसँग चला पियारा॥

दो॰ आजअवधे सरे पहुँची, गयेजाउँसुखरात।

सख्त-१ दिल २-५ योगी ३ दुखी ४ नामबाजा ६ नाम मर्द कामिल ७ दांत ८ बिजुली ९ तलाश १० शायद ११ गुस्सा १२ जुदाई १३-१९ ज़मीन १४ छोड़ना १५ आसमान १६ बदन १७ उड़नेवाला १८ हद २० बराबर २१ लाल २२॥

वेगं होहु मोहिं मारहु, जन्न चालहु यह बात ॥

कहहिंसँवरि जेहि चाहेससिसँवरा। हमतुमकरहिं केतिकर भँवरा॥
कहेसि वही संवरों हर फेरा। मुयेजीत आहों जेहि केरा॥
औ सुमिरों पद्मावत रामा। यहिजिवन्योछावरतेहिनामा॥
रक्त की बूँद कया जब परहीं। पद्मावत पद्मावत कहहीं॥
रहै तो बूँद बूँद महँ ठाँऊँ। परहु तो सोई लै लै नाऊँ॥
रोम रोम तन तासो ओधा। सूतहि सूत बेध जिवसोधा॥
हाड़हिहाड़ शब्दं सो होई। नस नस माँह उठै धुनिसोई॥

दो० खाय बिरह गाताकर, गूद मांस किये हान।
हों पुनि सांचा होयरहा, वहकी रूप समानं॥

योगिहि जबहिं गाढ़ असपरा। महादेव कर आसन टरा॥
औ हँसि पार्वती सो कहा। जानहुसूरं गहन असगहा॥
आज चढ़े गढ़ ऊपर तपा। राजैं गहा सूर तब छिपा॥
जग देखैगा कौतुकं आजू। कीन्ह तपा मारे कहँ साजू॥
पार्वती सुनि पाँयन परी। चलौ महेशं देखैं इक घरी॥
भेष भाट भाटिन कर कीन्हा। औ हनुमन्तबीर सँगलीन्हा॥
आय गुप्त है देखन लागे। वहमूरति कस सती सभोगे॥

दो० कटकं असूझदेखके आपन, राजागर्व करेय।
दईकीदिशा न देखै, वह काकहँ जयं देय॥

आसन लिये रहा हो तपा। पद्मावत पद्मावत जपा॥
मन समाध तासों धुन लागी। जेहिदरशन कारण बैरागी॥

जल्दे १ चदन २ जगह ३ बेधना ४ सूराख ५ आवाज़ ६ समाना ७ मुशकिल ८ सूर्य्य ९ योगी १० तमाशा ११ महादेवजी १२ छिपकर १३ सतीकी तरह क़ायम १४ फ़ौज १५ ग़रूर १६ ईश्वरकी तरफ़ १७ जीत १८॥

रहा समाय रूप वह नाऊँ। और न सूझ वारे जहँ जाऊँ॥
औ महेशँ कहँकरो अदेशूँ। जेहि यहपन्थै दीन्ह उपदेशू॥
पार्वती पुनि सत्य सराहा। औ फिरमुख महेश करजाहाँ॥
हिये महेशँ भईजोमहेशी। कित शिरनावहिं ये परदेशी॥
मरतेहुँ लीन्ह तुम्हारा नाऊँ। तुमचित कीन्ह रही यहठाँऊँ॥

दो० मारतही परदेशी, राखलेहु यहि वीर।
कोइ काहू कर नाहीं, जो हो चलै न तीर॥

लै सँदेश सोटाँ गा तहाँ। शूली देहिं रतन को जहां॥
देख रतन हीरामन रोवा। राजा जिव लोगनहठ खोवा॥
देख रोदनँ हीरामन केरा। रोवहिं सव राजा मुखहेरा॥
मांगहिं सव विधिनाँ सों रोई। की उपकारँ छुड़ावै कोई॥
कहि सँदेश सब विपतिसुनाई। विकल वहुत कुछकहीनजाई॥
काढ़ प्रान वैठ लिये हाथा। मरे तो मरों जियों इक साथा॥
सुनि सँदेश राजा तब हँसा। प्रान प्रान घट घट महँ वसा॥

दो० हीरामन औ भाट दसौंधी, भये जिवपर इकठाउँ।
चल सो जाय अब देख तहँ, जहँ वैठो रहिराउँ॥

राजा रहा दृष्टि के ओंधी। रहिनसका तव भाट दसौंधी॥
कहेसि मेलके हाथ कटारी। पुरुष न आछे वैठि पिटारी॥
कान्ह कोप कै मारा कंसू। गोकुल मांझ वजावा वंसू॥
गन्ध्रबसेन जहां रिस वाढ़ा। जाय भाट आगे भा ठाढ़ा॥
ठाढ़ देख सब राजा राऊ। वायें हाथ दीन्ह वरभाँऊ॥

दरवाज़ा १ महादेवजी २-७ सलाम ३ राह ४ देखना ५ दिल ६ मेहरवानी ८ जगह ९ तोता १० रोना ११ देखना १२ ईश्वर १३ कोशिश १४ निगाह १५ आशीर्वाद १६॥

बोला गन्ध्रबसेन रिसाई । कैस योगि कसभाट असाई ॥
योगी पानि आग तू राजा । आगहिपानिजूझ नाहिंछाजा ॥
दो० आरा बुझाई पानि सो, जूझ न राजा बूझ ।
लीन्हे खप्पर बारै तुहिं, भिक्षा देहि न जूझ ॥
योगि न होय आहि सो भोजू । जानहु भेद करो सो खोजू ॥
भारथै होय जूझ जो ओधा । होहिं सहाय आयसबयोधा ॥
महादेव रण घण्ट बजावा । सुनिकै शब्द ब्रह्मचलिआवा ॥
बासुकि फणपतार सों कादा । अष्टोकुली नागभा ठादा ॥
छप्पन कोटि बसन्दर बरा । सवालाख पर्बत फरहरा ॥
चढ़े अस्त्र ले कृष्ण मुरारी । इन्द्र लोग सब लाग गुहारी ॥
तेंतिस कोटि देवता साजा । औ छ्यानबे मेघदल गाजा ॥
दो० नब्बे नाथ चलिआवहिं, औ चौरासी सिद्ध ।
आजमहाभारथचलै, गगनै[13] गरुड़[14] औगिद्ध ॥
भइअज्ञा[15] को भाट औभाऊँ[16] । बायें हाथ दिये बरभाऊँ[17] ॥
को योगी अस नगरी मोरे । जो दै सेंध चढ़े गढ़ चोरे ॥
इन्द्र डरै नित नावै माथा । जानत कृष्ण शेष ज़े नाथा ॥
ब्रह्मा डरै चतुरमुख[18] जासू । औ पाताल डरै बलि[19] बासूँ[20] ॥
धरति डरै औ मण्डफ मेरू[21] । चन्द्रसूर्य्यऔ गगनै[22] गँभीरू ॥
मेघ डरहिं बिज़ुली जेहिडीठी[23] । कूर्म[24] डरै धरती ज़ेहिं पीठी ॥
चहोंतो सबमाँकौं[25] धर केशा । औरकोगिनतै[26] अनेगनरेशाँ[27] ॥

बेअदब १–१६ लड़ाई २ दरवाज़ा ३ भारी लड़ाई ४ मारना ५ मदद ६ आवाज़ ७ नाम राजा साँपों का ८–२० नाम हाथी ९ आग १० मौजूद ११ हथियार १२ आसमान १३ नाम राजा पक्षी १४ हुक्म १५ सलाम १७ चार मुँह १८ राजा दैत्य १९ नाम पहाड़ २१ आसमान २२ निगाह २३ कछुवा २४ फेकवादेना २५ गिनती २६ राजा २७ ॥

दो० बोला भाट नरेश सुनि, गर्ब न छाजा जीव।
कुम्भकरणकी खोपड़ी, बूड़त बाचा भीव॥

रावण गर्ब बिरोधा रामू। ओही गर्ब भयो संग्रामू॥
तसरावण असको बरबंडा। जेहिंदशशीशँ बीसभुजदंडा॥
सूरज जेहि की तपै रसोई। निज बसन्दर धोती धोई॥
सूक सुनेटा शशिमसयारा। पवन करैनित बारे बोहारा॥
मीच[13] लाय कै पादी बांधा। रहा न दूसर सपने कांधा॥
जो अस बज्र टराहि नहिं टारा। सोउ मर दोउ तपसी करमारा॥
नाती पूत कोटि दश अहा। रोवनहार न एको रहा॥

दो० ओछ जान के काहू, जनकोइ गर्ब[15] करेय।
ओछी पार दई[16] है, जीत पत्र जो देय॥

अबजो भाट तहां हत आगे। बिनय उठा राजा रिसलागे॥
भाट अहै ईश्वर की कला। राजा सबराकेहँ अरकला॥
भाट मीच पै आपन दीसा। ताकहँ कौन करै रिस रीसा॥
भयो रजाय सुगन्धब सेनी। काहि मीचके चढ़ा नसेनी[20]॥
कह आनी बानी अस पढ़ै। करसि न बुद्धि भेंट जो कढ़ै॥
जातभाट कितओगुन लावस। बायें हाथ राजबर भावस॥
भाट नाउँ का मारों जीवा। अबहूं बोल नायके ग्रीवा[24]॥

दो० तुइरे भाट वै योगी, तोहिं यह कहांक सङ्ग।
कहां चढ़ै असपावा, कहां भया चित भङ्ग॥

गरूर १ वचना २ नाम पहलवान ३ सज़ादेना ४ लड़ाई ५ ज़बरदस्त ६ शिर ७ नाम गुरू राक्षसोंका ८ चोपदार ९ चाँद मशालची १० हवा ११ दरवाज़ा १२ मौत १३ श्रीराम लक्ष्मण १४ गरूर १५ कमज़ोर की तरफ़ १६ अर्ज़ १७ मुकाबिला न चाही १८ हुक्म १९ सीढ़ी २० अक़िल २१ बेहुनर २२ सलाम २३ गर्दन २४॥

जो सत पूँछेसि गन्धर्व राजा। सत पै कहूँ परै नहिं गाजा॥
भाटहि काहि मीचसों डरना। हाथ कटार पेट हन मरना॥
जम्बूद्वीप चितावर देशू। चित्रसेन बड़ तहां नरेशू॥
रतनसेन यहि ताकर बेटा। कुलचौहान जाय नहिं मेटा॥
खांड़ै अचल सुमेरु सुभारू। टरै न जो लागै संसारू॥
दान सुमेरु देतनहिं खांगा। जो यह मांग न औरहि मांगा॥
दाहिन हाथ उठायों ताही। और को अस बरभावो जाही॥

दो० नाउँ महापात्र मुहिं, तेहेकि भिखारी डीठ।
रिसलागे खरिबात कहि, खरि पै कहै बसीठ॥

ततखन सुनि महेशौं मनलाजा। भाटकिरनि हैबिनवौं राजा॥
गन्धर्वसेन तू राजा महा। हौं महेश मूरत सुनि[11] कहा॥
पै जो बात होय भल आगे। कहा चही काभा रिस लागे॥
राजकुँवर यहिहोहिं न योगी। सुनि पद्मावतभयो बियोगी[12]॥
जम्बूद्वीप राजघर बेटा। जोहै लिखा सो जाय न मेटा॥
तूरे सुनें जाय वह आना। औ जाकर बिरोकै[13] तैमाना॥
पुनि यह बात सुनीशिवलोका। कर सुबिवाह धर्म है तोका॥

दो० मांग भीख खप्पर लिये, मुये न छांड़ै बार।
बूझदेखजो कनककचूरी, भीखदेह नहिंमार॥

औ हैटे होहरे भाट भिखारी। का तू मोहिं देइ अस गारी॥
को मोहिंयोगौं जगतहोइपारा। जासों हेरौं[18] जाय पतारा॥
योगी यती आव जित कोई। सुनत त्रास मान भा सोई॥

बिज्जुली १ राजा २ तलवार बहादुर ३ कमी ४ शोख ५ वकील ६ उसी वक़्त ७ महादेवजी ८ मानिन्द ९ तारीफ़ १० कहामान ११ दुखी १२ गुस्सा १३ दरवाज़ा १४ सोने की कटोरी १५ दूर हो १६ लायक़ १७ देखना १८ डर १९॥

भीखलेहु फिर मांगो आगे । यहि सब रयेनि रहै गढ़लागे ॥
जसचहि इच्छ चहूँतेहिदीन्हा । नाहिं वेध शूली जिवलीन्हा ॥
जेहि असंसाधहोय जिवखोवा । सो पतंग दीपक तस रोवा ॥
सुर नरमुनि गुनिगनअब देवा । तेहिं को गिनेकरहिं नितसेवा ॥

दो० मोसों को सरवरं करै, अरे मुनि झूँठेभाट ।
क्षारं होय जो चाखों, गजै हस्तिनं केठाट ॥

योगी धर मेले सब पाछे । उरये मालँ आये रण काछे ॥
मंत्रिनं कहा सुनो हो राजा । देखहु अब योगिनकर काजा ॥
हमजो कहा तुमकरहुन जूझा । होत आवदरं जगतअसूझा ॥
खनं इकमहँ झुरमटहो वीता । दरमहँ चढ़ै जोरहै सोजीता ॥
कै धीरज राजा तव कोपा । अङ्गदं आय पांव रण रोपा ॥
हस्तिं पांच जो अगमनं धाये । ते अङ्गद धर सूंड़ि फिराये ॥
दीन्ह उड़ाय स्वर्ग कहँ गये । लौट न फिरे तहहिं के भये ॥

दो० देखतरहैं अचम्भो योगी, हस्ती वहुरन आय ।
योगीकर अस जूझव, भूमि न लागत पाँय ॥

कहहिं बात योगी हम पाये । छिन इक मांह चहतहैं धाये ॥
जौलहि धावहिं असकाखेलहु । हस्तिहिंकेर जूहँ सब पेलहु ॥
जोगजं पेल होय रण आगे । तस वगमेल करहु सँग लागे ॥
हस्ति की जूह आय अँगसारी । हनुमत तबै लँगूर पसारी ॥
जोहिसो सेनं बीच रणआई । सबै लपेट लँगूर चलाई ॥
बहुतक टूट भये नौ खराडा । वहुतक जायपरे ब्रह्मराडा ॥

रात १ चाहना २ बराबरी ३ राख ४ हाथी मस्त ५ हाथी ६ पहलवान ७ सलाहकार ८ लड़ाई ९ फ़ौज १० पल ११ वालि का बेटा १२ हाथी १३ पहिले १४ आसमान १५-२१ ज़मीन १६ हलका १७ मस्त हाथी १८ मुक़ाबिला १९ फ़ौज २० ॥

बहुतक भुवन सोह अनोखा। रहे जो लाख भये ते लेखा॥

दो० बहुतक परे समुद्रमहँ, परत न पावा खोज।
जहां गर्व तहँ पीरा, जहां हँसी तहँ रोज॥

फिर आगे का देखे राजा। ईश्वर केर घण्ट रण बाजा॥
सुना शंख जो विष्णु अपूरा। आगे हनुमत केर लँगूरा॥
लीन्हें फिरैं लोक ब्रह्मण्डा। स्वर्ग पतारलोवा मृतमण्डा॥
बलिँ बासुकि औ इन्द्रनरेन्दू। राहु नखत सूरज औ चन्दू॥
जामवन्त दानव राक्षस पुरे। अहतो बंध्रं आय रण जुरे॥
जेहिकर गर्व करत हत राजा। सो सब फिरि बैरी होइ साजा॥
जहँवां महादेव रण खड़ा। शीशनाय नृप पांयन पड़ा॥

दो० केहिकारण रिसकीजिये, हों सेवक औ चेर।
जेहि चाही तेहि दीजिये, बारि गुसाईं केर॥

जब महेश उठ कीन्हबसीठी। पहिले कडू अन्तहोय मीठी॥
तू गन्ध्रब राजा जग पूजा। गुण चौदह सिख देइको दूजा॥
हीरामन जो तुम्हार परेवा। गा चितौर औ कीन्हेसि सेवा॥
तेहि बुलाय पूँछो वह देशू। औ पूँछो योगिहि जस बेशू॥
हमरे कहत रोप नहिं मानो। जो वह कहे सोई परमानो॥
जहां बारि तहँ आवबर ओका। कर बिवाह धर्म बड़ तोका॥
जो पहिले मन मानन कांधे। परखे रतन गांठ तब बांधे॥

दो० रतन छिपाये ना छिपै, पारख होय सो पेष।
बाल कसौटी दीजियो, कनक कचौरी वेष॥

फिरना १ बीच २ गह्वर ३-११ रोना ४ महादेवजी ५-१५ ज़मीन ६ नाम राजा दैत्य ७ नाम राजा सांप ८ राजा ९-१२ पत्थर १० वास्ते १३ लड़की १४ वकालत १६ जानवर परिन्द १७ यक़ीन १८ सोने की कटोरी १९॥

हीरामन जो राजैं सुना। रोष बुझाय हिये[2] महँ गुना॥
आज्ञाभई बोलावहु सोई। पण्डितहूते दोष[3] नहिं होई॥
एक कहत सहसकै दशधाये। हीरामनहिं वेग लै आये॥
खोला आगे आन मँजूसा[4]। मिलानिकसिबहुदिनकररूसा॥
अस्तुति करत मिला बहुभांती[6]। राजैं सुना हिये भइ शांती[7]॥
जानो जरत अगिन जलपरा। होयफुलवाररहस हियभरा॥
राजैं मिल पूँछी हँस बाता। कसतन पियर वरन मुखराता॥

दो० चतुरबेद तुम पण्डित, पढ़े शास्त्र वो वेद।
कहां चढ़े योगीगढ़, आनकीन्ह घरभेद॥

हीरामन रसनीं रस खोला। दैअशीश औ अस्तुति बोला॥
इन्द्रराज राजेश्वर महा। सुनिहिये[11] रिसकुछ जाय न कहा॥
पै जो बात होय भल आगे। सेवक निडर कहै रिस लागे॥
सुवा सुफल अमृत पैखोजा। होय न विक्रम[12] राजा भोजा॥
हों सेवक तुम आदि[13] गुसाईं। सेवा करों जियों जब ताईं॥
जो जिव दीन्ह देखावा देशू। सोपै जिय महँ वसै नरेशू॥
जो वह सँवरै एकै तोहीं। सोई पंख जगत रतिमोहीं[15]॥

दो० नयनबैन[16] औ श्रवण, सबही तोर प्रसाद।
सेवा मोर यही नित, बोलों आशिरबाद॥

जो अस सेवक जेहि तपँकसा। तेहिक जीभ पै अमृत बसा॥
तेहिं सेवक कै करमहिं दोषू[18]। सेवा करत करै पतिरोषू[19]॥
औजेहिदोष निदोषहिं[20] लागा। सेवक डरा जीव लै भागा॥

गुस्सा १-११ दिल २-११ क़सूर ३-१८ हज़ार ४ पिंजरा ५ बहुत तरह ६ तसल्ली ७ लाल ८ चार ९ ज़बान १० राजाविक्रमादित्य १२ सबसे पहिले १३ राजा १४ लालमुँह १५ आँख ज़बान कान १६ मेहनत की १७ बेक़सूर २० ॥

जो पक्षी कहवां थिर[1] रहना। ताकै जहां जाय जो डहना॥
सप्तद्वीप[2] फिर देखेउँ राजा। जम्बूद्वीप जाय तब बाजा॥
तहँ चितौर देखो गढ़ ऊँचा। ऊँचराज शिर तोपहँ पहुँचा[3]॥
रतनसेन यह तहां नरेशू। सो आन्यो योगी कर बेशू॥

दो० सुवासुफल लै आनी, है तेहि गुण मुखरातै।
कयां पीत सो तासों, सँवरों बिक्रम बात॥

पहिले भयो भाट सत भाखी। पुनि बोला हीरामन साखी॥
राजा भा निश्चय मन माना। बांधा रतन छोड़ कै आना॥
कुल पूँछा चौहान कुलीना। रतन न बांधे होय मलीना॥
हीरा दशन पान रँग पागी। बिहँसत बदन बीजबरतागी॥
मुन्द्रा श्रवणवीन सों चांपे। राजबैन उघरे सब झांपे॥
आना काटर एक तुखारू। कहा सुफेरिभयो असवारू॥
फेरा तुरी[11] छतीसो खुरी। सबहिं बखांनी सिंहलपुरी॥

दो० कुँवर बतीसो लक्षना, सहस[13] किरन जस भान[14]।
काह कसौटी कसिये, कञ्चन[15] बारह बान॥

देखसूर्य्य करकमल सँयोगू। अस्तअस्त बोला सबलोगू॥
मिला सोवंश अंश उजियारा। भाबिरोकै औतिलकसँवारा॥
अनिरुद्धको जो लिखजयमारा। को मेटै बाणासुर हारा॥
आज मिलीअनिरुधकहँऊषा। देव इन्द्र दीन्ह शिर दूषा॥
खड्ग सूँर भुइँ सरवँरे केवा। वन खँड भँवरहोय रसलेवा॥

क़ायम १ बाजू २ सातों मुल्क ३ पहुँचा ४ लाल ५ बदन ६ यक़ीन ७ कानकी बाली ८ सरदारी की बातें ९ घोड़ा १०–११ तारीफ़ १२ हज़ार १३ सूर्य्य १४ २० सोनाख़ालिस १५ तथा रतनसेन १६ तथा पद्मावत के लायक़ १७ हह बाह १८ टीका १९ तालाब २१ ॥

पच्छम का बार पूर्बकी बारी। लिखी जो जोरीहोयनन्यारी॥
मानुषसाज लाख मन साजा। सोई होयजो बिधिउँपराजा॥
दो० गये बाजन जो बाजत, जिय मारण रणमाहँ।
फिर बाजन ते बाजे, मंगलचार उनाहँ॥२

बोल गुसाईं कर मैं माना। कहिसोजगतउतरै कहँआना॥
मानाबोल हर्ष जिव बाढ़ा। औ बिरोकँ भा टीका गाढ़ा॥
दोनों मिले मनावा भला। पुरुष आप आप कहँ चला॥
लीन्ह उतारी जो हत योगू। जो तप करै सो पावै भोगू॥
वह मन चित जो एकै अहा। मार लीन्ह न दूसर कहा॥
जो अस कोई जिव परछेवा। देवता आय करहिं तेहिंसेवा॥
दिनदश जीवन जो दुख देखा। भायुगयुगसुख जहांनलेखा॥
दो० रतनसेन का बरनों, पद्मावत कर व्याह।
मन्दिरबेगँ सँवारो, मन्दिर तोरा छाह॥

खण्डबाईसवांब्याहराजारतनसेनऔरपद्मावत॥

लगन धरी औ रचा बिवाहू। सिंहल निवत फिरा सबकाहू॥
बाजन बाजे कोटि पचासा। भा आनँद सगरे कैलासा॥
जेहिदिनका नितदेवमनावा। सोई दिवस पद्मावत पावा॥
चांद सूर्य्य मन माथे भागू। औगावहिंसबनखत सुहागू॥
रचरचमाणिक[१३] माड़ौ छावहिं। औभुइँराति[१४] बिछावबिछावहिं॥
चन्दन खम्भ रचे चहुँ पांती। माणिकदिया बरहिंदिनराती॥
घर घर मन्दिर रचे दुवारा। जहँतक नगर गीत झंकारा॥

लड़का १ लड़की २ अलग ३ ईश्वरने पैदाकिया ४ जमाव ५ खुशी ६ टीका ७ खेलना ८ तारीफ़ करना ९ जल्द १० दिन ११ तथा सहेलियां १२ जवाहिर १३ लाल १४॥

दो० हाट बाट सब सिंहल, जहँ देखौ तहँ रात[1]।
धन रानी पद्मावत, जाकर ऐसि बरात ॥
रतनसेन कहँ कपड़ा आये। हीरा मोति पदारथ लाये ॥
कुँवर सहस्र[2] सँग अहे सभागे। बिनय[3] करैं राजा पहँ लागे ॥
जेहिलग तुम साधा तप योगू। लेहु राज मानो सुख भोगू ॥
मज्जन[4] करहु बिभूति उतारो। करोअस्नानचित्र[5] समसारो ॥
काढ़हु मुन्दा फटक अभाऊ। पहिरोकुण्डल कनक[6]जड़ाऊ ॥
छोरहु जटा फुलायल लेहू। झारहु केश मुकुट शिरदेहू ॥
काढ़हु कंथा[7] चिरकुट लावा। पहिरो राता दगला सुहावा ॥
दो० पांवरि[8] तजहु देहुपगपैरी, आवा बांक तुखार[9]।
बांध मौर धरि छत्र शिर, बेग[10] होहु असवार ॥
साजा राजा बाजन बाजे। मदनसहाय दोउदल गाजे ॥
औ राता सोने रथ साजा। भइ बरात गोहन[11] सब राजा ॥
बाजत गाजत भा असवारा। सबसिंहलने कीन्ह जुहारा[12] ॥
चहुँदिशियथअलनखततरांई[13]। सूरज चढ़ा चांद की ताई ॥
सब दिन तपे जैस हियँ[16] माहां। तैसि रात पाई सुख छाहां ॥
ऊपर छत्र राति[17] तस छावा। इन्द्रलोक सब सेवा आवा ॥
आज इन्द्रअप्सरै[18] सों मिला। सब कैलास होहिं सिंहला ॥
दो० धरती स्वर्ग[19] चहूँ दिश, पूररही मशयार।
बाजत आवै मँदिर[20] कहँ, होहिं मंगलाचार ॥
पद्मावत धौराहरै चढ़ी। चौकसरवि[21] जाकहँशशि[22] करी॥

लाल १-१२-१७ हज़ार २ अर्ज़ ३ नहाना ४ तसवीर ५ बाली ना चीज़ ६ सोना ७ गुदड़ी ८ खड़ाऊँ ९ घोड़ा १० जल्द ११ साथ १२ सलाम १४ छोटे सितारे १५ दिल १६ इन्द्रलोक की परी १८ आसमान १९ महल २० सूर्य २१ चांद २२ ॥

देख बरात सखिनसों कहा । यह महँ कौनसो योगी अहा ॥
कैसो योग लै ओरे निवाहा । भयो सूर[1] चढ़चांद विवाहा ॥
कौन सिद्धसो ऐसो अकेला । जे शिर लाय प्रेमसो खेला ॥
कासों पिता बचन असहारी । उतरै न दीन्हदीन्हतेहि बॉरी ॥
काकहँ दई ऐसो जिव दीन्हा । जे जिहमार जीत रण लीन्हा ॥
धन पूरुष अस नवै न नाये । औसै परसहो देश पराये ॥

दो० को बरबन्द[5] बीर अस, मोहिं देखे कर चावँ ।
पुनि जायहि जनवासहि, सखीरी वेग[8] देखाव ॥

सखी देखावहिं चमकहि बाहू । तू जसचांद सूर्य्य तोरनाहू ॥
छिपा न रहै सूर्य्य परकाशू । देखकमलमन भयो विकाशू ॥
वह उजियार जगत उपराहीं । जगउजियारसो तेहिपरछाहीं ॥
जस रवि[11] देखउठै परभाता । उठा छत्र देखहिं सब राता ॥
वही मांझ भा दूलह सोई । और बरात संग सब कोई ॥
सहसहिं[13] किरणरूपविधि[14] गढ़ा। सोने के रथ आवै चढ़ा ॥
मन माथे दरशन उजियारा । सौंहै[15] निरखनहिंजायनिहारा ॥

दो० रूपवन्त जस दरपण, धन तू जाकर कन्त ।
चाही जैसो मनोहरा, मिला सो मनभावन्त ॥

देखा चांद सूर्य्य जस साजा । सहसहिं[16] भावमदनतनगाजा ॥
हुलसे नयन दरश मदमाते । हुलसे अधर[18] रंग रस राते ॥
हुलसा बदन[19] उपररबि[20] आई । हुलसाहियों कंचुकि[22] नसमाई ॥
हुलसे कुच[23] कसनी बँद टूटी । हुलसेभुजवलियाँ कर फूटी ॥

आख़िरतक १ सूर्य्य २-११-२० जवान ३ लड़की ४ इतमीनान ५ ज़बर्दस्त ६ चाह ७ जल्द ८ ख़ाविन्द ६ खिलना १० भोर १२ हज़ार १३-१६ ईश्वर १४ सामने देखना १५ काम पैदा हुआ १७ होंठ १८ मुँह १६ दिल २१ अँगिया २२ छाती २३ चूड़ी २४ ॥

हुलसी लंक कि रावण राजू। रामलषणदरें साजहिं साजू॥
आज चांद घर आवा सूरू। आज शृँगारहोय सब चूरू॥
आज कटकें जो राहत कामू। आज बिरहकरहोय संग्रामूँ॥

दो० अंग अंग सब हुलसैं, कोइ कतहूँ न समाय।
ठांवहिं ठांव बिमोही, गइ मुरछा गत आय॥

सखी सँभार पियावहिं पानी। राजकुँवरि काहे कुँभिलानी॥
हमतो तोहिं देखावा पीव। तू मुरझान कैस भा जीव॥
सुनहु सखी सब कहै बिवाहू। मोकहँ जैसो चांद कहँ राहू॥
तुम जानहु आवै पिउ साजा। यह धमधम मोकहँ सबबाजा॥
जते बराती औ असवारा। यह सब मोरे चालनहारा॥
सो आगमें देखत हों झखी। आपन रहन न देखों सखी॥
होय बिवाह पुनि होयहै गौना। गवनबतहांबहुरें नहिं अवना॥

दो० अब सो मिलन कितहै सखी, परा बिछोवा टूट।
तैसि गांठ पिउ जोरब, जन्म न होय है छूट॥

आय बजावत बैठ बराता। पान फूल सेंदुर सब राता॥
जहँ सोने कर चित्र सँवारी। आन बरात तहां बैठारी॥
मांझ सिंहासन पाटँ सँवारा। दूलह आन तहां बैठारा॥
कनक खंभ लागे चहुँ पांती। माणिक दियाबरहिंदिनराती॥
भयो अचल ध्रुव योग पखेरू। फूलबैठ थिर जैस सुमेरू॥
आज दई हों कीन्ह सुभागा। जसदुखकीन्ह नेगसबलागा॥
आज सूर शशि के घरआवा। चांदसूर्य्य दुहुँ भयो मिलावा॥

फ़ौज १-३ सूर्य २-१६ लड़ाई ४ दूरअंदेशी ५ लौटके ६ लाल ७ तसधीर ८ आंचोचीत्र ९ तख़्त १० सोना ११ जवाहिरात १२ नाम नखत जिसे क़ुतुब कहते हैं १३ क़ायम १४ नामपहाड़ १५ चाँद १७॥

दो॰ आज इन्द्रहोय आयों, मैं बरात कैलाश ।
आज मिली मोहिं अप्सरा, पूजीमनकीआश ॥

होय लाग ज्योनार प्रसारा । कनक पत्र परसे पनवारा ॥
सोन थार मणि माणिकजरे । रायँ रङ्क सब आगे धरे ॥
रतन जड़ाऊ खोरोंखोरी । जन जन आगे सौसोंजोरी ॥
गड़ुवन हीर पदारथ लागे । देख विमोहे पुरुष सभागे ॥
जानहुँनखतकरहिं उजियारा । छिपगये दीपक औ मसयारा ॥
भइमिल चाँदसूर्य्य की कला । भा उदोत तैसी निरमला ॥
जेहिंमानुषकहँ ज्योतिनहोती । तेहिभइज्योतिदेखवहज्योती ॥

दो॰ पांति पांति सब बैठी, भांति भांतिज्योनार ।
कनक पत्र दोने तरे, कनकपत्र पनवार ॥

पहिले भात परोसे आना । जनहुँ सुवास कपूर बसाना ॥
झालहिं मांड़ा औ घी पोई । उजियर देख पाप गयो धोई ॥
लुचई पुरी सुहारी पूरी । एक तो ताती औ सुठकँवरी ॥
खंड़राखांड़ जो खरडे खरडे । बरी अक्रोतर सो कहँहरडे ॥
पुनि सँधाने आने बहुसांधी । दूध दही कि मुरन्दा बांधी ॥
पुनि बावन प्रकार जो आये । नहिं असदेख न कबहूँ खाये ॥
पुनि जाँवरे पीछावँरें आई । घृत खांड़ का कहों मिठाई ॥

दो॰ जेवँतअधिकसुवासिक, मुहँमहँ परत बिलाय ।
सहस स्वाद सो पावै, एक कौर जो खाय ॥

जेवन आवा बीन न बाजा । बिनबाजहिं नहिं जेवँ राजा ॥

इन्द्रपरी १ सोना २-८ राजाको भाई ३ कटोरा कटोरी ४ रोशनी ५ साफ़ ६ रौनक़ ७ बारीक मांड़रे ८ एक क़िस्मका खाना १० अचार बहुत तरहका ११ लड्डुवा १२ खीर १३ मुरब्बा १४ हज़ार १५ ॥

सब कुँवरन पुनि खैंचा हाथू। ठाकुर जेवँ तो जेवैं साथू॥
बिनयकरहिं परिडत बिचवाना। काहे नहिं जेवहिं यजमाना॥
वह कैलास इन्द्र कर बासू। जहां न अन्न न माछर मांसू॥
पान फूल आंछी सब कोई। तुमकारण यह कीन्ह रसोई॥
भूख तजन[1] अमृत है सूखा। धूपतो सीरकै[3] नींबी रूखा॥
नींदतो भुइँ जनु सेज सपेती। छांड़ो का चतुराई येती॥

दो० कौन काज केहि कारण, बिकल भयो यजमान।
होय रजायसु[5] सोई, बेग देहिं हम आन॥

तुम परिडत जानहु सब भेदू। पहिले नाद भयो तब बेदू॥
आदिपिता जोबिधि[7] अवतारा। नादसंग जिंव ज्ञान सँचारा॥
सो तुम बरजे नेकका कीन्हा। जेवन संग भोग बिधिदीन्हा॥
नयन[12] बैन नासक दुइश्रवना। यहिचारहुँ सँग जेवनअवना॥
जेवन देखा नयन सिरानी। जीभहिस्वाद भुक्त रसजानी॥
नासक सबै बासना पाई। श्रवनहिंका सँवरत पहुनाई॥
तेहिं का होय नाद पै पोषा। तब चारहुँ कर होय सँतोषा॥

दो० औसबसुनहुँशब्द[16] इक, जिनहिं पड़ा कुछसूझ।
नाद सुननि परिडतबरज, कहो सो तुमकाबूझ॥

राजा उतर[17] सुनहु अब सोई। महि[18] डोलै जो बेद न होई॥
नाद बेद मद पैंड़ जो चारी। काया महँ ते लेहु बिचारी॥
नाद हिये[22] मन उपजीकाया। जहँमदतहां पैंड़[24] नहिं छाया॥

खुराक १-१३ वास्ते २ छोड़ना ३ ठण्ढा रहै धूप लगने पर भी ४ सफ़ेद बिछौना ५ हुक्म ६ जल्द ७ ब्रह्मा ८ ईश्वर ९ बदन में जानआई १० रोक ११ आंख मुँह—नाक कान १२ आसूदगी १४ क़रार १५ बात १६ जवाब १७ ज़मीन १८ मस्ती १९ शरीयत २०-२४ बदन २१-२३ दिल २२॥

होय अनमद जूझ सो करिये। जान वेद आंकुश शिरधरिये॥
योगी होय नाद सो सुना। जेहि सुनि कामजरै चौगुना॥
किये जो पुरुष तन्त मनलावा। घूम मांत सुनि और न भावा॥
गये जो धर्म्म पन्थ है राजा। ताकहँ पुनिजोसुनैतो छाजा॥

दो० जस मदपियें घूम कोउ, नाद सुनै पै घूम।
तेहिते वरजे नेकहै, चढ़ै रहसें के दूम॥

भई ज्योनार फिरा खड़वानी। फिरा अरगजा कुहकहँवानी॥
फेरे पान फिरा सब कोई। लाग्यो व्याहचार सब होई॥
माड़ो सोन कि गगनँ सँवारा। बन्दनवार लाग सब बारा॥
सजा पाट छत्र के छाहां। रतनँ चौक पूरी तेहि माहां॥
कंचन[11] कलशनीर[12] भरि धरा। इन्द्र[13] पास आनी अपसरा॥
गांठ दुलहिन दूलहकी जोरी। दुहूँ जगत जो जाय न छोरी॥
वेद पढ़ैं पण्डित तेहि ठाऊँ। कन्या तुला राशि लै नाऊँ॥

दो० चांद सूर्य्य दोउ निरमल[15], दोउसे योग[16] अनूप।
सूर्य्य[17] चांद[18] सो भूला, चांद सूर्य्य के रूप॥

दोहूँ नाउँ लै गावहिं वारा। करहिं सो पद्मिनि मंगलचारा॥
चांद[20] केहाथ दीन्हजयमाला। चांदआन सूर्य्य गये[22] घाला॥
सूरज लीन्ह चांद पहिराई। हार नखत[23] नेरहिं सो पाई॥
पुनिधनँ भरअंजुलजललीन्हा। यौवन जन्मकंत कहँ दीन्हा॥
कन्तलीन्ह दीन्हों धन हाथा। जोरी गांठ दुहूँ इक साथा॥

मेहनत १ राह २ तारीफ़ ३ राग सुननेसे दूनी कैफ़ियत होती है ४ शश्वत ५ अतर ६ आसमान ७ दरवाज़ा ८ तख़्त ९ जवाहिरात १० सोना ११ पानी १२ तथा राजा १३-१७ तथा पद्मावत १४-१८ पाकसाफ़ १५ मिलना १६ लड़की १९ पद्मावत २०-२४ सूर्य तथा रतनसेन २१ गरदन २२ तथा सहेलियां २३॥

चांद सूर्य्य दुइ भांवर लीन्हीं। नखतमोत न्योछावर कीन्हीं॥
फिरहिं दोउ सतफेर गुंते के। सातहिं फेर गांठ सो एके॥
दो० भइ भांवर न्योछावर, राजचार सब कीन्ह।
दायज कहूं कहांलग, लिख न जाय ततदीन्ह॥
रतनसेन जो दायज पावा। गन्धर्वसेन आय कँठलावा॥
मानुपचिन्तआनकुछ निन्ता। करै गुसांइन मनमहँ चिन्ता॥
अब तुम सिंहलद्वीप गुसाई। हम सेवक आहैं सेवकाई॥
जस चितौरगढ़ तुम्हरो देशू। तस तुम यहां हमार नरेशू॥
जम्बू द्वीप दूरका काजू। सिंहलद्वीप करहु नित राजू॥
रतनसेन विनवा करजोरी। अस्तुति योग जीभकहँ मोरी॥
तुम गुसाइँ जे छारैं छुड़ाई। कीमानुप अति दीन्ह बड़ाई॥
दो० जो तुम दीन्ह सो पावा, जिवों जन्म सुखभोग।
नाहत खेह पाय की, हों योगी केहि योग॥
धौराहर पर दीन्हा वासू। सात खण्ड जहँवां कैलासू॥
सखी सहस दश सेवा पाई। जनहु चांदसँग नखततराई॥
है मण्डल शशिके चहुं पासा। शशि सूरहि लै चढ़ी अकासा॥
चलसूरज दिन अथवै जहां। शशिनिरमल तू पावसि तहां॥
गन्धर्वसेन धौराहर कीन्हा। दीन्ह न राजहि योगिहि दीन्हा॥
मिलीजाहिं शशिके चहुँपाहां। सूर्य्य न चापै पावै छाहां॥
अब योगी गुरु पायो सोई। उतरा योग भसम गा धोई॥
दो० सातखण्ड धौराहर, सात रंग नग लाग।

गोतवाले १ राजा २ अर्ज़ करना हाथ जोड़के ३ धूर ४-५ महल ६-१२-१५ हज़ार ७ छोटे सितारे ८ पद्मावत ९ रतनसेन १० साफ़ ११ चाँद तथा पद्मावत १३ तथा राजा खिलवत न करसका १४॥

देखतका कैलासहिं, दृष्टिपाप सब भाग॥

सातखण्ड सातों कैलासा। कावरणों जस उत्तम बासा॥
हीरा ईंट कपूर गिलावा। मलयागिरि[3] चन्दनसबलावा॥
चूनाकीन्ह औट गजमोती। मोतिहिचाह अधिकतेहिज्योती॥
बिश्वकर्महिं सैं हाथ सँवारा। सात खण्ड सातहिं चौपारा॥
अतिनिरमलें नहिंजायविशेखा। जसदरपनमहँदरशनदेखा॥
भुइँ गच जनहुँ समुद्र हिलोरा। कनकखम्भ जनुरचोहिंडोरा॥
रतनपदारथँ होय उजियारा। भूले दीपक औ मसियारा॥

दो० तहँ अप्सर पद्मावत, रतनसेन के पास।
सातस्वँर्ग हाथजनुआये, औसातों कैलास॥

पुनि तहँ रतनसेन पगधारा। जहां रतननौ सेज सँवारा॥
पुतरी गढ़ गढ़ खम्भनकाढ़ी। जनु सजीव सेवा सब ठाढ़ी॥
काहू हाथ चन्दन की खोरी। कोइ सेंदुर कोइ गहे सिंधौरी॥
कोइ कुंकहि केसर लिये रहैं। लावैं अंगं रहस जनु चहैं॥
कोई लिये कुंकुमा चोवा। धन कब चहै ठाढ़मुखजोवा॥
कोइ बीरा कोइ लीन्हे बीरी। कोइपरमलअतिसुगँधसमीरी॥
काहु हाथ कस्तूरी मेदू[4]। भांतिहिभांति लागसब भेदू॥

दो० पांतिहि पांति चहूँ दिश, सब सौंधी करहाट।
मांझ[15] रचा इन्द्रासन, पद्मावत कहँ पाट[6]॥

खण्ड तेईसवां मुलाकात पद्मावत वा राजा रतनसेन॥

सात खण्ड ऊपर कैलासू। तहँवाँ नारसेज सुख साजू॥

निगाह १ तारीफ़ २ चन्दन ३ ज्यादा ४ पाकसाफ़ ५ सोना ६ जवाहि: रात ७ आसमान ८ कटोरी ९ बदन १० देखना ११ हवा १२ मुश्क १३ अम्बर १४ बीचोंबीच १५ तख्त १६॥

चार खम्भ चारहुँदिश धरे। हीरा रतन पदारथ जरे॥
माणिक दिया जड़े औ मोती। होय उजियाररहा तेहिज्योती॥
ऊपर रातो चँदवा छावा। औ भुइँसुरंग बिछावबिछावा॥
तेहिमहँ पलँगसेज सुखदासी। कीन्हबिछावन फूलहिवासी॥
दोहुँदिशगेंदवा औगल सोई। काची पाट भरी धुन रोई॥
फूलहिं भरे ऐसो केहि योगू। को तहँ पौढ़ मानरस भोगू॥

दो० अति सुकमार सेज सो डाँसी, छुवै न पावै कोय।
देखत नवै खनहिं खन, पांव धरत कस होय॥

राजै तपत सेज जो पाई। गांठछोरिधनसखिन छिपाई॥
अहै कुँवर हमरे अस चारू। आजुकुँवरकर करब शिंगारू॥
हरद उतारि चढ़ावब रंगू। तब निशि चांदसूर्य्य सोसंगू॥
जनु चातकमुख बूँद सेवाती। राजा चकचौहत तेहिभांती॥
योग छूटि जनु अप्सर साथा। योग हाथकर भयो बिहाथा॥
वै चतुरा कर लै अपसेई। मित्र अमोल छीनि लैगई॥
बैठा खोय जरी औ बूटी। लाभ न पाव मूल भइ टूटी॥

दो० खाय रहा ठग लाड़ू, तन्त मन्त बुधि खोय।
धौराहेरबनखँड भयो, ना हाँसि आव न रोय॥

अस तप करतभयो दिनभारी। चार पहर बीते युग चारी॥
परीसांझ पुनि सखी सो आई। चांद रहा अपनी जो तराई॥
पूछहिं गुरु कहांरे चेला। बिनशशि रेकस सूर अकेला॥
धात कमाय सिखे तूँ योगी। अबकसजसनिरधातबियोगी॥

चारोंतरफ़ १ जवाहिरात २-३ लाल ४ तकिया ५ रेशम ६ बिछौना ७ पद्मावत ८ रस्म ९ रात १० पपीहा ११ होशयारी १२ छिपजाना १३ महल १४ जंगल १५ छोटे नखत १६ चांद १७ सूर्य १८ दुखी १९॥

कहां सो खोयहु बिरवा लोना । जेहिते होय रूप औ सोना ॥
कस हर्तार पार नहिं पावा । गंधक कहां करकटी खावा ॥
कहां छिपायहु चंद हमारा । जेहिबिन रयनि जगतअँधियारा॥
दो० नयन कौड़िया हियें समुद्र, गुरूसों तेहिमहँज्योति।
मन मरजिया न होय परे, हाथ न आवे मोति॥
का पूँछो तुम धात निछोही । गुरुजो कीन्हअंतरपट ओही॥
सिधि गुटका जो मोसों कहा । भयो रांग सत हिये न रहा ।
सोन रूप जासों दुख खोलों । गयो भरोस तहां का बोलों ॥
जहँ लोना बिरवा की जाती । कहिको सँदेश आनको पाती॥
कि जो पार हरतार करेजे । गन्धकदेख अभहिं जिवदीजे॥
तुम जोरा की सूरँ मयंकू । पुनि बिछोय सो लीन्हकलंकू॥
जो यहि घड़ी मिलावै मोही । शीश देउँ बलिहारी ओही ॥
दो० होय अबरक इंगुर हुआ, फेर अगिन महँ दीन्ह।
काया पीतर होय कनक, जो तुम चाहो कीन्ह॥
का बिसाय जो गुरु असबूझा । चकाव्यूह अभिमनै ज्योंजूझा॥
बिष जो दीन्ह अमृत देखराई । तेहिं रे निछोहें को पतियाई॥
मरे सुजान होय तन सूना । पीर न जानै पीर बिहूनों ॥
पार न पाव जो गन्धक पिया । सो हरतार कहो किमजिया॥
हम सिधिगुटका जानहिंनाहीं । कौन धात पूँछहु तेहि पाहीं ॥
अब तेहि बाजे रांगभा डोलों । होय सार तो बरँगी बोलों ॥
अबरक कै तन इंगुर कीन्हा । सो तनफेर अगिनमहँ दीन्हा॥

जोड़ना १ रात २ दिल ३ बेदर्द ४ छिपाना ५ कलेजा ६ सूर्य ७ चांद ८ बदन ९ सोना १० नाम क़िला ११ बेटा अर्जुन १२ बेदर्द १३ अलग १४ बिदून उसके १५ फ़ौलाद १६ तिपतिया १७ ॥

दो० मिलै जो प्रीतम बिछुरहि, कायां अगिन जराय।
कैसु मिलै तन तप बुझै, कै अब मोहिं बुझाय॥

सुनिकै बात सखी सब हँसी। जानहुँ रयनि तरइँ परगसी॥
अबसो चांद गगनमहँ छिपा। लालचकै कित पावस तपा॥
हमहुं न जाने धौं सो कहां। करव खोज औ विनवब तहां॥
औ अस कहब आहि परदेशी। कर मायाँ हत्या जन लेशी॥
पीर तुम्हार सुनत भा छोहू। देव मनाय होय अस ओहू॥
तूँ योगी तप कर मन जिता। योगिहि कौन राजकी कथा॥
वह रानी जहँवाँ सुख राजू। वारह अभरणं करै सो साजू॥

दो० योगी हढ़ आसनकर, इस्थिर धरम न ठांव।
जो न सुने तौ अब सुनि, वारह अभरण नांव॥

प्रथमे मज्जनं होय शरीरू। पुनि पहिरै तन चंदन चीरू॥
साज मांग शिर सेंदुर सारा। पुनिललाटरचितिलकसँवारा॥
पुनि अंजन दोउ नयनहि करे। पुनिसो कानन कुण्डल पहरे॥
पुनि नासक भल फूल अमोला। पुनिराती मुख खायतमोला॥
गयें[16] अभरण पहिरे जहँ ताईं। औ पहिरेकरँ[17] कँगन कलाई॥
कटि[18] क्षुद्रावलि अभरण पूरा। पांयन पहिरे पायलँ चूरा॥
वारह अभरण यही बखाने। ते पहिरे वारहु अस्थाने॥

दो० पुनि सोरहों शिंगार जस, चारहुँ योग कुलीन।
दीरघ चार चार लघु, चारशुभै चहुँखीनँ[24]॥

पद्मावत जो सँवारी लीन्हा। पून्यो[25] रात दई शशिकीन्हा॥

वदन १ रात २ छोटे नखत ३ खिलना ४ आसमान ५ योगी ६ अर्ज़ करना ७ मेहरवानी ८-९ ज़ेवर १० मज़बूत ११ क़ायम १२ पहिले १३ नहाना १४ लाल १५ गरदन १६ हाथ १७ कमर १८ करधनी १९ पाज़ेव या छड़े २० बड़े २१ छोटे २२ मोटे २३ पतला २४ पूरनमासी २५॥

करिमज्जन[1] तन कीन्ह नहानू । पहिरयो चीरगयो छिप भानू[2] ॥
रचि पत्रावलि मांग सेंदूरी । भरिमोतिनऔमाणिकें पूरी ॥
चंदन चीर पहिर वहु भांती । मेघ घटा जानहुँ वक[4] पांती ॥
श्री[5] जो रतन मांग बैठारा । जानहुँ गगन[6] टूटिनिशि[7] तारा ॥
तिलक ललाट[8] धरातस दीठा । जनहुँदुइजपर नखत न वैठा ॥
कानन कुंडल खूँट[9] औ खूँटी[10][11] । जानहुँ परी कँचीची टूटी ॥
दो० पहिर जड़ाऊ ठाढ़भइ, कहि न जाय तस भाव ।
मानहुँ दरपन गगने[6] भा, तो शशि तार देखाव ॥
बांक नयन औ अञ्जन रेखा । खंजन[13] जानु शरदऋतुदेखा ॥
जो जो हेर[16] फेर चषँ मोरी । लरै शरदमहँ खंजन जोरी ॥
भौहैं धनुष धनुष पै हारा । नयन सांध जनु बाणनमारा ॥
करनफूल नासक अतिशोभा । शशि[12] मुखआयसूकजनुलोभा ॥
सुरंग अधर[18] औ लीन्ह तँबोरा । सोहै पान फूल कर जोरा ॥
कुसुमगेंदअससुरँग कपोलाँ । तेहिपरअलकें भुवंगिनि[22]डोला ॥
तिलकपोल अल पंकज वैठा । वेधा सोई जो वह तिलदीठा ॥
दो० देख शिंगार अनूप[23] विधि, विरह चला तब भाग ।
कालकष्ट वह उनवा, सब मोरे जियलाग ॥
का बरणों अभरणं[24] औ हारा । शशिपहिरेनखतनकी मारा ॥
चीर चार औ चन्दन चोला । हीर हार नग लाग अमोला ॥
तेहिं झांपी रोमावलि कारी । नागिनि रूप डसी हत्यारी ॥
कुच[25] कंचुकी[26] श्रीफल उभे । हुलसहिं चहहिं कंतहियचुभे ॥

उवटन १ सूर्य्य २ नामदाया ३ जवाहिर ४ वगुला ५ टीका ६ आसमान ७-१३ रात ८ माथा ९ वाली १० करनफूल ११ नाम छोटे नखत १२ चांद १४-१८ ममोला १५ देखना १६ आंख १७ होंठ १९ गाल २० वाल २१ नागिन २२ वेमिसाल २३ ज़ेवर २४ छाती २५ अँगिया २६ ॥

बाहहिं बाहू ताड़ सलोनी। डोलत बांह भावगत लोनी॥
तरवन कमलकली जनु बांधे। बसा लंक जानहु दुइ आधे॥
छुद्रघंट कँटि कंचन तागा। चलते उठहिं छतीसो रागा॥

दो० चूरां पायल अनवट बिछिया, पांयन परी बियोग।
हिये[11] लायटुकहमकहसमंद[12], नाहिंतुमजानश्रोसोग॥

अस बारह सोरह धन[13] साजी। छाजनै और वहीपै छाजी॥
बिनवहिं सखी गहर[14] का कीजे। जें जिव दीन्ह ताहि जिवदीजे॥
सँवरि सेज धन मन भइ शंका। ठाढ़ तेवान टेक कर लंका[16]॥
अनचिन्हा पियकांपेमनमाहां। का मैं कहव गहँव[17] जो बाहां॥
बारि बैसगइ प्रीति न जानी। तरुण[18] भई मैमन्त भुलानी॥
यौवनगर्व[19] न कुछ मैं चेता। नेह न जानु श्याम[20] के सेता॥
अब जो कंत पूँछहि सब बाता। कस मुख होय पीत कै राता[21]॥

दो० हों सुवारि औ दुलहिन, पियसो तरुण औ तेज।
नाजानों कस होय है, चढ़त कन्त की सेज॥

सुनि धनडर हिरदय तब ताई। जौलहिरहस मिलानहिं साईं॥
कौन कली जो भँवरन राई। डारन टूटि पुहुप गरुवाई॥
मात पिता जो व्याहै सोई। जन्म निबाह कंत सँग होई॥
भरे यमवार[?] चहै जहँ रहा। जाय न मेटा ताकर कहा॥
ताकहँ बिलँब न कीजे बारी। जो पिय आयसु सोइ पियारी॥
चलहु बेगि[27] आयसु भा जैसे। कन्त बोलावे रहै सो कैसे॥
मान न कर थोरा कर लाड़ू। मान करत रस माने चाँड़ू॥

नाम ज़ेवर १-२-८-६ खूबसूरत ३ भौंवर ४ कमर ५-७-१६ करधनी ६ दुर्खी १० दिल ११ मुलाक़ात १२ पद्मावत १३ सोहना १४ देर १५ पकड़ना १७ जवान १८-२३ मस्त १६ जवानी का गरूर २० काला या सफेद २१ लाल २२ फूल २४ मरनेके दमतक २५ हुक्म २६ जल्द २७ गुस्सा २८॥

दो० साजन लिये पठाई, आयसु[1] जाय न मेट।
तनमन यौबनसाज सब, देइचली लै भेट॥

पद्मिन गवनै[2] हंस गये दूरी। हस्ति[3] लाज मेलहि शिरधूरी॥
बदन[4] देख घटचन्द छिपाना। दशन[5] देखके बीज[6] लजाना॥
खंजन[7] छिपे देख कै नैना। कोकिलछिपी सुनतमधुबैनां[8]॥
ग्रीव[9] देखकर छिपा मयूरू। लंक[10] देखकर छिपा सैंदूरू[11]॥
भौंहधनुष जो छिपा अकाशै[12]। बेनी[13] बासुकि[14] छिपापताशा॥
खड्ग[15] छिपी नासिका विशेखी। अमृत छिपा अधर[16] रसदेखी॥
पहुँचिहिं छिपा कमल पौनारी। जंघ छिपा कदली[17] होय बारी॥

दो० अपसर रूप छिपाई, जोहि चलै धन[18] साज[19]।
जहँलग गर्बगहेलजग, सबैछिपी मनलाज॥

मिलीसो गोहन सखी तराई[20]। लीन्हचांद सूर्य्य[21] पहँ आई॥
परश रूप चांद देखराई। देखत सूर्य्य गयो मुरझाई॥
सोरहकिरनदृष्टि[22] शशि[23] कीन्हा। सहस[24] किरन सूर्य्यकहँलीन्हा॥
भा रबि[25] अस्त तराई[26] हँसी। सूर्य्य न रहा चांद परगँसी[27]॥
योगी आहि न भोगी कोई। खाय करकटा[28] गयो परसोई॥
पद्मावत निरमल[29] जस गङ्गा। नाहिं युक्ति योगी भिखमङ्गा॥
आय जगावहिं चेला जागहु। आवा गुरू पांय उठलागहु॥

दो० बोलहिं शब्द[30] सहेली, कानलागगाहि माथ।
गोरख[31] आय ठाढ़ भा, उठरे चेला नाथ॥

हुक्म १ चाल २ हाथी ३ मुँह ४ दाँत ५ बिजुली ६ ममोला ७ मीठी बोली ८ गर्दन ९ कमर १० चीता ११ आसमान १२ चोटी १३ नाम राजा सांपों का १४ तलवार १५ होंठ १६ केला १७ पद्मावत १८ साथ १९ छोटे नखत २०-२६ सूर्य्य २१-२५ निगाह २२ चाँद २३ हज़ार २४ खिलना २७ टुकड़ा रोटी २८ पाक २९ आवाज़ ३० योगी ३१॥

गोरख शब्द शुद्ध भा राजा। रामा सुनि रावन होय गाजा॥
गही[१] बांह धनै सेजवां आनी। अंचल ओट रही छिपरानी॥
सकुची डरी मुरी मन बारी। गहु न बांहरे योगी भिखारी॥
ओहटै हो योगी तोर चेरी। आवे बास करकटों केरी॥
देखि बिभूत छूत मुहिं लागा। कांपै चांद राहु सो भागा॥
योगी तोर तपसी कै कया। लागी चहै अंग मोर छया॥
वारि भिखार न मांगेसि भीखा। मांगे आयस्वर्ग चढ़शीखा॥
दो० योगि भिखारी कोई, मन्दिर नपैसे[९] पार।
मांगलेहु कुछ भिक्षा, जाय ठाढ़हो बार॥
अन तुम कारण प्रेम पियारी। राज छांड़िके भयों भिखारी॥
नेह तुम्हार जो हिये[१२] समाना। चितौर सो निसखोहैआना॥
जसमालतिमहँ भँवरबियोगी[१३]। चढ़ाबियोग चल्यों हैयोगी॥
भँवर खोज जसपावै केवौं। तुम कारण मैं जिवपरछेवौं॥
भयों भिखार नारितुम लागी। दीप पतँग है अँगयोंआगी॥
एकबार मरि मिलै जो आये। दूसर बार मरै कित जाये॥
कितनेहिमीच[१६] जोमरकेजिया। भँवर कमल मिलकैरसपिया॥
दो० भँवर जोपावै कमलकहँ, बहुआरतँ बहुआस।
भँवर होय न्योछावर, कमल देय हसबास॥
अपने मुहँ न बड़ाई छाजा। योगी कतहुँ होहिंनहिंराजा॥
हौं रानी तू योगि भिखारी। योगिहिभोगिहिकौनाचिन्हारी॥
योगी सबै छन्द अस खेला। तू भिखार केहिमाहँ अकेला॥

पकड़ना १ पद्मावत २ दूरहो ३ सूखा टुकड़ा रोटी ४ बदन ५-६ छाया ७ दरवाजा ८ आसमान ९ पैठ न सकै १० वास्ते ११ दिल १२ दुखी १३ कमल १४ दुख १५-१७ मौत १६॥

पवनबांधे अपसवहिं अकासा । मंसहिं जहांजाहिं तहँ वासा ॥
येही भांति सृष्टि बहु छरी । यही भेष रावण सियँ हरी ॥
भँवरहिं मीचे नेर जो आवा । केतकि वास लेयकहँ धावा ॥
दीपक ज्योति देखिउजियारी। आय पंख ह्वै परा भिखारी ॥
दो० रयनिजोदेखे चन्दमुख, मँसि तनहोयअलोप ।
तुहूँ योग अस भूला, होय राजा के रूप ॥
अनधर्न तूशंशेरं निशे माहां । हों दिनेर जेहिके तूछाहां ॥
चांदहि कहां ज्योति औ कला ।सूर्य्यकीज्योतिचांद निरमला॥
भँवर बास चम्पा नहिं लेई । मालति जहां तहां जिव देई॥
तुमहुत भयों पतंगकी किरों । सिंहलद्वीप आय उड़परा ॥
सेयों महादेव कर बारू । तजों अन्न भा पवनअहारू॥
तुम सों प्रीतिगांठ मैं जोरी । कटै न काटे छुटै न छोरी ॥
सियाँ भीख रावणकहँ दीन्ही । तूअसनिठुरअन्तरपटदीन्ही ॥
दो० रंगतुम्हारे रात्यों, चढ्यों गगन है सूर ।
जहँशशिशीतलकहँतपो, मनइच्छा धनपूर॥
योगि भिखारकरेसि बहुवाता । कहेसि रंग देखों तुहि राता ॥
कपरारँगे रंग नहिं होई । हिये औट उपजै रँगसोई ॥
चांदकी रंग सूर्य जो राता । देखी जगत साँझ परभाता ॥
दग्ध विरह नितहोय अँगारू । दहक आंच दग्धे संसारू ॥
जो मँजीठ औटै बहु आंचा । सो रंग जन्म न डोलै रांचा ॥
जरै बिरह जो दीपक बाती । भीतर जरि ऊपर है राती ॥

सांसरोकिकै १ छिपना २ दुनियां ३ सीताजी ४ मौत ५ रात ६-११ सियाही ७ शायद ८ पेपद्मावत ९ चाँद १० सूर्य्य १२-२० पाकसाफ़ १३ मानिन्द १४ दरवाज़ा १५ छोड़ना १६ श्रीसीताजी १७ औटि १८ आसमान १९ लाल २१ दिल २२ मोर २३ जलाना २४ ॥

जर पलाश कोइला के भेसू। तब फूला राता है टेसू॥

दो॰ पान सुपारी खैर तहँ, मिलै करै चकमूनं।
तबलग रंग न राची, जबलग होय न चून॥

धनं याका सुरंगका चूना। जेहि तननेह दग्धै तेहिदूना॥
हौं तुम नेह पियरभा पानू। पेडी हुवसन रास बखानू॥
सुनि तुम्हार संसार बडौनां। योगलीन्ह तनकीन्ह गडौनां॥
करहि जो किंगिरी लै बैरागी। नेवती होय बिरहकी आगी॥
फेरफेर तन कीन्ह भुजौनां। औटि रक्तरंग हिरदय औना॥
सूख सुपारी भा मनमारा। शिरसरोत जनु करवट सारा॥
हाड़ चून भै बिरहैं दही। जानै सोइ जो दग्धै इसि सही॥

दो॰ कै सुजानि बहुपीरा, जेहिं दुख ऐसो शरीर।
रक्त पियासे जे अहहिं, का जानै परपीर॥

योगिहि बहुतछन्दं औराहीं। बूँद सेवाती जैसे पराहीं॥
पड़हिं भूमि परहोय कचूरू। पड़हिं कदैलिपर होयकपूरू॥
पड़हिं समुद्र खारजल ओहीं। पड़हिं सीप सब मोती होहीं॥
पड़हिं मेरु पर अमृत होई। पड़हिंनागमुख विषहोयसोई॥
योगी भँवर निठुर ये दोऊ। केहि आपनभे कहो सो कोऊ॥
एकठांवँ यहिथिरं न रहाहीं। रसलै खेलै अन्तकहँ जाहीं॥
होयगृही पुनि होय उदासी। अन्तकाल दोनों बिश्वासी॥

दो॰ तासौं नेह जोदृढ़ करहिं, थिर आछहिसहदेश।
योगी भँवर भिखारी, दूर रहहिं आदेश॥

रेज़ा १ पद्मावत २ जलन ३-१० चढ़ाई ४ गड़ौता ५ हाय ६ महिमान ७ भूजना ८ शिरकटाना ९ इसतरह ११ मकर करना १२ ज़मीन १३ नरकचूर १४ केला १५ पहाड़ १६ जगह १७ क़ायम १८ जाना १९ बेसबर २० मज़बूत २१ सलाम २२॥

थलथलनगनहोहिंजेहिज्योती।जलजलसीपनउपजहिंमोती॥
बनबन बृक्ष न चन्दन होई। तनतन बिरह न उपजै सोई॥
जहँउपजा सो औट मरगयो। जन्म निरार न कबहूँ भयो॥
जलअम्बुज रैबि रहैअकासा। जो प्रीति जानहुँ इकपासा॥
योगी भँवर जोथिरै नरहाहीं। जेहि खोजहिं तहँ पावै नाहीं॥
मैंतो पावा आपन जीव। छांड़ सेवात जाय नहिं पीव॥
भँवरमालती मिलै जो आई। सोतजै आनफूल कितजाई॥

दो० चम्पाप्रीति जो तेल है, दिन दिन आकर बास।
गलगल आप हेराय जो, मुयहिं न छांड़ै पास॥

ऐसैं राजकुँवर नहिं मानौ। खेल सारँपांसा तब जानौ॥
कच्ची बारहिबार फिरासी। पकी तौ फिर थिर न रहासी॥
रहै न आठ अठारह भाखा। सोरह सत्रह रहै सो राखा॥
सतयें धरे सो खेलनहारा। ढारग्यारा जासु न मारा॥
तू लीन्हेसि आछे मन दुवा। औ यगसारचहेसिपुनिछुवा॥
हौंतूनेह रच्यों तोहि पाहीं। दसौं दांत तोरे हियँ माहीं॥
तब चौपर खेलौं कै मयां। जो तरहेलं होय सो तिया॥

दो० जेहिमिल बिछुरन औतपन, अंतै तंत तेहिनन्त।
तोहिमिल कंचनै को सहै, परबिन मिलै नचन्त॥

बोलो बचन नारि सुनिसांचा। पुरुषका बोल सपथऔ बांचा॥
यहि समलाग्योतुहि असनारी। दिनतोहिंपासऔरानिशैंसारी॥
मैं पर बारहिंबार मनायों। शिरसौंखेल निपटजिवलायों॥

पैदा १ अलग २ कमल ३ सूर्य्य ४ क़ायम ५ छोड़ना ६ चौपर ७ दिल ८ मेहरबानी ९ जो मेरे साथ बाज़ी हारजाय १० आख़िरको सुख ११ सोना १२ रात १३॥

भल भांती मैं रचना राची। मारेसि तोहि सबै कै काची॥
पाकउठायों आशक रीता। हौं जीतहि हारा तूँ जीता॥
मिलके युगनहिं होहुँ निरारी[1]। कहां बीच दोती[2] दिन हारी॥
अबजिवजन्मजन्म तुहिपासा। चढ़यों योग आयों कैलासा॥

दो० जाकर जिवबसि जेहिसे, तेहिं पुनि ताकरटेकै।
कनकै सुहागनबिछुड़हि, औटमिलहिंजोएक॥

वेहँसीधन[4] सुनिके सत बाता। निश्चै तू मोरे रँगराता॥
निश्चै भँवर कमल रसरसा। जोजेहिमनसो तेहि मनबसा॥
जब हीरामन भयो सँदेशी। तूहुत मँडफ गयों परदेशी॥
तोररूप तस देखेउँ लोनाँ। जनु योगी तू मेली टोना॥
सिधि गुटका जो दृष्टि कमाई। पारे मेल रूप बसै याई॥
भुक्ति[11] देन कहँ मैंतुहि डीठा[12]। कमलनयनहोय भँवरजोबैठा॥
नयनपुहुप[13] तू अलि[14] भासोभी। रहाबेध तस उड़सि न लोभी॥

दो० जाकर आशहोयजेकहँ, तहँ पुनि ताकर आस।
भँवर जो दाधौ कमलका, कसनपाव रसबास॥

कौन मोहनी धौं हुत तोही। जोतोहिबिथासोउपंजी[15]मोही॥
बिन जलमीन[16] तपै जसजीउ। चातृक[17] भयों कहत पिउपीउ॥
जरयों बिरह जस दीपकबाती। मँग जोवतभइ सीपसे बाती॥
डारडार ज्यों कोयल भई। भयों चकोर नींद निशि गई॥
मोरे प्रेम प्रेम तुहुँ भयो। राताहेम[21] आगिन ज्यों तयो॥
हीरादिपहिं[22] जोसूर[23] उदोती। नाहतकितपाहन[24] कहँ योती॥

अलग १ दो तीन का क्या कामहै २ मददगार ३ सोना ४ पद्मावत हँसी ५ यक़ीन ६ मस्त ७ खूबसूरत ८ निगाह ९ पारा मिलाके चांदी किया १० भीख ११ देखना १२ फूल १३ भँवरा १४ आशिक़ १५ पैदा होना १६ मछली १७ पपीहा १८ राह १९ रात २० लाल सोना २१ चमक २२ सूर्य २३ पत्थर २४॥

रविपरकाशै कमल बिकासा। नाहतकितमधुकर कितबासा॥

दो० तासों कौन अँतरपट, जो अस प्रीतम पीव।
न्योछावर करि आपहूँ, तन मन योवन जीव॥

हँसि पद्मावत मानी बाता। निश्चै तू मोरे रँग राता॥
तू राजा धनि कुल उजियारा। असकैचरच्यों मर्म तुम्हारा॥
पैं तू जम्बूद्वीप बसेरा। काजानेसि कस सिंहल मेरा॥
काजानेसि सुमानसर केवाँ। सुनिसुभँवरभा जिवपरछेवाँ॥
नातू सुनी न कोई डीठी। कैसें चित्र होय चित पैठी॥
जौलहि अगिनकरै नहिं भेदू। तौलहि औटचुवहिनहिंमेदू॥
कहँ शङ्कर तू ऐसो लखावा। मिलाअलखं तसप्रेम चखावा॥

दो० जेहिके सत सँघाती, ताकर डर सो अमेट।
सोसत कहु कैसे भा, दुहूँ भांत सो भेट॥

सत्य कहूँ सुनि पद्मावती। जहँ सतपुरुप तहां सरस्वती॥
पायों सुवा कहे वह बाता। भानिश्चै देखत मुख रातो॥
रूपतुम्हार सुन्यों अस नीका। नाजेहिंचढ़ा काहु कहँटीका॥
चित्र कियों पुनि लैलै नाऊँ। नयनहि लाग हिये[12] भाठाऊँ॥
हौं भा सांच सुनत वह घड़ी। तुमहोय रूपआय चितचढ़ी॥
हौंभा काठ मूर्ति मन मारे। जहँ जहँ करसवहाथ तुम्हारे॥
तुम जो डोलावहु सोई डोला। मवन सांस जोदीन्हतोबोला॥

दो० कोइसोवै कोइजागै, असहौं गयो बिमोहि[13]।
परगटगुप्त न दूसर, जहँ देखों तहँ तोहि॥

ओट १ भेद २ नाम तालाव ३ कमल ४ जानपर खेला ५ देखना ६ तसवीर ७ शोला ८ अतर ९ ईश्वर १० लाल ११ दिल १२ दीवाना १३ ज़ाहिर वा छिपा १४॥

बिहँसी[1] धन सुनके सतभाऊ। हों रामा तू रावण राऊ॥
रहि जो भँवर कमलकी आसा। कस न भोग माने रसवासा॥
जस सत कहा कुँवर तू मोही। तस मन मोर लाग पुनि तोही॥
जवहुत कहिगा पंख सँदेशी। सुन्यों कि आवाहै परदेशी॥
तवहुत तुम बिन रहै न जीउ। चातृक[2] भयों कहत पिउपीउ॥
भयों चकोर सो पन्थ[3] तिहारे। समुद्रसीप जस नयन पसारे॥
बिरह भयों देहि कोयलकारी। डार डार जिमि पीउ पुकारी॥

दो० कौनसोदिनजवपिउमिले, वहुमन रातों जासु।
यह दुख देखै मोर सब, हौं दुख देखों तासु॥

कहि सतभाव भई कँठलागू। जनु कंचन[6] औ मिलासुहागू॥
चौरासी आसन पर योगी। पटरस बन्दक चतुर सो भोगी॥
कुसुममाल अस मालति पाई। जनु चम्पा गहि डार नवाई॥
कलीबेध[8] जनु भँवर लुभाना। हनाँ[9] राहु अर्जुन के वाना॥
कंचन[10]कली जड़ी नगज्योती। बरमा सों बेधा जनु मोती॥
नारँगजानि कीर[12] नख दिये। अधर[13] आम्बरस जानहु लिये॥
कौतुककेल करहिं दुख नसा। कुन्दहिं कुरलहि जनुसरे हँसा॥

दो० रही बसाय बासना, चोवा चन्दन मेद[16]।
जो अस पद्मिन रांवी, सो जानै यह भेद॥

रतनसेन सो कन्त सुजानू। पटरस पण्डित सोरह बानू॥
तस ह्वै मिले पुरुष औ गोरी। जैसी बिछुड़ी सारस जोरी॥

हँसी १ पपीहा २ राह ३ जलना ४ दीवाना ५ सोना ६ कुसुमकी घोड़ी की तरह छाती ७ पकड़ना ८ कली में भँवरा ने सूराख किया ९ तीर निशाने पर मारा १० सोने की कलीसा बदन मोती की तरह बरमा से बेधा ११ तोता १२ होठ १३ कुलेल १४ तालाब १५ अतर १६ भोगना १७॥

रची सारै[1] दोनों इक पासा । है युग युग आवहिं कैलासा ॥
पिय धनगहि दीन्ही गलबाहां । धन बिछुड़ी लागी उरमाहां ॥
ते छक रस नव केल करेहीं । चोक लाय अधरनै रस लेहीं ॥
धन[3] नवसात सात औ पांचा । पूरर्पे दश तेरह किम बांचा ॥
लीन्हबिधांसे[5] विरह धनसाजा । औ सवरचन जीतहतराजा ॥

दो० जनहुँ औटकै मिलगये, तस दोनों भये एक ।
कंचन[6] कसत कसौटी, हाथ न कोऊ टेकँ ॥

चतुरनारि चितअधिकै चहूँटी । जहां प्रेम बाढ़ी किम छूटी ॥
कुरला काय कीरै मनुहारी । कुरला जहँतहँ सोनसुनारी[10] ॥
कुरला होय कंतकेरै[11] तोखू । कुरला गहे पांवधन मोखू[12] ॥
तेहिकुरलौ[13] सोसुहाग अभागी । चंदन जैस श्यामकँठलागी ॥
गेंद गोदकै जानहुँ लिये[14] । गेंद चाहि धनकोमल[15] भये ॥
दाड़िम[16] दाखै[17] वेलरस चाखा । पियके खेल धनजीवनराखा ॥
भयो बसन्तकली मुख खोली । बैन[18] सुहावन कोकिलबोली ॥

दो० पिउपिउकरतजीभधनसूखी, बोली चातृक[19] भांति ।
परीसो बूँदसीपजनुमोती, हिये[20] पेरी सुखशांति ॥

भयो जूझ जस रावण रामा । सेजबिधांसै[21] विरह संग्रामा[22] ॥
लीन्ह लंक[23] कंचन गढ़[24] टूटा । कीन्ह शिंगार अहा सब लूटा ॥
औ योबन सेमन्तै[25] बिधांसा । बिचला बिरहजीवलै नासा ॥

चौपड़ १ होंठ चूसना २ पद्मावतहारी ३ राजा जीता ४ लूटना ५ सोना ६ पकड़ना ७ बहुत ८ मस्ती में काम का तोता आया ९ जोश में सोना सुनार के हाथ से आया १० गलवा किया खाविन्दने ११ गलवा करके पैर औरतका वास्ते फ़रागतके पकड़ा १२ गलवा १३ जैसे गेंदने गेंद के फूल को गोद में लिया १४ गेंदासे नर्म १५ अनार १६ अंगूर १७ आवाज़ १८ पपीहा १९ दिल २० लूटना २१ लड़ाई २२ कमर २३ सोने का क़िला तथा बदन २४ मस्त २५ ॥

टूटी अंग अंग सब भेशा। छूटी मांग भंग भये केशा॥
कंचुक चूर चूर भइ तानी। टूटे हार मोती छहरानी॥
बारीं ताड़ सलोनी टूटी। बाहू कँगन कलाई फूटी॥
चन्दन अंग छूट तस भेटी। बेसर टूटि तिलक गा मेटी॥

दो० पुहुप शिंगारसँवार सब, यौबन नवल बसन्त।
अरगजे ज्योंहियलायके, मरगजे कीन्हींकन्त॥

बिनय करे पद्मावत बाला। सुधनँ सुराही पियो पियाला॥
पिय आयसु माथेपर लेऊँ। जो मांगे नय नय शिर देऊँ॥
पै पिय वचन एक सुनि मोरा। चाखौ पिय मधु थोरा थोरा॥
प्रेम सुरा सोई पै पिया। लखै न कोऊ कि काहूँ दिया॥
चुवा दाखे मधु जो इकबारा। दूसर वार लेत बेसँभारा॥
एक वार जो पीके रहा। सुखजीवन सुख भोजनलहा॥
पान फूल रस रंग करीजे। अधरे अधरसों चाखाकीजे॥

दो० जो तुम चाहो सो करो, ना जानों भल मन्द।
जो भावै सो होय मोहिं, तुम पिय चहूँ अनन्द॥

सुनि धनें प्रेम सुराके पिये। मरनजिवनडररहिनहिंहिये॥
जहँ मधु तहां कहां निस्तारा। की सुधमरहा की मतवारा॥
सो पीजानि पिये जो कोई। पै न अघाय जाय पर सोई॥
जाकहँ होय वार इकलाहीं। रहै न वह बिन ओही चाहा॥
अर्ब दर्ब सब देइ बहाई। कै सब जाव न जाय पियाई॥
रातहि दिवस रहै सब भीजा। लाभै न देख न देखी छीजा॥

अँगिया १ नामजेवर २ राजाके मुलाक़ातसे ३ फूल ४ खुशबू ५ दलमल ६ शराब मुहब्बत सुराही से कम कम पियो ७ हुक्म ८ बात ९ शराब १० अंगूर ११ होंठ १२ पद्मावत १३ दिल १४ फ़ायदा १५-१७ दिन १६ नुक़सान १८॥

भोर होत तब पलहु शरीरू । पाय घुमरहा[1] शीतल नीरू ॥

दो० एकबार भरदेहु पियाला, बारबार को मांग ।
मुहम्मदकिमन[2] पुकारे, ऐसो दांव जेहिखांगे[3] ॥

भयो बिहान उठा रवि[4] साईं । चहुँदिशि आईं नखत तराईं[5] ॥
सबनिशि[6] सेजमिलाशशि[7]सूरू[8] । हारचीर बलियाँ[9] भइ चूरू ॥
सुधन[10] पान चून भइ चोली । रंगरँगील निरँगे[11] भइ डोली ॥
जागत रैयनि[12] भयो भिनसारा । भइ बेसँभारे[13] सोत बेकरारा ॥
अलकें[14] तुरंगिनि हिरदय[15] परी । नारँगे[16] छुइ नागिन बिषभरी ॥
लरी[17] मुरी हिये[18] हार लपेटे । सुरसरि[19] जनु कालिन्दी[20] भेंटे ॥
जनुप्रयागे[21] अरयल[22] बिचमिली । बेनी[23] भइ सो रोमावली ॥

दो० नाभी लोभ[24] ते गये, काशीकुण्ड[25] कहाव ।
देवतामरहिंकलपशिर[26], आपहिंदोष[27] नलाव ॥

बिहँसि जगावहिं सखीसयानी । सूर[28] उठा उठि पद्मिनिरानी ॥
सुनत सूर[29] जनु कमल बिकासा[30] । मधुकर[31] आयलीन्हमधुबासा ॥
जनहुँ मातबस[32] पानी बरसी । अतिबिषभरफूलीजनुअरसी ॥
नयनकमल जानहु दुइखोले । चितवनमृग[33] सोअतिजनुभूले ॥
तन बेसँभार केश औ चोली । चितअचेतजनु बाली भोली ॥
कमलमांझ जनु केसर[34] दीठी । यौवन हुत सो गँवाई बैठी ॥
भये शशि[35] गहेगहन अस गहे । बिथरे नखत[36] सेजभर रहे ॥

नशा १ ठण्डापानी २ कमी ३ सूर्य्य तथा राजा ४-८ सहेली ५ रात ६ चाँद ७ चूड़ी ९ पद्मावत १० बेरौनक़ ११ रात १२ बेहोश १३ बालकीलटैं १४ छाती १५ तथा छातियां १६ पँचलरी वा सतलरी १७ छाती १८ गङ्गा जी तथा छाती १९ यमुना तथा छाती के बाल २० नाम तीरथ २१ नाम मुकाम २२ त्रिवेनी २३ लालच २४ मणिकर्णिका कुण्ड २५ शिरकटाना २६ गुनाह २७ सूर्य २८-२९ खिलना ३० भँवर ३१ मस्तीवसी ३२ हिरन ३३ ज़र्दरङ्ग ३४ चाँद ३५ तथा हारके मोती ३६ ॥

दो० बेल जो राखी इन्द्रकहँ, पवन बास नहिं देहि।
लाग्यो आय भ्रँवरतेहि, कली बेध रस लेहि॥

हँसिहँसि पूँछैं सखी सरेखी। जनहु कुमुद चन्दनमुखदेखी॥
रानी तुम ऐसी सुकुमारा। बास फूल तन जीव तुम्हारा॥
सहिनहिंसकोहदयै पर हारू। कैसें सहो कन्तकर भारू॥
बदनकमलविकसतै दिनराती। सो कुँभलातकहो केहिभांती॥
अधरै कमल जो सहत न पानू। कैसे सहा लाग मुख भानू॥
लंक जो पैग देत मुरझाई। कैसें रही जो राव न रोई॥
चन्दन चोंप पवन अस पीव। भयो चित्र[10]सम कसभा जीव॥

दो० सब अरगजे[11] मरगज[12] भयो, लोचन[13]बिंब[14] सरोज[15]।
सत्य कहो पद्मावत, सखी परीं सब खोज॥

कहौं सखी आपन सतभाऊ। हौं जो कहत कस रावन[16]राऊ॥
कांपौं भँवर पुहुप[17] पर देखे। जनुशशि[18]गहनतौसिसोहिंलेखे॥
आज मर्म[19] मैं जाना सोई। जस पियारपिय और न कोई॥
डर तवलग अहामिलानपीव। भानु[20] की दृष्टि[21] छूटगा सीव[22]॥
जतखन भानुलीन्हपरकासू[23]। कमलकलीमनकीन्ह विकासू[24]॥
हिये[25] छोहै[26] उपजा[27] औसीव[28]। पिय न रिसाय लेव परजीव॥
हतजोअपारविरहदुख दूखा। जनहुअगस्त्यउदधि[29]जलसूखा॥

दो० हमहुँ रंग बहु जानव, लहरें जैत समुंद।
पिय लैगये चतुराई, सक्यों न एको बुन्द॥

होशियार १ कोकावेली २ छाती ३ मुँह ४ खिलना ५ होंठ ६ सूर्य तथा राजा ७ कमर ८ तथा राजकी सुहवत ९ तसवीर १० खुशबू ११ दलमल १२ आँख १३ कुन्दरू की तरह लाल १४ कमल १५ तथा औरत मर्द की सुहवत १६ फूल १७ चाँद १८ भेद १९ सूर्य्य २० निगाह २१ जाड़ा २२ रोशनी २३ खिलना २४ दिल २५ मेहरबानी २६ पैदा २७ खिदमत २८ समुद्र २९ दांव ३० ॥

करि शिंगार तापन कहँ जाऊं । ओही देखों ठांवहिं ठांऊं ॥
जो जियमहँ तो वही पियारा । तनमहँ सोइ न होयनिरारा ॥
नयनहिं महँ तो वही समाना । देखों जहां न देखों आना ॥
आपहिं रस आपहि पै लेई । अधरै सहस लागे रस देई ॥
हियों थार कुच कंचन लाडू । अगमन भेंट दीन्ह कै चाडूँ ॥
हुलसी लङ्क लङ्क सो लसी । रावन रहस कसौटी कसी ॥
यौबन सभै मिला वह जाई । हौरी बिच हुत गयो हेराई ॥

दो० जस कुछ दीजे धरन कहँ, आपन लेह सँभार ।
तस शिंगार सबलीन्हेसि, कीन्हेसि मोहिंठठार ॥

एरी छबीली तुहिं छब लागी । नेत्र गुलाल कंत सँग जागी ॥
चम्प सुदरशन अस भा सोई । सोन जर्द जस केसर होई ॥
बैठि भँवर कुचै नारँग बारी । लागी नखँ अछरें रँगधारी ॥
अधरै अधरसों भीज तँबोरी । अलकावलैं सुरसुरगइ मोरी ॥
राय मुँनी तुम्ह औ रतमुँही । अलि मुखलागभईफुलचुँही ॥
जैसे शिंगार हार सों मिली । मालति ऐसि सदारहिखिली ॥
पुनि शिंगाररस किरौं नेवारी । कदम सेवाति पियहिपियारी ॥

दो० गोंद कलीसमै बिकसी, ऋतु वसन्त औ फाग ।
फूलहु फरहु सदा सुख, औ सुख सुफल सुहाग ॥

कहि यह बात सखी उठ धाई । चम्पावत कहँ आय सुनाई ॥
आज निरँग पद्मावत बारी । जीव न जाने पवनअधारी ॥

जगह १ अलग २ होंठ ३ छाती ४ सोने के लडुवासी छातियां ५ पहिले ६ पियार ७ खुश होना ८ कमर ९ तथा राजा १० धरोहर ११ आँख १२ खाविंद १३ पीली १४ छाती १५ लड़की १६ नाखून लगनेसे रंगजाता रहा १७ होठपर पानकी लाली १८ बाल १९ लाल २० सुर्ख मुँह २१ भँवर २२ नाम चिड़िया २३ बराबर२४-२५ खिलना २६ मायपद्मावत २७ बेरंग २८॥

तड़क तड़क गा चन्दन चोला। धड़क धड़क डरउठै न बोला॥
अहे जो कली कमलरस पूरी। चूर चूर होयगई सो चूरी॥
देखो जाय जैसि कुँभलानी। सुनि सुहाग रानी बेहँसानी॥
ले सँग सबही पद्मिन नारी। आई जहँ पद्मावत बारी॥
आय रूप सबही जो देखा। सोनबरण होयरही सो रेखा॥

दो० कुसुम फूल जस मखी, निरँग देख सब अंग।
चम्पावत भइ वारी, चूँब केश औ मंग॥

सब रनवास बैठि चहुँ पासा। शशिमंडल जनु बैठ अकासा॥
बोली सबहिं वारि कुँभलानी। करहु शिंगार देहु खड़वानी॥
कमल कली कोमल रँगभीनी। अतिसुकुमार लङ्क की क्षीनी॥
चांद जैसि धन बैठि गिरासी। सहसकिरनहोयसूर्यबिकासी॥
तेहिके झारँ गहन अस गही। भइ निरँग मुखज्योति न रही॥
दर्व वार कुछ पुराय करेहू। औ लै बर संन्यासहि देहू॥
भरके थार नखत गजमोती। वेरंती कीन्ह चांदकी ज्योती॥

दो० कीन्ह अरगजा मरवन, औ सुख दीन्ह नहान।
पुनिभइ चांदजो चोदस, रूप गयो छिप भान॥

पटवांहि चेर आन सब छोरी। सारी कंचुक पहिर पटोरी॥
पहँदयी और कस्याँ राती। छायल पिंडवांही गुजराती॥
चकवी चीरमखोना लोने। मोति लाग औ छापे सोने॥
सुरँग चीर भल सिंहलद्वीपी। कीन्ह जो छापा धनवहद्वीपी॥
पेमचौं डुरयाँ और बुँदेरी। श्यामँ सेत पीरी औ हेरी॥

हँसना १ पीली २ वेरंग ३-८ चाँद ४ शरबत ५ कमर पतली ६ किसके मुलाकात के लूकसे ७ दरवाजा ६ न्योछावर १० खुशबूदार उबटन ११ सूर्य्य १२ दारोगा तोशाखाना १३ अँगिया १४ रेशम १५ नाम कपड़ा १६-१७-१९-२०-२१-२२-२४-२५-२६ लाल १८ खूबसूरत २३ काला २७ सफ़ेद २८॥

सात रंग सो चित्र चितेरे । भरके दीठ जाहिं नहिं हेरे ॥
चन्दनोता जो खरदुकं भारी । बांसपूरे झिलमिलकी सारी ॥
दो० पुनि अभरण बहु काढ़ा, आनोभांति जड़ाउ ।
फेरफेर सब पहिरहिं, जैस जैस मन भाउ ॥
रतनसेन गये अपनी सभा । बैठे पाट जहां अठ खँभा ॥
आयमिले चितौर के साथी । सबै विहँसके दीन्हा हाथी ॥
राजाकर भल मानहु आई । जें हमकहँ यहि भूमि दिखाई॥
जो हम कहँ नहिं एतनरेशूं । तब हम कहां कहां यहि देशू॥
धनि राजा तुइँ राज विशेखा । जेहिकीरजायसुसबकुछदेखा॥
भोग बिलास सभी कुछ पावा । कहां जीभ तस अस्तुतिआवा॥
अब तुमआयअन्तरपटसाजा । दरशन कहँ न तपावहु राजा॥
दो० नयन सेराने भूखगइ, देख दरश तुम आज ।
आजभयो अवतोर नव, औसब भे नये काज ॥
हँसके राज रजायसु दीन्हा । मैं दरशन कारण तप कीन्हा ॥
अपनी योग लाग अस खेला । गुरुभा आप कीन्ह तुम चेला॥
अहकमोर बर्षाऋतु देखहु । गुरू चीन्ह के योग्य विशेषहु॥
जो तुम तप साधा मोहिं लागी । अब जन हिये होहु वैरागी ॥
जोजेहिं लाग सहै तप योगू । सो तेहिके सँग मानै भोगू ॥
सोरह सहस पद्मिनी मांगी । सबै दीन्ह नहिं काहू खांगी ॥
सबके धौरहर सोने साजा । सब अपने अपने घर राजा ॥
दो० हस्ति घोर औकापर, सबहि दीन्ह बड़ साज ।

तसवीर १ निगाह २ क़िस्म लहँगा ३-४ नाम कपड़ा ५-६ ज़ेवर ७ तख़्त ८ ज़मीन ६ राजा १० आंखें ठंडी ११ नई पैदाइश १२ हुक्म १३ वास्ते १४ तथा रोना १५ दिल १६ दुखी १७ हज़ार १८ कमी १६ महल २० हाथी २१ ॥

भये गृहस्त सब लखपती, घरघर मानहु राज ॥
पद्मावत सब सखी बोलाई । चीर पटोर[1] हार पहिराई ॥
शीश[2] सबन के सेंदुर पूरा । शीश पूर सब मांग सिंदूरा ॥
चन्दन अगर चित्र[3]सम भरीं । नयन चार जानहुँ औतरीं ॥
जानु कमलसँग फूली कोई । औ सो चांद सँगतरई उई ॥
धन पद्मावत धनतोर नाहूँ । जेहि अभरण पहिरा सबकाहू ॥
बारह अभरण सोरह शिंगारा । तोहिसोहेपिय शशिमसयारा ॥
शशि सुकलङ्की राहुहि पूजा । तुइनिकलङ्कनकोइसरं दूजा ॥

दो० काहूँ बीन गहा करें, काहूँ नाद मृदंग ।
सब दिन अनन्दवधावा, रहसकूद इकसंग ॥

पद्मावत कहि सुनहु सहेली । होंसों कमलतुमकुमुदनि[12]बेली ॥
कलश मानिहोंतेहिदिनआई । पूजा चलो चढ़ावहिं जाई ॥
मँझ[13] पद्मावतका जो बिवानू । जनु परभातें उठै रतिभानू ॥
आस पास बाजत चौंडोला । दुंदं मृदंग झांझ डफ ढोला ॥
एक संग सब सोंधी[16] भरी । देव दुवारे उतर भइँ खरी ॥
अपने हाथ देव अन्हवावा । कलशसहस[20] इकघृत[21]भरवावा ॥
पोता मँडफ अगर औ चन्दन । देवभराअरगज[22] औ बिन्दन ॥

दो० कै प्रणाम[23] आगे भई, विनय[24] कीन्ह बहुभांति ।
रानी कहा चलहु घर, सखी होत है राति ॥

भइनिशि[25] धन[26] जसशशि पर[27]कैसी । राजेंदेखिभूमि[28] फिरबसी ॥

क्रिश्म कपड़ा १ शिर २ तसवीर के बराबर ३ छोटे नखत ४-६ कोका-बेली ५-१२ खाविंद ७ ज़ेवर ८ चाँद ६-२७ बराबर १० हाथ ११ बीच १२ भोर १४ लाल सूर्य्य १५ नाम बाजा १६-१७-१८ सहेली १६ हज़ार २० घीव २१ खुशबू २२ दंडवत २३ आजज़ी २४ रात २५ पद्मावत २६ रोशनी २८ ज़मीन २६ ॥

भइकटकैंइ शरद शशिआवा । फेर गगने रविचाही छावा ॥
सुनि धनै धनुष भौंहकरफेरी । काम कटाक्षै मकोरतेंहेरी ॥
जानहुँ न कै बीच पै खाचौं । पितासत्त हों आज न बाचौं ॥
काल्ह न होय रहे सुख रामा । आज करों रावणसंग्रामा ॥
सैनै शिंगार मुहूँ है सजा । गजंगतचालअँचलगतधुजा ॥
नयनसमुद्र खड्ग नासिका । सरबरै जूझको मोसोंजिता ॥

दो० हों रानी पद्मावती, मैं जीता सुख भोग ।
तू सरबरै कर तासों, जसयोगी तोहियोग ॥

हौं असयोगि जान सब कोऊ । बीरै शृंगार जिते मैं दोऊ ॥
वहँ तो हनू बीर घट माहीं । यहँतो कामकटकै तुम्हपाहीं ॥
वहांतो हयै चढ़के महि मंडों । यहां तो अधरै अमीरसखंडों ॥
वहांतोखड्ग नरन्दहि मारों । यहां तो बिरहतुम्हार सँहारों ॥
वहांतोगजै पेलों होय केहर । यहांतो कुचैकाभिनकरहेहर ॥
वहां तो लूटौं कटकै खँडारू । यहां तो जीततुम्हारशिंगारू ॥
वहां तो कुम्भस्थलै गजनाऊँ । यहांतोगुज्जकलशहिकरलाऊँ ॥

दो० पड़ा बीच तब धर धर, प्रेमै राज के टेक ।
मानो भोग छहू ऋतु, मिल दोनों होय एक ॥

खण्डचौबीसवांछहऋतुबारहमास ॥

प्रथमै बसन्तनवलऋतु आई । सुऋतु चैत बैशाख सुहाई ॥

हुक्म १-आसमान पर सूर्य तथा कोठे पर जाना २ पद्मावत ३ ग़मज़ा. ४ कोर से देखना ५ भौंह चढ़ाके न बचोगे ६ क़सम ७ रावण की तरह लड़ो ८ फ़ौज ९-१७-२४ हाथी १०-२१ तलवार ११ नाक १२ बराबरी १३-१४ मैदान लड़ाई वा भोग १५ हनूमानजी १६ घोड़ा १८ ज़मीन १९ हौंठ २० शेर २२ औरत की छाती से काम २३ नाम हाथी २५ प्रेमने बीचबचाव कर दिया २६ पहिले २७ ॥

चन्दन चीर पहिर धन अंगा। सेंदुर दीन्ह बेहँसि भरमंगा॥
कुसुमहार औ परमलबासू। मलयागिरि[3] छिड़का कैलासू॥
सूर सँपेती फूलन दासी। धनऔ कन्तमिले सुखबासी॥
पियसँयोगे धन योवन बारी। भँवर पुहुपसँग करहिं धमारी॥
होय फाग भल चाचर जोरी। बिरह जरायदीन्ह जसहोरी॥
धनशशि सीअ तपी पियसूरू। नखतशिंगार होंहिं सबचूरू॥

दो० जेहि घर कंता ऋतुभली, आव बसन्ता नित्त।
सुखभर आवहिं देवँहरे, दुःख न जाने कित्त॥

ऋतु ग्रीष्म की तपननहिं तहां। जेठ असाढ़ कन्तघर जहां॥
पहिरे सुरँग चीर धन झीना। परमल मेदरहीं तन भीना॥
पद्मावत तन सीरे[3] सुबासा। नैहर राज कन्त घर पासा॥
औ बड़ जूड़ तहां सोनारों। अगर पोत सुखे नन्तउहारा॥
सेत विछावन सूर सपेती[17]। भोग बिलास कराहसुखसेती॥
अधँर तँबोर कपूर भीउसैना। चन्दनचरच लाव नितबैना॥
भा अनन्द सिंहल सब कहूँ। भागवन्त कहँ सुख ऋतुछहूँ॥

दो० दाड़िम दाखँ लेहिरस, बरसहिं आंब छुहार।
हरिय रतन सोटों कर, जो अस चाखनहार॥

ऋतुपावँस बरसै पिव पावा। सावन भादों अधिकँसुहावा॥
पद्मावत चाहत ऋतु पाई। गगनँ सुहावनभूमि सुहाई॥
कोकिल बैन पांत बगँ छूटी। धनँ निसरी जनु बीरबहूटी॥

पद्मावत १-२७ खुशबूदार २ चन्दन ३ तोशक लिहाफ़ ४-१७ मुलाक़ात ५ फूल ६ चाँद ७ ठंढा ८-१३ गर्म ६ सूर्य १० महादेवजी ११ बहुतखुशबू १२ रात के रहने का मकान १४ फ़र्श १५ सफ़ेद १६ होंठ १८ अनार १६ अंगूर २० तोता २१ बरसात २२ बहुत २३ आसमान २४ ज़मीन २५ बगुला २६॥

चमकबीज[1] बरसै जल सोना। दादुर[2] मोरशब्द[3] सुठलोना॥
रँगरातीपिय सँग निशि[4] जागी। गरजेगगन[5] चौंक कँठलागी॥
शीतल बुन्द ऊँच चौपारा। हरियर सब देखै संसारा॥
मलयसमीर[6] बास सुखबासी। बेल फूल सेज सुख दासी॥
हरियर भूमि[7] कुसुम्भी चोला। औधनपियसँग रचो हिंडोला॥

दो० पवन झकोरे है हरषै, लागै शीतल बास।
धनजानी यहि पवनहै, पवनसो अपने पास॥

आयशरदऋतुअधिक[8] पियारी। नाउँकुवारकातिकउजियारी॥
पद्मावत भइ पूनोकला[9]। चौदह चांद उई सिंहला॥
सोरह किरण शृँगार बनावा। नखतभरासूर्य्यशशि[11] पावा॥
भा निर्मल[12] सब धर्ति अकासू। सेज सँवार कीन्ह बलदासू॥
श्वेत[13] बिछावन औ उजियारी। हँसहँस मिलहिंपुरुषऔनारी॥
सोने फूलहिं पृथ्वी फूली। पियधनसों धनपियसोंभूली॥
चख[14] अंजनदेखँजन[15] दिखावा। होय सारस जोरी रस पावा॥

दो० यहिऋतु कन्थापासजेहि, सुखतिनकेहियमांह।
धन हँस लागी पियगले, धनगल पियकेबांह॥

आयशिशिरऋतु[16] तहां न सीऊ। अगहन पूष जहां घरपीऊ॥
धन[18] औपियमहँसीव[19] सुहागा। दुहूँअंग[20] एकै मिललागा॥
मनसों मन तनसों तन गहा। हियँ[21] सों हिय बिचहारनरहा॥
जानहुँ चन्दन लाग्यो अंगा। चन्दन रहे न पावे संगा॥
भोगकरहिं सुख राजा रानी। वहँ लेखे सबसृष्टि[22] जुड़ानी॥

बिजुली १ मेढक २ आवाज़ ३ रात ४ आसमान ५ हवा ६ ज़मीन ७ खुश ८ बहुत ९ पूर्णमासीका चाँद १० चाँद ११ साफ़ १२ सफ़ेद १३ आँख १४ ममोला १५ जाड़ेका मौसिम १६ पद्मावत १७ जाड़ा १८ बदन १९ छाती २० सारी दुनियां २१ ॥

जूझै[1] दुहूँ यौबन[2] सों लागा। बिचहुतसीवँ[3] जीवलै भागा॥
दुइ घट मिल एकै है जाहीं। ऐसिमिलहिं तबहीं न अघाहीं॥
दो० हंसा केल करहिं ज्यों, सरवर[4] कँदनँहि दोउ।
सेव पुकारे पारभा, जस चकवीक बिछोउ॥
ऋतुहेमन्त सँग पियोपियाला। मानहुँ फागुनसुखसेवसाला॥
सूर सपेती[6] महँ दिन राती। दगल चीरपहिरहिंबहुभांती॥
घरघर सिंहल है सुख भोजू। रहा न कतहूँ दुखकर खोजू॥
जहँ धनपुरुषशीतनहिंलागा। जानहुँ काग देख सर भागा॥
जाय इन्द्र सों कीन्ह पुकारा। हों पद्मावत देश निसारा॥
यहि ऋतु सदासंग मैं सोवा। अब दरशनतें भरा बिछोवाँ॥
अब हँसके शशि सूरहि भेटा। अहाजो शीत बीचहुत मेटा॥
दो० भयो इन्द्रकर आयसु[11], परसे हावहिं भइसोय।
काहु काहुकी पीरभा, कोहि काहु की होय॥
नागमती चितौर पँथहेरा[12]। पियपोगी पुनि कीन्ह न फेरा॥
नागर नारि काहु बस परा। तें बिमोहँ[13] मोसों चित हरा॥
सुवा काल[14] होय लैगा पीव। पीव न जात जातपर जीव॥
भयो नरायण बावन किरा। राज करत नलराजा छरा॥
करण[15] बान लीन्हों कै छंदू। भरथहि[16] भयो भिलमिलाँ नंदू॥
मानत भोग गोपिचँद[16] भोगी। लैअपसँवां जलंधर योगी॥
लैकेकंथ भाकुरशैं लोपी। कठिनबिछोहजियहिंकिमिगोपी॥
दो० सारस जोरी किमिहरी, मारगयो किन खाग।

लड़ाई १ जवानी २ जाड़ा ३ तालाव ४ सुख से कलोल ५ तोशक लिहाफ़ ६ अलग ७ चाँद ८ सूर्य ९ हुकम १० तसवीर ११ राह देखना १२ मोह लेना १३ मौत १४ नाम राजा १५ नाम योगी १६-१८ दुख पाया १७ छिपना १९ खाविन्द २० कौआ २१॥

झुरझुरमांजरधनं भई, बिरहकी लागी आग ॥

पिय बियोग[2] अस बावर जीव । पपिहा जस बोलै पिय पीव ॥
अधिक[3] कामदर्थे सो कामा । हरिलै सुवागयो पिय नामा ॥
बिरहबाण तस लाग न डोली । रक्तपसीज भीज तनचोली ॥
संगही हीरहार हिय वारी । हरहर प्राण तजी अबनारी ॥
खनं इक आव पेटमहँश्वासा । खनहिजाय जिवहोयनिरासा ॥
पवन डुलावहिं सींचहिं चोला । फिरकेनारि समुझमुखबोला ॥
प्रान पयानं होत को राखा । कोयलऔचातृकं मुखभाखा ॥

दो० आह जो मारी बिरहकी, आग उठी तेहि हाग ।
हंस जो रहा शरीर महँ, पांख जरे तब भाग ॥

पाट महादेव हिये[10] निहारू । समझजीव चितचेत सँभारू ॥
भँवर कमलसँग होय मिलावा । सँवरनेह मालति पुनिआवा ॥
जैसी पपीहा स्वातिहिप्रीती । टेक प्यास बांधे जिय सेती ॥
धर्ती जैसि गगन सों नेहा । पलट फिरै वर्षाऋतु मेहा ॥
पुनि बसन्तऋतु आव्र नवेली । सुरससुमधुकर सारस वेली ॥
जन अस जीव करेसि तू बारी । वहतरवर[13] पुनि उठहिं सँवारी ॥
दिनदश बिनजल सूखा कांसा । पुनि सोइ सरवर सोई हांसा ॥

दो० मिलहिं जो बिछुड़े साजन, कैकी भेंट कहन्त ।
तपन मिरगसर जिनिसहैं, ते अद्रापल हन्त ॥

चढ़ाअसाढ़गगनं घनं गाजा । साजा बिरह दुंददल बाजा ॥
धूम श्याम धौरी[16] घन धाये । श्वेतध्वजा वकंपांति देखाये ॥

नागमती १ दुख २ बहुत ३ जलना ४ छोड़ना ५ पल ६ कुच ७ पपीहा ८ तख़्त ६ दिल १०-आसमान ११-१४ भँवर १२ पेड़ १३ बादल १५ भूरी काली सफ़ेद १६ सफ़ेद पताका १७ बगुला १८ ॥

खड्ग[1] बीज[2] चमकैं चहुँ ओरा। बुन्दबान बरसहिं घन घोरा॥
उनई घटा आय चहुँ फेरी। कंत उबार मदन[3] हौं घेरी॥
दादुर[4] मोर कोकिला पीउ। गिरहि बीज घट रहै न जीउ॥
पुष्य नक्षत्र शिर ऊपर आवा। हौंबिननाहें मँदिरको छावा॥
अद्रा लाग बीज भुइँ लेई। मो पिय बिन को आदर देई॥

दो० जेहिं घर कंता ते सुखी, तेहि गारू तेहिं गर्व[6]।
कन्त पियारे बाहरे, हम सुख भूला सर्व॥

सावन बरस मेह अतवाँनी। मरन परीहौं बिरह झुरानी॥
लाग पुनरबसु पीउ न देखा। भइबावर कहँ कन्त सरेखा॥
रक्त की आंशुपरहिं भुइँ टूटी। रेंग चलीं जनु बीरबहूटी॥
सखिन रचा पियसंग हिंडोला। हरियरभूँमि कुसुम्भी चोला॥
हिये[11] हिंडोल जस डोलै मोरा। बिरह झुलावै देइ झकोरा॥
बाँट असूझ अथाह गँभीरी[13]। जिव बावरभा फिरै भँभीरी॥
जगजल बूड़ जहां लग ताकी। मोरनाव खेवक[14] बिन थाकी॥

दो० पर्वत समुद्र अगम बन, औ बीहड़ घन ढंख।
किमकर भेंटूँ कन्ततुम, नामो पांव न पंख॥

भरिभादौं दुपहर अति भारी। कैसें भरों रयनि अँधियारी॥
मँदिरसून पिय अन्तहि बसा। सेज नागभइ दहिदहि डसा॥
रहौं अकेल गहें इक पाटी। नयन पसार मरों हियफाटी॥
चमकबीज घन गरजत त्राशा। बिरहकालहोय जीवनिराशा॥
बरसै मघौ झकोर झकोरी। मोरदुइनयन चुवैं ज्यों ओरी॥

तलवार १ बिजुली २ कामदेव ३ मेढक ४ खाविन्द ५ गरूर ६ तुला-हुआ ७ होशियार ८ लोहू ९ ज़मीन १० दिल ११ राह १२ गहरी १३ मल्लाह १४ नामनखत १५॥

धनं सूखै भर भादौं माहां। अबहुँनआयनसींचेसिनाहाँ॥
पुरबा लाग भूमि जल पूरी। आक जवास भईहौं भूरी॥

दो० जलथल भरे अपूरसब, धर्ति गगन मिल एक।
धनयौबन अवगाहमहँ, वय बूड़ी पिय टेक॥

लाग कुँवार नीरँ जस घटा। अवहुँ आवरे प्रीतम लुटा॥
तुहि देखों पिय पलुहेकया। उतरा चीत बहुरकर मया॥
उये अगस्त हस्त तन गाजा। तुरी पलान चढ़े रण राजा॥
चित्रा मीत मीन घर आवा। कोकिल पीव पुकारत पावा॥
स्वाति बूँद चातृकँ मुखपरी। सीप समुद्र मोति बहुभरी॥
सरवैर सँवरि हंस चलिआये। सारस कुरलें खँजन देखाये॥
भई निराश कास वन फूले। कन्त न फिरे विदेशहि भूले॥

दो० बिरहहस्ति तन शालै, घाय करै नितचूर।
आय बचाओ वेग पिय, गाजहुहोय सेंदूर॥

कातिक शरदचन्द उजियारा। जगशीतल मोविरहिनजारा॥
चौदह किरण चन्द परकाशू। जनहु जरै सबधर्ति अकाशू॥
तन मन सेज करै इक दाहू। सबकहँ चन्दभयो मोहिंराहू॥
चहूँ खण्ड लागै अँधियारा। जो घर नाहीं कन्त पियारा॥
अबहूँ निठुर आव यहिबारा। पर्व देवारी हो संसारा॥
संगभुमकगावहिं अँग मोरी। हों भुरवों बिछुरीजेहिजोरी॥
जेहिघर पियसोमनोरथ पूजा। मोकहँ बिरह सौतदुखदूजा॥

दो० सखि मानैं त्योहार सब, गाय देवारी खेल।

औरत तथा नागमती १ खाविन्द २ नामनखत ३-१०-१२-१३-१५ ज़मीन ४ आसमान ५ गहिरा ६ पानी ७ लौटके ८ बदन हरा होजाय ९ मेहरबानी ११ घोड़ा १४ मछली १६ पपीहा १७ तालाब १८ ममोला १९ हाथी २० छेदना २१ जल्द २२ शेर २३ रोशन २४ जलाना २५ कामना २६॥

हौं का खेलौं कन्त बिन, रही छार शिर मेल ॥

अगहन दिवस घटा निशि बाढ़ी । दुपहर रयनि जाय किमि गाढ़ी ॥
अब धन दिवस बिरह भा राती । जरौं बिरह जस दीपक बाती ॥
कांपा हिया जनावा सीव । तौ पै जाय होय सँग पीव ॥
घर घर चीर रचे सब काहू । मोर रूप सब लैगा नाहू ॥
पलट न बहुरा गा जो बिछोई । अबहूँ फिरै फिरै रँग सोई ॥
बज्र अगिनि बिरहिन हिय जारा । सुलग सुलग दग्धै भइ छारा ॥
यह दुख दग्ध न जानै कन्तू । यौवन जन्म करै भसमन्तू ॥

दो० पियसों कहो सँदेशरा, ये भँवरा ये काग ।
सो धन बिरहिन जर गई, तेहि क धुवां हम लाग ॥

पूस जाड़ थर थर तन कांपा । सूर्य जुड़ाय लंक दिशि तापा ॥
बिरह बाढ़ भा दारुन सीव । कँप कँप मरौं लेइ हर जीव ॥
कन्त कहां हो लागौं हियरे । पन्थ अपार सूझ नहिं नियरे ॥
सौर सपेती आवै जूड़ी । जानहु सेज हिमंचल बूड़ी ॥
चकई निशि बिछुड़ै दिन मिला । हौं दिन रात बिरह कोकिला ॥
रयनि अकेल साथ नहिं सखी । कैसे जिये बिछोही पखी ॥
बिरह सजान भयो तन जाड़ा । जियत खाय औ मुये हिन छांड़ा ॥

दो० रक्त ढुरा आँसू गिरा, हाड़ भये सब शंख ।
धन सारस होइ ररमुई, आय समेटहिं पंख ॥

लाग्यो माघ परै अति पाला । बिरहा काल भयो जड़ काला ॥
पहल पहल तन रुई जो झांपौं । अहल अहल अधिको हिय कांपौं ॥

खाक १-६ दिन २ रात ३-४ दिल ५-१८ जाड़ा ६ खाविन्द ७ जलाना ८ उत्तरतरफ़ १० टेढ़ा ११ छाती १२ राह १३ तोशकलिहाफ़ १४ पालाकी तरह १५ तथा नागमती १६ बहुत १७ ॥

आय सूर है तपरे नाहाँ। तुहि बिन जाइ न छूटे माहा॥
यही माह उपजी रस मूलू। तो सुभवँर मोर यौवन फूलू॥
नयनचुवहिं जसमहवट नीरू[१]। तेहिबिनआगलागशिरचीरू[२]॥
टपटप बूंद परहिं जनु ओला। बिरहपवन है मारै झोला॥
केहिकशिंगारको पहिरपटोरा[४]। ग्रीवँ[६] न हार रहे है डोरा॥
दो० तुम बिनकन्ताधनहरुवी, तृणँ तृणवरभा डोल।
तेहि पर बिरह जराय के, चहै उड़ावा झोल॥
फागुन पवन झकोरे महा। चौगुन सीवँ जायनहिंसहा॥
तन जस पियर पात भा मोरा। तेहिपर बिरहदेइझकझोरा॥
तरवर झरहिंझरहिं वनढांखा। भई उपन्त फूल फलशाखा॥
करहिं बनाफत[११] कीन्ह हुलासू। मोकहँ जगभा दून उदासू॥
फाग करहिं सब चांचर जोरी। मोतनलाय दीन्हजस होरी॥
जो पै पिये जरत अस भावा। जरतमरतमोहिं रोसनआवा॥
रात दिवस[१२] निरभै जिय मोरें। लग्यो निहोर[१३] कन्तजो तोरें॥
दो० यह तन जारों छार[१४] कै, कहों कि पवन उड़ाव।
मगँ[१५] तेहि मारग[१६] है परे, कन्त धरै जहँ पांव॥
चैत बसन्ता होय धमारी। मो लेखे संसार उजारी॥
पंचम बिरह पनच शरँ[१७] मारी। रक्त रोय सगरे बन ढारी॥
बूड़उठे सब तरवर[१८] पाता। भीज मँजीठ टेसु बनराता॥
बौरे अम्ब फरे अब लागी। अबहुँसँवारि घरआवसभागी॥
सहँस[१९] भाव फूली बनपती। मधुकर[२२] फिरैं सँवरि मालती॥

सूर्य्य १ खाविन्द २ पानी ३ कपड़ा ४ जोड़ा ५ गरदन ६ हलकी तिनका से ७ जाड़ा ८ पेड़ ९–११ पैदा १० दिन १२ तथा न्योछावरहों १३ राख १४ शायद १५ राह १६ तीरखींचकें १७ पेड़ १८ लाख १९ लाल २० हज़ार २१ भँवर २२॥

मोकहँ फूल भये सब कांटे। दृष्टिहरी जनु लागहिं चांटे॥
भर यौवन भइ नारँग शाखा। सो अब बिरह तातहै चाखा॥
॥ दो० घरन परेवा[3] आवजस, आय परो पिय टूट।
नारि पराये हाथ है, तुम बिन पाव न छूट॥
भा बैशाख तपन अति लागी। चोला चीर चँदन भा आगी॥
सूरज जरत हिमंचल ताका। बिरहबिजागी सौंहे रथहांका॥
जरत बचासि होय पिय छाहां। आय बुझाव अँगारहिंमाहां॥
तोहि दरशनहै शीतल नारी। आय आग सो कर फुलवारी॥
लागे जरै नरै जस भारू। फिरफिरभूजेसितज्योंनबारूँ॥
सरवर हियां घटत नित जाई। तरक तरक ह्वै ह्वै भर आई॥
वेहिरतहियां करहु पिय टेको। दृष्टि[12] मयाकरमिलवहु एको॥
दो० कमलजोविकसंत[13]मानसर, बिनजलगयोसुखाय।
अबहुँ वेलफिर पल्हवे, जो पिय सींचहु आय॥
जेठजरो जग सुनहि लुवारा। उठहिं बौंडरा परहिं अँगारा॥
बिरह गाजि हनुमत ह्वै जागा। लंका दाहै करै तन लागा॥
चारो पवन झकोरैं आगी। लंका दाह पलंका लागी॥
दहभइश्यामनदी कालिन्दी। बिरहकीआगकठिनअसमुन्दी॥
उठै आग औ आवै आंधी। नयन न सूझ मरों दुखबांधी॥
अधजर भई मांस तन सूखा। लाग्यो बिरह काल है भूखा॥
मांस खाय अब हाड़हि लागा। अबहुँआवआवतसुनिभागा॥
दो० गिरिसमुद्रशशिमेघरवि, सहि न सकै यहआग।

चाँदी १ जवानी २ कबूतर ३ भारी ४ सामने ५ ठंढा ६ दरवाज़ा ७ तालाब ८ दिल ९ छातीफटना १० मदद ११ निगाह १२ खिलना १३ बिजुली १४ जलाना १५ यमुना १६ चाँद १७ सूर्य्य १८॥

मुहमद सती सराही, जरै जो अस पिय लाग ।

तपै लाग अब जेठ असाढ़ी । भइमोकहँ यहिछाजनै गाढ़ी ॥
तृण तृणँ बर भा झूरों खरी । भा वर्षा दुख आगर जरी ॥
बंध नाहिं औ खगड न कोई । नागै न आव कहों कहि रोई ॥
सांठै नांठलग बात को पूँछा । बिनजिय फिरै मूँजतन छूँछा ॥
भई दुहेली टेक बहूनी । थांभ नाहँ उठ सकै न थूनी ॥
बरषहिं मेह चुवहिं नयनाहा । छपर छपर होई बिन नाहा ॥
कोरो कहां ठाठ नव साजा । तुमबिनकंतनछाजन छाजा ॥

दो० अबहूँ दृष्टि मयां कर, नाथ निठुर घरआव ।
मँदिर उजाड़ होत है, नवके आय बसाव ॥

रोय गँवाई बारह मासा । संहसै सहसदुखइकइकश्वासा ॥
तिल तिल बरषबरषपर जाई । पहरपहर युग युगन सेराई ॥
सौंहँ आव पिय रूप मुरारी । जासों पाव सुहाग सुनारी ॥
सांझ भई झुरझुरपँथ हेरी । कौन सो घरी करी पिय फेरी ॥
दहि कुइला भइ कन्तसनेहा । तोला मांस रहा नहिं देहा ॥
रक्त न रहा बिरह तन गिरा । रती रती है नयनहिं ढरा ॥
पांय लगी जोरै धनै हाथा । जोरा नेह जोराये नाथा ॥

दो० बरस दिवस धनरोय के, हारपरी चित झंख ।
मानुष घर घर बूझके, पूँछी निसरी पंख ॥

भई पुँछार लीन्ह बन बासू । बैरिनसौत दीन्ह चिलवासूँ ॥
हौंसोरि बान बिरहतन लागा । जो अबहूँ आवै घर कागा ॥

छावना १ तिनका के बराबर २ पत्ती ३ रुपया पास नहीं ४ दुबली ५ वेसहारा ६ खाविन्द ७ छावनी ८ निगाह ९ मेहरबानी १० हज़ार ११ मालूम होना १२ सामने १३ राह १४ जलना १५ नागमती १६ दिन १७ जानवरपरिन्द १८ मोर १९ चिल्लाना २० तिनका २१ ॥

हारिल भई पंथ मैं सेवा । अब तुहि पठवों कौन प
धौरी पांडुकै कहि पियठाऊँ । जो चितरोखं न दूसरना
जाय बिवाही पिय कंठलवा । करै मिलाव सोई गौरवा ॥
कोकिल भई पुकारत रही । महर पुकार लीन्ह लै दही ॥
पेड़तिलोरी[10] औ जलहंसी । हिरदय बैठि बिरहलगनंसा ॥

दो० जेहि पंखी के नेरहोय, कहै बिरहकी बात ।
सोई पंख जर तरवैरे, जाय होय नहिंपात ॥

कुहुककुहुक जस कोयल रोई । रक्त आंश घुँघची बन बोई ॥
भइकर मुखी नयन तन राती । को सिराव बिरहादुख ताती ॥
जहँ जहँ ठाढ़ होय बनबासी । तहँतहँहोइघुँघचिन्हकीरासी ॥
बूँद बूँद महँ जानो जीव । गूँजागूँज करहिं पिय पीव ॥
तेहि दुखभई पलास निपाती । लोहू बूड़ उठी होय राती ॥
राती बिम्ब भये तेहि लोहूँ । परवर पाक फटे हिय गोहूँ ॥
देखों जहां सोइ है राता । जहँ सो रतन कहै को बाता ॥

दो० नापावसं वह देशरा, नहिं हेवंत न बसन्त ।
ना कोकिल न पपीहरा, जेहिसुनिआवैकन्त ॥

फिरिफिरि रोयकोई नहिंडोला । आधीरात बिहंगम बोला ॥
तुइफिरफिरदाहि सब पांखी । केहिगुनरयनि नलावैसिआंखी ॥
नागमती केहि कारनै रोई । कासों कहू जो कन्त बिछोई[24] ॥
मन चित हिये न उतरै भोरे । नयन कजल चंपरहे न मोरे ॥
कोइ न जाय तेहि सिंहलदीपा । जेहिसेबात कह नयनासीपा ॥

नामचिड़िया १—३—४—५ जानवर परिन्द २ गले लगाया ६ तथा मर्द ७ नामचिड़िया ८–९–१०–११–२० दिल १२ पेड़ १३ लालआँख १४ जलीहुई १५ लाल १६ कुंदरू १७ छाती १८ बरसात १९ जलाना २१ रात २२ वास्ते २३ अलग २४ आँख २५ ॥

योगी होय निसरा सो नाहूँ। तबहुं न कहा सँदेश न काहूँ॥
नित पूँछों सब योगी जंगम। कहै न कोइ निजबात विहंगम॥
दो० चांखो चक्र उजारभये, सकल सँदेशा टेक।
कहों बिरह दुख आपन, बैठसुनहु दँड एक॥
तासों दुख कहिये हो वीरा। जेहि सुनके लागै परपीरा॥
कोहोय भिमँ दिनको लै रहा। को सिंहल पहुँचावै चहा॥
जहां सो कन्त गयेहोय योगी। हों किंगरी भइ झूर वियोगी॥
वह सुनके पूरी करु भेटा। हों भइ भसम न आय समेटा॥
कथा जो कहै आय पियकेरी। पांवर होहुँ जन्म भर चेरी॥
वहके गुन सँवरत भइ माला। अबहुँ न बहुरा उड़गा छाला॥
बिरह गुरुइ खप्पर के हियां। पवन अधार रहै सो जिया॥
दो० हाड़भई झुर किंगरी, नसैं भई सब तांति।
रोमरोम तन धुनउठै, कहो बिथा तेहिभांति॥
पद्मावत सों कह्यो विहंगम। कन्त लुभाय रहे जेहि संगम॥
तूँ घर घरनि भई पिउ हरता। मोतन जप दीन्हीं औ बरता॥
रावन कनकँ सो तोकहँ भयो। रावँट लङ्क मोहिं कै कियो॥
तोकहँ चैन सुख मिलै शरीरा। मोकहँ हिये द्वंद दुख पीरा॥
हमहूँ व्याह तोर सँग पीऊ। आपहिपाय जान पर जीऊँ॥
अबहूँ कर माया जिव फेरो। मोहिं जियाव देहु पिय मेरो॥
मोहिं भोगसों काज न प्यारी। सौंह दृष्टि की चाहनहारी॥
दो० सौत न होस तू बैरिन, मोरकन्त जेहि हाथ।
आनमिलाव एकबेरकैसे, तोरपांय मोरमाथ॥

खाविन्द १ चारोंतरफ़ २ नामपहलवान ३ दुखी ४ मुलाक़ातकर ५ जूती ६ दिल ७ नामचिड़िया ८ वरवाली ९ सोना १० राख ११ अपना पैर जानके मेरी ज़िन्दगी चाह १२ सूधी निगाह १३॥

रतनसेन की मा सरस्वती । गोपिचन्द जस मैनावती ॥
अँधरी बूढ़ी सुठ दुख रोवा । यौबन रतन कहां होय खोवा ॥
यौबन अहा लीन्हसो काढ़ी । भइ बिनटेक करै को ठाढ़ी ॥
बिन यौबन भइ आश पराई । कहां सुपूतखम्भ होय आई ॥
नयन दृष्टि नहिं दिया बराहीं । घर अँधियार पूत जो नाहीं ॥
कोरी चला श्रवण की ठाउँ । टेक देह वह टेकों पाउँ ॥
तुम श्रवण ह्वै कांवर सजी । डार लाय सो काहे बजी ॥

दो० श्रवण श्रवणके रुरमुई, माता कांवर लाग ।
तुमबिन पानि न पावे, दशरथ लावै आग॥

लै सुसँदेश विहंगम चला । उठी आग सगरी सिंहला ॥
बिरह बिजाग बीजको ठेगा । धूम सो उठी श्याम भयेमेघा ॥
भरिगा गगन लूक तस छूटी । ह्वै सो नखत गिरहिं भुइँ टूटी ॥
जहँ जहँ भूमि जरी भा रेहू । बिरहकिदग्ध भई जनु खेहू ॥
राहु केत जस लंका जरी । औ उड़चिनग चांदमहँ परी ॥
जाय विहंगम समुद्र डफारा । जरे मच्छ पानी भा खारा ॥
दौढ़ी बन बीहड़ जल सीपा । जाय नेरभा सिंहल दीपा ॥

दो० समुद्रतीर इक तरवर, जाय बैठ तेहि रूख ।
जबलगकहि न सँदेशा, तबलगप्यासनभूख॥

रतनसेन वन करत अहेरा । कीन्ह वही तरवर तरि फेरा ॥
शीतल बृक्ष समुद्र के तीरा । अतिउतंग औ छांह गँभीरा ॥

जवानी१—२ बेसहारे ३ निगाह ४ नामब्राह्मण जो अंधी अन्धामा बाप को काँवरमें लिये रहताथा ५ छोड़ना ६ राजादशरथ ७ नामचिड़िया ८–१६ जहाँ विरहकी बिजुली वहाँ बिजुली क्या दुश्मनी करै ९ धुवाँ १० काला ११ आसमान १२ ज़मीन १३ जलना १४ राख १५ चिल्लाना १७ जलाना १८ पेड़ १९ शिकार २० ऊँचा २१ ॥

तुरी बांधिके बैठि अकेला। साथी और करहिं सबकेला॥
देखत फिरै सो तरवर शाखा। लाग सुनै पंखिनकी भाखा॥
पंखिनमहँ जो बिहंगम अहा। नागमती जासों दुख कहा॥
पूँछहिं सबै बिहंगम नामा। अहो मीत काहे तुम श्यामा॥
कहेसि मीत मासिकदुई भये। जम्बूद्वीप तहां हम गये॥

दो० नगर एक हम देखा, गढ़ चितोर वह नाउँ।
सोदुखकहूँ कहांलग, हम दाढ़े तेहि ठाँउँ॥

योगी ह्वै निसरा सो राजा। सूननगरजानहु धुन्दंबाजा॥
नागमती है ताकर रानी। जरै विरह जस कोयल बानी॥
अबलग जरभइ होयहै छारा। कहीन जाय विरहकी झारा॥
हियां फाट वह जबहीं कुहके। परै आंशु सब होय होय लूके॥
चहूँखण्ड छिटकी वह आगी। धर्ती जरत गगनेंकहँ लागी॥
बिरह दवानै को जरतबुझावा। चहीं लाग सोहेरैं धावा॥
हों पुनि तहां सो दाढ़े लागा। तनभा श्याम जीव लैभागा॥

दो० कातुम हँसो गर्ब[१३] के, करहु समुद्रमहँ केल।
मतिअन्हबिरहीबशपरहिं, दहीअगिनजलमेल॥

सुनि चितोर राजै मन गुना। बिधि सँदेश मैं कासों सुना॥
को तरवैरैं पर पंखी बेशा। नागमती कर कहै सँदेशा॥
को तुम मीत मन चेतबसेरू। देव कि दानव पवन पखेरू॥
रुद्र ब्रह्म शिव बाचा तोहीं। सो निजबातअन्त कहुमोहीं॥
कहो सो नागमती तुइ देखी। कहेसिबिरहजस मरोंबिशेखी॥

घोड़ा १ नामचिड़िया २ दोस्त ३ दोमहीना ४ जलना ५ जगह ६ अँधियारा ७ राख ८ लूक ९ छाती १० आसमान ११ आग १२ ग़रूर १३ पेड़ १४ महादेवजी १५॥

हौं राजा सोई भा योगी । जेहिकारणवहऐसोवियोगी[1] ॥
जस तू पंखी[2] हौं दिन भरौं । चाहौं कबहिं जाय उड़ परौं ॥
दो० पलकआंख तेहिमारग[3], लागीदुनहुरहाहिं ।
कोउ न सँदेशी आवहिं, तेहिकसँदेशकहाहिं ॥
पूँछहि कहा सँदेश बियोगूं[4] । योगी भया न जानहि भोगू ॥
धनीं संग न संगे पूरे । पानी बूड़ रात दिन झूरे ॥
तेल बैल जस बायें फिरै । परै भँवर महँ सौंहै[5] न टरै ॥
तुरी[6] नाउँ दाहिन रथ हांका । बायें फिरै कुम्हार का चाका ॥
तुहिअसनाहिंजो पंखभुलाना । उड़े सो आव जगतमहँजाना ॥
एक दीप का आयों तोरे । सब संसार पांयतर मोरे ॥
दहने फिरै सोअसउजियारा । जस जग चांदसूर्य्य औ तारा ॥
दो० मुहसदबायेंदिश[7] तजी, एकश्रवण[8] इकआंख ।
जबते दाहिनहोय मिला, बोल पपीहा पांख ॥
हौंध्रुव[9]अचल सोदाहिनलावा । फिर सुमेरु[10] चितोरगढ़ आवा ॥
देखों तोरे मँदिर घमोई । मात तोर आंधर भइ रोई ॥
जस श्रवण[11] विनअन्धीअन्धा । तसररमुई तोहिं चितबन्धा ॥
कहेसि मरों को कांवर लेइ । पूत नाहिं पानी को देइ ॥
गई प्यास लाग तुहिं साथा । पानी देह दशरथ के हाथा ॥
पानी न पिये आग पै चाहा । तोहिअसपूत जन्मअसलाहा ॥
भागीरथी[12] होहु कर फेरा । जाय सँवारि मरनकी बेरा ॥
दो० तू सपूत मन ताकर, अस परदेश न लेहि ।
अबताईं मुइ होयही, मुयहिं जाय कत देहि ॥

दुखी १ जानवरपरिन्द २ राह ३ दुख ४ सामने ५ घोड़ा ६ तरफ़ ७ कान ८ नामसितारा ९ पहाड़ १० नाम-मातापितामक्त ११ गंगाजी १२ ॥

नागमती दुख बिरह अपारा। धर्ती स्वर्ग जरै तेहिं झारा॥
नगरकोट घर बाहेर सूना। न्योजं होय घरपुरुषबहूना॥
तू कामरू परा बश टोना। भूला योग छरा तोहि टोना॥
वह तुहि कारन मरुभइ मारा। रही नाक्रहोय पवन अधारा॥
कहुँ बोलहिं लै मोकहँ खाहू। मांस न कायाँ जो रुच काहू॥
बिरह मयूरँ नाग वह नारी। तू मँजारँ कर बेगँ गुहाँरी॥
मांस गिरा मांजर है परी। योगी अबहुँ पहुँचले जूरी॥
दो० देख बिरह दुख ताकर, मैं सो तजाँ बनबास।
आयोंभाग समुद्र महँ, तोह न छांड़े पास॥
अस पुनि जरा बिरहकरगठाँ। मेघश्याम भये धूम जो उठा॥
दाढ़ाँ राहु केतु गा दाधा। सूरज जरा चांद जर आधा॥
औ सब नखत तराँई जरीं। टूटहिं लूक धर्ति महँ परीं॥
जरै सो धर्त्ती ठावहिं ठाउँ। दहक पलाशँ जरे तेहिं दाउँ॥
बिरह श्वासतस निकसीझारा। दहिदहि परबतहोहिंअँगारा॥
भँवर पतंग जरे औ नागा। कोकिलभुजयलऔबनकागा॥
बन पंखी सब जिवलै उड़े। जल पक्षी जलमहँ दुख बुड़े॥
दो० हमहुँ जरत तहँ निकसा, समुद बुझायों आय।
समुद्र जरा पनिभा खारा, धूमरहा जग छाय॥
राजैं कहा रे स्वर्ग सँदेशी। उतरआव मोहिं मिलपरदेशी॥
पांयटेक तहिं लावों हियरे[14]। परम सँदेश कहो है नियरे॥
कहा बिहंगमँ जो बनबासी। कितक गृहीते होहिं उदासी॥

परमेश्वर न करे १ खाली २ बदन ३ मोर ४ बिल्ली ५ जल्द ६ मदद ७ बूटी ८ छोड़ना ९ ढेर १० जलना ११ छोटेनखत १२ ढाख १३ दिल १४ नामाचिड़िया १५॥

जेहितरु तरितुमश्रासन कोऊ। कोकिल काग बराबर दोऊ॥
धर्त्ती महँ विष चारा परा। हारलै जानि भूमिपरिहरा॥
फिरों वियोगी डारहि डारा। करों चले कहँ पंख सँवारा॥
जहवां घरी घटत नित जाहीं। सांझ जीवहै दिवसेंहि नाहीं॥
दो० जो लहि फेरे मुक्त है, परों न पिंजरमाह।
जाउँ वेगथल आपने, है जेहिबीच निबाह॥
कहि संदेश विहंगम चला। आग लाय सगरे सिंहला॥
घड़ी बीत राजा घर आवा। भाश्रलोपैं पुनिदृष्टिन आवा॥
पंखी नाउँ न देखा पांखू। राजा रोय फिराके साखू॥
जस हेरत वह पंख हेराना। दिनकहमहिंश्रसकरबपयानां॥
जोलहिप्राणपिंडे इकठांऊँ। एकबार चितोरगढ़ जाऊँ॥
आवाभँवर मँदिर जहँ केवाँ। जीव साथ लेगयो परेवाँ॥
तन सिंहल मन चितोर बसा। जिव बेसँभरनागिनजिमडसा॥
दो० जेतनारि हँस पूँछी, अमीवचनें जिमि निन्त।
रसउतरा विष चढ़रहा, नावह चिन्तन मिन्त॥
बरस एक तहँ सिंहलरही। भोग विलास कीन्हजसत्रही॥
भा उदास जो सुना सँदेशू। सँवरिचला मन चितोर देशू॥
कमल उदासी देखा भँवरा। थिर नरही मालतिमन सँवरा॥
योगी औ मन पवन परावा। कित थिररहै जोचित्तउचाहा॥
जो जिव काढ़दे आवन कोई। योगी भँवर न आपन होई॥
चलाकमलमालतिहियँ घाली। अवकितथिरआछी अलँआली॥

पेड़ १ यह चिड़िया पेड़ नहीं छोड़ती पानी पीते में भी लकड़ी पंजे में लिये रहतीहै २ ज़मीनछोड़ी ३ दिन ४ नजात ५ नाम चिड़िया ६ शायद ७ निगाह ८ देखना ९ कूच १० वदन ११ जगह १२ कमल तथा पद्मावत १३ जानवर परिन्द १४ मीठी बात १५ क़ायम १६ तथा पद्मावत १७ दिल १८ भँवर १९॥

गन्ध्रबसेन आय सुनि बारो। कस जिव भयो उदास तुम्हारा॥
दो० मैं तुमहीं जिवलावा, दीन नयन महँ वास।
जो तुम होहु उदासी, यहि का कर कैलास॥
रतनसेन विनवा कर जोरी। अस्तुति योग जीभि ना मोरी॥
सहसं जीभ जो होहिं गुसाईं। कीन जाय अस्तुति जहँताईं॥
कांच किरा तुम कञ्चन कीन्हा। तब भा रतन ज्योति तुम्ह दीन्हा॥
गंग जो निरमल नीर कुलीना। नार मिले जल होय मलीना॥
तस हों अहा मलीनी कला। मिला आय तुम भा निरमला॥
पान समुद्र मिला होय सोती। पाप हरा निरमल भइ ज्योती॥
तुम मन आवा सिंहलपुरी। तुमते चढ़ा राज औ कुंरी॥
दो० सात समुद्र तुम राजा, सरने पांव को उखाट।
सबै आय शिर नावहिं, जहां तुम्हारा पाट॥
औ मो विनय अब करों गुसाईं। तब लग कयों जीव तबताईं॥
आवा आज हमार परेवा। पाती दीन्ह आन पति देवा॥
राज काज औ भुइँ उपराहीं। शत्रु भाय अस कोऊ नाहीं॥
आपन आपन करहिं सुलीका। एकहि मार एक चाहि टीका॥
भई अमावस नखतहि राजू। हम कहँ चन्द चला वह आजू॥
राज हमार जहां चलि आवा। लिखि पठई अब होय परावा॥
वहां नेर देहली सुलतानू। होय है भोर उठै जो भानू॥
दो० रहहु अमर महि गगन लग, औ जो लहहम आव।
शीश हमारा तहां नित, जहां तुम्हारा पांव॥

दरवाज़ा १ हज़ार २ सोना ३ पाकसाफ़ ४—७ पानी ५ बेरोशनी ६ सोता ८ साफ़ ९ इज़्ज़त १० बराबर नहीं कोई ११ तख़्त १२ अर्ज़ करना १३ वदन १४ क़ासिद १५ दुश्मन १६ हद १७ सूर्य्य १८ हमेशा ज़िन्दा १९ ज़मीन आसमान २० शिर २१ हमेशा २२॥

राजसभा पुनि उठी सँवारी। अनबिनती राखी पत भारी॥
भाइन मांझ होय जनफूटी। घरके भेद लंक अस टूटी॥
बिरवा लाय न सूखन दीजे। पावै पान दृष्टि सो कीजे॥
अन राखी तुम दीपक लेसी। पै न रहै पाहुन परदेसी॥
जाकर राज जहां चलिआवा। वही देश पै ताकहँ भावा॥
हम दोउनयन घालकेराखहिं। ऐसोभाखयहिजीभनभाखहिं॥
दिवसदेहु सँकुशल सिधावहिं। दीरघआयु होयपुनि आवहिं॥

दो० सबहिं बिचार परा अस, भा गवने कर साज।
सिद्धगणेश मनावहिं, विधि पुरवे मन काज॥

धिनयँ करै पद्मावत बारी। हौंपिय कमलसों गोद नेवारी॥
मोहिंअसकहांसोमालतिबेली। कदम सेवती चम्प चँबेली॥
औ शृंगार हार जस तागा। पुहुपं कलीअसहिरदयँलागा॥
हौं सुबसन्त करौं नित पूजा। कुसुम गुलालसुदरशनगूजा॥
बकचन बिनवों रोस बिमोही। सुनि बकाव तज जाही जूही॥
नागेसर जो मन है तोरी। पूज न सके बोलसर मोरी॥
हों सदवर्ग लीन्ह मैं शरना। आगे कर जो कन्ततुहिकरना॥

दो० केतेनारि समुझावै, भँवर न काटे बेध।
कहै मरौं पै चित्तोर, यज्ञ करौं अश्वमेध॥

गवन चार पद्मावत सुना। उठाधसक जिवऔशिरधुना॥
गहवर आय नयनभर आंशू। छांड़ब यहि सिंहल कैलाशू॥
छांड़्योनैहर चल्यों बिछोही। यहरे दिवस होहूँ तहँ रोई॥
छांड़्यों आपन सखी सहेली। दूरगवन तजचल्यों अकेली॥

निगाह १ दिन क़रारदो २ घड़ीठमरहो ३ ईश्वर ४ अर्ज़करना ५ फूल ६ छाती ७ तारीफ़सुनि ग़ुस्सा नहीं आता ८ तथा नागमती ९ तथा राजा १० अलग ११ दिन १२॥

जहां न रहनभयो निज चालू । होतहि कस न तहांभा कालू ॥
नैहर आय काहि सुख देखा । जनु हैगयो स्वपन करलेखा ॥
रांखतपार सो पिता निछोहीं[1] । कितविवाहके दीन्हविछोहीं[2] ॥
दो० हियें[3] आय दुखबाजों, जिवजानहुगाछेक ।
मन तेवान के रोवै, हर मँडारकर टेकैं ॥
पुनि पद्मावत सखी बोलाई । सुनिके गवनामिलीं सबआईं ॥
मिलहु सखी हम तहँवां जाहीं । जहां जाय पुनि आवन नाहीं ॥
सात समुद्र पार वह देशू । कितरेमिलन कितआवसँदेशू ॥
अगमपंथ[6] परदेश सिधारी । नजनो कुशलकिविथाँहमारी ॥
पितौनेछोहैं कीन्ह हियेंमाहां । तहँ को हम राखै गहि बाहां ॥
हम तुम एक मिले सँगखेला । अन्तविछोहैं[10] आनगेयँमेलों ॥
तुमअस हितू सँगात पियारा । जियत जीव नहिंकरोंनिरारो[12] ॥
दो० कन्त चलाई काकरों, आयसु[13] जाय न मेट ।
पुनिहममिलहिं किना मिलैं, लेहुसहेली भेट ॥
धनें[14] रोवत रोईं सब सखी । हम तुम देख आपकहँझखी ॥
तुम ऐसी जहँ रही न पाहीं । पुनिहमकाहिजोआहिपराहीं ॥
आदिपितो[15] जो रहा हमारा । वहूँन यहिदिनाहिये[16] बिचारा ॥
छोहैं[17] नकीन्ह निछोहीं[18] ओहूँ । का हमदोष[19] लगाइक गोहूँ ॥
मकुं गोहूँकर हिया चरानों[20] । पै सो पिता न हिये छोहानों[21] ॥
औहम देखा सखी सरेखे । यहि नैहर पाहुन कर लेखे ॥
तब तेहि पिय नैहर ना चाहा । जेहिससुरारअधिकहोयलाहैं[23] ॥

बेदर्द १ जुदाई २-१० दिल ३ पहुँचा ४ ईश्वर का नाम, ले ठीककरके ५ मुश्किलराह ६ दुख सुख का हाल ७ बेमेहरी ८ दिल ९-१६गरदनमें डाला ११ अलग १२ हुक्म १३ पद्मावत १४ आदम १५ मेहरबानी १७ बेदर्दी १८ पाप १९ शायद २० छाती फटी २१ मेहरबान २२ बहुत फ़ायदा २३ ॥

दो० चालनकहँ हम अवतरी, चलनसिखातहँआय।
अब सो चलन चलावे, को राखै गहिपायँ॥

तुम बारी पिय सोजकै राजा। गर्ब कोध वोही पै छाजा॥
सब फल फूल वही की शाखा। चहै सो तोड़ै चहै सो राखा॥
आयसु लहे रहो नित हाथा। सेवा करहु लाय भुइँ माथा॥
बर पीपर शिरऊभै जो कीन्हा। पाकर तिन सूखी फर दीन्हा॥
बंवरँ बोड़ शीर्श भुइँ लावा। बड़फल सुफर वही पै पावा॥
आँब जो फरके नवै तराहीं। तब अमृतभा सब उपराहीं॥
सोइ पियारी पियहिं पिरीती। रहै जो आयसु सेवा जीती॥

दो० पोथीकाढ़ गवन दिन देखै, कौने दिन है चाल।
दिशाशूल औचक्रयोगिनी, सौंहँन चलिये काल॥

अदितै शुक्रपश्चिमादिशराहू। बेफै दक्षिन लंकदिशै दाहू॥
सोमै शनीचर पुरुब न चालू। मंगर बुद्ध उतरदिश कालू॥
आवर्शै चला चहै जो कोई। औषधि कहूँ रोग नहिं होई॥
मङ्गल चलत मेल मुखधनियां। चलै सोम देखै दरपनियां॥
शूकहिं चलत मेल मुखराई। बेफै चलै दक्षिन गुड़ खाई॥
अदित तँबोल मेल मुखगुरडी। वायबरंग शनीचर खरडी॥
बुधदधि[15] किये चलहु भोजना। औषधि यहि न आनखोजना॥

दो० अवसुनि चक्र योगिनी, ते भुइँ थिर[16] न रहाहिं।
तीसोदिन[17] सचन्द्रमा, आठो दिशा फिराहिं॥

बारह उनइस चार सताइस। योगिनपच्छमदिशागिनाइस॥

पैदा १ पैरपकड़के २ राजाभोज ३ गरूर ४ हुक्म ५-६ बलन्द ६ क़द ७ शिर ८ सामने १० इतवार ११ उत्तर तरफ़ १२ सोमवार १३ ज़रूरत १४ दहीं १५ क़ायम १६ दिन १७॥

नौ सोरह चौबिस औ एका । पूरब दक्षिन कोन तेहि टेका ॥
तीनइ ग्यारह छबिस अठारा । योगिन दक्षिनदिशा विचारा ॥
दुइ पचीस सत्रह औ दसा । दक्षिन पश्चिमकोनविचबसा ॥
तेइस तीस आठ पन्द्रहां । योगिन होहि पूर्व सामहां ॥
चौदह बाइस उनइस सात । योगिन उतरदिशा कहँजात ॥
बीस अठाइस तेरह पांच । उत्तर पश्चिमकोन तहँबांच ॥

दो० इकइस औ छह योगिनि, उतर पुरब के कोन ।
यह गुनचक्रयोगिनी, बांच जो चहे सिधिहोन ॥

परिवा नवें पूर्ब परँ भाये । दूइज दसमी उतर अँदाये ॥
तीज एकादश अगनू मोरी । चौथ दुवादश नैऋत बोरी ॥
पंचमी तेरस दक्षिन रमेशोरी । छठचौदश पश्चिमपरमेशोरी ॥
सतमी पून्यो वायव आंछें । अठैं असावस इशान लोहें ॥
तिथि नक्षत्र गुरबार कहीजे । सुदिन साध प्रस्थान धरीजे ॥
सगुन दुघड़िया गिन साधना । भद्रा औ दिशाशूल बांचना ॥
चक्र योगिनी गिने जो जाने । परबर जीत लच्छ घर आने ॥

दो० सुखसमाध आनन्दघर, कीन्ह पयानों पीव ।
थरथरात तन काँपे, धरक धरक जाय जीव ॥

मेष सिंह धन पूरब बसी[११] । वृष कन्या मकर यम दिसी[१२] ॥
मिथुन तुला औकुम्भपछाँहीं[१३] । कर्कमीन बिरछिक उतराँहीं[१४] ॥
गवन करे कहँ उगेरै[१५] कोई । सनमुखसोम[१६] लाभँवहु होई ॥

परेवा और नवमी को पूरुब जाना मना १ दुइज दशमी उत्तर मना २ तिथि ३-११ आग्नेयमना ३ तिथि ४-१२ नैर्ऋत्यमना ४ तिथि ५-१३ दक्षिण बुरा ५ तिथि ६-१४ पश्चिममना ६ तिथि ७-१५ वायव्यमना ७ तिथि ८-३० ईशानमना ८ दिन अच्छा ९ कूच १० मेष सिंह धन पूरुब अच्छा ११ वृष कन्या मकर उत्तर अच्छा १२ मिथुन तुला कुम्भ पश्चिम अच्छा १३ कर्क मीन वृश्चिक उत्तर अच्छा १४ निकलना १५ चांद १६ फ़ायदा १७ ॥

दहिन चन्द्रमा सुख सरबदा। बायें चन्द्रायत दुख आपदा॥
अदिते होय उत्तर कहँ कालू। सोमकाल बायब नहिं चालू॥
भूमि कालपच्छमबुधनैऋता। गुरु दक्षिनशुक्रअगनेयता॥
पूरब काल शनीचर बसे। पीठ दे काल चले सब हँसे॥

दो० धन नक्षत्र औ चन्द्रमा, औ ताराबल सोय।
समय एक दिन गवनें, लक्ष्मी केतक होय॥

पहिले चाँद पूर्व दिश तारा। दूजे बसे इशान बिचारा॥
तीजे उत्तर सो चौथे बायब। पँचैसोपश्चिमदिशागिनायब॥
छठयें नैऋत दक्षिन सतें। बसे जाय अग्नेय सो अठें॥
नवें चन्द्र जो पृथ्वी बासा। दशयें चन्द्र जो रहै अकासा॥
ग्यारें चन्द्र पूर्व फिर जाय। वहुकलेश में दिवसभँवाये॥
अशुन[6] भरन[7] रेवती[8] भली। मृगशिर[9] मूल[10] पुनरबसु[11] बली॥
पुष्य[12] जेठा[13] हस्त[14] अनुराधा[15]। जो सुख चाहै पूजे साधा॥

दो० तिथनक्षत्रऔ बारइक, अष्टसातखंड[16] भाग।
आदिअन्त[17] बुधसो यह, दुखसुखअंकमलाग॥

परेवाछठ एकादश नन्दा[18]। दुइजसत्तमी द्वादश मन्दा[19]॥
तीज अष्टमी तेरस जया[20]। चौथचतुरदश नौमीरिक्या[21]॥
पूरन पूनों दशमी पांचे[22]। शुक्रे नन्दे[23] बुध भा नाचें॥
आदितसोहस्तनखतसिधि[24]लेहिये। वीफेपुष्य[25]श्रवणशशिकहिये॥
भरणि रेवती[26] बुध अनुराधा। भई अमावस रोहिणि[27] साधा॥

इतवार १ मंगल २ वीफे ३ नवमीको चांदका वास ज़मीन पर ४ दिन वीते ५ नाम नक्षत्र ६-७-८-९-१०-११-१२-१३-१४-१५ सातों मुल्क १६ अव्वलसे आखिर तक खुशी १७ परेवा छठ एकादशी सफ़र करना अच्छा १८ दुइज सप्तमी द्वादशी बुराहै १९ तीज अष्टमी तेरस जीत २० चौथ चतुर्दशी नवमी में देरी २१ पूर्णमासी दशमी पंचमी अच्छा २२ खुशी २३ इतवार को हस्तनक्षत्र अच्छा २४ नामनक्षत्र २५-२६-२७॥

राहु चन्द्र भूमि[1] संपति आये[2] । चन्द्रग्रहण तब लाग सजाये ॥
सुनि रत्नागज आज्ञा लीजे । सिद्धि योग गुरपरवा कीजे ॥
दो० जेहि नक्षत्रहोय रवि[3], वही अमावस होय ।
बीच परेवा जब मिलै, सूर्य्यग्रहण तब होय ॥
चलहुचलहु भा पियेकरचालू । घड़ी न देखलेत जिवकालू[5] ॥
समुदलोक धनं[6] चढ़ी वेवाना । जोदिनडरे सो आयतुलानाँ ॥
रोवहिं मात पिता औ भाई । कोउ न टेकै जो कंत चलाई ॥
रोवहिं सब नैहर सिंहला । लै वजाय के राजा चला ॥
तजा राज रावनका गयो । छांड़ा लंक विभीषण लियो ॥
फिरी सखी भेंट तज फेरा । अन्त कन्त सो भयो गुरेरा ॥
कोइ काहू का नाहिं नियानाँ । मया मोह बांधा उरझाना ॥
दो० कञ्चनकायाँ नारिकी, रही न तोला मांस ।
कन्त कसौटी घालके, चूरा गढ़ै कि हांस ॥
जो पहुँचाय फिरा सब कोऊ । चलासाथगुनअवगुन[15] दोऊ ॥
औ सँगचला गवन सबसाजा । वही दई अस[16] पारराजा ॥
डोली सहस चलीसँग चेरी[17] । सबै पद्मिनी सिंहल केरी ॥
भल पटोरे[18] खरे वार सँवारी । लाख चारइक भरी पेटारी ॥
रतनपदारथ माणिक मोती । काढ़ भँडार दीन्ह रथजोती ॥
परख सो रतन पारखेंहिं कहा । इकइकनग सृष्टि[22] लहा ॥
सहस पांति तुरयनें[23] की चली । औसौपांति हस्ति[24] सिंहली ॥

ज़मीन १ श्वासका विचार २ सूर्य ३ रत्नसेन ४ मौत ५ पद्मावत ६ पहुँचा ७ रोकना ८ छोड़ना ९ मुलाकात १० आखिर ११ सोने की तरह बदन १२ पद्मावत १३ नाम ज़ेवर १४ पाप और पुण्य १५ ईश्वर पार लगावै १६ हज़ार डोली लौंडी १७ कपड़ा १८ छात १९ हीरा जवाहिर २० जौहरी २१ सारी दुनियाकी क़ीमत २२ हज़ार क़तार घोड़ा २३ हाथी २४॥

दो॰ लिखनी लाग जो लेखा, कहे न पारहिं जोर।
अर्ब खर्ब औ नीलशंख, साहस पदम करोर॥

देख दर्ब राजा गर्बानी। दृष्टि मांह कोइ और न आना॥
जो मैं होब समुद्र के पारा। को है मोहिं जगतै संसारा॥
दर्ब गर्ब लोभ बिष मूरी। दत्त न रहे सत्यै हो दूरी॥
दत्त सत्य पै दोनों भाई। दत्त न रहै सत्य पुनि जाई॥
जहां लोभ तहँ पाप सँघाती। संचै भरै आनकी थाती॥
सिद्धँ दर्ब आगके थापा। कोइ जरा जार कोइ तापा॥
काहू चांद काहुभा राहू। काहू अमृत बिष भा काहू॥

दो॰ तस भूला मन राजा, लोभ पाप अँधकूप।
आय समुद्र ठाढ़भा, है दानी के रूप॥

वोहितं भरी चला लै रानी। दान मांग सतदेखी दांनी॥
लोभ न कीजे दीजे दानू। दानहि पुण्यहोय कल्यानू॥
दर्व दान देई विधि[12] कहा। दान मोक्ष[13] है दुख नहिं रहा॥
दान आहि सब द्रव्यकि जूरू। दान लाभ है बाचै मूरू॥
दान करै रक्षा मँझ नीरां। दान गहे लै लावै तीरा॥
दान करनँ दै दुइ जगतरा। रावन सँचौ अगिनिमहँजरा॥
दानमेरु बड़ लाग अकारां। सैंत कुबेर बूड़ मँझधारा॥

दो॰ चालिस अंश द्रव्य जहँ, एक अंश तहँ मोर।
नाहित जरै कि बूडै, की निशं मूसहिं चोर॥

सुनि सुदान राजैं रिसमानी। कै बोरायस बौरे दानी॥

गरूर किया १ निगाह २ बराबर ३ देना ४ सचाई ५ जोड़ना ६ साधू ७ अन्धाकुवां ८ नाव ९ दान देनेवाला १० भलाई ११ ईश्वर १२ नजात १३ न्योछावर १४ असिल जमा १५ पानी में बचावै १६ नाम राजा १७ जोड़ना १८ नाम पहाड़ १९ आसमान २० जमा करना २१ रात २२॥

सोई पुरुष द्रव्य जो सैंतें। द्रव्यहुतें सुनि वातें ऐतें॥
द्रव्य ते गर्ब करै जो चाहा। द्रव्यते धर्ती स्वर्ग निवाहा॥
द्रव्य ते हाथ आव कैलासू। द्रव्यते अप्सर छांड़ न पासू॥
द्रव्यते निरगुन हो गुनवन्ता। द्रव्य ते कुब्जरूपं रुपवन्ता॥
द्रव्य रहै भुइँ दिपै लिलारा। अस मन द्रव्य हिये को पारा॥
द्रव्य ते धर्म कर्म औ राजा। द्रव्यते सुद्धिबुद्धि वलकाजा॥

दो० कहा समुद्र रे लोभी, वड़ी द्रव्य नहिं झांप।
भयो न काहू आपन, मूँद पिटारी सांप॥

आधे समुद्र आय सो नाहीं। उठी वायु आंधी उपराहीं॥
लहरैं उठीं समुद्र उलथानों। भूला पंथ स्वर्ग नियराना॥
अदिनं आय जो पहुँचे काहू। पहनँ उड़ाय वहैं सो वाऊ॥
बोहितं भई लंकदिशिं ताकी। मारगं छांड़ कुमारग हांकी॥
जो लै भार निवाहन पारा। सो का गर्ब करे कन्धारा॥
द्रव्य भार सँग काहि न ऊठा। जें सैंतों ताही सों रूठा॥
गहि पखानें लै पंख न ऊड़ा। मोर मोरजें कीन्ह सो बूड़ा॥

दो० द्रव्य जो जानहि अपना, भूलहिं गर्ब में नाहिं।
जेरि उठाय न लैसकहिं, बूड़ चलहिं जलमाहिं॥

केवट एक बिभीषण केरा। आव मच्छकर करत अहेरा॥
लंकाकर अति राक्षस कारा। आवे चला होय अँधियारा॥
पांच मूड़ दश बाहीं ताही। धड़भाश्यामं लंक जबदाही॥
धुवां उठै मुख श्वाससँघाता। निकसै आग कहै जो वाता॥

गरूर १ बदसूरत २ माथा ३ उलटना ४ राह ५ बुरेदिन ६ पत्थर ७-१५ नाव ८ लंका की तरफ़ ९ राह १० जबतक होसका ११ गरूर१२ मल्लाह१३ ओढ़ना १४ मल्लाह १६ शिकार १७ काला १८ जलना१९ श्वासके साथ२०॥

फेकरे मूंड़ चँवर जनु लाये। निकस दांत मुख बाहेर आये॥
देह रीछकी रीछ डेराई। देखत दृष्टि धाय जनु खाई॥
रातेनयनं निडर जो आवा। देख भयावन सब डरखावा॥
दो० धर्ती पायँ स्वर्ग शिर, जानु सहसावाहु।
चांद सूर्य्य औ नखतमहँ, अस देखैजनुराहु॥
बोहितं वही न मानहि खेवा। राक्षस देखि हँसा जनु देवा॥
बहुते दिनहिबारै भइ दूजी। अजगरकेर आय भुखपूजी॥
यहि पद्मिनी विभीषण पावा। जानहु आज अयोध्याछावा॥
जानहु रावन पाई सीता। लंका वसी राम रन जीता॥
मच्छ देख जैसें बकँ आवा। टोयटोय भुइं पांव उठावा॥
आय नेर होय कीन्ह जोहारू। पूँछा क्षेम कुशल व्योहारू॥
जो विश्वासघातं का देवा। वड़ विश्वासं करैकी सेवा॥
दो० कहां मीत तुम भूलेहू, औ जायहु केहि घाट।
हों तुम्हार अस सेवक, लाय देउँ तुहिं बाट॥
गाढ़ें परे जिव बावरहोई। जो भल बात कहै भल सोई॥
राजैं राक्षस नेर बोलावा। आगे कीन्ह पन्थैं जनु पावा॥
बहुवसौंबें राक्षसकहँ बोला। ऐगटेकें भूमि सब डोला॥
तू खेवकँ खेवक उपराहीं। बोहितं तीरलाव गहिबाहीं॥
तुहितें तीर घाट जो पाऊँ। नौगिरही तोड़र पहिराऊँ॥
कुण्डल श्रवणं देउँ नग लाई। महराकी सौंपों महराई॥
तस राक्षस तोर पूरों आसा। राक्षसाइन की रहै न बासा॥

निगाह १ लाल आंख २ नाम राजा जिसके हज़ार हाथ थे ३ नाव ४ खुशहुआ ५ पेट भरा ६ बगुला ७ खैरियत ८ दगाबाज़ ९ यक़ीन १० राह ११—१३ दुख १२ खुशी १४ खड़ाहुआ १५ ज़मीन १६ मल्लाह १७ नाव १८ नाम ज़ेवर १९ कान २० ॥

दो॰ राजैं बीड़ा दीन्हों, नहिं जानों बिस्वास।
इक अपनी भुखकारनें, होय मच्छकर दास॥

राक्षस कहा गुसांइ बिनाती। भल सेवक राक्षसकी जाती॥
छीना लंकदही श्रीरामा। सेवन छांड़ देह भइ श्यामा॥
अबहूँ सेवकरे सँग लागे। मानुप भूल होहिं नहिं आगे॥
सेतबन्धराघव जहँ बांधा। तेहिते चढ़ो भारे ले कांधा॥
पै अब तुरत दान कुछ पाऊँ। तुरतगही वहँ बांध चढ़ाऊँ॥
तुरत जोदान पान हँस दीजे। थोरा दान बहुत पुनि कीजे॥
सेवक राय जो दीजे दानू। दान नाहिं सेवाँ वर मानू॥

दो॰ दै बाचा सत ना रहा, हत निरमल जेहिरूप।
आंधीबहुत उड़ायके, मारगयो अन्धकूप॥

जहां समुद्र मँझधार भँडारू। फिरै पानि पाताल दुआरू॥
फिरफिर पानि वही ठांवमरै। फेर न निकसै जो तहँ परै॥
वही ठांव महिरावन पुरी। हलकातर यमकातरं चुरी॥
वही ठांव महिरावन मारा। परे हाड़ जनु पड़े पहारा॥
परी रीड़ जेहिं ताकर पीठी। सेतबन्धं अस आवै दीठी॥
राक्षस आन तहां के जुड़े। बोहित भँवर चक्र महँ पड़े॥
फिरेलाग बोहित जस आई। जस कुम्हारघर चाकफिराई॥

दो॰ राजैं कहा रे राक्षस, जान बूझ बौरास।
सेतबन्ध यह देखै, कसनतहां लैजास॥

सुनिबावर राक्षस तब हँसा। जानहु स्वँग टूटिभुइँगसा॥

पतवार १ भूखवास्ते २ जलाना ३ काला ४ वोझ लै जासक्ता ५ ख़िद्मत ६ ख़िदमत का हुक्म ७ क़ौल ८ बीचोबीच ९ यमफांस १० पुल ११ नाव १२ आसमान १३॥

को बावर तुम बौरहि देखा। जो बावर सुख लाग सरेखा॥
बावर तुम जो भूखे कहँआनी। तोहिन सम भी पंथभुलानी॥
पंख जो बावर रहि धर माटी। जीभ चढ़ाय भखै सब चाँटी॥
महिरावन की रीर जो परी। कहो सो सेतुबन्ध बुधि हरी॥
यहि सो आहि महिरावनपुरी। जहँवां स्वर्ग नेर घर दुरी॥
अब पछताव द्रव्य जस जोरा। करहु स्वर्ग पर हाथ मरोरा॥

दो० जोहि जियत महिरावन, लेत जगतकर भार।
जो मरहाड़ न लैगा, अस होय परा पहार॥

बोहितैं भवहिं भवै सब पानी। नाचैं राक्षस आशतुलानी॥
बूड़हिं हस्तिं घोर मानवाँ। चहुँदिश आयजुरे मँसखवा॥
ततखनै राजपंखं एकआवा। शिखर टूटजसडहनेडुलावा॥
परादृष्टि वह राक्षस खोटा। ताकेसिजैसुहस्तिं बड़मोटा॥
आय वही राक्षस पर टूटा। गैहिलेउड़ा भँवरजल छूटा॥
बोहितैं टूक टूक सब भई। ऐसो न जाना वह कहँगई॥
भये राजा रानी दुइ पाटा। दोनों बहे चले दुइ बाटा॥

दो० कायाँ जीव मिलायके, मारकियो दुइ खण्ड।
तन रोवत धरतीचला, जीव चला ब्रह्मण्ड॥

मुरछ परी पद्मावत रानी। कहँजिव कहँपिव ऐस न जानी॥
जानु चित्र मूरति गहि लाई। पाटा परी बही तस जाई॥
जन्मन पवन सही सुकवारा। तेहिसोपरादुखसमुद्र अपारा॥
लक्ष्मी माय समुद्र की बेटी। ताकहँ लच्छै होय जें भेटी॥

भूख के पास आये १ राह २ चींटी ३ नाव ४ उम्मेद पूरी हुई ५ हाथी ६—१३ आदमी ७ तुरंत ८ सीमुर्ग ९ पहाड़ १० बाजू ११ निगाह १२ पकड़ना १४ नाव १५ राह १६ बदन १७ आसमान १८ तसवीर १९ दौलत २० ॥

खेलत रही सहेली सेती। पाटाजाय लाग तेहि रेती॥
कहेसि सहेली देखो पाटा। मूरतिआय लागि वहि घाटा॥
जो देखहिं त्रिया है श्वासा। फूलमुवां पै मुई न वासा॥

दो० रंग जो रांती प्रेमकी, जानहु वीरवहूट।
आयबही दधि समुद्रमें, पै रंग गयो न छूट॥

लक्ष्मी लक्षण बतीसों लखी। कहेसि न मरी सँभारहु सखी॥
कागद पतिरी जैसो शरीरा। पवन उड़ाय परी मँझनीरा॥
लहरझकोर उड़हिं जलभीजा। तौह रूप रंग नहिं छीजा॥
आप शीश लै वैठी कोरा। पवनडुलावे सखि चहुँओरा॥
यारकी समुझ परा तन जीउ। मांगेसि पानि बोल कै पीउ॥
पानि पियाय सखी मुखधोई। पद्मिनजान कमलसँग कोई॥
तब लक्ष्मी दुख पूँछ मिलोही। त्रिया समुझ बात कहु मोही॥

दो० देख रूप तोर आगर, लाग रहा चितमोर।
केहिनगरीकी नागर, काहि नाउँ धनतोर॥

नयन पसार चेत धर्न चेती। देखी काह समुद्रकी रेती॥
आपन कोउ न देखेसि तहां। पूँछेसि को तुम को हम कहां॥
अहै जो सखी कमलसँगकोई[10]। सानाहीं मोहिंकहाविछोई[11]॥
कहांजगत मन पिया पियारा। जससुमेरु[12] विधि[13] गरूसँवारा॥
ताकर गरबी प्रीति अपारा। चढ़ेहिये[14] जनु चढ़े पहारा॥
रहै न गरबी प्रीतिसो झांपी। कैसे जियों भार दुख चांपी॥
कमलकरी की जोरी नाँहा[15]। दीन्हबहायउदधि[16] जलमाँहा॥

मुरझाना १ लाल २ सब गुन जाननेवाली ३ पानी में ४ नुक़सान ५ शिर ६ गोद ७ कोकावेली ८-१० पद्मावत ९ अलग ११ पहाड़ १२ ईश्वर १३ दिल १४ खाविन्द १५ समुद्र १६॥

दो० आवा पवन बिछोहका, पातिपरा बिकरार।
तरवरे तजी जो चूरकै, लागै केहिकी डार॥

कहनि न जानहिं हमतोर पीउ। हम तू पाइरहा नहिं जीउ॥
पाटा परी आय तू बही। ऐसो न जानहिंद्यौंकहँश्रही॥
तब सुधि पद्मावत मन भई। सँवरि बिछोहै मुरछमर गई॥
नयनहिं रक्त सुराही ढारा। जनहु रक्त शिरकाट पयारा॥
खनँहिं चेत खनहो बिकरारा। भा चन्दनबन्दन सबछारा॥
बावर होय सो परीपुनि पाटा। देहु बहाय कन्त जेहिघाटा॥
को मोहिं आग देय रच होरी। जियत न बिछुड़ै सारसजोरी॥

दो० जेहिसर मार बिछोगा, देहु वही शिर आग।
लोग कहैं यहि सरँ चढ़ी, हों सो जरों पियलाग॥

कायाँ उदधि चितों पिय पाहां। देखोंरतन सो हिरदयँ माहां॥
जनहु आहिं दरपन मम हिया। तेहि महँ बैठि देखावे पिया॥
नयननीरँ भीजत मुठ दूरी। अब तेहि लाग मरोंसुठ भूरी॥
पिय हिरदयमहँ भेंटँ न होई। कोरे मिलाव कहों केहि रोई॥
श्वास पास नित आवे जाई। सो न सँदेश कहै मोहिं आई॥
नयन कौड़िया भइ मँडराहीं। थिरक सार पै आवहि नाहीं॥
मन भँवरा वह कमल बसेरी। है मरजिया न आये हेरी॥

दो० साथी आथँ नियाथ जो, सके न साथ निबाहि।
जो जिय जारे पिय मिले, भेंटरे जिय जर जाहि॥

सती होय कहँ शीशँ उघारी। घन महँ बीजँ घाव जिमिमारी॥

१ अलग १–३ पेड़ २ जानवर ज़िबहकर छोड़ दिया ४ कसी ५ राख ६ चिता ७ चद्दन ८ समुद्र ९ दिल १० आँशू ११ मुलाक़ात १२ जो माल के साथी थे १३ शिर १४ बादल १५ बिजुली १६॥

सेंदुर जरै आग जनु लाई। शिरकी आग सँभार न जाई॥
छूट मांग सब मोति पराई। वारहिंवार गिरहिं जनु रोई॥
टूटहिं मोति बिछोह के भरे। श्रावण बूंद गिरहिं जनु झरे॥
फेर फेर कर यौबन[2] करा। जानहु कनक[3] अग्निमहँजरा॥
अगिन मांग पै देइ न कोई। पाहुनें[4] पवनै[5]पान सम होई॥
खीनलंक[6] टूटी दुख भरी। बिनरावन[7] केहिवर[8] होयखरी॥
दो० रोवत पंख बिमोही[9], जनु कोकिला अरम्भ।
जाकर कनक[10] लुटासो, बिछुड़ी प्रीतम खम्भ॥
लक्ष्मी लाग बुझावे जीव। नामर वहिन मिलाहि तोरपीव॥
पियो पानि होव पवन अधारी। जस हौं तुह समुद्र की वारी[12]॥
मैं तोहिं लाग लेत पटवादू। खोजव पितै[13] जहांलगघाटू॥
हौं जेहि मिलौं ताहिं बड़भागू। राज पाट औ देउँ सुहागू॥
कहि बुझाय के मँदिर सिधारी। भइ ज्योनार न जेवै नारी[14]॥
जेहिरे कन्तकर होय बिछोवौ। कातेहि नींद भूख सुखसोवा॥
जीव हमार पीव ले आहा। दरशन देव लेव चितचाहा॥
दो० लक्ष्मी जाय समुद्र पहँ, ये बातैं सब चाल।
कहा समुद्र अहे घटमोरे, आनमिलावोंकाल॥
राजा जाय तहां बहि लागा। जहां न कोइ संदेशी कागा॥
तहां एक परबत[15] हा डूँगा। जहवां सब कपूर औ मूँगा॥
तहँ चढ़ हेरौं[17] कोइ न साथा। द्रव्यसमेटकुछ लाग न हाथा॥
रहा जो रावण केर बसेरा[18]। गोहराये कोइ मिले न हेरा॥

विरह १ जवानी २ सोना ३ महिमान ४ हवा पानी देते हैं ५ पतली कमर ६ तथा राजा रतनसेन ७ ताक़त ८ मोहजाना ९ बेक़रार १० सोना ११ लड़की १२ बाप १३ पद्मावत १४ जुदाई १५ ऊँचा पहाड़ १६ देखना १७ मकान १८॥

डाढ़ मारके राजा रोवा। कैं चितौरगढ़ राज बिछोवा॥
कहां मोर सब द्रव्य भँडारू। कहां मोर सब कटक कँधारू॥
कहां तुरंग मोर बांकावली। कहां मोर हस्ति सिंहली॥

दो० कहँ रानी पद्मावत, जीव बसे जेहि माहिं।
मोर मोर के खोयों, भूल गर्व ओगाहिं॥

चम्पा भँवरा गुरु जो मिलावा। मांगे राजा बेग न पावा॥
पद्मिनि चाह जहां सुन पाऊं। परों आग औ पानि धसाऊँ॥
ढूंढ़ों पर्वत मेरु पहारा। चढ़ों स्वर्ग औ परों पतारा॥
कहां सो गुरु पाऊँ उपदेशी। अगमपन्थ कर होय सँदेशी॥
पस्यों आय यह समुद्र अथाहा। जहां न वार न पार न थाहा॥
सीता हरण राम संग्रामा। हनुमत मिला जिता तब रामा॥
मोहिं न कोइ विनवों केहि रोई। को सहाय उपदेशिक होई॥

दो० भँवर जो पावे कमल कहँ, मन आरत बहु केल।
आय परा कोइ हस्ति तहँ, चूर किये सो बेल॥

कासों पुकारों कापहँ जाऊँ। गाढ़े मीत होय तेहि ठाँऊँ॥
को यह समुद्र मथे बल बाढ़ा। को मथ रतन पदारथ काढ़ा॥
कहां सो ब्रह्मा विष्णु महेशू। कहां सुमेरु कहां वह शेशू॥
को अस साज देइ मोहिं आनी। बासुकि दाम सुमेरु मथानी॥
को दधि समुद्र मथे जस मथा। करनी सार न कहिये कथा॥
जौलहिं मथ न कोइ दे जीव। सूधी अंगुरि न निकसै घीव॥
लै नग मोर समुद्र भा बटा। गाढ़ परै तौ लै परगटा॥

अलग १ फ़ौजभारी २ घोड़ा ३ हाथी ४ पकरगहिरा ५ जल्द ६ थीहड़ ७ आसमान ८ राह बतानेवाला ९ मुशिकलराह १० मिन्नत ११ दुख १२ हाथी १३ पियारादोस्त १४ जगह १५ महादेवजी १६ पहाड़ १७–२० नामराजासाँपोंका १८ रस्सी १९॥

दो० लीलरहा अब ढील है, पेटपदारथ मेल।
को उजियार करै जग, झांपा चन्द उघेल॥

ए गुसाँइ तू सिरजनै हारु। तुइशिरजायहि समुदअपारु॥
तुइअसगगनै अन्तरिक्षराखा। जहां न टेकँ न थूनि नखांभा॥
तुइ जल ऊपर धरती राखी। जगत भार लै भार न थाकी॥
चांद सूर्य्य औ नखतहिंपाती। तोरे डर धावहिं दिन राती॥
पानी पवन आग औ माटी। सबकी पीठ तोरहैं सांटी॥
सोइ मूरुख औ बावर अन्धा। तोहिंछांड़ चितऔरहिबन्धा॥
घट घट जगत तोरहै दीठी। हौं अन्धा जेहि सूझ न पीठी॥

दो० पवनं हिये भापानी, पानि हिये भइ आग।
आग हिये भइ माटी, गोरखधन्धे लाग॥

तुइँ जिवतन मिल बसदैआऊ। तुहींबिछोवैसै करेसि मिलाऊ॥
चौदहभुवनै सो तोरे हाथा। जहँलगिबिछुड़ीआवइकसाथा॥
सब कर मर्म भेदतोहिपाहां। रोम जमावसि टूटी जाहां॥
जानेसि सबै अवस्थां मोरी। जस बिछुड़ी सारसकी जोरी॥
एक मुई रुर मुई सो दूजी। रहा न जाय आयु अब पूजी॥
झूरत तपत दगँधं का मरों। कलपोंमाथ वेगँ मिसतैरों॥
मरों सो ले पद्मावत नाऊँ। तुइँ कर्त्तार करेसि इकठाऊँ॥

दो० दुख तो प्रीतम देखिये, सुख नहिं सोवे कोय।
यही ठांउँ तन डरपै, मिलन बिछोवौं होय॥

वेडर १ लाल जवाहिर २ ईश्वर ३ पैदा करनेवाला ४ आसमान ५ बीचोबीच में लटकाहुआ ६ सहारा ७ कोड़ा ८ निगाह ९ हवा १० दिल ११ जुदाई १२ सात परदा आसमान सात परदा ज़मीन १३ भेद १४ हाल १५ उमरतमाम १६ जलाना १७ शिरकटाना १८ जल्द १९ नजात २० ईश्वर २१ जगह २२ जुदाई २३॥

कहिके उठा समुद्र महँ आवा। काढ़ि कटार ग्रीवं लै लावा॥
कहा समुद्र पाप अब घटा। ब्राह्मण रूप आय परगटा॥
तिलक दुवादश मस्तक दीन्हे। हाथ कनकबैशाखी लीन्हे॥
मुद्राश्रवणें जनेऊ कांधे। कनकपत्र धोती तरिबांधे॥
पांवरि कनक जड़ाऊ पाऊँ। दीन्ह अशीशआय तेहिठाऊँ॥
कहो कुँवर मोसे सत बाता। काहे लागकरेसि अपघाता॥
परहेंसि मरेसि किकौनेलाजा। आपन जिव देइसकेहिकाजा॥

दो० जन कटार गर लावसि, समझ देख मन आप।
सकत जीव जो काढ़ेसि, महादोष औ पाप॥

को तुम उतर देइ हो पांड़े। सो बोलै जाकर जिवभांड़े॥
जम्बूद्वीप केर हों राजा। सोमैं कीन्ह जो करतनकाजा[10]॥
सिंहलद्वीप राज घर बारी। सो मैं जाय विवाही नारी॥
लख बोहित[13] दायज ते भरी। नग अमोलऔसबानिरभरी॥
रतन पदारथ माणिक मोती। हती न खांगीसम्पैतिओती॥
वहल घोड़ हस्ती सिंहली। औसँग कुँवर लाख दुइचली॥
तेहि गोहनै सिंहल पद्मिनी। इक सो एक चाह रुपमनी॥

दो० पद्मावत जग रूप मन, कहँलग कहूँ उहेल।
ते समुद्र महँ खोयों, हों का जियों अकेल॥

हँसा समुद्र होय उठा अजूरा। जगजोवूड़सबकहिकहिमोरा॥
तोर होय तोहि परै[19] न बेरा। बूझ विचार तुहीं कहु केरा॥
हाथ मरोर धुनै शिर मांखी। पै तोहिहिये[20] न उघरेआंखी॥

गरदन १ ज़ाहिर २ सोने की लाठी ३ कानमें बाली ४ सोनेकी पटरी ५ खड़ाऊं ६ खुदकुशी ७ निन्दासे हँसी ८ पाप ९ जवाब १० बदन में जान ११ खज़ाचार १२ नाव १३ साफ़ १४ दौलत १५ हाथी १६ साथ १७ रोशनी १८ तेरेपास रहती १९ दिल २० ॥

बहुतैं आय गये शिर मारा । हाथ न रहा झूंठ संसारा ॥
जोपै जगतैं होत थिर माया । सैंततैं सिद्धि न पावत राया ॥
सिद्धै द्रव्य न सैंता गाड़ा । देखा भार चूंव कै छाड़ा ॥
पानी की पानी महँ गई । तुइँ जो जिया कुशल सब भई ॥

दो० जाकर दीन्ह जीव औकायाँ, लेहि चाह जब चाव ।
धन लक्ष्मी सब ताकर, लिये तो का पछताव ॥

अनपांड़े पर कहि का हांनी । जो पाऊँ पद्मावत रानी ॥
तप के पावा मिलके फूला । पुनि तेहि खोइ सोई पंथ भूला ॥
पुरुषन आपन नारि सराहा । मुये गये सँवरा पै चाहा ॥
कहँ अस नारि जगत उपराहीं । कहँ अस जीव मिलन सुख छाहीं ॥
कहँ अस रहस भोग अब करना । ऐसे जिये चाहि भल मरना ॥
जहँ अस परी समुद्र नग दिया । तेहि किम जिया चहै मर जिया ॥
जस ये समुद्र दीन्ह दुख मोका । दैहत्या झगरों शिवलोका ॥

दो० का मैं यहि क नशावा, का मैं सँवरा दांव ।
जाय स्वर्ग पर होयहै, यहि कर मोर नियाव ॥

जो तु मुवा कित रोवस खरा । नासुर मरै न रोवै मरा ॥
जो मर भा औ छांड़ेसि काया । बहुर न करै मरन की दाया ॥
जो मर भयो न बूड़ै नीरा । बहत जाय लागे पै तीरा ॥
तुहों एक मैं बावर भेंटा । जैस राम दशरथ कर बेटा ॥
वहूँ नारि कर पड़ा बिछोवा । वही समुद्र महँ फिरि फिरि रोवा ॥

दुनियाँ १ क़ायम २ दौलत ३ फ़क़ीर जमा न करता ४ राजा ५ खैरियत ६ बदन ७-१८ पेशाहाथ ८ नुक़सान ९ मेहनतसे १० राह ११ तारीफ़ १२ मरन पीछे १३ जवाहिरचिरागकी तरह रोशन १४ ईश्वर के सामने १५ आसमान १६ हिलना १७ फिर १९ पानी २० किनारा २१ मुलाक़ात २२ जुदाई २३ ॥

पुनि जो राम खोई भा मरा । तब एकान्त भयो मिल तरा ॥
तस मर होहु मूँद अब आंखी । खावों तीरं टेकैबैशाखी ॥
दो० बावर अन्ध प्रेमका लुब्धा, सुनत वही भा बाट ।
निमिष एक महँ लेगा, पद्मावत जेहि घाट ॥
पद्मावत कहँ दुख तस बीता । जसअशोकबिरवातरिसीता ॥
कनक[6]लता दुइ नारंग भरी । तेहिकभार उठसकै नहिंखरी ॥
तेहिपरअलकभुअंगिनि[7] डसा । शिरपर चढ़े हिये[8] परगसा ॥
रहि मरनाल टेक दुख दाधी । आधीकमलभईशशिआधी ॥
नलिन[11] खण्डदुइतसकरहाऊँ । रोमावली[12] बिछूक कहाऊँ ॥
रही टूट जिमि कंचन[13] तागू । को पिय मिलवै देइ सुहागू ॥
पान न खावै करै उपासू । फूल सूख तन रही न बासू ॥
दो० गगनधर्ति[14] जल बुड़गये, बूड़त होय निसास ।
पिय पियचातृक ज्योंररी, मरै सेवात पियास ॥
लक्ष्मी चंचल नारि परेवा । जेहि सत होय छरै कै सेवा ॥
रतनसेन आवै जेहि घाटा । अगमन जायबैठतेहिघाटा ॥
और भई पद्मावत रूपा । कीन्हेसि छांह जरै जेहि धूपा ॥
लखसोकमल भँवरहोय धावा । श्वास लीन्ह वहबासनपावा ॥
निरखत आय लक्ष्मी दीठी[20] । रतनसेन तब दीन्हीं पीठी ॥
जाभल होत लक्ष्मी नारी । तजमहेश कितहोतभिखारी ॥
पुनि धन फिर आगे है रोई । पुरुषपीठकसदीन्हनिछोई[23] ॥

बहुत कोशिश किया १ किनारा २ लाठी पकड़ ३ मस्त ४ पल ५ सोने की डाली तथा छाती ६ यालनागिन की तरह ७ छाती ८ कमर पकड़के ९ चाँद १० कमल ११ छाती के बाल १२ सोना १३ आसमान ज़मीन १४ पपीहा १५ सच्चे को छजती १६ राह १७ पहिले १८ देखना १९ देखा २० महादेवजी २१ पद्मावत रूप लक्ष्मी २२ बेदर्द २३ ॥

दो० हौं रानी पद्मावत, रतनसेन तुइँ पीउ।
आय समुद्रमहँ छांड़े, अबरोयदेत मैं जीउ॥
मैं हों सोई भँवर औ भोजू। लेत फिरों मालतिकर खोजू॥
मालति नारि भँवर अस पीउ। कहँ वह बासरहै थिर जीउ॥
कातुइँ नारि करेसि अस रोई। फूल सोई पै बास न होई॥
भँवर जो सब फूलनकर फेरा। बासन लेइ मालतिहि हेरा॥
जहां पाव मालति कर बासू। वँर्ती जिव दै होवै दासू॥
कित वह बास पवन पहुँचावे। नवतन होय पेट जिव आवे॥
हों वह बास जीव बल देऊँ। और फूलकी बास न लेऊँ॥
दो० भँवर मालतिहि पै चहै, काँटन आवे दीठ।
सौंहैं भाल खाये हिये, पै फेरे नहिं पीठ॥
तब हँस कह राजा वह ठाऊँ। जहां सो मालति चल लै जाऊँ॥
लै सो आय पद्मावत पासा। पानि पियाई मरत पियासा॥
पानी पिया कमल जस तपा। निकसासूर्य्यसमुद्रमहँ छिपा॥
मैं पावा पिय समुद्र के घाटा। राजकुँवर मनदिपे ललाटा॥
दर्शन दिपै जस हीरा ज्योती। नयन कचूरं भरेजनु मोती॥
भुजौं लङ्क उर केहरि जिता। मूरति कान्ह देखि गोपिता॥
जस नल तपते दमनँहिं पूंछा। तस बिन प्राणपिंड है छूंछा॥
दो० जस तुइँ पदकँ पदारथ, तैसरतन तुहिं योग।
मिला भँवर मालतिकहँ, करहुदोउदिशि भोग॥
पदक पदारथ खीन जो होती। सुनतहिरतनचढ़ीमुखज्योती॥

राजाभोज १ पता २ क़ायम ३ देखना ४ न्योछावर ५ नयाबदन ६ निगाह ७ सामने काँटा-८ छाती ९ शिर १० दाँत ११ कटोरी १२ बाहु कमर छाती चीताकीसी १३ रानी दमन १४ बदन १५ खाली १६ लाल जवाहिर १७॥

जानहु सूर्य्य कीन्ह परकाशू। दिनबहुराभाकमल बिकाशू॥
कमलजोबिहँससूर्य्यमुखदरसा। सूर्य्य कमल दृष्टि सो परसा॥
लोचन कमल श्रीमुखसूरू। भयो अत्यंत दुहूँ रस रूरू॥
मालति देख भँवर गा भूली। भँवर देख मालति बनफूली॥
देखा दरश भये इक पासा। वह वहकी वह वहकी आसा॥
कंचनदाह दीन्ह जनु जीव। उगा सूर्य्य छूटगा सीव॥

दो० पांयपरी धन पीयके, नयनन सों रज मेट।
अचरजभयोसबनकहँ,भईशशिकमलहिभेंट॥

जन काहूकहँ होय बिछोऊ। जस वेमिले मिलैसबकोऊ॥
पद्मावत जो पावा पीऊ। जनु मरजियेपरातन जीऊ॥
कै न्योछावर तन मन वारे। पांयन परी घाल कै नारे॥
नवअवतारदीन्हबिधि आजू। रही छार मानुष भइ साजू॥
राजा रोय घालगरेपागा। पद्मावत के पांयन लागा॥
तनजियमहँबिधि दीन्हबिछोऊ।असनगरीतबचीन्हनकोऊ॥
सोई मार छार के मेटा। सोइ जियाय करावे भेंटा॥

दो० मुहमद मीतजोमनबसै, तेही मिला बिधिआन।
संपति बिपति पुरुषकहँ, काहलाभ का हान॥

लक्ष्मी सों पद्मावत कहा। तुम प्रसाद पायों जो चहा॥
जो सब खोय जाहिं हम दोऊ। जो देखै भल कहै न कोऊ॥
जे सब कुँवर आय हम साथी। औजितहस्ति घोरआवाथी॥
जो पावे सुख जीवन भोगू। नाहित मरनभरन दुखरोगू॥

रोशनी १ खिलना २ निगाह ३ आंख ४ सूर्य्य ५ दोनों खुशहुये ६ तथा पद्मावत ७ तथा राजा ८ सोना औटाहुआ ९ जाड़ा १० चांद ११ जुदाई १२ गरदन १३ नई पैदायश १४ ईश्वर १५-१८ राख १६ गलेमें पगड़ी १७ धूर १९ फ़ायदा २० नुक़सान २१ हाथी २२॥

तब लक्ष्मी गइ पिता के ठाऊँ। जो यहिकर सवबूड़सो पाऊँ॥
तब सो जरी अमृत लै आवा। जोमरहतैसोछिड़कजियावा॥
एक एक कै दीन्ह सो आनी। भा सतोषै मन राजा रानी॥
दो० आय मिले सब साथी, हिलमिलकरहिंअनन्द।
भई प्राप्त सुख संपति, गयो छूट दुख धन्ध॥
और दीन्ह बहुरतन पषाना। सोनरूपजोमनहिं न आना॥
जे बहु मोल पदारथ नाऊँ। कातेहि वरनँ कहूं तुमठाऊँ॥
तेहिकर भाव रूप को कहा। इकइक नग सृष्टि वरलहा॥
हीर फार बहु मोल जो अही। ते सव नग चुनचुनके गंही॥
जो इक रतन भुनावै कोय। करै सोई जो मनमहँ होय॥
द्रव्य गर्ब मन गयो भुलाई। हंमसमलच्छमनहिंनहिंआई॥
लघुदीरघ जो द्रव्य बखाना। जोजेहिचही सोई तेहिमाना॥
दो० बड़ औ छोट दोउसम, स्वामिकारजी सोय।
जोचाही जेहि काजकहँ, वही काज सो होय॥

खण्ड उनतीसवां समुद्र और लक्ष्मीखण्ड॥

दिन दश रही जाय पहुनाई। पुनि भइविदा समुद्रसोजाई॥
लक्ष्मी पद्मावत सो भेंटी। जो सो कहा अपनी सोवेटी॥
समुद्र न दीन्ह पानकर वीरा। भरके रतनै पदारथ हीरा॥
और पांच नग दीन्ह विशेखी। श्रवणै सुनी नयननहिंदेखी॥
एक सो अमृत दूसर हंसू। औ तीसर पंखी कर वंसू॥
चौथ दीन्ह शावकसादूरू। पांचों परस जो कंचनमूरू॥

बाप १ सजीवनमूर २ जो मरगये थे ३ सम्र ४ पत्थर ५ जवाहिर ६ रंग ७ दुनियां का मोल ८ लेना ९ गरूर १० हमारे बराबर कोई नहीं ११ छोटे बड़े १२ जवाहिर १३ कान १४ शेरका बच्चा १५ सोना १६॥

तुरत तुरङ्गम दोउ चढ़ाई। जलमानुषअंगवासँगलाई॥

दो० भेंटे समुंदिन तब कियो, फिरे नाय कै माथ।
जलमानुष तबहींफिरे, जबसो आयजगनाथ॥

जगन्नाथ दरशन कहँ आये। भोजन रींधा भात पकाये॥
राजैं पद्मावत सों कहा। साँठ नाँठ कछुगाँठ न रहा॥
साँठे होय जासों सो बोला। नष्ट जोपुरुष पातज्योंडोला॥
सांठें रङ्क चले मौराई। नष्ट रावें सब कहँ बौराई॥
सांठें आव गर्व तन फूला। नष्टहि बोल बुद्धिबलभूला॥
सांठें[13] जागनींद निशि[14] जाई। नष्टै[15] कहे होय औंघाई॥
सांठें दृष्टि[16] ज्योति हो नयना। नष्टहिये[17] सुखआव न बैनों॥

दो० सांठें रहै सिधै न तन, नष्टहि[20] आगरे[21] भूख।
बिनगांठे[22] वृक्ष निपत्र[23]ज्यों, ठाढ़ठाढ़ पै सूख॥

पद्मावत बोली सुनु राजा। जीवगयेधन कौने काजा॥
रहा द्रव्य तब कीन्ह न गांठी। पुनिकितमिलेलच्छे[24]जोनांठी॥
मुक्कीसांठे[25] गांठ जो करे। सांकरे[26] परे सोई उपकरे॥
जेहि तन पंख जाय जहँताका। पैग[27] पहार होय जो थाका॥
लक्ष्मी रही दीन्ह मोहिं बीरा। भरके रतन पदारथ हीरा॥
काढ़ एक नग बेगें[28] भुजाऊ। बहुरे लच्छि[29] फेर दिन पाऊ॥
द्रव्य भरोस करै जन कोई। सांठ सोई जो गांठी होई॥

दो० जोरकटकै[31] पुनि राजा, घरकहँ कीन्ह पयानं[32]।

घोड़ा १ मुलाक़ात २ लक्ष्मी ३ दौलत गई ४ दौलत ५ वेदौलत ६-१२ मर्द ७ कमीनामालदार ८ अकड़के ९ राजा १० गरूर ११ मालदार १३ रात १४ ग़रीब १५-२० निगाह १६ दिल १७ आवाज़ १८ दिलजमई १९ वहुत २१ बेरुपया २२ बेपत्ता २३ दौलत जातीरही २४ दौलत होनेके समय २५ तंगी २६ काम आवे २७ क़दम २८ जल्द २९ दौलत ३० फ़ौज ३१ कूच ३२॥

दिवसहिं[1] भानु[2] अलोपभा, वासुकि[3]इन्द्रसकान ॥

चितोर आय नेर भा राजा । फिरा जियत इन्द्रासनगाजा ॥
बाजन बाजे होय अडोरा । आवहिंवहलहस्ति[4]औ घोरा ॥
पद्मावत चंडोल जो बैठी । पुनिगईउलटस्वर्ग[5]सों दीठी[6] ॥
यहि मन ऐंठा रहै न सूधा । विपतिनसँवरे सम्पतिलुब्धा ॥
सहस बरस दुखसहै जो कोई । घड़ी एक सुख विसरै सोई ॥
योगिन यही जान मन मारा । तेहुँ न यह मन मरै अपारा ॥
रहै न बांधा वर भा जेही । तेलियां मार डार पुनि तेही ॥

दो० मुहम्मदयहिमनअमर है, कहुकितमाराजाय ।
कहां सदाशिव आवैं, घटते घटत विलाय ॥

कुँवर जो वहिवहि घाटनलागी । वहु वेक़रार सोय जनुजागी ॥
विकल अचेत चेत तिनकहा । सङ्ग साथ नहिं दूसर रहा ॥
कहां रहे आये हम कहां । जानी नहीं किजायहि कहां ॥
जागहिं दयादृष्टि कै आपी । खोलसोनयनदीन्हविधिझांपी ॥
जेहि के सङ्ग पद्मिनी बांची । वहुतअनन्द[13]वहुतनृत[14] नाची ॥
अवमग[15] मिले आयजगनाथा । सबै आयके नावहिं माथा ॥
अतिदुख मिले आयके राजा । सोई ते गये उनकेकाजा[16] ॥

दो० सो हीरामन रतन रवि[17], सो पद्मावत लाल ।
सो पद्मावत सो कुँवर, सो प्रीतम प्रतिपाल ॥

नागमती कहँ अगम[18] जनावा । गई तपन वर्षा जनु आवा ॥
रही जो मुइनागिनिजसतुचा । जिव पायें तिनकी भइसुचा ॥

दिन १ सूर्य्य २ नामराजासांप ३ शेर ४ हाथी ५ आसमान ६ निगाह ७ दौलत में दीवाना ८ हज़ार ९ संखिया ज़हर १० हमेशा ज़िन्दा ११ मेहरवानी की निगाह १२ खुश १३ नाच १४ शायद १५ राजा के काम को १६ सूर्य्य १७ आगम १८ चमड़ा १९ ॥

सब दुख जस केंचुलगा छूटी। होय निसरी जस बीरबहूटी॥
जस भुइँदहि असाढ़ पलहाई। परहिं बूँद औ सोंध बसाई॥
वहीभाँति पलही सुखबारी। उठी करलिनइकोंपसँवारी॥
हुलस गंग जिमि बाढ़े लेई। यौवन लाग हिलोरे देई॥
काम धनुषशर दै भइ ठाढ़ी। भाग्यो बिरह रहे जो बाढ़ी॥

दो० पूंछहिं सखी सहेली, हृदयँ देख आनन्द।
आज बदन तुम निरमल, कहांउवाहैचन्द॥

अबलगसखीपवनरहि ताता। आजलागमोहिंशीतलगाता॥
मँहि हुलसी जसपावसँछाँहा। तसहुलासँउपजोंजियमाहां॥
दशौ दावकै गा जो दशहरा। पलटा सोई नावलै महरा॥
अब यौवन गङ्गा होय बाढ़ा। औटन कठिन मार सबकाढ़ा॥
हरियर सब देखे संसारा। नई चाँर जनुभा अवतारा॥
भाग्यो बिरह करत जो दाहू। भामुख चन्द छूटगा राहू॥
लहिकहिंनयनहारहियँ खिला। को धौं हितू आयके मिला॥

दो० कहतहिं बात सखिनसो, ततखन आवा भाट।
राजा आय नेर भा, मँदिर बिछायो पाट॥

सुनतहि खन राजा कर नाऊँ। भा हुलास सबठावहिं ठाऊँ॥
पलटा जनु बरषाऋतु राजा। जस असाढ़ आवै दरे साजा॥
देख से छत्र भई जगछाहां। हास्ति मेघ उनये जगमाहां॥
सैनँ पूर आई घनघोरा। रहस चाव बरषे चहुँओरा॥
धर्तिस्वर्ग अब होय मिलावा। भरहिंपुखरऔतालतलावा॥

उसीतरह १ बाग़ीचा २ कमान-तीर ३ दिल ४-१५ मुँह ५ पाकसाफ़ ६ गर्म हवा ७ ठण्ढाबदन ८ ज़मीन ९ बरसात १० ख़ुशी ११ पैदा होना १२ नईतरह १३ जलाना १४ तुरन्त १६ तख़्त १७ फ़ौज १८—२० हाथी १९ ज़मीन-आसमान २१॥

उठीलहकमहिसुनितेहिनामा । ठांवहिं ठांव दूब असजामा ॥
दादुर मोर कोकिला बोले । हतजोअलोपंजीभसबखोले ॥
दो० भये असवार प्रथमें, मिले चले सब भाय ।
नदीअठारह खण्डा, मिली समुद्रकहँजाय ॥
बाजत गाजत राजा आवा । नगर चहूँदिश बाजबधावा ॥
बिहँस आय मातासों मिला । रामहि जनु भेंटी कौशिला ॥
साजे मन्दिर बन्दनवारा । औ वहुहोय सो मंगलचारा ॥
पद्मावत कर आव बिमानू । नगमतिदहकउठी तसभानू ॥
जनहु छांह महँ धूप देखाई । तैसे झाँर लाग जो आई ॥
सही न जाय सौतकी झारा । दुसरे मन्दिर दीन्ह उतारा ॥
भई उहां चौखण्डबखानी । रतनसेन पद्मावत आनी ॥
दो० पुहुप सुगन्ध संसार महँ, रूप बखान न जाय ।
हेमसेतं उग्रगाजना, जगत पात पहिराय ॥
बैठ सिंहासन लोग जोहारा । निधनी निरगुणं द्रव्यबोहारा ॥
अगनित[14] दान निछावरकीन्हा । मँगतन दान बहुतकै दीन्हा ॥
[15]तुरी हस्ति[16] लै महावतमिले । तुलसी लै उपरोहित चले ॥
बेटा भाय कुँवर जेत आवहिं । राजा हँसहँस गले लगावहिं ॥
नेगी गेंज मिले अरकाना । पंवरथ बाजे घर मसयानों ॥
मिले कुँवर कापर पहिराये । दैकर द्रव्य तिनघरहिं पठाये ॥
सबकी दशा[19] भई पुनि दुनी । दानं दांग सबै जग सुनी ॥

ज़मीन १ मेढक २ गायब ३ पहिले ४ चंडोल ५ सूर्य्य ६ आग ७ चारों तरफ़ मशहूर ८ फूल ९ मिस्ल बर्फ़सफ़ेदबहार के मोसिम में हरेहरे पत्ते लहराते हैं १० ग़रीब ११ बेहुनर १२ जमा करना १३ बेहिसाब १४ घोड़ा १५ हाथी १६ हक़दार १७ मस्त १८ शक्ल १९ ख़ैरात और इनआम २० ॥

दो० बाजै पाँचशब्दै नित, सिद्धं बखाने भाट।
छत्तिस गौरीषटदरशन, आय जुरे वहपाट॥
सब दिन राजा दान देवावा। भईनिश नागमतीपहँआवा॥
नागमती मुख फेरिकै बैठी। सोनहिंकरहिपुरुषसोदीठी॥
ग्रीषमँ जरत छोड़ कै जाय। सो मुख कौन देखावे आय॥
जोह जरै परबत वन लागी। उठी झार पंखी उड़भागी॥
अब शाखा देखी औछांहां। कौने रहस पसारेसि बांहां॥
कौन्यो थिरक बैठि तेहिडारा। कौन्यो कली केलिकुरबारा॥
तू योगी होयगा बैरागी। हौंजरछार भयों तुहिलागी॥
दो० काह हँसो तुम मोसों, कियो और सो नेह।
तुहिं मुख चमकै बीजुली, मुहिंमुखबरषे मेह॥
नागमती तू पहिल बिवाही। कठिन सुप्रीतिदही जसदाही॥
बहुते दिनन आव जो पीउ। धनँ न मिलैधनपाहनँ जीउ॥
पाहन लोह पोढ़ जग दोऊ। सोऊ मिलैं जोहोय बिछोऊ॥
मलहिं सेतगङ्गाजल दीठा। यमुनजोश्यामनीरअतिमीठा॥
काह भयो तन दिनदशँदहा। औ बरषा शिर ऊपर अहा॥
कोइ कहि पास आशँके हेरा। धनवहदरश निराशँनफेरा॥
कण्ठ लायकै नारि मनाई। जरी जो बेल सींच पलहाई॥
दो० सहसँ अठारहशाखफर, दाड़िमदाखें जँभीर।
सबै पंखमिलआयजोहारे, लौटवही भइभीर॥

नगारा-शहनाई-करनाल-तुरही-झांझ १ तारीफ़ २ योगी-जंगम-सेवरा-संन्यासी-ब्राह्मण-दरवेश ३ तख्त ४ मर्द ५ शीख ६ घड़ीगरमी ७ आग ८ क्रिसकली के लिये कुलेल मचाते थे ९ राख १० तख्तमुहब्बत जली जैसा जलना चाहिये ११ नागमती १२ पत्थर १३ जुदाई १४ सफ़ेद गंगाजल तथा पद्मावत १५ सियाह पानी १६ थोड़ेदिन जली १७ उम्मेद १८ ना उम्मेद न करना चाहिये १९ हज़ार २० अनार २१ अंगूर २२॥

जो भा मेरु भयो रँग राता। नागमती हँसि पूँछी बाता॥
कहु जो कन्त परदेश लुभाने। कसधन मिलीभोगकसमाने॥
जो पद्मावत सुठ है लोनी। मोरे रूप कि सरवरि होनी॥
जहां राधिका अप्सर माहां। चन्द्रावल सरपूजे न छाहां॥
भँवर पुरुष असरही न राखा। तजै दाख महुवा रस चाखा॥
तज नागेसर फूल सुहावा। कमल बसेंधी सो मन लावा॥
चौ अन्हवाय भरे अरगजा। तौहु बिसायँध वहिनहिंतजा॥

दो० काह कहूं हूं तोसों, कुछ नहिं तोरे भाव।
यहां बात मुखमोसों, वहां जीव वह ठांव॥

दुखकिकथाकहि रयँनिबिहानी। भयो भोर जहँ पद्मिन रानी॥
भानुं देखशशिबदन मलीना। कमलनयनरोती तनखीना॥
रयनिनखतगिनकीन्हबिहानू। बिमलै भई देखी जस भानू॥
सूर्य्य हँसा शशि रोय डफारा। टूटआंसु जस नखतहिं मारा॥
रही न राखी होय निसासी। तहँवांजाउ जहांनिशि बासी॥
हों कै नेह कुवां महँ मेली। सींचहि लाग झुरानी बेली॥
भये दुइ नयन रहँट की घरी। भरहिं लै ढारें छूछी भरी॥

दो० शुभ्र सरोवर हंसजल, घटातो होयबिछोय।
कमल प्रीति नहिं परिहरे, सूख बेल पर होय॥

पद्मावत तुइँ जीव पराना। जियते जगतपियारन आना॥
तुइँजिमकमलबसीहियँ माहां। हौंहोयअलि बेधातोहिंपाहां॥
मालति कली भँवर जो पावा। सोतज आनफूल कितभावा॥

हमबिस्तरों में मस्त १ खूबसूरत २ बराबरी ३-४ मर्द ५ अंगूर ६ चोवा ७ खुशबू ८ रातबिताई ६ सूर्य्य १० चांद ११-१५ लाल १२ पतली कमर १३ रंजज्यादा हुआ सूर्य्य को देखके १४ माला १६ रात १७ तालाब १८ जुदाई १६ छोड़ना २० दिल २१ भँवर २२॥

मैं हौं सिंहल की पद्मिनी। सरनै पूज जम्बू नागिनी॥
हौं सुगन्ध निरमल उजियारी। वह बिष भरी डेरावन कारी॥
मोरी बास भँवर सँग लागहिं। वह देखत मानुष डर भागहिं॥
हौं पुरुषनै की चितवन दीठी। जेहिके जिय अस आहौं पीठी॥
दो० ऊँची ठांवँ जो बैठे, करै न नीचै संग।
जहां सो नागिन धरगई, कालाकरै सो अंग॥
पलही नागमती की बाँरी। सोने फूल फूल फुलवारी॥
ज्ञानवन्त पक्ष रहि सब देहे। सबै पक्ष बोलत कहकहे॥
साँरोसुवा महर कोकिला। रहसत आय पपीहा मिला॥
हारेल शब्द महोकै सुहावा। कागकुराहैं करहिसो आवा॥
भोगविलास कीन्ह अतिफेरा। बासहिं रहसहिं करहिं बसेरा॥
नाचहिं पांडुकै मोर परेवा। निफल न जाय काहुकीसेवा॥
है उजियार बैठ जस तपै। खूसट मुख न देखावे छिपै॥
दो० सङ्ग सहेली नागमति, अपनी बारी माहिं।
फूलचुनहिं फलतोड़हिं, रहसकूदसुखछाहिं॥
जाही जूही तेहि फुलवारी। देख रहस रहिसकी न बारी॥
इते न बातन हिये समानी। पद्मावत सो कही सो आनी॥
नागमती है अपनी बाँरी। भँवर मिला रस करै सँवारी॥
सखी साथ सबरहसहिंकूदहिं। और शृँगारहार सब गूँदहिं॥
तुम जोबकावलतुमसोलड़ना। बकचनँकहोचहो जसकरना॥
नागमती नागेसर रानी। कमलन आछी अपनीबानी॥

बराबरी १ पाकसाफ़ २ मर्द ३ देखना ४ जिसकीहौं उसके दिलमें बैठी हूं ५ जगह ६ बग़ीचा ७-१६ चिड़िया ८ जलना ९ तोता मैना १० नाम चिड़िया ११-१२-१४ कौवा की बोली १३ दिल १५ तुमको जो कहना या करना है सो करो १७॥

जस सेवती गुलाल चमेली । तैसि एकजन वहू अकेली ॥

दो० अब सुदरशनै गूजा, तव सतै वरगै योग ।
मिलाभँवरनागेसरसेते, वहीदेहिसुखभोग ॥

सुनि पद्मावत रिस न सँभारी । सखिनसाथ आई फुलवारी ॥
दोउ सौत मिल पाट[3] जो बैठी । हियविरोधँ सुख बातैं मीठी ॥
बारीदृष्टि सो रँग सो आई । पद्मावत हँस बात चलाई ॥
बारी सुफल अहै तुम रानी । है लाई पै लाय न जानी ॥
नागेसर औ मालति जहां । सुगन्धराव नहिं चाही तहां ॥
रहा जो मधुकर[6] कमल पिरीता । लाग्यो जाय करीलकी रीता ॥
जहँ इमली बांकी हियँ माहाँ । तहँ न भाव नारँगकीछाहाँ ॥

दो० फलहि फूलके फरजहां, देखहु मनहिं विचार ।
अम्ब लाग जेहि वारी, चम्प लाग तेहिवार ॥

अनतुम कही नीकयहशोभा । पै फलसोई भँवर जेहिलोभा ॥
श्यामजाम्ब कस्तूरी चोवा । अम्बजोऊँचहृदयं तेहिरोवा ॥
तेहिगुन असभइ जाम्बनेवारी । लाई आन मांझ केवारी ॥
जल बाढ़े बहिया जो आई । है बांकी इमली शिर नाई ॥
तु कस पराई वारी दोखी । तजै पानि धावहु मुख सूखी ॥
उठै आग दोउ डार अभैरा । कौन साथ तुहिं वैरी केरा ॥
जो देखी[11] नागेसर वारी । लाग मरी अब सूगेंसारी ॥

दो० जो सरवर[13] जल बाढ़े, रहै सो अपनी ठाउँ ।

तथा नागमती वा राजा १ तथा पद्मावत २ तख़त ३ दुश्मनी ४ फुलवारी खुशरंग देख ५ भँवर कमलका आशिक़ ६ दिल ७-६ कालीजामुन ~ मुश्क ८ जो मैं जवाबदों तौ पानी छोड़दो और मुँह सूखजाय १० जो मेरे बागको नागेसर देखै ११ तोता मैना १२ तालाब १३ ॥

तजें नागेसर को बाहि, जाउँ न तुहिं अँबराउँ ॥

तोहि अँबराउँ लीन्हकाजूरी[३]। काहे भई नींव मुख मूँरी ॥

भई बेर कित कुटिल कटीली। तेंदू[५] कीन्ह चाह बकसीली ॥

नाँरँगदाखँ[६] न तुम्हरी बारी। देखमरहिं जेहि सूगाँसारी ॥

औ न सदाफर तुरँज जँभीरा। कटहर बड़हर लौका खीरा ॥

कमल के हिरदय[९] रोवां केसर। तोहू न सरं पूजी नागेसर ॥

जहँकटहरकोउँ[१०] बरहिं न पूँछी। बड़ पीपर का बोलहि छूँछी॥

जो फल देखी सोई फीका। ताकर काह सरोंहे नीका ॥

दो० रहु तू अपनी बारी, मोसों जूझ न बाझ।

मालतिउपमन पूँजी[१३], पुनि करखोजाखाज॥

जो कटहर बड़हर बड़बेरी। तोहिअसनाहिंजोकोकाबेरी ॥

श्यामजानमोर तुरँजजँभीरा। कड़ुइ नींव तू छाँह गँभीरा ॥

नरियर दाखें बिही कहँ राखों।गलगलजाउँसौतें[१४] नाहिंभाखों॥

तोरें कहे होय मोर काहा। फरे बृक्ष कोउ ढेल न बाहा ॥

वै सदाफर सो नित फरै। दाँड़िम[१५] देख फाटहियँ[१६] मरै ॥

जाफर लौंग सुपारि छुहारा। मिर्च होय जो सहै न पारा ॥

हौं सुपान रंग पूजन कोई। बिरह जो जरे चून जरँ[१७] होई ॥

दो० लाजहि बूड़ मरोसि नाहिं, ऊभे[१८] उठावसबाहँ।

हौं रानी पिय राजा, तो कहँ योगी नाहँ[१९] ॥

हौं पद्मिनी मानसरँ[२०] केवाँ[२१]। भँवर मरालै[२२] करहिंमोरसेवा ॥

नागेसर छोड़ तेरेबाग न जाउँ १ बाग २ मुक़ाबिल ३ नींव ऐसी कड़ुवी ४ बैंगन जंगली से बेर कांटादार अच्छाहोगा ५ अंगूर ६ तोता मैना ७ दिल ८ बराबर ९ कटहर बलंद १० तारीफ़ ११ बराबर १२ अंगूर इसी वास्ते रक्खा है १३ सौतका मुँह से नाम न लो१४अनार१५छाती१६ खाविंद के बिरह में जलके चूना हुई १७ बलन्द १८ खाविन्द १९ नाम तालाव २० कमल २१ हंस २२ ॥

पूजा योग दई हौं गढ़ी। मन महेशके माथे चढ़ी॥
जानी जगत कमलकी करी। तोहिअसनहिंनागिनविपभरी॥
तुईं सब लिये जगतके नागा। कोयलवेप न छांड़ेसिकागा॥
तू भुजैल हौं हंसकी जोरी। मोहिंतोहिंमोतिपोतकीचोरी॥
कंचनकली रतन नग विना। जहांपदारथसोहनहिं पनाँ॥
तुईंतोराहुहौं शशि उजियारी। दिनहिनपूजीनिशिअँधियारी॥
दो॰ ठाढ़ होसि जेहिठाईं, मँसि लागै तेहि ठाउँ।
तेहि डर रांध न वैठौं, जनु साँवरहोयजाउँ॥
कमल सो कौन सुपाँरी रोठा। जेहिके हिये सहसदश कोठा॥
रही न झांपे आपनै गटा। सखेति उधेल चहै परगटा॥
कमलपत्र दोंड़िम तोर चोली। देखेसि सूर देश है खोली॥
ऊपर रातौं भीतर पियरा। जौरौं वही हरद अस हियरा॥
यहां भँवर मुखवातहि लावसि। वहांसूर्य्य कहँहँसहँसलावसि॥
सबनिशितपतपमरेसिपियासी। भोर भये पावसि पिय वासी॥
सेजवा रोय रोय निशि भरसी। तू मोसों का सरवँर करसी॥
दो॰ सूर्य्यकिरन तेहि रांवी, सरवँर लहर न पूज।
भँवर यहां तोह पावै, धूंप देह तोर भूज॥
मैंहों कमल सूर्य्य की जोरी। जोपिय आपन तेहिकाचोरी॥
हौं वह आपन दरपन लेखों। करों शृँगार मोर मुख देखों॥
मोर विकासं वहक परकाशू। तुईंजरमरेसि निहारअकाशू॥

सोने की अँगूठी १ लाल २ पन्ना ३ चाँद ४ वरावर ५ रात ६ सियाही ७ सुपारी सख्त के सामने कमल की क्या हक़ीक़त ८ कमल अपना गट्टा नहीं छिपासक्ता ९ सखती उधेरडालो तब ज़ाहिर हो १० अनार ११ सूर्य्य १२ लाल १३ हल्दी की तरह जलाता हूं १४ रात १५ वरावर १६-१७-१८ सूर्य्य से जल १९ खिलना २० ॥

हौं वह सों वह मोसों राता । तिमिर[2] बिलायहोतपरभाता[3] ॥
कमल के हिरदय[4] महँ जोगटा । हरियर[5] हार कीन्ह का घटा ॥
जाकर दिवस[6] तेही पै आवा । कार रयँनि कित देखै पावा ॥
तुइउदुम्बर[8] जेहि भीतर माँखी । चाहहिं उठहिं मरनकी पाँखी ॥

दो० धूप न देखी बिषभरी, अमृत सो सर पाव ।
जेहि नागिनडससोमरै, लहरसूर्य्यकी आव ॥

फूलहिं कमल भानु के उये । पानी मैल होय जड़ छुये ॥
फिरहिंभँवर जिम तो नयनाहाँ । नील बिषायँध सबतो पाहाँ ॥
मच्छकच्छदादुर[11] तोहिंआसा । बकओपंखबसहिंतोहिंपासा ॥
जे जे पंख बास तोहिं लये । पानी महँ सो बिषायँध भये ॥
जो उजियार चांद होय उई । बदनै कलंक डोंम लै छुई ॥
ओमोहिंतोहिंनिशि[14] दिनकरबीचू । राहुकेहाथचांदकीमीचू[15] ॥
सहस[16] बार जो धोवै कोई । तौहु बिषायँध जाय न धोई ॥

दो० काहकहूं वह पियसों, मोहिं शिरधरोसि अँगार ।
तेहि के खेल भरोसें, तू जीती मैं हार ॥

तोर अकेल का जीत्यों हारू । मैं जीता जग केर शृंगारू ॥
बदनजित्योंजोशशि[17] उजियारी । बेनीजित्योंभुवंगिनिकारी ॥
ओ मैं ज़ीते मृग के नैना । कण्ठजित्योंकोकिलके बैना ॥
भौंह ज़ित्यों अर्जुन धनुकारी । ग्रीव[19] जित्योंतमचोर पुछांरी ॥
नासिकजित्योंपुहुपतिलसुवा । शूक जित्यों बेसरहोय उवा ॥

खुश १ अँधियारी २ भोर ३ दिल ४ हरे कमलगट्टा का हार पहिने से क्या नुक़सान ५ दिन ६ रात ७-१४ गूलर ८ सूर्य्य ६ हिलाने से पानी मैला होता १० मेढक ११ बगुला १२ चांद में सियाही १३ मौत १५ हज़ार १६ चांद १७ नागिन १८ गर्दन १६ मुर्ग़-मोर २० नाक २१ फूल २२ नाम नक्षत्र २३ ॥

दामिनि जित्यों दशन चमकाहीं। अधर रंग रविजीत्यों साहीं॥
केहरि जित्यों लंक मैं लीन्हीं। जित्यों मराल चाल वैदीन्हीं॥
दो॰ पुहुप बास मलयागिरि, निरमल अंग बसाय।
नागिन मम आशा लुबुध, मारेसि केहर को जाय॥
का तोहिं गर्व शृंगार पराये। अबहीं लेह लोट सब ठाये॥
हौं सांवर सलोन मोर नैना। श्वेत चीर मुख चातृक बैना॥
नासिक स्वर्ग फूल ध्रुवतारा। भौंहैं धनुष गगन काहारा॥
हीरा दशन श्वेत अरु श्यामा। छिपै बीज जो बिहँसै रामा॥
बिद्रुम रंग अधर रसराती। जो दामिनि असेरवि महँताती॥
चाल गयंद गर्व अतिभरी। बिसालंक नागेसर करी॥
साँवर जहाँ लवनसुठ नीकी। का सरवर तू करेसि जो फीकी॥
दो॰ पुहुप बास हों पवन अहारी, कमल सोर निरहेल।
चहों केश धर नाऊँ, तोर मरन मोर खेल॥
पद्मावत सुनि उतर नहिं सही। नागमती नागिन जिस कही॥
वैं वह कहि वह वैं कहँ कहा। काह कहों तस जाय न कहा॥
दोउ नवल भर यौवन गाजें। अप्सर जानु अखारें बाजें॥
भा बाहुन बाहुन सो जोरा। हियसो हिय कोइ नाग न मोरा॥
कुचै मों कुच भइ सोहैं अनी। नवहिं ननाये टूटहिं तनी॥
कुंभस्थल द्वौ गर्ज मैमन्ता। दोनों उफर परे चौदन्ता॥

बिजुली १ दांत २ होंठ ३ चीता ४ कमर ५ हंस ६ फूल ७ चन्दन ८ आरजू खाविंद के पास जानेकी रखती ६ गरूर १० सफ़ेद ११ पपीहा १२ आसमान १३ दांत १४ सफ़ेद-काला १५ बिजुली १६ मूंगा १७ होंठ १८ लाल १६ बिजुली २० सूर्य २१ हाथी २२ गरूर २३ भँवराकी कमर २४ बराबर २५ फूल हवाके सहारे २६ तरताज़ा २७ याल २८ जवाब २६ परी इन्द्रलोक ३० छाती ३१ नोकसामने ३२ अँगियाके बन्द ३३ नाम हाथी मस्त ३४॥

देवलोक देखत हुत ठाढ़े । लागबान हिये[1] जाहिनकाढ़े ॥
दो० जनहु दीन्ह ठगलाड़, देख आय तस मीचं[2] ।
रहा न कोइ धरहरियाँ, करै जो दोउमहँबीच ॥
पवन श्रवनं[3] राजा के लागा ।कहेसिलड़हिंपद्मिनऔनागा ॥
दोनों सौत श्याम औ गोरी । मरहिंतोकहँपावसिअसजोरी ॥
चल राजा आवा तेहि वारी । जरत बुझाई दोनों नारी ॥
एक वार जेहिपिय मन बूझा । सो दूसरे सों काहेक जूझा ॥
ऐसो ज्ञान मन जान न कोई । कबहूँ रात कबहुँ दिन होई ॥
धूप छाँह दोऊ इक रंगा । दोनों मिले रहैं इक संगा ॥
जूझबै छांड़हु बूझौ दोऊ । सेवं करहु सेवाफल होऊ ॥
दो० गंग यमुन तुम नारि दोउ, लिखीमुहम्मदयोग ।
सेव करहु मिल दोनों, तो मानहु सुख भोग ॥
अस कहि दोनों नारि मनाई । बिहँसिदोउतबकरगठं लगाई ॥
लै दोउ संग मँदिर महँ आई । सोन पलँग तहँ जायबिछाई ॥
सीझी पांच अमृत ज्योनारा । औ भोजन बावन परकारा ॥
हुलसी सरस घचिचर्या खायें । भोग करत बिहँसी रहसायें ॥
सोनमँदिरनगमतिकहँदीन्हा । रूप मँदिर पद्मावत लीन्हा ॥
मन्दिर रतन रतन के खंभा । वैठा राज जोहारे सभा ॥
सभा सो सबै शुभ्र मन कहा । सोईअसं गुरु जो भलकहा ॥
दो० वहु सुगन्ध वहु भोगसुख, कुरलहिं केलकराहिं ।
दोहु सो केल नितमानी, रहसअनन्ददिनजाहिं ॥
जाई नागमती नगसेनी[11] । ऊँच भाग ऊँची दिन रैनी ॥

दिल १ मौत २ पढ़नेवाला ३ कान ४ लड़ना ५ खिदमत ६ गलेलगाया ७ अंगूर ८ अच्छी बात कही ९ वह अच्छा जिसको गुरू पसन्दकरै १० नागमती से नगसेन पैदाहुआ ११ ॥

कमलसेन पद्मावत जोई । जानहु चन्द्र धर्ति महँ आई ॥
पण्डित बहु बुधवन्त बुलाये । राशि वर्ग औ गिरहगिनाये ॥
कहेन बड़े दोउ राजा होहीं । ऐसे बूत दंसे सब तोहीं ॥
नवें खण्डके राजा जाहीं । औ कुछदण्डे[३] होयदलमाहीं ॥
खुल भँडार कुछ दान देवावा । दुखी सुखी कर नाम बढ़ावा ॥
याचक लोग गुनीजन आये । अरु आनँदके बजे वधाये ॥

दो० अति कुछ पावा ज्योतिपिन, औ दैचले अशीस ।
पुत्र[४] कलत्र कुटुम्ब सब, जीवहिं कोटि बरीस ॥

राघव चेतन चेतन महा । आय उरके राजा यहँ रहा ॥
चितचिन्ता[८] जानै बहु भेउँ । कविव्यास पण्डित सहदेउ ॥
बरनी आय राज की कथा । पिंगल[११] महँ सब सिंहलमथा ॥
जो कवि सुनै शीश[१२] सो धुना । श्रवण[१३] नाद वेद कवि सुना ॥
दृष्टि[१४] सो धर्मपन्थ जेहि सूझा । ज्ञान[१५] सो परमअर्थ मनबूझा ॥
योग जो रहै समाधि समाना । भोग जो गुनीकेर गुनजाना ॥
बीर[१६] सुरिस मारै मन कहा । सोइ शृङ्गार कन्त जो चहा ॥

दो० वेद भेद जस बररुचि[१७], चितचिन्ता तस चेत ।
राजा भोज[१८] चतुरदश, भा चेतन सो हेत ॥

घड़ी अचेत[१९] होय जो आई । चेतनकी सब चेत भुलाई ॥
भादौं एक अमावस सोई । राजैं कहा दुइज कब होई ॥

पद्मावत से कमलसेन १ बलमें दशगुना २ आपस में फ़रेब ३ बेटा-औरत-ख़ान्दान ४ पास ५ दिलका हाल ६ भेद ७ कविताई में व्यासजी ८ पण्डिताई में सहदेव ९ बयान १० छन्द ११ शिर १२ कान में वेदनाद की तरह सुना १३ निगाह १४ अक़िल से मुश्किल बात दरियाफ़्त करता १५ बहादुर १६ नाम पण्डित १७ चौदह विद्या जाननेवाला राजा भोजकी तरह १८ बुरी १९ ॥

राघवके मुख निकसा आजू। पण्डितनकहाकाल्ह बड़राजू ॥
राजैं दुहूँ दिशा फिर देखा। पण्डित बावरे[1] कौनसरेखा ॥
भुजा टेक के पण्डित बोला। छांड़हिं देश बचनै[3] जो डोला ॥
राघव करी जाघनीपूजा। चहै स्वभाव देखावै दूजा ॥
तेहि ऊपर राघव बरै खांचा। दुइज आजतौ पण्डितसांचा ॥

दो० राघव पूज जाघनी, दुइज देखायस सांझ।
वेदपन्थ जेनाहिंचलहिं, ते भूलहिं बनमांझ ॥

पण्डित कहा परानहिं धोखा। कौनअगस्तसमुद्र जेहिसोखा ॥
सोदिन गयो सांझ भइ दूजी। देखी दुइज घड़ी वह पूजी ॥
पण्डितनराजा दीन्हअशीशा। अब कस ये कंचन औशीशा ॥
जो यह दुइज काल्हकी होती। आजतेजदेखतशशि[6] ज्योती ॥
राघव दृष्टिबन्द कल्ह खेला। सभाँ सांझ चेटकै[8] अस मेला ॥
यहिकर गुरूचमारिन लोना। सिखा कामरू पाठत टोना ॥
दुइजअमावसमहँजो देखावै। दिन इकराहु चांद कहँ लावै ॥

दो० असगुणि नहिंचहिनृपसभा, जेहिटोनाकरखोज।
यही छन्द ठग विद्या, छला सो राजा भोज ॥

राघव वैनं[10] जो कंचनै[11] रेखा। कसे बान पीतर अस देखा ॥
अज्ञा[12] भई रिसान नरेशूं[13]। मारों काहि निसारों देशू ॥
झूठ बोल थिरै[14] रहै न राचा। पण्डित सोई वेदमति साँचा ॥
वेदवचनै[15] मुखसांचजो कहा। सो युगयुगइस्थिरै[16] थिर रहा ॥
खोटे[17] रतन सोई फटकिरा। केहिघररतनजोदारिद[18] हरा ॥

कौन पंडित नादान १ होशियार २ बात ३ भारी पूजा ४ क़सम ५ चाँद ६ दरबार ७ जादू ८ राजदरबारमें ऐसा जादूगर न चाहिये ९ बात १० सोना ११ हुक्म १२ राजा १३ इज्जत नहीं रहती १४ वेद के मुक़ाबिल १५ क़ायम १६ झूठा जवाहिर फिटकरी की तरह १७ दारिद दूरनहीं करता १८॥

चैह लक्ष बावर कवि सोई। जहँसरस्वती लक्षकित होई ॥
कवितासँगदारिद मतिभंगी। कांटे कुटिल पुहुप के संगी ॥
दो॰ कबिता चेला बिधि गुरू, सीप सेवाती बुन्द।
तेहि मानुषकी आशा का, जो मरजियासमुन्द॥
यहि सो बात पद्मावत सुनी। देश निसारा राघव गुनी ॥
ज्ञानदृष्टि धनअगम बिचारा। भलनकीन्हअसगुनीनिसारा॥
जे जाघनीपूज शशिकाढ़ी। सूर्यकी ठांवकरै पुनि ठाढ़ी ॥
कबकी जीभ खड्ग हरवानी। इकदिशआगदुसरदिशपानी ॥
जन अयुक्त सुख काढ़ै भोरे। यश बहुतें अपयश है थोरे ॥
रानी राघव वेगं हँकारा। सूरय गढ़तरि लेहु उतारा ॥
ब्राह्मण जहां दक्षिणा पावा। स्वर्गजाय जो होय बोलावा॥
दो॰ आवा राघव चेतन, धौराहर के पास।
ऐसि न जानी तेहिहृदयँ, बिजुली वसे अकास॥
पद्मावत जो झरोखे आई। नेहिकलंकजसशशि देखराई॥
ततखनँ राघव दीन्हअशीशा। भयो चकोर चन्दमुख दीशा ॥
पहिरेशशि नखतनकीमारा। धरती स्वर्ग भयो उजियारा ॥
औ पहिरे कर कंकन जोरी। नग जोलागतेहितीसकरोरी ॥
कङ्कन एक काढ़ दे डारी। काढ़त नारटूट गयें हारी ॥
जानहुँ चांद टूटलै तारा। छूट्यो स्वर्ग काल कर धारा ॥
जनहुँ टूट बिजुली भुइँ परी। उठा चौंध राघव चित हरी ॥
दो॰ परा आइ भुइँकङ्कन, जगतभयो उजियार।

दौलत १ इक़बाल २ कबिदारिद्री होता है ३ फूल ४ ईश्वर ५ उम्मेद ६ अक़िल ७ भारीपूजा ८ चाँद ९ तलवारतेज़ १० बेमौक़ा ११ जल्द १२ महल १३ दिल १४ बेपेच १५ चाँद १६-१८ तुरन्त १७ माला १९ ज़मीन २० आसमान २१ ॥

राघव बिजुली मारा, बेसँभरकुछ न सँभार ॥
पद्मावत हँस दीन्ह झरोखा। अब जो गुनीमरैसुहिं दोखी ॥
सबै सहेली देखी धाईं। चेतन चेत जगावैं आईं ॥
चेतन परा न आवै चेतू। सबहिं कहा यहि लाग परेतू ॥
कोइ कहि कांपं कोईसम्पातू। कोईकहि अहि मिरगी बातू ॥
कोइकहि लागपवनें करझोला। कैसहिं समुझन चेतनबोला ॥
पुनि उठाय बैठारो छाहां। पूँछहिकौन पीर जिय माहां ॥
धौं काहू के दरशन हरा। कै ठग धूतें भूत जेहि हरा ॥
दो० कै तोहि काहू दीन्हं कुछ, कैरे डसातोहि सांप।
कहो सो चितहोय चेतन, देह तोर कस कांप ॥
भयो सो चित चेतन जब चेता। नयन झरोखें जीव सकेता ॥
पुनि जो बोला मीत बुधिखोवा। नयन झरोखा लायें रोवा ॥
बावर फेर शीर्श पै धुना। आपन कहि न पराई सुना ॥
जानहु लाईं काहुँ ठगोरी। खनें पुकार खन बांधे बोरी ॥
होरे ठगा यहि चितोर माहां। कासों कहों जाउँ केहि पाहां ॥
यहि राजा शठ बड़ हत्यारा। जें राखा यहि ठग बटपारा ॥
नाकोइ बरजनें लाग गुहारी। अस यहि नगर होय बटपारी ॥
दो० दृष्टि[14] रहीठगलाडू, अलकें फाँस पर ग्रीव।
जहां भिखारि न बाचै, तहां बचै को जीव ॥
कित धौराहर आय झरोखें। लैगयोजीव दछनाके धोखें ॥
स्वर्गसूर शशि करें अँजोरी। तेहितेअधिकदेउँ केहिजोरी ॥

पाप १ जूड़ी २ मिरगी का रोग ३ फ़ालिज ४ किसीठग या दगाबाज़ने मन्त्र चलाया ५ खिलादिया ६ कुँभलाया ७ शिर ८ जादू ९ कभी १० चुप ११ राहलूटनेवाले १२ मनाकरनेवाला १३ निगाह १४ बाल १५ गर्दन १६ महल १७ सूर्य १८ चाँद १९ रोशनी २० बहुत २१ ॥

शशि सूरहि जोहोतवहज्योती। दिनपहाड़हतरयानि न होती॥
तें हँकारे मोहिं कङ्कनदीन्हा। दृष्टि जोपड़ी जीवहरलीन्हा॥
नयनभिखार डीठें सतछुड़ी। लागे तहां बान हियँ गड़ी॥
नयनहिं नयन जो बेधसमाने। शीशँधुनहिं निसरेनहिंताने॥
नवहिं न नाये निलज भिखारी। तवहूं बुरी लाग मुखगारी॥
दो० कित करमुखी नयनभे, जीव हरा तेहि बाट।
सरवरनीरबिछोह ज्यों, तरकतरक हियफाट॥
सखिन कहा चेतन बे सँभारा। हिये चेत जिव जाय न मारा॥
जो कोइ पावैं आपन मांगा। ना कोइ मरे न काहू खांगा॥
वह पद्मावत ऐसी सुरूपा। बरन न जाय काहके रूपा॥
जें चीन्हीं सो गुपँ चलगयऊ। परगटगुप्त जीवबिन भयऊ॥
तुम अस बहुत बिमोहितंभये। धुन धुन शीश जीव दै गये॥
बहुतहिं दीन्ह नाय के ग्रीवां। उतरें न देइ मारके जीवा॥
तुइँ पुनि मरत होय जर भुई। अवहिं उधेल कानकी रुई॥
दो० कोइ मांग मार ना पावै, कोइ बिन मांगापाव।
तूचेतन औरहि समभावे, बहुतुहिंको समभाव॥
भयो चेत चित चेतन चेता। वहुर न आयसहों दुखएता॥
रोवत आय परे हम जहां। रोवत चले कौन सुख तहां॥
जहँवां बहुसासूँ जिय केरा। कौन रहन पर चलों सवेरा॥
अब यहि भीख तहां होयमांगों। यतनादे जगजन्म न खांगों॥
औ अस कंकन जोपाऊँ दूजा। दारिद हरे आश मन पूजा॥
देहली नगर आव तुरकानू। शाह अलाउद्दीं सुलतानू॥

चाँद १ सूर्य २ बोलाना ३ शोख ४ ईमान छोड़नेवाले ५ दिल ६ शिर ७ तालाव का पानी घटे से ८ कमी ९-१६ छिपा १० ज़ाहिर वा छिपा ११ आशिक़ १२ गर्दन १३ जवाव १४ अंदेशा १५॥

सोन जरी जेहि की टकसारा। बारहबानी[1] परहिं दिनारा॥

दो० कमलबखानों[2] जायतहँ, जहँ अलि[3] अलाउद्दीन।
सुनिके चढ़ैभानु[4] होय, रतन होय जलमीन[5]॥

खण्ड बत्तीसवां देहली गवनराघव चेतन॥

राघव चेतन कीन्ह पयाना[6]। देहली नगर जाय नियराना॥
आय शाह के द्वार[7] जो पहुँचा। देखा राज जगतपर ऊँचा॥
छत्तिसलाख तुरुक असवारा। तीससहस[8] हस्ती[9] दरबारा॥
जहँतक तपै जगतपर भानू। तहँलग राजकरै सुलतानू॥
चहूँखण्डे[10] के राजा आवहिं। ठाढ़झुराहिंजुहार[11] न पावहिं॥
मनतेवान के राघव झूरा। नाहिं उबार जिया डर पूरा॥
जहां झुरान दिये शिर छाता। तहँ हमार को चालै बाता॥

दो० वारपार नहिं सूझै, लाखन उमर अमीर।
अब खुरखेहँ[13] जाव मिल, आयपरे यहिभीर॥

बादशाह सब जाना बूझा। स्वर्गपतार[14] हिये[15] में सूझा॥
जो राजा अस सजग[16] न होई। काकर राज कहांकर कोई॥
जगत भार वह एक सँभारा। तौथिर[17] रहै सकल संसारा॥
औ असबहक सिंहासन ऊँचा। सब काहूँपर दृष्टि[18] जो पहुँचा॥
सबदिन राजकाज सुखभोगी। रात फिरै घरघर ह्वै योगी॥
रावरंक[19] जहँतक सब जाती। सबकी चाहँ[20] लेइ दिनराती॥
पंथी[21] परदेशी जब आवहिं। सबकीचाहँ[22] दूतपहुँचावहिं॥

बारह तरह १ पद्मावत की तारीफ़ २ भँवर ३ सूर्य ४-१० मछली ५ कूच ६ दरवाज़ा ७ हज़ार ८ हाथी ९ चारों तरफ़ ११ सलाम १२ टापकी धूर १३ ज़मीन-आसमान १४ दिल १५ होशियार १६ क़ायम १७ निगाह १८ अमीर गरीब १९ खबर २०-२२ मुसाफ़िर २१॥

दो० यहू बात तहँ पहुँची, सदा छत्र सुख छाथ।
ब्राह्मणएकहारहैठाढ़ा, कँकन जड़ाऊ हाथ॥

मयोशाह मनसुनत भिखारी। परदेशी कहँ पूँछ हँकारी॥
हम पुनि जाना है परदेशा। कौनपन्थ गवनब केहिभेशा॥
देहलीराज चिन्तमनें काढ़ी। यहिजग जैसि दूधकी साढ़ी॥
सेंतें मिलाय छांछ के फेरा। मथ घिवलीन्हमहिउकहँकेरा॥
यहि देहली कित है है गये। के के गर्ब खेहँ मिल गये॥
यहि देहली की रही ढिलाई। साढ़ी काढ़ ढील जब ताई॥
रावण लङ्क जार सब तापा। रहा न यौवन औ तरुनापा॥

दो० भीख भिखारी दीजिये, का ब्राह्मण का भाट।
अज्ञा भई बोलावहु, धरती धरा ललाट॥

राघव चेतन हत जोनिरासा। ततखनें बेगें बोलावा पासा॥
शीशें नायके दीन्ह अशीशा। चमकतनग कंकन करदीशा॥
अज्ञा भई सो राघव पाहां। तुइँ मंगनें कंकन का वाहां॥
राघव फेर शीशँ भुइँ धरा। युगयुग राज भानु की करा॥
पद्मिनि सिंहलद्वीप किरानी। रतनसेन चितोरगढ़ आनी॥
कमलन सरें पूजी तेहि बासा। रूप न पूजी चन्द अकासा॥
जहांकमल शशि सूरें न पूजा। केहिसरें देउँ और को दूजा॥

दो० सो रानी संसार मन, दछना कङ्कन दीन्ह।
अप्सरें रूप देखायके, जीव झरोके लीन्ह॥

सुनिके उतरें शाह मन हँसा। जानहुबीजें चमक परगसा॥

मेहरबानी १ बोलाना २ राह ३ अन्देशा ४ नरमी ५-८ ग़रूर ६ धूर ७ जवानी ९ हुक्म १० माथा ११ नाउम्मेद १२ तुरन्त १३ जल्द १४ शिर १५-१७ मांगनेवाला १६ सूर्य १८-२१ बराबरी १९-२२ चाँद २० परीइन्द्रलोक २३ जवाब २४ बिजुली २५॥

कांच योग जो कंचन[1] पावा। मंगन ताहि सुमेरु[2] चढ़ावा॥
नाउँ भिखार जीभ मुख बांची। अनहिं सँभार बातकहु सांची॥
कहँ अस नारि जगत उपराहीं। जेहिके सरँ[3] सूरजशशि नाहीं॥
जो पद्मिनि तुइँ मन्दिर मोरे। सातोंद्वीप जहां करे[4] जोरे॥
सप्तद्वीप महँ चुन चुन आनी। सो मोरे सोरहसै रानी॥
जो उनमहँ देखेसि इक दासी। देख लोन ह्वै लोन बिलासी॥

दो० चहूँखगड[6] हों चक्कवै, जसरँबि तपै अकाश।
जो पद्मिनि मोरे मँदिर, अप्सर तौ कैलाश॥

तुम बड़राज छत्रपति भारी। अन ब्राह्मणहों अहौं भिखारी॥
चारहु खगड भीखका बाजा। उदयअस्ततुम्हऐसो न राजा॥
धर्मराज औ सतकुल माहां। झूठ जो कही जीभगहिबाहां॥
कुछ जो चार सबकुछउपराहीं। सो यहि चहूं द्वीपमहँ नाहीं॥
पद्मिनि अमृत[8] हंस[9] सदूरू[10]। सिंहलद्वीप मलहिं सो मूरू॥
सातोंद्वीप देख हों आवा। तब राघव चेतन कहवावा॥
अज्ञा होय न राखों धोखा। कहोंसोसबनारिनगुणदोखा[11]॥

दो० यहां हस्तिनी सिंहिनी, औ चित्रिनि बनबास।
कहों पद्मिनी पद्मे[14] शिर, भँवर फिरै चहुँपास॥

खगड तेंतीसवां स्त्री वर्णन॥

पहिले कहों हस्तिनी नारी। हस्ती[15] की परकीरति[16] सारी॥
शिर औ पांय सुभ्र[17] गये छोटी। उरै[18] कीखीनँ[19] लङ्क[20] की मोटी॥
कुम्भस्थलगज[22]अमितअमाहीं। गवनँ[23] गयन्द ढालजनुबाहीं॥

सोना १ नामपहाड़ २ बराबरी ३ चाँद ४ हाथ ५ चारोंतरफ़ ६ सारी दुनियांका राजा ७ सूर्य ८ पहुँचा ९ लालशेर १० असिल ११ हुक्म १२ वैद्य-हुनर १३ कमल १४ हाथी १५ स्वभाव १६ मोटा १७ गर्दन १८ छाती १९ पतली २० कमर २१ नाम हाथी २२ चाल २३॥

दृष्टि[1] न आवै आपन पीउ। पुरुष पराये ऊपर जीउ॥
भोजनबहुत बहुत रतिचाऊ[2]। अछवाई[3] सो थोर सुभाऊ॥
मधु[4] जस मन्द बसाय पसेऊ। औ बिसवासैं[5] धरै जसदेऊ॥
डर औ लाज न एको हिये। रहै जो राखैं आंकुश दिये॥

दो० गज[6]गतचलैचहूंदिश, लायजगत कहँ चोखँ।
कही हस्तिनीनारि ये, सब हस्तिनि के दोखँ॥

दूसर कहों सिंहिनी नारी। करै बहुतबल अल्प अहारी॥
उर[11] अतिसुभ्र[12] खीन[13] अतिलङ्का[14]। गर्वभरी मनधरै न शङ्का॥
बहुत रोष[16] चाही पिय हना। आगे घालन काहू गिना॥
अलंकार अपनी वह भावा। देख न सकै शृँगार परावा॥
सिंहकी चाल चलै डरा ढीली। रोवां बहुत जांघ औ फीली॥
मोट मांस रुच भोजन तासू। औ मुख आव बिषायँधवासू॥
दृष्टि तराहीं हेरै आगे। जन मथवाह रहै शिरलागे॥

दो० सेजवां मिलत सो स्वामी, लावे उरनख बान।
यहि गुण सबै सिंहके, वह सिंहन सुलतान॥

तीसर कहूँ चित्रिनी नारी। महाचतुर रस प्रेम पियारी॥
रूप स्वरूप शृँगार सवाई। अपसर[19] जैसि रही अछवांई[20]॥
रोष[21] न जानै हस्ता मुखी। जहँ असनारि कन्त[22] सोसुखी॥
अपने पुरुषकी जानै पूजा। एक पुरुष के जान न दूजा॥
चन्द्रबदन[23] रँगकुमुदिनि[24] गोरी। चाल सुहाय हंस की जोरी॥
खीर[25] खांड़कुछ अल्पअहारू[26]। पान फूल से बहुत पियारू॥

निगाह १ चाह २ सफ़ाई ३ शहद ४ ख़याल ५ हाथी ६ पियार ७ पेंच ८ थोड़ा ९ खुराक १० छाती ११ चौड़ी १२ बारीक १३ कमर १४ गरूर १५ गुस्सा १६ सूरत १७ नज़र १८ इन्द्रलोककी परी १९ सफ़ाई २० गुस्सा २१ खाविन्द २२ मुँह २३ कोकाबेली २४ दूध २५ थोरी खुराक २६॥

पद्मिनि चाहै घाट दुइकरा। और सबै वह गुण निरमरा॥

दो० चित्रिनि जैस कुमुद[4] रँग, और बासना अंग।
पद्मिनि बासचन्दन जस, भँवर फिरहिं तेहिसंग॥

चौथे कहौं पद्मिनी नारी। पद्म गन्ध शशि[6] दईसवाँरी॥
पद्मिनि जात पद्मरँग ओई। पदमबास मधुकर[7] सँग होई॥
नासुठ लांबी नासुठ छोटी। नासुठ पातर नासुठ मोटी॥
सोरहों करन रंगहै बनी। सो सुलतान पद्मिनी गुनी॥
दीरघ[8] चारु बार लघु[9] सोई। शुभ्र[10] चार चहुँ खीनी[11] होई॥
औ शशि बदनदेख सबमोहा। चालमराल[12] चलतगत सोहा॥
खीर अहार न कर सुकवारा। पान फूलके रहै अधारा॥

दो० मोह किरन मम बूरन, औ सोरहों शृंगार।
अब यह भांति बरनके, जस बरनै संसार॥

प्रथम[14] केश[15] दीरघ[16] शिरसोहैं। औ दीरघ अँगुरी कर[18] सोहैं॥
दीरघ नयन तीख तहँ देखा। दीरघ ग्रीव कण्ठ त्रयरेखा॥
पुनिलघु[19] दशन[20] होहिंजनुहीरा। औ लघुकुच[21] उतंगजम्भीरा॥
लघु ललाट[22] दुइज परकासू। औ नाभी लघु चन्दन बासू॥
नासिक[23] खीन[24] खड्ग[25] की धारा। खीनलंक[26] जनु केहर[27] हारा॥
खिन पेट जानहु नहिं आंता। खीनअधर[28] बिद्रुम[29] रँगराता[30]॥
शुभ्रकपोल[31] देख मुख शोभा। शुभ्रनितम्ब[32] देख मन लोभा॥

दो० शुभ्र कलाई अति बनी, शुभ्र जंघ गजचाल[33]।

ज्यादा १ दोहिस्सा २ पाकसाफ़ ३ कोकावेली ४ कमल ५ चाँद ६-१२ भँवर ७ बड़े ८-१६-१७ छोटे ६-१६ मोटा १० पतला ११ हंस १३ पहिले १४ बाल १५ हाथ १८ दांत २० छाती २१ माथा २२ नाक २३ पतली २४ तलवार २५ पतली कमर २६ चीता २७ होंठ २८ मूंगा २६ लाल ३० मोटा गाल ३१ चूतर ३२ हाथी की चाल ३३॥

सोरहशृँगार बरन के, करहिं देवता लाख ॥

यहि पद्मिनि चितोर जो आनी । कुन्दन[2] काया आदर्श वानी ॥
कुन्दन कनक[3] ताहि नहिं वासा । वहु सुगन्ध जस कमल विकासा[4] ॥
कुन्दन कनक[5] कठोर सो अङ्गा । वह कोमल रँग पुहुप[6] सुरङ्गा ॥
वह छुइ पवन वृक्ष जेहि लागा । सोइ मलयगिरि[7] भयो सुभागा ॥
काह न मूठ भरी वह देही । अस सूरति केहि दई उरेही[8] ॥
सबै पटेतर[9] चित्र के हारीं । वहक रूप कोइ लखी न पारीं ॥
कया कपूर हाड़ सब मोती । तेहि ते अधिकं[10] दीन्ह विधि ज्योती ॥

दो० सूर्य्य किरण जस निरमल[11], तेहि ते अधिक शरीर ।
सौंहदृष्टि[12] नाहिं जाय कर, नयनहिं आवै नीर[13] ॥

शशि[14] मुख जबहिं कहै कछु बाता । उठत तन्त सूरज जस राता[15] ॥
दशन[16] दशन सो किरणी फूटहिं । सब जग जानि फुलभरी छूटहिं ॥
जानहुँ शशि[17] महँ बीज[18] देखावा । चौंध परयो कुछ कहै न आवा ॥
कौंधत रहि जस भादौं रैनी । श्याम रैन[19] निज नुचलै उड़ेनी[20] ॥
जनु बसन्त ऋतु कोकिल बोली । सरस सुनाय सारस[21] डोली ॥
जनु अमृत है वचन विकासा[22] । कमल जो वास वास घन वासा ॥
यहि सर शीश जो नाग बेहरा । जाय शंख वेनी है परा ॥

दो० सबै मनोहर[23] जाय मर, जो देखै तस चौर[24] ।
पहिले सो दुख बरन के, बरनो वहक शृँगार ॥

कितहौं रहा कालकर काढ़ा । जाय धौरहर[25] तर भा ठाढ़ा ॥
कित वह आय झरोखे झांकी । नयन कुरंगिनि[26] चितवन बांकी ॥

वदन १ खालिस २ सोना ३-५ खिलना ४-२२ फूल ६ चन्दन ७ बनाना ८ दूती ९ बहुत १० पाकसाफ़ ११ निगाह सामने १२ पानी १३ चाँद १४-१७ लाल १५ दांत १६ बिजुली १८ रात १९ जुगुनू २० तीर २१ उम्मेद २३ चाल २४ महल २५ हिरनी २६ ॥

बिहँसी शशि[1] तरई[2] जनुपरीं। कैसो रयनि छूटे फुलझरीं॥
चमक बीजु[3] जस भादों रैनी। जगत दृष्टि[4] भररही उँडेनी[5]॥
काम कटाक्ष[6] दृष्टि बिब बसा। नागिनअलकें[8]पलकमहँडसा॥
भौंह धनुष पल[9] काजल बूड़ी। वहभइधानुक[10] हौं भइ ऊँड़ी[11]॥
मार चली मारतहूँ हँसा। पाछे नाग रहा हौं डसा॥

दो० काल घाल पीछे रखा, गरुड़ न मन्तर कोय।
मोर पीठ वह बैठा, कासों पुकारों रोय॥

बेनी[12] छोर झोर जो केशा। रैनि[13] होयजगदीपक[14]लेशा॥
शिरहत बिषहर[15] परी भुइँ बारा। सगरे देश भयो अँधियारा॥
सकपकाहिं बिष भरे पसारे। लहरहिंभरलहकहिंअतिकारे॥
जानहुँ लोटहिं चढ़े भुअङ्गा[16]। बेधी बासमलयागिरि[17] अङ्गा॥
लरहिं मुरहिं जनु मानहिंकेली। नाग चढ़े मालति के बेली॥
लहरैं देइ जानहु कालिन्दी[18]। फिरफिरभँवरभये चितबन्दी[19]॥
चँवर धरत आछी चहुँपासा। भँवर न उड़हिंजोलुभे[20]बासा॥

दो० होयअँधेरघनें[21]बिज्जु[22]चमक, जबहिंचीरगहिझांप।
केश[23] नाग कित देख मैं, सँवरिसँवरिजियकांप॥

मांग कनक[24] जो सेंदुर रेखा। जन बसन्त राती[25] जग देखा॥
गइ पत्रावल[26] पाटी पारी। औरचि चित्रविचित्र[27] सँवारी॥
भई उरेह पुहुप[28] सब नामा। जनुबक[29] बिखररहेघनश्याम[30]॥
यमुना मांझ सरस्वती मांगा। दुहुँदिश दिये तरंग[31]नें गांगा॥

चांद १ छोटे नखत २ बिजुली ३-२२ निगाह ४-७ जुगुनू ५ तिरछी चितवन ६ बाल ८-२३ पलक ९ तीरअन्दाज़ १० निशाना ११ चोटी १२ रात १३ चिराग़ रोशन १४ सांप १५-१६ चन्दन १७ यमुना १८ दिल फँसाना १९ लपटना २० बादल २१ सोना २४ लाल २५ नाम दाया २६ बहुत अच्छी २७ फूल २८ बगुला २९ बादल सियाह ३० लहर ३१॥

सेंदुर रेख सो ऊपर राती । बीरबहूटिन की जस पांती ॥
बलि देवताभये देख सेंदूरू । पूजी मांग भोर उठ सूरू ॥
भोरसांझरबि होय जो राता । वही देख राता भा गाता ॥
दो० बेनीकारी पुहुप ते, निकसी यमुना आय ।
पूजइन्द्र आनन्द सों, सेंदुर शीश चढ़ाय ॥
दुइजललाट अधिक मनकरा । शङ्कर देख माथ भुइँ धरा ॥
यहि नितदुइजजगतमहँदीशा । जगत जोहारे देइ अशीशा ॥
शशिजोहोयनहिंसरवरेछाजे ।होयसोअमावसछिपमनलाजे ॥
तिलक सँवारिजो चन्दन रचे । दुइजसांझ जानहुँ कच बँचे ॥
शशि परकरवट सारा राहू । नखतहिं भरा दीन्ह परदाहू ॥
पारसज्योति ललाटहिं ओती । दृष्टि जोकरे होयतेहिज्योती ॥
श्री जो रतन मांग बैठारा । जानहु गगनं टूट निशतारा ॥
दो० शशि औसूर जो निरमल, तेहिकीललाटकीरूप ।
निशदिनचलहिंनसरवर पावें, तपतपहोहिअलूप ॥
भौंहें धनुष श्याम जनु चढ़ा । पनच करे मानुष कहँ गढ़ा ॥
चन्द कि मूठ धनुष वहताना । जाकरबीजें बरनि त्रियवाना ॥
जासों हेर जाय सो मारी । गिरिवर टरहिंसो भौंहहिं टारी ॥
सेतुबन्ध जे धनुष बिडारा । वहू धनुष भौंहहिं सो हारा ॥
हारा धनुषं जो बेधा राहू । और धनुष कोइ गिने न काहू ॥
कित सो धनुष भौंह में देखा । लागबान तित आव न लेखा ॥

लाल १-५-६ कुरबान २ सूर्य ३-४-२२ बदन ७ फूल ८ शिर ९ माथा १० ज्यादा ११ चांद १२-१५-२१ बराबर १३-२५ नामनखत १४ रोशनी १६ पेशानी १७ निगाह १८ टीका १९ आसमान २० साफ़ २३ रात २४ गायब २६ निशाना २७ बिजुली २८ पलक के बाल २९ अर्जुन की कमान ३० ॥

तितबानहिं झांझरभा हियाँ[1] । जोअस मारसो कैसें जिया ॥

दो० सोत सोतँ[2] तन बेधा, रोम रोम सब देह ।

नसनसमहँभइसालँहि[3], हाड़हाड़भये बेहँ[4] ॥

नयन चित्र वे रूप चितेरे । कमलपत्रपर मधुकर[5] फेरे ॥

समुद्रतरंग[6] उलटहिं जनराती । डोलहिं औ घूमहिं मदमाती ॥

शरदचन्द[8] महँ खञ्जन[9] जोरी । फिरफिर लरहिं अहोर बहोरी ॥

चपल[10] विलोल डोल वह लागी । थिर[11] न रहहिं चंचल बैरागी ॥

निरख[12] अघाहिं न हत्या हते । फिरफिर श्रवणहिं लागेमंते[13] ॥

अंगश्वेत[14] मुखश्यामसो ओहीं । तिरछचलहिंखनसूधनहोहीं ॥

सुर[15] नर गन्धूब लालें[16] कराहीं । उलटेचलहिंस्वर्ग[17]कहँजाहीं ॥

दो० अस वै नयन चक्र दुइ, भँवर समुद्र उलथाहिं ।

जनु जिव घालहिं डोले, लै आवहिं लै जाहिं ॥

नासिक[18]खड्ग[19] हरी धनकीरू[20] । योगशृँगार जिता औ बीरू ॥

शशिमुखसौंहँ[21]खड्गगहिरामा । रावण सों चाहै संग्रामा ॥

दुहुँ समुद्र महँ जनु रचि बीरू[22] । सेतबन्ध[23] बांधा नलनीलू[24] ॥

तिलकफूल असनासिक तासू । औसुगन्धदीन्हींबिधि[25] बासू ॥

करनफूल फेरैं उजियारा । जनहुशरदशशिसोहिलबारा ॥

सोहिल चाहँ[26] फूल वह ऊँचा । धावहिं नखत न जाइ पहुँचा ॥

नजनो कैसो फूल वह गढ़ा । विकसँ[27] फूलसबचाहहिंचढ़ा ॥

दो० असवहफूलबासकाआगर, भा नासकौं[28] समुन्द ।

दिल १ सूराख २-३-४ भँवरा ५ लहर ६ लाल ७ पूर्णमासी का चांद ८ ममोला ९ चंचल १० क़ायम ११ देखना १२ कानसे सलाह १३ सफ़ेद १४ देवता १५ आरज़ू १६ आसमान १७ नाक १८ तलवार १९ तोता २० सामने २१ पेड़ २२ पुल २३ नामबन्दर २४ ईश्वर २५ ज्यादा २६ खिलना २७ नाक २८ ॥

जेति फूल वह फूलहिं, ते सब भये सुगन्द ॥

अधरे[1] सुरङ्गपान अस खीनी[2] । रांती[3] सुरँग अमी[4] रसभीनी ॥
आछहि बिहँसत[5] बोलसो रांती[6] । जनु गुलाल देखै बिहँसाती ॥
माणिकँ[7] अधर[8] दशन[9] जनुहीरा । बैन[10] रिशालखांड़मुख[11] बीरा ॥
काढ़ी अधरे[11] डाभसों चीरी । रुधिर[12] चुवै जो खावै बीरी ॥
दारे दशन[13] रसहिं रस कोली । रक्त भरी बहु सुरँग रँगीली ॥
जनु प्रभात राति रवि[14] रेखा । बिकसैबदन[15] कमल जनुदेखा ॥
अलकभुवङ्गिनअधरहिंआखा[16] । गहै जो नागिन सो रसचाखा ॥

दो० अधर[17] अधररस प्रेमका, अलक[18] भुवंगिन बीच ।
तब अमृत रस पावै, जब नागिन कहँ खींच ॥

दशन[19] श्याम पानहिं रँगपाके । विकसत[20] कमलफूलअतिताके ॥
ऐसि चमक मुख भीतर होई । जनुदाड़िम[21] औश्यामनकोई ॥
चमकहिंदशन[22] बिहँसजो नारी ।बीज[23] चमकजसनिश[24] अँधियारी ॥
श्वेतश्याम[25] अस चमकतदीठी । श्याम हीर दहुँ पांयत बैठी ॥
कैसोगढ़ीअसदशन अमोला । मारै बीज बिहँस जो बोला ॥
रतन भीजरँग मसि[26] भइश्यामा । ओही छात पदारथ[27] नामा ॥
कित वे दशन देख रँगभीने । लैगइज्योतिनयनभयेखीने[28] ॥

दो०दशनज्योतिहै नयनमग[29], हृदय[30] मांझ सो पैठ ।
प्रकट[31] जगत अँधियारजनु, गुप्त[32] वही में दीठ ॥

होंठ १-८-११-१७ पतला २ लाल ३-६ अमृत ४ हँसना ५ मूंगा ७ दांत ९-१३ मीठी बोली १० खून १२ भोरके समय लालसूर्य १४ मुँह १५ जुलफ़ों की नागिनी होठों तक पड़ी रहती १६ बाल १८ दांत १९-२२ खिलना २० अनार २१ बिज्जुली २३ रात २४ सफ़ेद सियाह २५ मिस्सी २६ लाल नाम उसी को सज़ावार २७ हत २८ राह २९ दिल ३० ज़ाहिर ३१ छिपा ३२ ॥

रसनो सुनहिजोकहिरसबाता। कोकिलबैनैं सुनतमनराती॥
अमृत कोप जीभ जनु लाई। पान फूल अस बात सुहाई॥
चातृकैं बैन सुनतहो शांती। सुने सो परे प्रेम मधुमाती॥
बिरवासूख पाव जस नीरू। सुनत बैन तस पलहिशरीरू॥
बोल सेवात बुन्द जनु परहीं। श्रवनैं सीप सुखमोती भरहीं॥
धनवै बैनँ जो प्राण अधारू। भूँखे श्रवणहिं दीन्ह अहारू॥
उन्हबैनैंहिंकी काहिनआसा। मोहहिंमिरगबिहँसतेहिश्वासा॥

दो० कण्ठं शारदा मोही, जीभ सरस्वती काहि।
इन्द्रचांदरवि[११] देवता, सबै जगत मुखचाहि॥

श्रवनैंसुनहिंजो कुन्दन सीपी। पहिरे कुण्डल सिंहलदीपी॥
चाँद सूर्य्य दुहुँदिशिचमकाहीं। नखतहिंभरीनिरखैं नहिंजाहीं॥
क्षणक्षणैंकरहिंबीजैं असकांपी। अमरमेघमहँ रहहिं न झांपी॥
सूक शनीचर दुहुँ दिश मतें। होहिं निरारैं न श्रवणहिहुतें॥
कांपत रहहिं बोल जोबैना। श्रवणहिंजनुलागहिंफिरनयना॥
जो जो बात सखिन सोंसुना। दुहुँदिशकरहिंशीश वै धुना॥
खूंटै दोउ ध्रुव तरैई खूटी। जानहु परहिं कचपेंची टूटी॥

दो० वेद पुराण ग्रन्थ जित, सबै सुनै सिख लीन्ह।
नादँबिनोदरागरसबंदक, श्रवणवहीबिधिदीन्ह॥

कमल कपोलैं वही अस छाजे। औरन काहि दई अस साजे॥
पुहुँप पंग रस अमी सँवारी। सुरँग गेंद नारँग रतनारी॥
पुनि कपोलैं[२४] बायें तिल परा। सोतिलबिरह चिनगके करा॥

जीभ १ आवाज़ २-७-६ लाल ३ पपीहा ४ पानी ५ कान ६-८-१२ गला १० सूर्य ११ देखना १३ हरसाइत १४ बिजुली १५ अलग १६ बाली १७ नखत १८ छोटे नखत जो चांद के आसपास होते हैं १९ गाने-बजाने का शौक ईश्वरने दिया २० गाल २१-२४ फूल २२ लाल २३ मानिन्द२५॥

जो तिल देख जाय जर सोई । बायें दृष्टि काह जन होई ॥
जानहुँ भँवर पद्म पर टूटा । जीव दीन्ह औ वहीं न छूटा ॥
देखत तिल नयनहिं गा काढ़े । और न सूझै सो तिल छांड़े ॥
तेहिपरअलकै मंजरी डोला । छुवैसोनागिनसुरँगकपोलों ॥

दो० रक्षा करै मयूर वह, नागिन हियँ पर लोट ।
केहिरेजगकोउछुइसकै, दुइपरवतकी ओट ॥

ग्रीव मयूर केर जस ठाढ़ी । कोड़े[11] फेर कँडेरे[12] काढ़ी ॥
धनि वह ग्रीव का बरनों करा । बांक तुरंग[13] जान गहि धरा ॥
घरन परेवाँ[14] ग्रीव उठावा । चहै बोल तमचोर[15] सुनावा ॥
ग्रीव सुराही के अस भये । अमी पियाला कारन नये ॥
पुनि तेहि ठांव[16] परी त्रयरेखा । तेहिसो ठांउ होय जो देखा ॥
कनक[19] तार सोने की करा । साज कमल तेहि ऊपर धरा ॥
सूर्य्यकिरनहतग्रीव[20] निरमली । देइ पैग[22] जात हियँ[23] चली ॥

दो० नागिन चढ़ी कमलपर, चढ़के बैठ कमंठ ।
करैं पसार जो कालकहँ, सो लागै वह कंठ ॥

कनकदंड[25] दुइ बनी कलाई । डांड़ी फेर कमल जनु लाई ॥
चँदन गाभकी भुजा सँवारी । जन सो बेल कमल पौनारी[26] ॥
तेहि डांड़ी सँग कमल हतोरी । एक कमल की दोनों जोरी ॥
सहजहिं जानहुँ मेहँदी रची । मुक्ताहल लीन्हे जनु घुँघुची ॥
करपल्लव जो हथोरिन साथा । वै सब रक्त भरीं तेहिं हाथा ॥

निगाह १ कमल २ बाल ३ लालगाल ४ निगहवानी ५ मोर ६ छाती ७ दुनिया ८ तथा छाती ९ गर्दन १०–२० खराद ११ खरादी १२ घोड़ा १३ कबूतर १४ चिड़िया १५ जगह १६–१८ तीन लकीर १७ सोना १९ साफ़ २१ क़दम २२ दिल २३ जान से गुज़र जाय २४ सोने की दण्डी २५ नाल २६ मोती २७ अंगुली २८ ॥

देखत हियो काढ़ जिव लेई। हिया काढ़ के जान न देई॥
कनकैं अँगूठी औ नग जड़ी। वह हत्यारिन नखतैंहिं भरी॥
दो० जैसी भुजा कलाई, तेहि विधि जाय न भाख।
कङ्कन हाथ होय जेहि, तेहि दर्प्पन का साख॥
हियोंथार कुचैं कनककचूरा। जानहुँ दोऊ श्रीफलँ जूरा॥
एक पाटँ वे दोनों राजा। श्यामछत्र दूनहुँ शिर छाजा॥
जानहु दुइलड्डू इकसाथा। जगँ भा लड्डू चढ़ै न हाथा॥
पातर पेट आहि जनु पूरी। पान अधार फूल अस गोरी॥
रोमावलि तेहि ऊपर भूमा। जानँहुँ दोउ शाम औ रूमा॥
अलकैं भुअंगिनितेहिपरलोटा। हियें करएकखेल दुइ गोटा॥
बानँ पुकार उठे कुचैं दोऊ। नाग शरन वह पाव न कोऊ॥
दो० कैसहिं नवहिं न नाये, यौवन गर्ब्बँ उठान।
जो पहिले कैंर लावे, सो पावे रतँ मान॥
भृंगँ लंकँ जनु मांझनलागा। दुइखँडनलिनिंमांझजनुतागा॥
जब फिर चलै देख वह पाछे। अप्सैर इन्द्रकेर जनु काँछे॥
जोह चलै मन भा पछताऊ। अवहूँ दृष्टि लाग वह भाऊ॥
वही गवन छिप अप्सर गई। भई अलोपँ ना परगटँ भई॥
हंस लजाय समुद्र कहँ खेली। हँस्ती लाज धूर शिर मेली॥
जगत में स्त्री देखी मोहूँ। उदय अस्त नारि ना कहूँ॥
महिमण्डल तौ ऐसौ न कोई। ब्रह्मँमण्डल जोहोय तो होई॥

दिल १ सोना २ तथा नाग ३ सोना ४ छाती ५-१२-१५ सोनेकी कटोरी ६ नारियल ७ तखत ८ दुलिया ९ नाममुल्क १० चाल ११ नागिन १२ तीर १४ गरूर १६ हाथ १७ सुर्ख़ १८ गँभीरी १९ कमर २० कोकाबेली २१ परी २२ सारीपहिने २३ निगाह २४ गायब २५ ज़ाहिर २६ हाथी २७ स्वर्गलोक २८॥

दो० बरनों नारि जहां लग, दृष्टि झरोखें आय।
औरजोअहैअदृष्टिधन, सोमोहिंबरनिनजाय॥

काधन कहों जैसो सुकुमारा। फूलके छुये होय बिकरारा॥
पखुरी काढ़ैं फूलत सेती। सोई डासी सोरैं सपेती॥
फूल समूचा रहै जो पावा। व्याकुलहोय नींदनहिंआवा॥
सहै न क्षीरैं खांड़ औ घीव। पान अधार रहै तन जीव॥
नस पानन की काढ़े हेरी। अधरनैं गड़ै फांस वहकेरी॥
मकरिक तार ताहिकर चीरूं। सोपहिरे जरजाय शरीरूं॥
पालँग पांव कि आछे पाटा। नेतैं बिछाय चलै जो बाटा॥

दो० कहां नयन जो राखों, पलक न लाऊँ ओट।
प्रेमक लुब्धौ पावै, काहि सो बड़ का छोट॥

जो राघव धन बरन सुनाई। सुना शाह मुरछा गत आई॥
जनु मूरति वह परगट भई। दरशदेखाय ताहि छिपगई॥
जो जो मँदिर पद्मिनी लेखे। सुनासोकमल कुमुदैंजोदेखे॥
होय मालती धँनें चित पैठी। औरपुहुपैंकोइआव न दीठी॥
मनहोय भँवर भयो वैरागा। कमलछांड़चितऔरन लागा॥
चांदकी रङ्ग सूर्य्य जस राता। और नखत सो पूछन बाता॥
तब अँलि अलाउदींजगसूरूं। लेऊँ नारि चित्तौर कै चूरू॥

दो० जोवहमालतिमानसर, अलिनैं मलीन्हीं जात।
चित्तौर महँ जो पद्मिनी, फेरवही कहु वात॥

ये जगसूरें कहूँ तुम पाहां। और पांचनग चितौर माहां॥

नज़र १ नज़र में नहीं २ बिछाना ३ बिछौना ४ दूध ५ होंठ ६ कपड़ा ७ बदन ८ तखत ९ ज़ेरअन्दाज़ १० आशिक़ ११ ज़ाहिर १२ कोकावेली १३ पद्मावत १४ फूल १५ लाल १६ भँवर १७–१९ सूर्य १८–२१ ताम्मुल २०॥

एक हंस है पंख अमोला। मोती चुनै पदारथ बोला॥
दूसर नग जो अमृत बसा। सब बिष हरै जहांलग डसा॥
तीसर पाहनपरस बखाना। लोहछुये होय कञ्चन बाना॥
चौथ अहै सांदूर अहेरी। जेहि बन हस्ति धरै सब घेरी॥
पांचों है सो तहां लागना। राजपंखं पंखी गरजना॥
हरनिरोफ़ कोइवाचन आगा। जैस शचानं तैस उड़भागा॥

दो० नगअमोल असपांचों, मान समुद्र वह दीन्ह।
इसकन्दर नहिं पाई, जोरे समुद्र धस लीन्ह॥

पान दीन्ह राघव पहिरावा। दश गजमस्त घोर सो पावा॥
अरु दूसरि कङ्कन की जोरी। रतनज़ोलागवह तीसकरोरी॥
लाख दिनारें देवाई जेंवा। दारिद हरा समुद्रकी सेंवा॥
हों जेहि दिवसें पद्मिनी पाऊँ। तोहि राघव चित्तौर बैठाऊँ॥
पहिले कर पांचों नग मूठी। सोनगलेउँजोकनकैं अँगूठी॥
सुरजा वीर पुरुष बरयारू। नाजनं नाग सिंह असवारू॥
दीन्हपत्रिलिख बेगं चलावा। चित्तौरगढ़ राजापहँ आवा॥

दो० राजैं पत्रि बँचावा, किरपां लिखी अनेक।
सिंहलकी जो पद्मिनी, पठैदेव तोहि वेग॥

खण्डचौंतिसवां लड़ाई राजा और बादशाह॥

सुन अस लिखा उठाजरराजा। जोंनोदेवतड़प घनं गाजा॥
का मोहिं सिंह देखावस आई। कहों तो शारदूलं धरखाई॥

लाल १ पारसपत्थर २ सोना-३ शेरखुर्द ४-२३ हाथी ५ सीमुर्ग ६ नाम जानवर ७ शिकरा ८ खिलअत ९ हाथीमस्त १० अशरफ़ी ११ दक्षिणा १२ खिदमत १३ दिन १४ राज़पर बैठाऊँ १५ सोना १६ ज़बरदस्त १७ कोड़ा १८ ज़ल्द १९ मेहरबानी २० बादल २१ बिज्जुली २२॥

भलहिंजोशाहभूमिपति भारी। मांग न कोऊपुरुपकी नारी॥
जो सो चक्रवे ताकहँ राजू। मन्दिर[3] एकअपनकहँ साजू॥
अप्सरैं जहां इन्द्र पै आवै। और जो सुनै न देखै पावै॥
कंसका राज जिता जो गोपी। कान्हैं न दीन्ह काहुकहँगोपी॥
को म्वहिंते अस शूर[6] अगारा। चढ़ै स्वर्ग धुसपरै पतारा॥

दो० का तोहिं जीव मराऊं, सकत आनका दोष।
जोतसब्बुझैनसमुद्रजल, सोबुझाय कितओस॥

राजा अस न होहु रिसराता। सुनहु न जूड़ नजर कहुबाता॥
मैं हों यहां मरे कहँ आवा। बादशाह अस जानपठावा॥
जोतोहिभारन औरहिलीन्हा। पुनिसोकाले उतरंवहिदीन्हा॥
बादशाह कहँ ऐस न बोलू। चढ़ै तौ परै जगत महँ डोलू॥
सूरहि[13] चढ़त लाग नहिं बारा। दहक आग तेहि स्वर्गपतारा॥
परबत उड़हिं सूरके फूके। यहि गढ़ क्षारहोइ यक भोंके॥
धसै सुमेरु[16] समुद्र गा पाटा। भूमी डोल शेप फण फाटा॥

दो० तासों कौन लड़ाई, बैठ न चितौर खास।
ऊपर लेहु चँदेरी, का पद्मिन इक दास॥

जो पै धरनि[18] जाय घरकेरी। का चितौर का राज चँदेरी॥
जेईलेई घर कारनं कोई। सो घरदेइ जो योगी होई॥
रनथंभोर[20] हों नाथ हमीरू[21]। कल्प[22] माथ जे दीन्ह शरीरू[23]॥
होंसो रतनसेन शकबन्धी। राहु[25] वेध जीते सरवन्धी॥

ज़मीन का मालिक १ तमाम दुनिया का राजा २ क़िला ३ परी ४ श्रीकृष्णचन्द्र५शूरमा ६ आसमान ७ पाप ८ प्यासबुझे ९ लाल १० दुश्मन ११ जवाब १२ सूर्य १३ नामबाजा १४ धूर १५ नामपहाड़ १६ ज़मीन १७ औरत १८ जो कोई किसी की औरत लैले १९ नामक़िला २० नामराजा २१ शिरकटाना २२ बदन २३ मशहूर २४ निशानाजीत द्रौपदी ब्याही २५॥

हनुमतसरसे भारे जें कांधा। राघवे[2] सम समुद्र जें बांधा॥
बिक्रमे[3] सरस कीन्ह जें शाका। सिंहलद्वीप लीन्ह जो ताका॥
जोअसलिखाभयोनाहिंओछा। जियत सिंहकी गहिको मोछा॥
दो० द्रव्यलेइ तो मानों, सेवकरों गहि पांव।
चाहै नारी पद्मिनी, सिंहलद्वीपहि जांव॥
बोलन राजा आप जनाई[4]। लीन्हउदयगिरि[5] औरछितांई[6]॥
सप्तद्वीपे[7] राजा शिर नावहिं। सेना[8] चली पद्मिनीआवहिं॥
जाकर सेव करै संसारा। सिंहलद्वीप लेत कित बारा॥
जनिजानेसियहगाढ़ंतोपाहीं। ताकर सबै तोर कुछ नाहीं॥
जेहिदिनआय गढ़ीको छेकी। सरबसे लेइ हाथको टेकी॥
शीशें भार खेहें के लागे। सो शिरभार होयदुख आगे॥
सेवाकर जु जियन तोहिंभाई। नाहित फेर माखेंहोय जाई॥
दो० जाकर जीव दीन्ह पै, अगमन शीशें जोहारि।
तेहि करणी सब जानै, काह पुरुष का नारि॥
तुरुकें जायकहि मरै न धाई। हो ये इसकन्दरें की नाई॥
सुन अमृत कजेंलीबन धावा। हाथ न चढ़ा रहा पछतावा॥
औतेहि दीपपतंगें होयपरा। अगनी भाड़ पांव दै जरा॥
धर्ती लोह स्वर्गें भा तांबा। जीवदीन्ह पहुँचत करें लांबा॥
यह चितौरगढ़ सोइ पहारू। सूरें उठै होय दहक अँगारू॥
जेंवर इसकन्दरें सरकीन्हीं। समुद्र लियोधसजसवेलीन्हीं॥

बराबर १ बोझ २ श्रीरामचन्द्रजी ३ राजा विक्रमादित्य ४ अपनी तारीफ़ ५ नाममुल्क ६–७ सातों मुल्क ८ फ़ौज ९ क़िलाको घेरे १० सब ११ रोकना १२ शिर १३—१७ धूर १४ गुस्सादिलो १५ पहिले १६ किया हुआ १८ बादशाह १९ नाम बादशाह २० जहां अमृत है २१ पांखी २२ आसमान २३ हाथ २४ सूर्य २५ जैसे सिकन्दर ने दुःख पाया २६॥

जो चढ़ै[१] आनीजाय जिताई । तब का भै सो जीत जिताई ॥

दो० महूँसमुझ यहि आगमनै[२], सजराखा गढ़साज ।
काल्ह होय जेहि आवन, सोचलआवै आज ॥

शुरजाँ[३] पलट शाहपहँ आवा । देव न मानै बहुत मनावा ॥
आग जु जरै आग पै सूझा । जरत रहै न बुझाये बूझा ॥
ऐसे माथ न नावै देवा । चढ़ै सुलेमाँ[४] मानै सेवा ॥
सुनके अस रातौं[५] सुलतानू । जैसे तपै जेठ कर भानूं[६] ॥
सहसँ[७] किरानरोषँ[८] तस भरा । जेहि दिशिदेखैतेहिदिशिजरा ॥
हिन्दू देव काह बरै[९] खाँचा । सरकैनै[१०] आपआगसों बांचा ॥
यहिजेग[११]आगजुभरमहिंलीन्हा । सोसँगआग दुहूँजगकीन्हा ॥

दो० रनथँभोरै[१२] जसजरबुझा, चितौरपरै सो आग ।
फेर बुझाये ना बुझै, जरै दिवसँ[१३] के लाग ॥

लिखी पत्रि चारहुँदिशिधाये । जहँ तहँ उमरा बेगँ[१४] बुलाये ॥
दुन्दै[१५] घाव भा इन्द्र सकाना । डोला मेरु[१६] शेषँ[१७] अकुलाना ॥
धर्ती डोल कूर्म[१८] खरभरा । महनामथँ[१९] समुद्र महँ परा ॥
शाह बजाय चढ़ाजगजाना । तीसकोसभा पहिल पयानँ[२०] ॥
चितौर सौँहैँ[२१] बारगह तानी । जहँलगसुना कूचसुलतानी ॥
उठसरवानँ[२२] गगनँ[२३] लहि छाई । जानहु रातै[२४] मेघ दिखाई ॥
जो जहँ तहँ सोता असजागा । आयजुहारकटकै[२५] सब लागा ॥

दो० हस्ति[२६] घोर औदरँ[२७] पुरुष, जहँ तक बेसरा[२८] ऊँट ।

जब बादशाह आयेंगे १ पहिले २ नामपहलवान ३ नामबादशाह ४ लाल ५ सूर्य ६ हज़ार ७ गुस्सा ८ घमण्ड ९ भागना १० दुनियामें आगसे जलाया जायगा ११ नाम क़िला १२ दिन १३ जल्द १४ नामबाजा १५ नामपहाड़ १६ नामराजासाँप १७ कछुवा १८ उलटपलट १९ कूच २० सामने २१ खेमा २२ आसमान २३ लाल २४ फ़ौज २५-२७ हाथी २६ खच्चर २८ ॥

जहँ तहँ लीन्ह पलाने, कटक[1] सुरहें[2] अस छूट ॥
चले सहस[3]बेसक सुलतानी । तीष[4]तुरंग बांक कनकानी ॥
पखैरी[5] चली जो पाँतिहिं पाँती । बरण बरण औ भाँतिहिं भाँती ॥
काले[6] कुमेते[7] नील[8] सपेती[9] । खिंग[10]कुरंग[11]बीज[12] दोर[13] कतीती ॥
अबलक[14] अबरस[15] लखीशिराजी[16][17] । चौधर[18] चाचसमुँदसबताजी ॥
किरमज[19] नुकरा[20] जरदो भले । रूपकगन[22] बोलसर[23] चले ॥
पँचकल्यान[24] संजाव[25] बखानी । महि[26] सायरसबचुन२आनी ॥
मुशकी[27] औहिरमजी[28] इराकी[29] । तुरंकी[30] कहीभुथार[31] बुलाकी[32] ॥
दो॰ शिर औ पूँछ उठाये, चहुँदिशि श्वास उनाहिं ।
रोष[33] भरे जस बावरे, पवन की बाँस[34] उड़ाहिं ॥
लोहे सार[35] हस्ति[36] पहिराये । मेघश्याम[37] जनु गरजत आये ॥
मेघहि चाह अधिक[38] वेकारे । भयो असूझ देख अँधियारे ॥
जस भादों निशि[39] आवैदीठी । स्वर्ग[40] जाय हरके तेहिपीठी ॥
सोरहलख हस्ती[41] जब चाला । परवत सरस चलै जगहाला ॥
चले गैंड़ माते मद आवहिं । भागहिं हस्ति[42] गन्धजोपावहिं ॥
ऊपरजाय गगन[43] शिर घिसा । औ धर्ती तरिकहँ धस मसा ॥
भा भूचाल चलत गजगानी । जहँ पग धरहिं उठै तहँ पानी ॥
दो॰ चलत हस्ति जगकाँपा, चाँपा शेष पतार ।
कूर्म[44] जे धर्ती ले रहा, बैठ भयो गजभार ॥
चले सो उमर अमीर बखाने । का बरणौं जस उनके बाने ॥

फ़ौज १ टीड़ी २ हज़ार कुरसी ३ तेज़ घोड़ा ४ निशान ५ घोड़ों की ज़ात ६ से २५ तक सब दुनिया २६ घोड़े की ज़ात २७ से ३२ तक गुस्सा ३३ डर ३४ भूल लोहे की ३५ हाथी ३६-४१-४२ काले बादल ३७ बहुत ३८ रात ३९ आसमान ४०-४३ कछुवा जिसके ऊपर ज़मीन है ४४ ॥

खुरासान[1] औ चला हरेऊ[2] । गोर[3] बँगाल[4] रहा नहिं केऊ ॥
रहा न रूम[5] शाम[6] सुलतानू । काशमीर[7] ठट्टा[8] मुलतानू[9] ॥
जहँतक बड़बड़ तुरुवा जाती । मांडोवाली अरु गुजरांती ॥
पटना[11] उड़ीसा[12] के सब चले । ले गजहस्ति जहांलग भले ॥
कमरू[13] कामत[14] औ पँड़वांई[15] । देवगढ़[16] लेत उदयगिरि[17] आई ॥
चला सो परवत और कमांऊँ । घिसयांनगर[18] जहांलग नाऊँ ॥

दो० उदयअस्त[19] लहिदेश जो, को जाने तेहिनाउँ ।
सातोंद्वीप[20] नवो खँड, जुरे आय इक ठाँउँ[21] ॥

धनिसुलतान जेहिक संसारा । वही कटक[22] अस जुरी अपारा ॥
सबै तुर्क शिरताज बखांने[23] । तबल बाज़ औ बांधे बाने ॥
लाखन मीर बहादुर जंगी । चित्र[24] कमानी तीर खदंगी[25] ॥
जीमा खोल राग सो मढ़े[26] । लेज़म घाल इराकेंहि[27] चढ़े ॥
चमकै पखरी[28] सारिसँवारी । दरपणचाँहि अधिक उजियारी ॥
बरण बरण औ पाँतिहिंपाँती । चलीसो सेना[30] भाँतिहिंभाँती ॥
बीहर बीहरै[31] सब की बोली । विधि[32] यहिकहांकहांसोखोली ॥

दो० योजन[33] सत्त सत्तकर, इक इक होय पयान[34] ।
आगिलहिंजहांपयानहोय, पछिलहिंतहांमिलान ॥

डोले गढ़ गढ़पति[35] सब कांपे । जीवन पेट हाथ हियें[36] चांपे ॥
कांपा रनथँभोर[37] डर डोला । तरवर[38] गयो भुराय तँबोला ॥
चूनागढ़ औ चंपा तेरी[41] । कांपा मौड़ो लेत चँदेरी[42] ॥

नाम मुल्क १ से १६ तक पूर्व से पश्चिमतक २० सातों मुल्क २१ जगह २२ फ़ौज २३ बयान २४ तसवीर २५ नामतीर २६ मूठ ताँत से मढ़ी २७ घोड़ा २८ निशान २९ ज्यादा ३० फ़ौज ३१ अलग ३२ ईश्वर ३३ कोस ३४ कूच ३५ क़िलादार ३६ दिल ३७ नामक़िला ३८ पेड़ ३९ नाममुल्क ४० से ४२ तक ॥

ग्वालियरगढ़ मह पंरी मथानी। औ कन्धारै मथाहोय पानी॥
कालिंजरै महँ परा भगाना। भाग उजेगढ़ रहा न थाना॥
कांपा बांदा नरदुरौनी[6]। डररुहतासँ विजयेगिरिमानी॥
कांप उदयगढ़ देवगढ़ डेरा। तबसो छिपाय आपकहँ घेरा॥
दो० गढ़ गढ़पति जहँतकसबै, कांपडोल जसपात।
काकहँ बोल सौंहँ[11] भा, बादशाह करघात॥
चितौर गढ़ औ कंभलनेरी। साजे दोनों जैसि सुमेरी[12]॥
दूतन कहा आय जहँ राजा। चढ़ा तुर्क[13] आवै दरै साजा॥
सुनि राजा दौड़ाई पाँती। हिन्दूनाउँ जहांलग जाती॥
चितौर हिन्दुनकर अस्थानों। शत्रु[16] तुर्कहठकीन्ह पयानों॥
आदि समुद्र रहे ना बांधा। मैं हों मेड़ भार शिर कांधा॥
पुरवहु साथ तुम्हार बड़ाई। नाहित सबकहँ मार चढ़ाई॥
जौलहि मेड़ रहै सुख साखा। टूटहिं बारै जायनहिं राखा॥
दो० सती जो जियमहँ सतधरै, जरै न छोड़े साथ।
जहँ बीड़ा तहँ चून है, पान सुपारी काथ॥
करत जो रहे शाहकी सेवा। तिनकहँ पुनिअसभावपरेवा॥
सबहोय एकमंते जु सिधारे। बादशाह कहँ आन जुहारे॥
है चितोर हिन्दुन की माता। गाढ़े परे तजजाये न नाता॥
रतनसेन है जूनहरै साजा। हिन्दुनमांझ आहि बड़राजा॥
हिन्दुन केर पतंग कर लेखा। दौर परहिं अग्नी जो देखा॥
कृपा करहु तौ करहु समीरा[26]। नाहित हमहिं देहु हँस बीरा॥

नाममुल्क १ से १० तक सामने ११ नाम पहाड़ १२ बादशाह १३ फ़ौज १४ मकान १५ दुश्मन १६ कूच १७ बोझ १८ दरवाज़ा १९ दूत २० एकसलाह २१ मुश्किल २२ छोड़ना २३ मौत का सामान २४ मेहरबानी २५ माफ़ २६॥

पुनिहमजाहिं मरहिं वह ठाँऊँ । मेट न जाय लाजकर नाऊँ ॥

दो० दीन्ह शाह हँस बीरा, और तीन दिन[1] बीचै[2] ।
तेहिं शीतलको[3] राखे, जिन्हें अगिनमहँ मीचै[4] ॥

रतनसेन चितोर महँ साजा । आय बजाय बैठ सब राजा ॥
तोमर[5] बैस[6] पनवार[7] सवाँई । औगोहलौत[8] आयशिरनाई ॥
क्षत्री[10] औबचवार्ने[11] बघेली[12] । अगरवार[13] चौहानै[14] चँदेली[15] ॥
गहरवार[16] परहार[17] सूकरे[18] । कलहँस[19] औ ठकुरायजुरे[20] ॥
आगे ठाढ़ बजावहिं ढाढ़ी । पाछे ध्वजा मरण की गाढ़ी ॥
बाजहिं संग शंख औ तूरा[21] । चन्दन खोरी[22] भरे सेंदूरा ॥
सज संग्राम[24] बांध सब शाका । छांड़ा जियन मरणसबताका ॥

दो० गगनै[25] धर्ति जो टेकौं[26], तेहि कागरू पहार ।
जौलहिजिवकायाँमहँ[27], परैसो अँगवे[28] भार ॥

गढ़ तस सजा जो चाहै कोई । बरष सातलग खांग[29] न होई ॥
बांकीचाहँ[30] बांकगढ़ कीन्हा । औसबकोट[31] चित्र[32] समलीन्हा ॥
खराड खराड चौखराड सँवारे । धरे विषम गोलन के मारे ॥
ठांवहिंठांव[33] लीन्ह सब बांटी । रहा न बीचजोसँचरै[34] चांटी ॥
बैठे धानुक[35] कँगुरन कँगुरा । भूमि[36] नआंटीअँगुरिनअँगुरा ॥
औ बांधे गढ़ गढ़मत[37] वाँरे । फाटे भूमि[38] होहिं जो ठारे ॥
बिच बिच बुर्ज बने चहुँफेरी । बाजे तबल[39] ढोल औभेरी[40] ॥

दो० भागदराज सुमेरु[41] जस, स्वर्ग[42] छुवैपै चाह ।

जगह १ तीनदिन की मोहलत २ ठण्डा ३ मौत ४ राजपूतों की ज़ात ५ से २० तक नामबाजा २१–२२–३६–४० कटोरी २३ लड़ाई २४ आसमान २५ उठाना २६–२८ बदन २७ कमी २९ पेंचदार खाई ३० क़िला ३१ तसवीर ३२ जगह ३३ चींटी न जासके ३४ चौकीदार ३५ ज़मीन ३६–३८ हाथी मस्त ३७ नाम पहाड़ ४१ आसमान ४२ ॥

समुद्र न लेखें लावै, गंग सहस मुखनाह।
बादशाह हठ कीन्ह पयाना। इन्द्र भँडार डोल भयमाना॥
नव्वे लाख सवार जुचढ़ा। जो देखा सो लोहे मढ़ा॥
बीस सहस घुमरहहिंनिशाना। गुलें कञ्चन फेरैं असमाना॥
वैरख ढाल गगन का छाई। चला कटक[6] धर्ती न समाई॥
सहस पांति गजमत्त[7] चलावा। घुसतअकाशधसतभुइँआवा॥
वृक्ष उचार पेड़ि सो लीन्ही। मस्तक झार तारमुखदीन्ही॥
चढ़हिं पहाड़हिं भयगढ़लागू। बनखँडखोह न देखहिं आगू॥
दो० कोउ काहू न सँभारे, होत आव दर चांप।
धर्ति आप कहँ कांपै, स्वर्ग आपकहँ कांप॥
चलीं कमानें[10] जेहिमुखगोला। आवहिं चलीधर्ति सबडोला॥
लागे चक्र[11] वज्रके गढ़े। चमकहिं रथ सोने के मढ़े॥
तेहिपर विषम[12] कमानें धरीं। सांचे अष्टधातु की भरीं॥
सौसौ मनै पियहिं वै दारू[13]। लागहिं जहां सो टूट पहारू॥
माती रहहिं रथहिं पर परीं। शत्रुन[14] कहँ सौहैं[15] उठ खरीं॥
जो लागै संसार न डोलहिं। होयभुइँकम्पजीभजो खोलहिं॥
सहस[16] सहसहस्तिन[17]की पाँती। खांचहिंरथडोलहिं नहिंमाँती॥
दो० नदी नार सब पानी, जहां धरैं वै पाँव।
ऊँच खाल वनबीहर, होत बराबर आव॥
कहों शृंगार जैसि वै नारी। दारू पियहिं जैसि मतवारी॥
उठै आग जो छाँड़हिंश्वासा। धुवां सो लागै जायअकासा॥

हज़ार १ कूच २ हज़ार ३ चींटी ४ आसमान ५ फ़ौज ६ हाथीमस्त ७ जड़ ८ आसमान ९ तोपें १० पहिया ११ भारी १२ तथा बारूद १३ दुश्मन १४ सामने १५ हज़ार १६ हाथी १७॥

सेंदुर आग शीश उपराहीं । पहियातरवन चमकत जाहीं ॥
कुचं गोलादुइ हिरदे लाई । अञ्चलध्वजा रहहिं छिटकाई ॥
रसनों लूक रहहिं मुखखोलें । लङ्का जरै सो उनके वोलें ॥
अलकें जँजीरबहुतगयेंबांधे । खींचहिं हस्ती टूटहिं कांधे ॥
बीर शृँगार दोउ इकठाऊँ । शत्रुशाल गढ़भंजन नाऊँ ॥

दो० तिलक पलीता माथे, दशनें वज्रके बानें ।
जेहिहेरहिं तेहिमारहिं, चुरकुसकरैंनिदानें ॥

जेहिं जेहिंपंथ चलविआवहिं । आवहिंजरतआगतसलावहिं ॥
जरहिंजोपरबतलागअकासा । वनखँडधकहिंपलाशैंकोपासा ॥
गैंड़ा गयँदं जरे भे कारे । आवें मृगी रोजें झनकारे ॥
कोयलनाग काग औ भँवरा । औरजुजरे तिनहिंको सँवरा ॥
जरा समुद्र पानि-भा खारा । यमुना श्यामभई तेहि झारा ॥
धूमें श्यामअंत्रक्षें भे मेघों । गगनें श्यामभा धुवांजु मेघा ॥
सूरज जरा चांद औ राहू । धर्ती जरी लङ्क भा दाहू ॥

दो० धर्ती स्वर्ग असूझभा, तवहुँ न आग बुझाय ।
उठहिं बज्र जर डंगें वे, धूमें रही जगछाय ॥

आवै डोलत स्वर्ग पतारू । कांपे धर्ति न अँगवे भारू ॥
टूटहिं परपत मेरु पहारा । होयहोयधूरउड़हिं होयक्षारों ॥
सतखँड धर्ती भइ खँडखण्डा । ऊपर अष्ट भये ब्रह्मण्डा ॥
इन्द्र आय तेहि खँडहोयछावा । चढ़सबकटकैं घोर दौड़ावा ॥

शिर १ छाती २ सीना ३ ज़बान ४ वाल ५ गरदन ६ हाथी ७ जगह ८ दुश्मन को मारनेवाली ९ क़िला तोड़नेवाली १० दांत ११ तीर १२ देखना १३ बहुत १४ ढांख १५ हाथी १६ नाम जानवर १७-१८ धुवां १९-२६ बीच २० बादल २१ आसमान २२-२४-२७-३१ जलना २३ ढेर २५ बोझ न उठाना २८ नाम पहाड़ २९ धूर ३० फ़ौज ३२ ॥

जेहिपंथ[1] चल ऐरावत[2] हाथी। अबहिंसोडगरगगन[3]महँआती॥
औ जहँ जामरही वह धूरी। अबहुँ बसे सो हरिचँद पूरी॥
गगन में छिपा खेह[4] तसछाई। सूरज छिपा रयनिहोय आई॥

दो० गयोसिकंदरकजलिबन, भयो सो तस अँधियार।
हाथ पसार न सूझै, बरै लाग मसयार॥

दिनहिं रात अस परीअचाका। भा[5]रबि अस्तचन्द्ररथ हांका॥
मँदिरन[6] जगत[7] दीपपरगसी। पंथक[8] चलत बसेरे बसी॥
दिनके पंख जरत उड़ भागे। निशि[11] केनिसचरेसबलागे॥
कमल सुकेता कुमुदिनि[12]फूले। चकई बिछुरा चकमन भूले॥
चला कटक[13] अस चढ़ा अपूरी। अगलहिंपानी पिछलहिंधूरी॥
महि[14] उजड़ीसायरसबसूखा। बनखँड[16] रहे न एको रूखा॥
गढ़ गिरि[18] फूटभयेसब माटी। हस्ति[19] हेरान तहांको चांटी[20]॥

दो० खेह[21] उड़ानी जाहिघर, हेरत फिरत सो खेह।
पियआवाहिंअबदृष्टितोहिं, अंजननयनउरेह॥

यहिविधिहोतपयान[23] सोआवा। आय शाह चितौर नियरावा॥
राजा राउ देख सब चढ़ा। आव कटक[24] सब लोहे मढ़ा॥
चहुँदिशिदृष्टि[25] परी गजजूहा[26]। श्यामघटा[27] मेघा जस रूहा॥
औरो उरु[28] कुछ सूझ न आना। स्वर्ग[29]लोकघुमरहाहिंनिशाना॥
चढ़ धौराहर[30] देखहिं रानी[31]। धनतुइँ अस जाकर सुलतानी॥
के धन रतनसेन तुइँ राजा। जाकहँतुर्ककटक[32] यहिसाजा॥

राह १ नाम हाथी २ आसमान ३ खाक ४ रात ५-११ सूर्य ६ मकान ७ दुनियां ८ रोशन ९ मुसाफ़िर १० कोकाबेली १२ फ़ौज १३-२४-३२ ज़मीन १४ तालाब १५ जंगल १६ क़िला १७ पहाड़ १८ हाथी १९ चींटी २० धूर २१ निगाह २२-२५ कूच २३ हाथियोंका हलक़ा २६ काली घटा छाई २७ वार पार २८ आसमान २९ महल ३० पद्मावत ३१॥

बैरख ढालकेर परछाहीं । रयेनि होत आवै दिनमाहीं ॥

दो० अन्धकूप भा आवै, उड़त आव तसछारे ।
ताल तलावा पोखर, धूर भरी ज्योंनार ॥

राजै कहा कीन्ह जस करना । भयोअसूझसूझ अब मरना ॥
जहँलग राज साजसबहोऊ । ततखन[३] भयो सँजोउसँजोऊँ ॥
बाजे तबल अकोट जुझाऊ । चढ़ा कोप सब राजा राऊ ॥
करहिंतुखारें[५] पवनसों रीसां[६] । कन्ध ऊँच असवार न दीसा ॥
का बरणों अस ऊँच तुखारा । दुई बेर पहुँचे असवारा ॥
बांधे मोरछांहँ शिर सारहिं । भीजहिं पूँछ चँवरजनुढारहिं ॥
रांग सँधाहाँ पहुँचो तोपा । लोहे सार पहिर सब कोपा ॥

दो० तैसे चँवर बनाये, औ घाले गलझम्पं ।
बांध सेतं[१०] गजगाहें[११] तहँ, जो देखे सोकम्प ॥

राज तुरङ्गमं[१२] बरनों काहा । आनी छोर इन्द्र रथवाहा ॥
ऐसो तुरङ्गम परी न दीठी[१३] । धनअसवाररहहिं तेहि पीठी ॥
जात बालका समुद्र थहाये । श्वेतं[१४] पूँछ जनु चँवर बनाये ॥
बरण बरणपखुरी[१५]अति[१६]लोनी[१७] । जानहुँ चित्र[१८] सँवारे सोनी ॥
माणिकं[१९] जड़े शीशं[२०] औ कांधे । चँवर लाग चौरासी बांधे ॥
लागे रतनं[२१] पदारथ हीरा । बरहिंदिनाहिंदीपकचहुँ फेरा ॥
चढ़हिं कुँवर मनकरहिं उछाहूँ[२२] । आगे घाल गिनै नहिंकाहू ॥

दो० सेंदुर शीश चढ़ायें, चन्दन खौरें देह ।
सो तन काह लगाई, अन्त होय जो खेहं[२३] ॥

रात १ खाक २ तुरन्त ३ सामान ४ घोड़ा ५ गुस्सा ६ मोरछल ७ तेज-चालाक ८ गलखोद ९ सफ़ेद १० नाम ज़ेवर ११ घोड़ा १२ नज़र १३ सफ़ेद १४ रङ्गबरङ्ग निशान १५ बहुत १६ खूबसूरत १७ तसवीर १८ जवाहिरात १९-२१ शिर २० खुशी २२ धूर २३ ॥

गर्जें मैंमत पुखरी नृपबारा। देखै जानहुं मेघ पहारा ॥
श्वेतगयन्द पीत औ राते। हरे श्याम घूमहिं मदमाते ॥
चमकहिं दरपनं लोहें सारी। जनु परबतपर परी अँबारी ॥
श्री मेल पहिराये मूंड़ें। कनकँ नभायँ पाँयतररौंदें ॥
सोने मेख सो दांत सँवारे। गिरिवर टरहिंसो उनके टारे ॥
परबत उलटि भूमिसोंमारहिं। परे जो भीरतीर अस भारहिं ॥
ऐस गयन्द सजे सिंहली। कोटि कूर्म पीठी कलमली ॥

दो० ऊपर कनक मँजूषा, लाग चँवर औ ढार।
भलपति बैठ भालें लै, औ बैठे धन्कार ॥

अश्वदलैंगजदलदोनोंसाजे। औघनतबल जुझारू बाजे ॥
माथे मुकुट छत्र शिर साजा। चढ़ाबजाय इन्द्रअस राजा ॥
आगे रथ सेनां सब ठाढ़ी। पाछे ध्वजा मरन की काढ़ी ॥
चढ़े बजाय चढ़ा जस इन्दू। देवलोक गोहनँ भा हिन्दू ॥
जानहुँ चांद नखत लै चढ़ा। सूरजकटकें रयनिमसं मढ़ा ॥
ज़ौलहिं भूरं जाहि दिखरावा। निकस चांदं घर बाहरआवा॥
गगनंनखतजसगिनेनजाहीं। निकसआयतसभुइंनसमाहीं॥

दो० देखअनी राजाकी, जग होयगयो असूझ।
वहिं कस होय चहतहै, चांदसूर्य्यसों जूझ ॥

यहां राज अस साज बनाई। वहां शाहकी भई अवाई ॥
अगलें दौड़े आगे आई। पिछले पाछ कोस दश ताईं ॥

हाथी १–१० राजाका दरवाज़ा २ सफ़ेद हाथी ३ लाल ४ चारआईना ५ टीका ६ सोना ७ पहाड़ ८ ज़मीन ९ कछुवा ११ सोने की अंबारी १२ नेजा १३ तीरअन्दाज़ १४ घोड़े की फ़ौज १५ फ़ौज १६ साथ १७ तथा सुलतानी फ़ौज १८ रातकी स्याही में १९ सूर्य्य २० तथा राजा २१ आसमान २२ फ़ौज २३ ॥

शाह आय चितौरगढ़ बाजा[1]। हस्ती[2] सहसवीस सँगगाजा ॥
उनई आय दोउ दल गाजे। हिन्दू तुरुक दोउसम[3] बाजे ॥
दोउसमुद्रदधि उदधि[4] अपारा। दोनों मेरु[5] खखण्ड पहारा ॥
कोप जो झार दुहूँदिश मेली। औ हस्ती[6] हस्तहिं सो पेली ॥
आंकुशचमकबीजअसबाजहिं। गरजहिंहस्तिमेघजनुगाजहिं ॥

दो० धर्ती स्वर्ग दोऊ दल, जूहहिं ऊपर जूह।
कोई टरै न टारै, दोनों बज्र समूह ॥

खण्डपैंतीसवां सुलह राजा और बादशाह ॥

हस्तिंहि सोंहस्ती हठगाजहिं। जनु परवत परवतसोंबाजहिं॥
कोउ गयंद[7] न टारे टरहीं। टूटहिं दांत सूँड़ गिरपरहीं ॥
परबतआय जो परहिं तराहीं। दल महँचांपखेह[9]मिलजाहीं॥
कोइ हस्ती असवारहिं लेहीं। सूँड़ समेट पांय तर देहीं ॥
कोइअसवारसिंह[10] है मारहिं। हनमस्तक सों सूँड़ उतारहिं॥
गर्ब[11] गयंद[12] तनगगन[13] पसीजा। रुधिर[14] चले धर्ती सबभीजा ॥
कोइ मैमत्त सँभारहिं नाहीं। तबजानै जब गुदशिर[15]खाहीं ॥

दो० गगन रुधिर जसबरसे, धर्तीभीज मिलाय।
शिरधरटूटबिलाहितस, पानी वेगैं[16] बिलाय ॥

उठो बज्रजूझै[17] जस सुना। तेहिते अधिक[18] भयो चौगुना॥
बाजेहिं खड्ग[19] उठी डर आगी। भुईंजर चही स्वर्ग कहँ लागी॥
चमकहिं बीजहोय उजियारा। जेहि शिरपरै होय दुइ फारा ॥
सेनमेघ[22] अस दुहुँदिशि गाजा। खड्गजोबीचबीज[23] असबाजा ॥

पहुंचा १ हाथी २-६-७-८ बराबर ३ समुद्र दही का ४ पहाड़ ५ फ़ौज ९ धूर १० शेर ११ ग़रूर १२ हाथी १३ आसमान १४-२१ खून १५ भेजा शिरका १६ जल्द १७ भारी लड़ाई १८ बहुत १९ तलवार २० बादल सी फ़ौज २२ बिजुली २३ ॥

बरसहिं सेल बान होय कांदों। जस बरसै सावन औ भादों॥
लपटहिं कोप परहिं तरवारी। औ गोला ओला जस भारी॥
जूझे बीर लिखों कहँ ताईं। लै अप्सरं[1] कैलास सिधाईं॥

दो० स्वामि काज जो जूझै, सोइगये मुख रातं[3]।
जो भागे सत छांड़ के, मैंसिमुखचढ़ैबरातं[4]॥

भा संग्राम[6] न भा अस काऊ। लोहे दुहुँदिशि भयो अगाऊ॥
कन्दहि कोदहिपुर[7] भुँइपरे। रुधिरसलिल[8] होय सायरं[9] भरे॥
आनँद ब्याह करैं मसखावा। अब भख जन्मजन्मकहँ पावा॥
चौंसठ योगिन खप्पर पूरा। बृकं[10]जम्बुकं[11] घर बाजहिं तूरा॥
गृद्ध चील्ह सब मण्डपछावहिं। काककलोलकरहिंऔगावहिं॥
आज शाहहठ[12]अनी बिवाही। पाई भुक्ति[13] जैसि मनचाही॥
जेहिं जस मांसू भखा परावा। तस तेहिकर लै औरहिं खावा॥

दो० काहू साथ न तनकों[14], सकत मुवे सब पोष।
ओछे[15] पूरजू जानत, जो नहिंआवतजोष॥

चांद न टरै सूरं[16] सो कोपा। दूसरि छत्र सौंहि[17] के रोपा॥
सुना शाह अस भयो समूहा[18]। पेले सब हस्तिनं[19] के जूहा॥
आज चन्द्र तोर करौं निपातू[20]। रहै न जगमहँ दूसर छातू॥
सहस[21] किरनहोय किरनपसारा। छेका चांद[22] जहांलग तारा॥
दरे[23] लोहे दरपन भा आवा। घटघट जानों भानु देखावा॥
बहु क्रोधित सेनौ[24] हलधाई। अगिन पहार जरत जनु आई॥

इन्द्रलोक की परी १ गालिक २ लाल ३ सियाही ४ ईश्वरके सामने ५ लड़ाई ६ तलवार की बिजुली से बहुत लोग ज़मीन में गिरे ७ पानी ८ तालाव ९ भेड़िया १० सियार ११ फ़ौज १२-२३-२५ खुराक १३ तनसाथ नहींजाता चाहे मोटाहो १४ ओछा पेटफरता-जोदानाहै अन्दाज़ रखता १५ सूर्य्य १६ सामने १७ गुस्सा १८ हाथी १९ नाश २० हज़ार २१ तथा राजा २२ तलवार २४॥

खड्ग बीज सब तुर्क उठाई। ओड़नै[1] चन्दकमल करै[2] पाई॥

दो० जग मग अनी देखके, धाय दृष्टि[4] तेहि लाग।
छुवे होय जो लोहे, मांझ[5] आव तेहि आग॥

सूरज[6] देख चांद मन लाजा। बिकसत[7] कमल कुमुद[8] भाराजा॥
पहिलहि चन्द आव निशि[9] पाई। दिन दिनेर[11] सो कौन बड़ाई॥
अहै जो नखत चांद सँग तपी। सूर[12] की दृष्टि गगन[13] महँ छिपी॥
की चिंता राजा मन बूझा। जेहिं सो स्वर्ग[14] न धर्ती जूझा॥
गढ़पति उतर लड़े नहिं धाई। हाथ परै गढ़ हाथ पराई॥
गढ़पति इन्द्र गगन गढ़ काजा। दिवस[15] न निसरर यँ[16] निक रराजा॥
चन्द्र रय निरहि नखतहिं सांझा। सूर्य्य न सौंहि[18] होय चहि सांझा॥

दो० देखा चन्द्र भोर भा, सूरज के बड़ भाग।
चांद फिरा भाग गढ़पति, सूर्य्य गगन गढ़ लाग॥

कटकै[19] असूझ अलाव लशाही। आवत कोइ न सँभारै ताही॥
उदह समुंद्र[20] जस लहरे देखी। नयन देख सुख जाय न लेखी॥
केते बजावत उतरे थांटी। केते बजावत मिल गये माटी॥
केतेहिं नितहिं[21] देइ नव साजा। कबहुँ न साज घटै तस राजा॥
लाख जाहिं आवहिं नव लाखा। फरै झरै उपनी[22] नइ शाखा॥
जो आवै गढ़[23] लागे सोई। थिर ह्वै रहै न पावै कोई॥
उमर अमीर रहे जहँ ताईं। सबही बांट अलंगैं[24] पाईं॥

दो० लाग कटक[25] चारहु दिशि, गढ़ सो पराइ कदाहु[26]।
सूर्य्य गहन भा चांदहि[27], चांद भयो जस राहु॥

सूर्य १–११–१२ ढाल २ हाथ ३ फ़ौज ४–१६–२५ निगाह ५ बीच ६ तथा बादशाह ७ खिलना ८ कोकाबेली ९ रात १०–१७ नज़र १३ आसमान १४–१५ दिन १६ सामने १८ दरिया आगका २० हमेशा २१ पैदा होना २२ क़िला तथा दुनिया २३ हद २४ आग २६ तथा राजा २७॥

अथवादिवसं सूरं भा बासा। परीरयैनि शँशिउवाअकासा॥
चांद छत्रै दय बैठो आय। चहुँदिशनखतदीन्हछिटकाय॥
नखत अकाशहिं चढ़े दिपाई। ततितत लूका परहिं बुझाई॥
परहिंसेलं जसपरहिं बिजागी। पहनैंहिंपहनबाजउठआगी॥
गोलापर गोला ढरकावहिं। चूनकरतचारहुँदिशिआवहिं॥
उनई घटा वर्ष झर लाई। ओला टपकैं परे बुझाई॥
तुरकन मुख फेरैं गढ़ लागी। एक मरै दूसर होय आगी॥

दो० नृपति वानं सनमुखपरहिं, सकै न कोई गाढ़।
उनई शाह सेनैं सब, रही भोर लग ठाढ़॥

भयो बिहान भानु पुनि चढ़ा।सहसंकिरनजैसोबिधि गढ़ा॥
भा धावा गढ़ लीन्ह गरेरी। कोपा कटकं लाग चहुँफेरी॥
बान करोर एक मुख छूटहिं। बाजंहिं जहांफोंकलहिफूटहिं॥
नखत गगनं जस देखे घने। तस गढ़ फाटहिं बानहिं हने॥
बानबेध साही किये राखा। गढ़ भा गरुड़ फुलावै पांखा॥
उड़गाकीरं कठिनं हियवाला। तोपै लहें होय मुखराता॥
पीठ दीन्ह तेहिं बानहिं लागे। चांपलजाहिंपगाहिंपग आगे॥

दो० चार पहर दिन जूझ भा, गढ़ न टूट तस बांक।
गरू होत पै आवै, दिन दिन नाकहिं नाक॥

छेंका कोटं जोर अस कीन्हा। घुसा नगर सुरंग तहँ दीन्हा॥
गरगजं बांध कमानैं धरीं। बज्र आगिन मुख दारू भरीं॥
हवशी रूमी और फिरङ्गी। बड़ बड़ गुनी औरतेहिसङ्गी॥

दिन १ सूर्य २ रात ३ चांद ४ तथा रतनसेन ५ गोला ६ आग ७ पत्थर ८ राजा के तीर ९ सामने १० फ़ौज ११-१५ सूर्य १२ हज़ार १३ ईश्वर १४ पहुँचना १६ आसमान १७ राजा के हवास का तोता उड़ गया १८ मुशकिल १९ मुँह लाल २० घेरा क़िला २१ मरहला २२ तोपें २३॥

जेहिकी ज्योति जाहिं उपराहीं। जहँ ताकहिं चूकहिं तहँ नाहीं॥
अष्टधात के गोला छूटहिं। गिरि पहाड़ चूनहोय फूटहिं॥
इकबारहिं सब छूटहिं गोला। गरजे गगन[1] धर्तिसबडोला॥
फूटे कोट[2] फूट जनु शीला। उड़हिं बुर्ज जायँ सब पीसा॥

दो० लंका रावट[3] जस भई, दाह पड़ा गढ़ सोय।
रावणभालेंजोजरलिखो, कहुकिमअजरसोहोय॥

राजाकेर लाग गढ़ धुई। फूटे जहां सँवारहि सोई॥
बांकी[4] बरसहिं बानक[5] करेइ। रातहिं कोट चित्र[6] कै लेइ॥
गाजे गगनँ चढ़ा जस मेघा। बरसहिं वज्र[7] सलिलको ठेघा॥
सौसौ मनके[8] बरसहिं गोला। बरसहिं टपकतीरजसओला॥
जानहु परी स्वर्ग[9] हत गाजा। फाटी धर्ति आय जो नाजा[10]॥
गरगज[11] चूर चूर होय परहीं। हस्ति[12] घोर मानुष संहरहीं[13]॥
सबहिं कहा अब परलै[14] आवा। धर्ती स्वर्ग जूझ तस लावा॥

दो० उठो वज्र[15] सनमुख जरे, होय इक डङ्खोइ[16] लाग।
जगत जरै चारहुँदिशा, कोरे बुझावै आग॥

तबहूँ राजा हिये[17] न हारा। राजपँवँर[18] पर रचा अखारा॥
सौंह[19] शाह कर बैठक जहां। सामहिं नाच करावै तहां॥
जंत्रपखावज[20] आदिजोबाजा। सुर[21]मन्दिर रबाब[22] भलसाजा॥
बीन[23] निपातककमायज[24] गहे। बाजउमरँती अति कहकहे॥
चंग[25] उपंग[26] नाद[27] सुर[28] तूरा। सुहर[29] बंस[30] बाजे भलतूरा[31]॥

आसमान १–७क़िला २ राख ३ माथा ४ बांक बनानेवाला ५ तसवीर ६ कड़े पत्थर के गोले ८ आसमान से बिजुली गिरी ९ पहुँचना १० मरहला ११ हाथी १२ मरना १३ क़यामत १४ पत्थर १५ इक़तरफ़ा १६ दिल १७ खासमहल १८ सामने १९ नाम बाजा २०–२१–२२–२३–२४–२५–२६–२७–२८–२९–३०–३१–३२॥

हुडुक[1] बाज डफ[2] बाज गँभीरा । औ बाजहिं भल झाँझ मँजीरा ॥
तन्त[3] वितन्त शुभ्र[4] घनतारा । बाजहिं शब्द होय झनकारा ॥
दो० जग शृंगार मनमोहन, पातुर नाचहिं पांच ।
बादशाह गढ़ छेंका, राजा भूला नांच ॥
बीजा नगर केर सब गुनी । करहिं अलाप बुद्धि चौगुनी ॥
प्रथमे रागभैरों[6] तेहि कीन्हा । दूसरे मालकोस[7] पुनि लीन्हा ॥
रागहिंडोल[8] सो तिसरे गाई । चौथे मेघ मलार[9] सोहाई ॥
पँचयें शिरी[10] राग भलकिया । छठयें दीपक[11] उठा बरदिया ॥
छओ राग गाये भल गुनी । औ गाई छत्तिस रागिनी ॥
ऊपर भई सो पुतली नाचहिं । तर भये तुर्क कमानैं[12] खाँचहिं ॥
काढ़ा माथा घुमरैं[13] छुमरा । तर भये देख मीर औ उमरा ॥
दो० सुनसुन शीश[14] धुनहिं सब, कर[15] मलि मलि पछिताहिं ।
कब हम हाथ चढ़हिं यहि, कै तब यहदुखजाहिं ॥
छओं राग गावैं पातुरनी[16] । पुनि तेहि कीन्ह लियेरागिनी ॥
भाकल्यान[17] कान्हरा[18] कीन्हीं । रागाविहाग[19] किदारा[20] लीन्हीं ॥
ललित[21] वँगाला[22] गीतहिं सोई । आसावरी[23] भयो सब कोई ॥
धनाशिरी[24] सोहो[25] सोकीन्हीं । भयोबिलावल[26] मारू[27] लीन्हीं ॥
रामकली[28] गुनकली सोहाई । सारँग[29] औ बिभास[30] मुँहआई ॥
नितमलार[31] जो मिला सुनाई । श्याम[32] गूजरी पुनि भलगाई ॥
पुरबी[33] औ देसाख[34] कुरारी । टोड़ी[35] गोंड[36] सो भईनिरारी ॥
दो० गौरी[38] गौरा[39] तरवन[40], सिद्ध अलापहिं ऊँच ।

नामबाजा १-२-३ मोटे बहुत तार ४ पहिले ५ नाम राग ६-७-८-९-१०-११ मुसल्मानलोग तोपें मारते थे १२ जिसने राजा की फ़ौजसे शिर निकाला वह वहीं रहा १३ शिर १४ हाथ १५ तवायफ़ १६ नाम राग रागिनी १७ से ४० तक ॥

तहांतीर कहँ पहुँचहिं, दृष्टि जहां न पहूँच ॥

पतुरिन नाच दीन्ह जो पीठी। पड़गइसौंहँ शाहकी दीठी ॥
देखत शाह सिंहासन गूँजा। कवलगमिर्गचन्द्र तेहिसूँजा ॥
छांड़हि बान जाहिं उपराहीं। गर्व केर शिर सदा तराहीं ॥
बोलत बान लाख भा ऊंचा। कोईकोट कोई पँवरँ सो पहुँचा ॥
जहांगीर कन्नौज का राजा। वहक बान पातुरिके लागा ॥
बाज़ा बान जांघ जस नाचा। जिवगा स्वर्ग पराभुइँ सांचा ॥
उड़सीं नाच नचिनया मारा। रहँसे तुर्क बाज कै तारा ॥

दो० जो गढ़ साज़हि लाखदश, कोटिसँवारहिं कोट।
बादशाह जब चाहैं, बनै न एको ओट ॥

राजैं पँवरँ आकाश चलाई। परीं बाँध चहुँफेर खलाई ॥
सेतबन्धें जस राघवँ बांधा। परा फेर भुइँ भार न कांधा ॥
हनुमत है सब लाग गुहारा। आवहिं चहुँदिशिचलेपहारा ॥
श्वेतफटक जस लागे गढ़ा। बांध उठाय चहूँ गढ़ मढ़ा ॥
खँड खँड ऊपर होय पटाऊ। चित्रँ अनेक अनेककटाऊ ॥
सीढ़ी होत जाहिं बहु भांती। जहां चढ़ै हस्तिनकी पांती ॥
भागरगर्ज कसकहत न आवा। जनहुँउठाय गगनँ लैलावा ॥

दो० राहुलाग जस चांदहि, गढ़ लागा तस बांध।
सब धड़ लील ठाढ़भा, रहा जाय गढ़ कांध ॥

राजसभा सब मन्त्री बैठी। देखनजाय सुन्दभइ दीठी ॥
उठा बांध तस सब गढ़ बांधा। कीजे वेगँ भार जस कांधा ॥

निगाह १-३-२१ सामने २ हिरनका बच्चा ४ गरूर ५ क़िला ६ दरवाज़ा ७ पहुँचा ८ आसमान ९-२० मौक़ूफ़ १० खुश ११ फ़ौज से बादशाह की तोपें चलीं १२ राजा के क़िला में भूँचालपड़ा १३ पुल १४ श्रीरामचन्द्रजी १५ सफ़ेद पत्थर १६ तसवीर १७ हाथी १८ मरहला १९ जल्द २२ ॥

उपजी आग आग जस बोई। अब मतंक्षीनआननहिंहोई॥
भा त्योहार जो चांचर जोरी। खेल फाग अब लाई होरी॥
समन्द फागमेलं शिर धूरी। कीन्ह जो शाकां चाही पूरी॥
चन्दनअगर मलयगिरि काढ़ा। घरघरकीन्ह सरों रचठाढ़ा॥
जून्हरं कहँ साजा रनवासू। जेहिंसतहियें कहांतेहिआंसू॥

दो० पुरुषन खड्ग सँवारी, चन्दन खौरीं देह।
मेहरिनि सेंदुर मेला, चहहिं भई जर खेह॥

आठ बरष गढ़ छेंका रहा। धन सुलतान कि राजामहा॥
आय शाह अँवरांउँ जोलाई। फरे झरे पै गढ़ नहिं पाई॥
हठ जोरी तब जून्हर होई। पद्मिनें पावन मिन्नंतें सोई॥
यहि विधिढील दीन्ह तबताईं। देहलीकी अरदासैं आईं॥
पछम हरेवें दीन्ह जो पीठी। सो अब चढ़ा सौंहें कै दीठी॥
जेहिभुइँमाथगगनें शिरलागा। थाने उठे आवसब भागा॥
वहां शाहँ चितोरगढ़ छावा। यहां देश अब भयो परावा॥

दो० परत दृष्टि जेहि पंथ में, बाढ़ा बेर बबूर।
निशिं अँधियारीजायतब, वेगं उठे जो सूरं॥

सुनाशाह अरदासं जो पढ़ी। चिन्ता आन आनचिंतचढ़ी॥
तब आगो मन चीते कोई। जो आपन चेता कुछ होई॥
मन झूठा जिव हाथ पराई। चिन्ता एक भई दुइ ठाईं॥
गढ़ सो उरझ जाय तब छूटा। होय मिलावकि सोगढ़ टूटा॥

डरपोक १ फागखेलों २ बहादुरी ३ चिता ४ मौत ५ दिल ६ मरदों ने तलवारली ७ औरत ८ खाक ९ बाग १० शाह समझा कि वे मरे ११ मुशकिल १२ अरज़ी १३नामुलक १४ सामने १५ आसमान १६ अलाउद्दीन१७ निगाह १८ राह १९ रात २० जल्द २१ सूर्य २२ अरज़दास्त २३॥

पाहनै कर रवि पाहन हीरा। वेधों[3] रतन पान दे वीरा॥
सुरजों सेतें कहा यहि भेऊं। पलट जाहु अब मानहु सेऊं॥
कहु तोसों पद्मिन ना लेऊँ। जो रार्कहि छांड़ गढ़ देऊँ॥

दो० आपनदेशखाहु निहचलं, और चँदेरी लेहु।
समुद्र समन्दर्न कीन्हतोहि, ते पांचोनग देहु॥

सुरजापलट सिंहँ चढ़गाजा। आई जाय कही जहँराजा॥
अवहूँ हिये[12] समझे राजा। वादशाह सो जूझ न छाजा॥
जाकर देहिरी पृथ्वी सेई। चहे तो मारे औ जिव लेई॥
पिंजर महँ तू लीन्ह परेवा। गढ़पति सोआवै के सेवा॥
जवलग जीभ अहे मुखतोरे। सँवर उचेल विनय करजोरे॥
पुनि जो जीभपकड़ जिवलेई। को खोले को बोले देई॥
आगे जस हँमीर मैमन्ती। जो तस करेसि तोर भायन्ती॥

दो० देख काल्ह गढ़ टूटे, राज वही कर होय।
कर सेवा शिरनाय के, घर न घाल बुधि खोय॥

सुर्जा जस हँमीर मनताका। और निवाही आपनशाका॥
वह अस हौं शकवन्दी नाहीं। हों सो भोज विक्रमैउपराहीं॥
वरस सात महँ अन्न न खांगा। पानि पहारचुवै विन मांगा॥
तेहि ऊपर जो पै गढ़ टूटा। सत शकवन्दी केर न छूटा॥
सोरह लाख कुँवर हैं मोरे। पतँग परहिं जसदीपअँजोरे॥
जेहि दिन चांचर चाहों जोरी। समँदो फागमेल के होरी॥

पत्थर १ सूर्य २ मारडालना ३ नाम पहलवान ४-६ भेद ५ मुलाक़ात ६ यक़ीन ७ नाम मुल्क ८ तुहफ़ा ९ शेर १० हुक्म ११ दिल १२ जानवरप- रिन्द १३ क़िलादार १४ खिदमत १५ तावेदारी १६ नामराजा १७-२०- २३-२४ अहङ्कारी १८ वहादुरी २१ वहादुर २२-२६ कमी २५ रोशनी २७ फागखेलों २८॥

दैके घरनि जो राखत जीउ। सोकस आवहिं ओसकपीउ॥

दो० अबहूँ जून्हरें साजके, कीन्ह चहूँ उजियार।
होरी खेलों रन कठिन, कोउ न समेटहि छारें॥

अन राजा सो जरै नियानों। बादशाह की सेवै न माना॥
बहुतहिं असगढ़कीन्हसँजोना। अंत भई लंका जस रवना॥
जेहि दिन वह छेंकै गढ़घाटी। होय अन्न ओही दिन माटी॥
तू जानेसि जल चुवै पहारू। वह रोवै मन सँवर सँहारू॥
सोतँहि सोत ऐस गढ़ रोवा। कस होइहै जो होइहै धुवा॥
सँवर पहाड़ सो ढारैं आंसू। पै तोहि सूझ न आपन नासू॥
आज काल्ह चाहै गढ़ टूटा। अबहुँ मान जो चाहस छूटा॥

दो० हैं जो पाँच नग तोसों, लै पांचो कर भेंट।
यकु सो एकगुन मानै, सब औगुन कर मेट॥

अन सुरजा को मेटै पारा। बादशाह बड़ अहै हमारा॥
औगुन मेट सकहि पुनि सोई। औजो कीन्ह चहै सो होई॥
नग पांचों का देउँ भँडारा। इसकन्दर सो बाचै दारा॥
जो यह वचन तुहिं माथे मोरे। सेवा करों ठाढ़ कर जोरे॥
पै विन सँस न असमनमाना। सत बोल बाचोपरमाना॥
कीन्हजो गुरूँलीन्हजगभारू। तेहिक बोल नहिं टरै पहारू॥
नायत मांझ भँवर हत ग्रीवा। सुरजहिं कहां सुन्दभइजीवा॥

दो० सुरजै सबकीन्ह छल, बैनहिं मीठी मीठ।
राजा कर मन माना, मानी तुरत बसीठ॥

क्या किसी को मुँह देखावँगे १ मौत २ राख ३ आखिर ४ खिदमत ५-१२ नाश ६ सूराख ७ शायद ८ सच है ९ खज़ाना १० नाम बादशाह ११-१२ हाथ १४ क़सम १५ मज़बूत १६ भारी १७ नामपहलवान १८ बात १९ क़ासिद २० ॥

हंस कनक[१] पींजर हत आना। औ अमृतनग परसपषानां[२]॥
और सुनां[३] सोने की डांड़ी। शार्दूल[४] रूपेकी कांड़ी[५]॥
दीन्ह बसीठ सुरजा लै आई। बादशाह पहँ आन मिलाई॥
ए जग सूर[६] भूंमि[७] उजियारी। विनतीकरहिकागमसिकारी[८]॥
बड़ परताप तोर जग तपा। नवों खण्ड तुहिंके न छिपा॥
कोह[९]छोह दोनों तोहि पाहां। मारेसि धूप जियावसिछाहां॥
जनमनसूर[१०] चांद[११] सो रूसा[१२]। गहन[१३]गिरासा पड़ा मँजूसा[१४]॥

दो० भोर होय जो लागै, उठै रोर[१५] किये काग।
मसि[१६] छूटैसबरयनि[१७] की, कागां[१८]जायँअभाग॥

कर बिनती आज्ञा[१९] असपाई। कागहिंसे आपहिंमसि[२०]लेई॥
पहिले धनुष नवै जब[२१] लागी। काग न लेइदेख सुर[२२]भागी॥
अबहूँ तेहिसुर सौंह[२३] न होहीं। देखहिंधनुषचलहिंफिरओहीं॥
तेहि कागहिंकी कौन बसीठी[२४]। जो मुख फेर चलहिंदैपीठी॥
जो सरसौंह[२५] होहिं संग्रामा[२६]। कितबक[२७]होतश्वेत[२८]वैश्यामा॥
करहिं न आपन ऊजर केशा[२९]। फिरफिर कहहिं परारसँदेशा॥
काग नाग पै दोनों बांकी। अपनी[३०]चलतश्याममयआंकी॥

दो० मेटजाय नहिं मसि[३१] कबहुँ, भये श्याम वे अङ्क।
सहस[३२] बार जो धोवहू, तहू न मेट कलङ्क[३३]॥

सोना १ पारसपत्थर २ हाविन्ददस्ता ३ लाल शेर ४ पिंजरा ५-१४ सूर्य ६ ज़मीन ७ कालाकौआ तथा राजा ८ गुस्सा-मेहरवानी ९ सूर्य तथा बादशाह १० तथा राजा ११ गुस्सा १२ पकड़ाहुआ १३ हाज़िर १५ सियाही १६-२०-३१ रात १७ कौआ की सियाही दूर होजायगी १८ हुकम १९ निशानेपर २१ देवता २२ मुक़ाबिल २३ वकालत २४ सामने २५ लड़ाई २६ वगुला २७ सफ़ेद २८ बाल २९ आपही काले होते ३० हज़ार ३२ ऐब ३३॥

अब सेवा[1] जो आय जोहारी। अबहूं देख श्वेत[2] कहिकारी ॥
कहो जाय जो सांच न डरना। जहवां शरण[3] नाहिं तहँ मरना ॥
काल्ह आव गढ़ ऊपर भानू[4]। जो दै धनुष[5] सौंह हिय बानू ॥
पान बसीठ[6] मया कर पाई। लीन्ह पान राजा पहँ आई ॥
जस हम भेंट कीन्ह गा कोहूं। सेवा मांझ प्रीति अरु छोहूं ॥
काल्ह शाह गढ़ देखै आवा। सेवा करहु जैसो मनभावा ॥
गुनै सोच लै सो वोहि[7] तें[8] बोझा। जहवां धनुषबान तहँ सूझा ॥

दो० भा आयसु अस राजघर, बेगैं[9] हिकरो रसोय।
तस सँभार रस मिलवहु, जेहि सुप्रीति रस होय॥

खण्ड पैंतीसवां ज्याफ़त बादशाह ॥

आगेंर[10] मेढ़ा बड़ औ छोटी। धरधर आनी जहँजहँ मोटी ॥
हिरनरोझ[11] लगना[12] बनबसी। चैत्र[13] कोन छार[14] औसैसी ॥
तीतर बटई लवा न बाची। सारसगुंज[15] पुछार[16] जोनाची ॥
धरी परेवा[17] पांडुक[18] हेरी। केहा[19] कदरो[20] उतर[21] बगेरी ॥
हारल[22] चरज[23] आय वन्दपरे। बन ककरी[24] जलककरी[25] धरे ॥
चकई चकवा केंप[26] बिदारे। नकटा[27] लेदी[28] सोन सलारे[29] ॥
मोट बड़े सब टोइ टोइ धरे। ऊनर दूबर खड़ग[30] न चढ़े ॥

दो० कंठपरी जब भूरी, रक्त ढुरा होय आंस।
कित आपन तनपोषा[31], भखा परावा मांस ॥

धरे मच्छ पढ़ना औ रोहू। धीमर धरतकरे नाहिं छोहूं[32] ॥

खिदमत १-६ सफ़ेद २ पनाह ३ सूर्य ४ कमान तीरधरदे ५ क़ासिद ६ गुस्सा ७ मेहरबानी ८ रस्सी १० नांव ११ हुक्म १२ जल्द १३ बकरा १४ पाढ़ा १५ नाम जानवर १६ से ३४ तक। तलवार ३५ पालना ३६ दया ३७ ॥

संधे[1] सुगंधे[2] धरे जल बांढ़े । टेगनें[3] सुवे[4] टोय सब काढ़े ॥
सींगे[5] भँगोर[6] बीन सब धरे । पतरी[7] बहुतवांबं[8] बनगेरे[9] ॥
मारेचरके[10] चाल्हे[11] परहांसी[12] । जलतज कहांजायजलवासी ॥
मनहोय मीनें[14] चरा सुखचारा । परा जाल को दुख निरवारा ॥
माटी खाय मच्छ नहिं बाची । बाचहिं काहभोग सुखनाची ॥
मारे कहँ सब अस कै पाले । को उबार तेहि सरवरे[15] घाले ॥

दो० यहि दुख कंतहि[16] सारकी, अगमनरक्क न देह ।
पंथे[17] भुलाय आयजलपाछे, छूटे जगत सनेह ॥

देखत गोहूँ कर हिय फाटा । आनी तहां होय जेहिआटा ॥
तब पीसे जब पहिले धोय । कापर छान माड़े[18] भल होय ॥
करले[19] चढ़ाहि तेहि पाकहिंपूरी । मूठी मांभ रहै सौ जोरी ॥
जानहु तसै[20] श्वेतें[21] अरु उजरी । नयनूचाहि अधिकवहकुंदेरी[22] ॥
मुख मेलतखन जाहिं बिलाई । सहसें[23] स्वाद सो पावजोखाई ॥
लुचई पोय पोय घिव भेई । पाछे चहन खांड़ सो जेई ॥
पूरी सुहारी करे घिव चुवा । छुवत बिलायडरहिं को छुवा ॥

दो० कही न जाय मिठाई, कहत मीठ सत बात ।
खात अघात न कोई, हेवरे[24] जाय सिरात ॥

रींधे चावल बरन न जाहीं । बरन बरनै[25] सबसुगँधबसाहीं ॥
रायभोगे[26] औ काजरे[27] रानी । भिनवों[28] रुदवों[29] दाउदखांनी[30] ॥
कपूरे[31] काटकजरी[32] रतनौरी[33] । मधुकरे[34] ढेलों[35] जीरों[36] सारी ॥

क़िस्म जानवर दरियायी १ से १३ तक । मछली १४ तालाव १५ ख़ाविन्द न सुख डालके पहिले से खून बदन में न रक्खा १६ राह भूलके पानी में फँसे झूठीदुनिया की मुहब्बत में १७ रोटी १८ कराही १६ नर्म २० सफ़ेद २१ मुलायम २२ हज़ार २३ बर्फ़ २४ तरहबतरह २५ क़िस्मचावल २६ से ३६ तक ॥

घोखांड़ो औ कुँवर विरासू। रामदास आवै अतिबासू॥
कही सो सोंधी लाची वाकी। सुगंदी वगँरी बरहन पाकी॥
कड़हन चड़हन वंद मनमिला। औसंसार तिलक खँडवलौ॥
राजहंस और हंसी भोरी। रूप मंजरी औगुन गोरी॥

दो० सोरह सहस बरनअस, सुगंध वासना छूट।
मधुकर पुहुप सुजानके, आयपरे सब टूट॥

निरमले मास अनूप वघारा। तेहिके अब बरनो परकारा॥
कटवां वटवां मिला सो वासू। सीझा आनो भांति गिरासू॥
वहुती सोंधी घृतहि वघारा। औ तहँ कुंकहि पीस उतारा॥
सेंधा लोन परा सब हांड़ी। काटी कन्दमूल की आंड़ी॥
सोवा सौंफ उतारहिं धनियां। तेहितेअधिकआवबासनियां॥
पानि उतारहिं ताकहिं ताका। घृत परेह रहा तस पाका॥
और लीन्ह मांसू के खांड़ा। लागे चढ़े सो बड़बड़ हांड़ा॥

दो० आगर बहुत रामूची, धरी सरागहिं भूंज।
जो अस जेवन जेवै, उठै सिंह अस गूंज॥

भूंज समोसा घी महँ काढ़े। लौंग मिर्च तेहि भीतर ठाढ़े॥
औ जो मांस अनूप सो बांटा। भयेफर फूलआंब औ भांटा॥
नारँग दाड़िम तुरंज जँभीरा। औ हिन्दवाना बालम खीरा॥
कटहर वड़हर तेउ सँवारे। नारियल दाख खजूर छुहारे॥
औ जानवन्त खचीचौं होहीं। जो जेहि वरन स्वादसोओहीं॥
सिरका भेय काढ़ जनु आने। कमलजोभयेरहहिंबिकसौंने॥

क़िस्मचावल १ से १७ तक। हज़ार १८ भँवरा १९ फूल २० साफ़ २१ थेमानिन्द २२-२६ क़िस्म २३ केसर २४ अदरक व पियाज़ वग़ैरह २५ वहुत २६ लोहे की सीख २७ शेर २८ फल-फूल आंव और बैंगन मांसके बनायेगये ३० अनार ३१ अंगूर ३२ नाम मेवाफ़सली ३३ खिलना ३४॥

कीन्ह मसूरी धनै सो रसोंई। जो कछु सब मांसू सो होई॥

दो० बौरी आय पुकारी, लिये सबैकर छूंछ।
सब रस लीन्ह रसोंई, अब मोकहँ को पूंछ॥

काटी मच्छ मेल दधि धोई। औ वघार चहुँ वार निचोई॥
कड़वे तेल कीन्ह बसै बारू। मेथी घृतसों दीन्ह बघारू॥
युक्त युक्त सब मच्छ उतारे। आंव चीर तेहिमांझ उतारे॥
औ परेह तेहि चटपट राखा। सोरस सुरस पात्र जो चाखा॥
भांति भांति तहँ खांड़ा तरे। अंडा तल तल बीहड़ धरे॥
कहँकहँ परा कपूर वसाई। लौंग मिरच तेहि ऊपर लाई॥
घीवटांक महि सोंध सिरावा। पंखै वघार कीन्ह अरदावा॥

दो० घृत परेह[2] रहा तस, हाथ पहुँच लहि बोड़।
बूढ़ खाय नौ योवन, सौ मेहरी की ओड़॥

भांति भांति सीझी तरकारी। कयो भांति कुम्हड़े के फारी॥
भइ भूंजी लौका परबती। रैता कीन्ह काटकै रैंती[13]॥
चूक लायके रींधे भांटा। अरवी कहँ भलअरहनें बांटा॥
तुरइ चचेंड़े ढेंढस तरे। जीर धुंगार मेल सब धरे॥
परवर कुँदुरू भूंजे ठाढ़े। बहुते घिव चुरचुरे के काढ़े॥
कड़ुई काढ़ करेला काटे। अदरक मेल तरे के खाटे[16]॥
रींधे ठाढ़ सेवकें फारे। छौंक साग पुनि सोंध उतारे॥

दो० सीझी[17] सबतरकारी, भा जेवन सब ऊँच।
धौंकारुचै शाह कहँ, केहिपर दृष्टि[18] पहूँच॥

मसूरकी खिचड़ी १ पद्मावत २-३ दही ४ भूनना ५ बीच ६ इससबब से ७ अलग ८ केसर ९ चिड़िया १० गलाना ११ बहुत घीडाला १२ कद्दूकश १३ तलना १४-१५ खटाई डाल के १६ तय्यार १७ निगाह १८॥

घृत कराही भीतर परा। भांति भांति सब पाकहिंबरा॥
एकहि आंदि मिर्च सों पीठी। औ जो दूध खांड़ सो मीठी॥
भई मुंगौछै[3] मिरचहिं परीं। कीन्ह मुंगौरीं औ करपरीं॥
भई मिथौरीं[6] सिरका परा। सोंठ लायके खरसाँ धरा॥
मीठ महीवँ औ जीरा लावा। भीज बरा नैनू जनु खावा॥
खण्डहि कीन्ह आंब चरपरा। लौंग इलाची सों खण्डबरा॥
कढ़ी सँवारी और फुलौरी। औ खंडवानी लाय-बरोरी[10]॥

दो० पान कतर छौंके रुकौंछ, हींग मिर्च औ आंद।
एक खण्ड जो खावै, पावै सहस[11] सवाद॥

तहरी पाक बोनें[13] औ गरी। परी चिरौंजी औ खरहेरी॥
औ घृत भूंज के पाका पेठा। भाअमृत करम्ब कर मीठा॥
चंवके लोहड़ा औटा खोवा। भा हलुवा घिवकरे निचोवा॥
शिखरन सौंध छनाई काढ़ी। जामा दही दूध सों साढ़ी॥
और दही के मुरंडा बांधे। औ संधानें बहुभांती सांधे॥
भइ जो मिठाई कही न जाई। मुख मेलतखन जाय बिलाई॥
मतलड़ छालें और मरकोरी। माठ पेराकैं और बुंदोरी॥

दो० फेनी पापर भूंजे, भय अनेक परकार[22]।
भइजावँरभिजियावर, सींझी सब ज्योनार॥

जेत प्रकार रसोईं बखानी। तब भइ सबपानी सो सानी॥
पानी मूर्ल परेखो[25] कोई। पानी बिना स्वाद नांहिं होई॥
अमृतपान यहि अमृतआना। पानी सो घंट[26] रहै पराना॥

तरहबतरह १-२२ अदरक २-११ क़िस्मखाने की ३-४-५-६-६-१० पियाला ७ दही ८ हज़ार १२ नाममेवा १३-१४ शक्कर का क़िमाम बनाके पकाया १५ लोहे की कराही १६ लाडू १७ अचार १८ क़िस्म मिठाई १६-२०-२१ खीर २३ जड़ २४ देखना २५ बदन २६॥

पानी दूध सो पानी घीव । पानि घटै घटै रहै न जीव ॥
पानी मांझ समानी ज्योती । पानी उपजै माणिक मोती ॥
पानीमहँ सब निरमलै कला । पानी जोछुवै होय निरमला ॥
सो पानी मन गर्व न करेइ । शीश नाय घालै पै धरेइ ॥

दो० मुहमद नीर गंभीरजो, सोतेहिमिलहिसमन्द ।
भरे ते भारी होरहे, छूछहिं बाजहिं ढन्द ॥

सीझ रसोइ भयो विहानू । गढ़ देखे गवने सुलतानू ॥
कमल सुहाय शूरसँग लीन्हा । राघव चेतन आगे कीन्हा ॥
ततखन आयवेवानजोपहुँचा । मनसोंअधिकगगनसे ऊँचा ॥
उघरी पँवर चला सुलतानू । जानहुचलागगन कहँ भानू ॥
पँवरी सात सात खण्ड बांके । सातों खण्ड गाढ़े दुइनाके ॥
आज पँवर मुख भा निरमरा । जो सुलतान आय पगधरा ॥
जानु उरेह काट सब काढ़े । चित्र मूरत विनवहिं ठाढ़े ॥

दो० लख लख वैठ पँवरयाँ, जेहिते नवहिं करोर ।
जेहिं सब पँवर उघारे, ठाढ़भये करजोर ॥

खण्डअड़तीसवां किला वर्णन बादशाह ॥

सातों पँवरी कनक केवारा । सातहुँपर बाजहिं घरियारा ॥
सातहिं रंग सो सातों पँवरी । तब तहँ चढ़ै फिरैनव भँवरी ॥
खँड खँड साज पलँगऔपीढ़ी । जानहु इन्द्रलोककी सीढ़ी ॥
चन्दन वृक्ष सुहाई छाहां । अमृत कुण्ड भरा तेहिमाहां ॥

वदन १ वीज २ पैदा होना ३ जवाहिरात ४ पाकसाफ़ ५–६ ग़रूर ७ शिर ८ पानी ९ ढोल १० बहादुर ११ नामभाट १२ तुरंत १३ हवादार १४ बहुत १५ आसमान १६–१८ दरवाज़ा १७ सूर्य्य १९ क़दम २० तसवीर२१ दरवान २२ हाथ २३ सोना २४ पेड़ २५ ॥

फरे खजीजा[1] दाड़िम[2] दाखा[3]। जो वह पंथ[4] जाय सो चाखा ॥
कनक[5] छत्र सिंहासन साजा। पैठत पँवर[6] मिला लै राजा ॥
चढ़ाशाह चढ़ चितौर देखा। सब संसार पायँतर लेखा ॥

दो० देखा शाह गगनँ[7] गढ़, इन्द्रलोक के साज।
कहीराज[11] फिरताकर, स्वर्ग[8] करै जो राज ॥

चढ़ गढ़ ऊपर सङ्गत देखी। इन्द्रपुरी सो जान बिशेखी ॥
ताल तलावा सरवर[9] भरे। ओञ्ज्मबरांऊ चहूँदिशिफरे ॥
कुवां बावरी भांतिहि भांती। मढ़मण्डप तहँतहँ चहुँपांती ॥
राये राग घरघर सुख चाऊ। कनक[12]मँदिरनगकीन्हजड़ाऊ॥
निशि[13] दिनबाजहिंमन्दिरतूरा[14]। रहसकूद सब लोग सँदूरा ॥
रतन[15] पदारथ नग जो बखाने। घूरन महँ देखे भहिराने ॥
मँदिर मँदिर फुलवारी बारी[10]। बारबार[16] तहँ चित्र[17] सँवारी ॥

दो० पांसासार[18]कुँवरसबखेलहिं, श्रवन[19]हिंगीतउनाहिं।
चैन चाउ तस देखा, जनु गढ़ छेका नाहिं ॥

देखत शाह कीन्ह तहँ फेरा। जहँ मंदिर पद्मावत केरा ॥
आसपास सरवर[20] चहुँ पासा। मँदिरमांझजनुलागअकासा॥
कनक[22] सँवार नगहिंसबजरा। गगन[23]चन्द जनु नखतहिंभरा॥
सरवर[24] चहुँदिशि पुरइनफूली। देखा बारि रहा मन भूली ॥
कुँवरिलाख दुइबार[25] अँगोरे[26]। दुहुँदिशि पँवर[27] ठाढ़ कर[28]जोरे ॥
शारदूल[29] दुहुँ दिशि गढ़काढ़े। कलक[30]जंहि जानहुँ रिसठाढ़े ॥
जानवन्त लिये चित्र[31] कटाऊ। वहँतकपँवर[32] सोलागजड़ाऊ ॥

नाममेवा १ अनार २ अंगूर ३ राह ४ सोना ५-१२-२२ दरवाज़ा ६-१६-२५-२७-३२ आसमान ७-८-२३ तालाब ९-२०-२४ बाग़ीचा १० अमीरउमरा ११ रात १३ नामवाज़ा १४ जवाहिरात १५ तसवीर १७-३१ चौसर १८ कान १९ चीन्ह २१ पेशवाई २६ हाथ २८ लाल शेर २९ डकारना ३०॥

दो० शाह मँदिर अस देखा, जनु कैलास अनूप[1]।
जाकर अस धौराहर[2], सो रानी केहिरूप ॥

नांघत पँवरि[3] गये खण्ड साता। सतयें भूमि[4] बिछावन रातीं[5] ॥
आंगन शाह ठाढ़भा आय। मँदिरछांहअतिशीतल[6] पाय ॥
चहूँ पास फुलवारी बारी। मांझ[7] सिंहासनधरा सँवारी ॥
जनु वसन्त फूला सब सोने। हँसहिंफूलविकसहिं[8] सलोने[9]॥
जहांजो ठांव दृष्टिमहँ आवा। दर्पन भाव दरश देखरावा ॥
तहां पाट[10] राखा सुलतानी। बैठ शाह मन जहां सो रानी ॥
कमल सुभाय सूर[11] सों हँसा। सूरका मन चांद[12] पहँ बसा ॥

दो० सोपै जानै नयन रस, हिरदय[13] प्रेम अँगूर।
चन्द जो बसै चकोरचित, नयनहिआवनसूर[14]॥

रानी धौराहर[15] उपराहीं। करहिं दृष्टि[16] नाहिंकरहितराहीं॥
सखी सरेखी[17] साथहिं बैठी। तपैसूर[18]शशि[19] आवनदीठि[20] ॥
राजा सेव करै कर[21] जोरे। आज शाह घर आवा मोरे ॥
नट नाटक पतुरनि औ बाजा। आय अखाड़ सबैमहँ साजा ॥
प्रेमकलुंधे[22] बहिर औ अन्धा। नाचकूद जानहु सब धन्धा ॥
जानहु काठ नचावै कोई। जोजें नाच न परगट[23] होई ॥
परगट कहि राजा सों बाता। गुप्त[24] प्रेम पद्मावत रातीं[25] ॥

दो० गीत नाद जस धन्धा, दहके[26] बिरहकी आंच।
मनकीडोरलागतहँठाईं, जहांसो गँहि[27]पुनि[28] खांच॥

बेमिसाल १ महल २–१५–१८ दरवाज़ा ३ज़मीन ४ लाल ५–२५ ठंढा ६ बीचोबीच ७ खिलना ८ खूबसूरत ९ तख़्त १० सूर्य ११–१४–१८ तथा पद्मावत १२ दिल १३ निगाह १६–२० होशियार १७ चांद १९ हाथ २१ भरा-हुआ २२ ज़ाहिर २३ छिपा २४ जलना २६ पकड़ना २७ रस्सी २८ ॥

गोरो बादल राजा पाहां। रावत दोऊ दोउ जनु बाहां॥
आय श्रवणै राजाके लागी। मूंसि न जाहिं पुरुषजो जागी॥
बाचा पुरुषै तुर्क हम बूझा। परगटे मेरँ गुप्त छल सूझा॥
तुव नहिं करो तुर्क सो मेरूं। छलपै करहिं अंतके फेरू॥
बेरी कठिन कुटिलजसकांटा। सोम कोपरहि जारहि आंटा॥
शत्रु कोट जो पाय अँगोटी। मीठी खांड़ जेंवाये रोटी॥
हम सों ओछे कै पावा छातू। सूलै गये सँग रहे न पातू॥

दो० यहिसोकृष्ण बलराजजस, कीन्हचहे छरबांध।
हम विचार अस आवहिं, मेरहि दीजे न कांध॥

सुन राजा यहि बात न भाई। जहां मेर तहँ नहिं असमाई॥
मन्दहि भल जो करे भलसोई। अन्तहिं भलाभली कर होई॥
शत्रु जो विष दय चाहै मारा। दीजे नोन जान बिष सारा॥
विष दीन्हें विषधर होय खाय। लोन देखहों लोन बिलाय॥
मारे खड्ग खड्ग कर लिये। मारे लोन नाय शिर दिये॥
कवँरों विषजो पण्डवनै दीन्हा। अन्तहिदांव पण्डवन लीन्हा॥
जो छल करे वही छलबाजा। जैसे सिंह मँजूषा साजा॥

दो० राजैं लोन सुनावा, लाग दोहों जस लोन।
आय कुहाय मँदिर कहँ, सिंह जान औगोन॥

नाममन्त्री १ सरदार २ कान ३ चोरी होजाना ४ क़ौल बादशाह ५ ज़ाहिर ६ मेल ७-१०-१७ छिपा ८ दगा ९ सख़्त ११ दुश्मन १२-१८ क़िला १३ घेरना १४ तथा बादशाहको दे मुरव्वत पाया १५ जड़ १६ तलवार १९ दुर्योधन २० राजा युधिष्ठिर आदिक २१ पहुँचना २२ एक ब्राह्मण ने शेर को जो पिंजरे मँ बन्दथा निकाल लिया शेर ने उसको खाने चाहा उसने कहा कि भलाई के बदले बदी न करना चाहिये जब तकरार होनेलगी तब एक गीदर ने आके पंचाइत की और कहा कि हम सूरत असली देखैं तब फैसला करैं जब शेर पिंजरे मैं चलागया ब्राह्मणने खिड़की बन्द करली गीदर ने कहा कि ऐ ब्राह्मण अब घरजाउ यही फैसला है २३॥

राजा की सोरहसै दासी । तिन महँ चुन काढ़ी चौरासी ॥
बरणं बरण सारी पहिराई । निकस मँदिर ते सेवा आई ॥
जनु निसरीं सब बीरबहूटी । रायमुनी पिंजर हुत छूटी ॥
सबै प्रथमा यौबन सोहैं । नयन बानें औ सारँग भौंहें ॥
मारहिं धनुर्ष केर शिर ओहीं । बनघटवाट धनुषजित ओहीं ॥
कामंकटाक्ष हनहिं चितहरणी । एक एकते आगरं बरणी ॥
जानहुँ इन्द्रलोक ते काढ़ी । पांतहि पांत भई सब ठाढ़ी ॥

दो० शाह पूँछ राघव पहँ, सबते कही वैनाहिं ।
तुइजोपद्मिनी बरणी, कहुसोकौनइनमाहिं ॥

दीरघआयु भूमिपति[12] भारी । इन्हमें नाहिं पद्मिनी नारी ॥
यहि फुलवारसो वहुकी दासी । कहँ केतकी भँवर सँग बासी ॥
वह सो पदारथ[13] ये सब मोती । कहँ वह दीपपतँगजहँज्योती ॥
ये सब तरई[14] सेव कराहीं । कहँवह[15]शशिदेखताछिपजाहीं ॥
जबलगसूर[16]कीदृष्टि[17]अकाशू । तवलग[18]शशिनहिंकरैप्रकाशू ॥
सुनके शाह दृष्टि[20] तर लावा । हम पाहुन यहिमँदिरपरावा ॥
पाहुन ऊपर हेर[21] नाहीं । हना राहु अर्जुन परछाहीं ॥

दो० तपै बीज जस धरती, सूख बिरह के घाम ।
कबसोदृष्टि[22]करबरसहि, तनतरवर[23]होयजाम ॥

सेव करैं दासी चहुँ पासा । अप्सरैं[24] जानु इन्द्र कैलासा ॥
कोउ परात कोउ लोटा लाई । शाह सभा सब हाथ धोवाई ॥
कोइ आगे पनवार बिछावहिं । कोई जेवन लैलै आवहिं ॥

रंगबरंग १ नाम जानवर २ नौजवान ३ तीर ४ कमान ५-६ तिरछी निगाह ७ ज्यादा ८ बयान करना ९-१० बड़ीउमर ११ ज़मीनका मालिक १२ जवाहिरात १३ छोटेनखत १४ चांद १५-१८ सूर्य्य १६ निगाह १७ रोशनी १९ नज़र २०-२२ देखना २१ पेड़ २३ इन्द्रलोककी परी २४ ॥

कोई माड़[1] जाहिं धरि जूरी। कोई भात परोसहिं पूरी॥
कोई लैलै आवहिं थारा। कोइ परसहिं बावन परकारा॥
पहिर जो चीरै[2] परोसहिं आवहिं। दुसरी ओर बरनै[3] देखरावहिं॥
बरण बरण पहिरहिं हर फेरा। आव झुंड जस अप्सरै[4] केरा॥

दो॰ पुनि संधानै[5] बहु आनी, परसहिं बूकहिं बूक।
करै सँवार गुसाँई[6], जहां परी कछु चूक॥

जानहु नखत करहिं सब सेवा। बिन शशि सूरहिं भावन जेवा॥
बहु परकारै फिरहिं हर फेरें। हेरा[9] बहुत न पावा हेरें॥
परी असूझ सबै तरकारी। लोनी[11] बिना लोन सब खारी॥
मच्छलु[?] वहिं आवहिं गड़ कांटी। जहां कमल तहँ हाथ न आंटी[12]॥
मन लाग्यो तेहि कमल की दंडी। भावै नाहिं एको कनहंडी[13]॥
सो जेवन नाहिं जाकर भूखा। तेहि बिन लाग जानु सब रूखा॥
अनभावत चाखी बैरागी[14]। पञ्चामृत जानहु बिष लागा॥

दो॰ बैठ सिंहासन गूंजे, सिंह[15] चरैं नहिं घास।
जब लग मिरग[16] न पावैं, भोजन करैं उपास॥

पान लिये दासी चहुँ ओरा। अमृत[17] दानी भरे कचूरा[18]॥
पानी देहिं कपूरक बासा। सो नहिं पिये दरश कर प्यासा॥
दरशन पान देयँ तौ जीऊँ। बिन रसनौ[19] नयनहिं सो पीऊँ॥
पपिहा बूँद सेवातिह अघा। कौन काज जो बरसै मघा॥
पुनि लोटा कोपरं[20] लै आई। कै निराश अब हाथ धुवाई॥
हाथ जो धोवैं बिरहं[21] को रोरा। सँवरि सँवरि मन हाथ मरोरा॥

रोटी १ कपड़ा २ रंग ३ परी ४ अचार ५ राजा ६ चांद ७ सूर्य्य ८ बहुत तरह ९ देखना १० तथा पद्मावंत ११ पहुँचना १२ तरकारी १३ वे चाहना १४ शेर १५ हिरन १६ शरवत १७ कटोरा १८ ज़बान १९ सिलफ़्ची आफताबा २० सताया २१ ॥

विधि[1]मिलावजासोमनलागा। जोरहिं तोर प्रेम कर तागा ॥

दो॰ हाथ धोय जब बैठो, लीन्ह ऊब के स्वास ।
सँवरा सोई गुसाईं[2], देय निराशैं[3]हिं आस ॥

भइज्योनार फिरा खँडवानी[4] । फिराअरगजा[5] कंकहि वानी ॥
नग अमोल सो थारहिं भरे । राजैं सेवँ[6] आन के धरे ॥
बिन्ती[7]कीन्ह घालगैं[8]पागा । येजगसूर[9] सीवँ[10] गुहिलागा ॥
औगुन अरा कांप यहिजीऊ । जहां भानु[11] तहँ रहा न सीऊ[12] ॥
चारहुँखण्डभानु[13]अस तपा।जेहिकीदृष्टि[14] रैंन[15]मसि[16] छिपा॥
औभानु[17]हिंअस निरमल[18]कला। दरशजोपावै सो निरमला ॥
कमल भानु देखै पै हँसा । औ भातेहिं चाहै परकसा ॥

दो॰ रतन[19]श्यामतहँ[20]रैंनिमसि[21], येरवि[22] तिमिर[23]सँहार।
कर सो दृष्टि[24] औ कृपा, दिवँस[25] देह उजियार ॥

सुनविन्ती[26] बेहसाँ[27]सुलतानू । सहसैं[28]हि किरणदिपै जसभानू[29] ॥
ऐ राजा तुइँ सांच जुड़ावा । भइसोदृष्टिअबसीवँ[30] जुड़ावा ॥
भानु[31] की सेवा जो कर जीव ।तेहिमसिकहांकहांतेहिसीव[32] ॥
खाउ देश आपन कर सेवा । और देउँ माड़ो तोहिं देवा ॥
लीकपषान[33] पुरुष[34] कर बोला । ध्रुवँ[35] सुमेरु[36] ऊपर नाहिं डोला ॥
फेर बसावँ[37] दीन्ह नग सूरू । लाभदेखायलीन्हचहिमूरू[38] ॥
हँस हँस बोले टेके कांधा । प्रीतिसुलाय चहै छल बांधा ॥

दो॰ माया बोल बहुत कर, शाह पान हँस दीन्ह ।

ईश्वर १–२ नाउम्मेद ३ शरबत ४ अतर ५ नज़र ६ अर्ज़ ७ गर्दन ८ सूर्य्य ९–११–१३–१७–२२–२९–३१ जाड़ा १०–१२–३०–३२ निगाह १४ रात १५–२० सियाही १६–२१ पाकसाफ़ १८ राजा १९ अंधियारा नाशकर २३ अच्छी नज़र २४ दिन २५ अर्ज़ २६ हँसा २७ हज़ार २८ पत्थर ३३ मर्द ३४ नाम नखत ३५ पहाड़ ३६ लालच ३७ जड़ ३८ ॥

पहिले रतन[1] हाथ कै, चहौं पदारथ लीन्ह ॥
माया मोह बिबश भा राजा। शाह खेल शतरंजकरसाजा॥
राजाहै जबलग शिर घामू। हमतुमघड़ि[3]कैकरहिंबिश्रामू[4] ॥
दर्पन शाह भीतें तहँ लावा। देखों जोह झरोखें आवा ॥
खेलहिं दोऊ शाह औ राजा। शाहक रुख दर्पनरहि साजा॥
प्रेमकै[6] लुब्ध पियादे पाउँ। चलै सौंहिं[7] ताके कहँठाउँ ॥
घोड़ा दै फ़रज़ी बँद लावा। जेहिं मुहरा रुखचहैसोपावा॥
राजा पील देइ शह मांगा। शहँ दै चाहि मरै रथ स्वांगा ॥

दो० पीलहि पील देखावा, भयो दुहूँ चौदांत[8]।
राजा चहै बुर्द भा, शाह चहै शहमात॥

सूरै[11] देख वै तरँइं[12] दासी। जहँ शशि[13]तहांजायपरकांसी॥
सुना जो हम देहली सुलतानू। देखा आज तपै जस भानू ॥
ऊंच छत्र ताकर जगमाहां। जग जो छांह सबवहकीछाहां॥
बैठि सिंहासन गर्वहि[16] गूंजा। एक छत्र चारहुँ खँड भूंजा ॥
निरखि[17] न जायसौंहि[18] वहपाहीं।सबै नवै कै दृष्टि तराहीं ॥
मन माथे वह रूप न दूजा। सबरुपवन्त करहिं वह पूजा॥
हमअस कसा कसौटी आरसं। तुहूँ देख कस कंचन[21] पारस ॥

दो० बादशाह देहली कर, कित चितौर महँ आव।
देख लेहु पद्मावत, जें न रहैं पछताव ॥

बिकसै[22]जोकुमुद[23]कही शशिठाऊं।बिकसाकमलसुनतरबि[25] नाऊं

तथा राजा १ तथा पद्मावत २ एक घड़ी ३ आराम ४ दीवार ५ भरा-हुआ ६ सामने ७-१८ जगह ८ शह देके बाज़ी जीतना चाहा ९ मुक़ाबिल १० सूर्य ११-१५-२५ नखत १२ चांद तथा पद्मावत १३-२४रोशनी१४ गरूर१६ देखना १७ निगाह १९ आईना २० सोना २१ खिलना २२ कोकाबेली २३ ॥

भइनिशि शशिधौराहरे चढ़ी। सोरहकिरनजैसिविधि गढ़ी॥
बेहँस झरोखें आय सँरेखी। निरखै शाह दर्पनमहँ देखी॥
होतहि दरश परसै भा लूना। धरती स्वर्ग भयो सब सूना॥
रुख मांगत रुखँ तासों भयो। भा शहमात खेल मिटगयो॥
राजा भेद न जानै झांपा। भाविपनारि पवनविनकांपा॥
राघवं कहा कि लाग सपोरी। लै पौढ़ावहिं सेज सँवारी॥

दो० रैंयनि बीतगइ भोरभा, उठा सूर तब जाग।
जो देखै शशि नाहीं, रही करों चितलाग॥

भोजन प्रेम सो जानिजोजेवा। भँवरहिंरुचहिवासरस केवा॥
दरश देखायजायशशि छिपी। उठा भानु जस योगी तपी॥
राघव चेत शाह पहँ गयो। सूर्य देख कमल विप भयो॥
छत्रपती मन कहां सो पहुँचा। छत्र तुम्हार जगत पर ऊँचा॥
पाट तुम्हार देवतन पीठी। स्वर्गपतालरयनिदिनदीठी॥
छोहते पलहहिं उपटे रूखा। कोहते महिसायेरसबसूखा॥
सकल जगत तुम नावै माथा। सबकर जियन तुम्हारेहाथा॥

दो० दिननयनलावहुतुम, रयनि भाव नहिं जाग।
अबनिचिन्तअससोय, कहँ विलम्ब असलाग॥

देख एक कौतुक हौं रहा। रहअन्तरपट पैनहिं अहा॥
सरवेर एक देख मन सोई। रहापानि अव पानि न होई॥
स्वर्ग आय धरती महँ छावा। रहा धरति पै धरत न आवा॥

रात १-११ महल २ ईश्वर ३ होशियार ४ देखना ५ पारसपत्थर ६ मुँह ७ छिपा ८ नाम भाट ९ ख़ुराहवा १० सूर्य्य तथा बादशाह १२-१७ चांद तथा पद्मावत १३-१६ ध्यान १४ कमल १५ तख़्त १८ आसमान १९-२१ निगाह २० मेहरवानी २१ हराहोना २२ ग़ुस्सा २३ तालाब २४-२८ सब २५ तमाशा २६ परदा २७॥

तिन्हमहँ पुनि इकमन्दिरऊँचा। करनै[1] अहापै करनहिंपहुँचा ॥
तेहि मण्डप मूरत मन देखी ।बिनतनबिनजिवजायबिशेखी॥
पूरणचन्द्र[2] होय जनु तपी । पारसरूप दरश दै छिपी ॥
अबजहँ चतुर्दशी[3] जिव तहां । भान अमावस पावै कहां ॥

दो० विकसौं[4]कमलस्वर्ग[5] निशि[6], जनहुँलौंकगाबीज ।
यहू राहुभा भानँहिं[7], राघव मनहिं पतीजँ[8] ॥

अति विचित्र देखों सो ठाढ़ी । चितकीचित्रलीन्हजिवकाढ़ी॥
सिंहलंक[9] कुम्भस्थल[10] जोरू । आंकुश नाग महावत मोरू ॥
तेहिऊपरभा कमल विकासू[11] । फिर अलि[12]लीन्हपुहुँप[13]रसबासू॥
दोहुँ खंजन[14] विच बैठो सुवा । दुइजका चन्द धनुषलै उवा ॥
मिर्ग[15] देखाय गवन फिरगया। शशि[16]भा नाग सूर्य्यभादिया ॥
सुठ ऊँचे देखत वह उचका । दृष्टि[17]पहुँचकर[18] पहुँच न सका ॥
पहुँचौ[19] भयो दृष्टि गत भई । गहि[20] न सका देखत वहगई ॥

दो० राघव हेरत[21] जो गयो, अच्छत हिये समाध ।
वँह[22] तन राघव बाघभा, सके न कै अपराध ॥

राघव सुनत शीशँ[23] भुइँ धरा । युग युग राज भानँ[24]की किरा ॥
वही किरान वह रूप विशेखी । निश्चय तुम पद्मावत देखी ॥
केहरलंक[25] कुम्भस्थल[26] हिया । ग्रीव[27] मयूरअलक[28]रवि[29] दिया॥
कमल वदन औ बाससमीरूँ[30] । खंजन[31]नयन नासिका कीरू[32] ॥

हाथ १ चौदहींरातका चांद २-३ खिलना ४-११ आसमान ५ रात ६ सूर्य ७-२४-२६ मुरझाना ८ चीताकी कमर ९-२५ हाथी १०-२६ भँवरा१२ फूल १३ ममोला १४-३१ हिरन १५ चांद १६ निगाह १७ हाथ १८ देखते ही चाहा कि आप को पहुँचाऊँ १९ पकड़ना २० देखना २१ तद्बीर काम न आई शेरकी तरह गुस्सा किया २२ शिर २३ गर्दन २७ बाल २८ हवा ३० नाक तोताकी ३२ ॥

भौंहधनुषशशि दुइज ललाटू। सब रानिन ऊपर वह पाटू॥
सोई मिरग देखाय जो गयो। बेनी नाग दिया चित भयो॥
दरपण महँ देखी परछाहीं। सो मूरति भीतर जिव नाहीं॥
दो॰ सबै शृंगार बनी धनि, अब सोलीभंति कीज।
अलकें जोलटकीअधरपर, सोगहि केसरलीज॥

खण्ड उन्तालीसवां क़ैद होना राजा रतनसेन का॥

मीत भा मांगा बेग बेवानू। चला सूर सँवरा अस्थानू॥
चलत पंथ राखा जो पाऊं। कहांरहैथिर चलत बटाऊ॥
पथिक कहँ कहवां ससताई। पंथ चलै तब पंथ सेराई॥
छल कीजे बल जहां न आंटी। लीजे फूल टारके कांटा॥
बहुत भया सुन राजा फूला। चला साथ पहुँचावै भूला॥
शाह हेत राजा सों बांधा। बातहिंलायलीन्हगहि कांधा॥
घिव मधु सान दीन्ह रससोई। जो मुँह मीठ पेट विष होई॥
दो॰ अमिय वचन औमाया, को न मुयो रस भीज।
शत्रु मरै अमृत जो, तेहि विष काहे दीज॥
चांद घरहि जो सूरज आवा। होयसोअलोप अमावसपावा॥
पूछहिंनखत मलीनसोमोती। सोरहकला न एकोज्योती॥
चांद गहन आगाहि जनावा। राज भूलगहि शाहचलावा॥
पहिले पँवरि नांघ सो आई। ठाढ़े भये राज पहिराई॥

चांद १ माथा २ तख़्त ३ हिरन ४ चोटी ५ पद्मावत ६-२७ अक़िल ७ ज़ुल्फ़ ८ होंठ ९ पकड़ना १० दोस्त ११ सवारी १२ बादशाह १३ मकान १४ राह १५-१६ क़ायम १६ मुसाफ़िर १७-१८ पहुँचना २० पकड़ना २१ शहद २२ मीठीबात २३ दुश्मन २४ छिपजाना २५ तथा सखी २६ ख़बर २८ दरवाज़ा २९॥

सौ तुषार तीस गज पावा। दुन्दुभिश्रौचौ घोड़ीदेवावा॥
दूजे पँवर दिया असवारा। तीजे पँवरनगदीन्हअपारा॥
चौथे पँवरदे द्रव्य करोरी। पँचयें दुइ हीरा की जोरी॥

दो॰ छठयें पँवर माड़ो दियो, सतयें दीन्ह चँदेर।
साल पँवर नाँघत नृपति, लेगयो बाँध गरेर॥

अहिजग बहुत नदीजलजोड़ा। कौन पारभा कौन न बूड़ा॥
कौन अन्धभा आग न देखा। कौन भयो डीठार सरेखा॥
व्याध भई राजा कहँ माया। तजकैलास परी भुइँ पाया॥
जेहिकारणँ गढ़कीन्ह अँगूठी। कित छोड़े जो आवे मूठी॥
शत्रुहि कोउ पाव जो बांधे। छोड़ आपकहँ करै बिबांधे॥
चारा मेल धरा जस माछू। जलसे बिकसमरै जसकाछू॥
शत्रुहि नाग पेटारी मूँदा। बांधामिरगै पैगनहिं खूँदा॥

दो॰ राजा धरा आनके, तन पहिरावा लोह।
ऐसो लोह सोपहिरे, चेतँ श्यामकी ओह॥

पांयन गाढ़ी बेड़ी परीं। सांकर ग्रीव हाथ हथकड़ी॥
औ धर बांध मँजूषा मेला। ऐसो शत्रु जनु होयदुहेला॥
सुनि चितौरमहँ पड़ा बखानाँ। देश देश चारहुँदिशजाना॥
आजनरायण फिर जग खूँदा। आजसोसिंह मँजूषा मूँदा॥
आज खँसे रावण दशमाथा। आजकान्हेकालीफणनाथा॥
आजहिं भाणकंस कर ढीला। आजमीनें शंखासुर लीला॥

घोड़ा १ हाथी २ डंका ३ बग्घी ४ राजा ५ होशियार ६ जिसलिये ७ घेरना ८ दुश्मन ९-१२ दुख १० कछुवा ११ पैरबँधा हिरन नहीं भागता १३ ग़फ़लतका फल उठाये १४ गर्दन १५ पिंजरा १६-२१ दुखी १७ बयान १८ सख़्ती १९ शेर २० गिरना २२ श्रीकृष्णजी २३ मछली २४ नामदैत्य २५॥

आज परे पाण्डव[1] बँद माहां । आज दुशासन[2] उतरी बाहां ॥
दो० आज धरा बलराजा, मेला बांध पतार ।
आज सूर[3] दिनअथवा, भाचितौरअँधियार ॥
देव सुलेमाँ के बँद परा । जहँलग देव सवहिंसतहरा ॥
शाहलीन्ह गहिकीन्ह पयानाँ । जोजहँशत्रु[6]सोतहांबिलाना ॥
खुरासानँ औ डरा हरेवँ । कांपा बिदुर धरा अस देव ॥
बंध उदयगिरि[10] धौलागिरी[11] । कांपी सृष्टि[12] दुहाई फिरी ॥
उवा सूर भइ सामहि करा । पालाफूट पानि होय ढरा ॥
डँडवी दांड दीन्ह जहँ ताईं । आय दण्डवत कीन्ह सवाईं ॥
ढंददांड[13] सब स्वर्ग[14]हि गई । भूँमि[15] जो डोली इस्थिर[16] भई ॥
दो० बादशाह देहली महँ, आय बैठ सुख पाँट[17] ।
जेहिंजेहिंशीश[18]उठावा, धरती धरी ललाँट[19] ॥
हवशी बन्दवान जिवबधाँ । तेहि सौंपा राजा अगदहाँ ॥
पीनि पवन कहँ आश करेई । सो जियबधिक[23]सांसबहुदेई ॥
मांगत पान आग लै धावा । मुँगरी एक आन शिरलावा ॥
पानी पवन तुइँ पियासोपिया । अबको आन देय पानिया ॥
तब चितौर जिय रहा न तोरे । बादशाह हैं शिर पर मोरे ॥
जोहि हँकारेहीं[24] उठ चलना । सोकितकरोहोय कर[25]मलना ॥
करै सो मीत गाढ़ बँद जहां । पान फूल पहुँचावे तहां ॥
दो० जल[26] अंजलमहँ सोवा, समुद्र न सँवराजाग ।

राजा युधिष्ठिर १ नाम बहादुर २ सूर्य ३ नामबादशाह ४ कूच ५ दुश्मन ६ नाममुल्क ७ से ११ तक । दुनिया १२ आवाज़मनादी १३ आसमान १४ ज़मीन १५ क़ायम १६ तख़्त १७ शिर १८ माथा १९ हवशी दरोगा क़ैदख़ाना २० जल्लाद २१ जलाहुवा २२ जानमारनेवाले २३ बोलाना २४ हाथ २५ पानीमहँ पियासा २६ ॥

अबधरकाढ़ामच्छज्यों, पानी मांगत आग ॥
पुनिचल दुइजनें पूछन धाये। वै शठ दग्ध आय देखराये ॥
तुइँ मेरिपुरी न कबहूं देखी। हाड़ जो बिथरे देखन लेखी॥
जानी नहिं कि होब अस मुहूं। खोजे खोज न पावब कहूं ॥
अब हम उतरें देहुरे देवा। कौने गर्ब न मानी सेवा ॥
तुइँ अस बहुत गाड़खन मूंदी। बहुरि न निकसबारहोयखूंदी॥
जो जस हँसै सो तैसे रोवा। खेलै हँसै अभै भुइँ सोवा ॥
जस अपने मुहँ काढ़े धुवां। चाहेसि परा नरक के कुवां ॥
दो० जरेसि मरेसि अब बांधा, तैसो लाग तोहिदोषँ।
अबहुँ मांग पद्मिनी, जो चाहेसिभा मोषँ ॥
पूँछहिं बहुत न बोला राजा। लीन्हेसिजियेंमीचँमनसाजा॥
खनँ गड़वा चरनहिं लै राखा। नितउठ दग्ध होयनौलाखा॥
ठाँवँ[12] सो सांकर औ आँधियारा। दूसर करवट लेइ न पारा ॥
पीछे सांप आय तहँ मेली। बांका आन छुवावहिं हेली[13] ॥
धरहिं सँदोसी छूटै नारी। रात दिवसँ दुखपहुँचै भारी ॥
जो दुखकठिनँ[16] न सहै पहारू। सोअँगवाँ मानुषशिरभारू ॥
जो शिर परै आय सो सहै। कछु न बिसाय काहसों कहै॥
दो० दुख जारै दुख भूजै, दुख खोवै सब लाज।
काजँहि चाह अधिकदुख, दुखीजानजेहिबाज॥
पद्मावत बिन कंत दुहेली[19]। बिनजलकमलसूखजसबेली॥
गाढ़ी प्रीति सो मोसों लाई। देहिलीजायनिचिंतहोयछाई ॥

आदमी १ आग २ यमपुरी ३ जंचाव ४ शकर ५ फेर ६ पाप ७ छूटना क़ैदसे ८ मौत ९ तंगपिंजरा में क़ैद किया १० जलाना ११ जगह १२ डाम १३ संसी १४ दिन १५ भारी १६ उठाना १७ दुखको वह जानै जिस पर पड़ै १८ दुखी १९ ॥

कोउ न बहुरा पुनि हर देशू । केहि पूछहुँ को कहै सँदेशू ॥
जो कोइ जाय तहां कर होई । जो आवे कुछ जान न सोई ॥
अगम पंथ पिय तहां सिधावा । जोरेगयो सो बहुरे न आवा ॥
कुवांढार जल जैसो बिछोवा । डोलभरा नयनहिं धन रोवा ॥
लेजुरि भई नांहे बिन तोहीं । कुवां परीधर काढ़ेसिमोहीं ॥

दो० नयन डोल भर ढारै, हिये न आग बुझाय ।
घड़ीघड़ी जियआवै, घड़ी घड़ी जिवजाय ॥

नीर गँभीर कहां हो पिया । तुमबिन फाटै सरवर हिया ॥
गयो हेराय बिरह के हाथा । चलतसरोवर लीन्हनसाथा ॥
चरत जो पंखे केल कर नीरा । नीरकठिनकोउआवनतीरा ॥
कमलसूख पखुरी बेहिरानी । गलगलकेमिलछारहेरानी ॥
बिरह रेत कंचन तन लावा । चून चूनके खेह मिलावा ॥
कनकँजो कनकनै है बेहिराई । पिय पै छार समेटो आई ॥
बिरह पवन यहि छार शरीरू । छारहिआनमिलावहुनीरू ॥

दो० अबहुँ जियावहु के मया, बिथुरी छार समेट ।
नइकाया अवतार नव, दर्श तुम्हारे भेट ॥

नयन सीप मोती तस आशू । तेते ततपरहिं करैतननाशू ॥
पदक पदारथ पद्मिन नारी । पियाबिन भइकौड़ीबरबारी ॥
सँगले गयो रतन सब ज्योती । कंचन कया कांचभइपोती ॥
बूड़तहों दुख दगधै गँभीरा । तुमबिन कंत लावको तीरा ॥

मुश्किल राह १ लौट २ पद्मावत ३ रस्सी ४ खाविन्द ५ छाती ६–६ पानी गहिरा ७ तालाब ८–१० जानवर परिन्द ११ अलग १२–१६ धूर १३–१६–२० मिलना १४–१५ सोना १७–२७ रेज़ारेज़ा १८ पानी २१ बदन २२ पैदाहोना २३ गर्म २४ लाल जवाहिर २५ मोल २६ आगभारी २८ किनारा २९ ॥

हिये[1] विरह होय चढ़ापहारू। जल यौवन सहसकै न भारू॥
जलमहँअगिनसोजाननिछूना। पाहन[2] जरहिंहोहिंसबचूना॥
कौने यतन कंत तुम पाऊँ। आज आगहों जरतबुझाऊँ॥
दो० कौन खण्डहों हेरों[3], कहां वन्धु[4] हौं नांह।
हेरे कतहु न पाऊँ, बसे तु हिरदय मांह॥
नागमती पियपिय रटलागी। निशि[6] दिनतपैमच्छज्यों आगी॥
भँवर भुजंग कहां हो पिया। हम ठगा[7] तुम कानन किया॥
भूल न जाहि कमल के पाहां। बांधत बिलँबन लागैनाहां॥
कहां सो सूर पासहों जाऊँ। बांधा भँवर छोर कै लाऊँ॥
कहां जाऊँ को कहै सँदेशा। जाऊँ सो तहँ योगिन के भेशा॥
फार पटोरे[10] सो पहिरों कंथा[11]। जो मोहिं कोउ देखावै पंथा[12]॥
वह पंथ[13] पलकन जाऊँ बुहारी। शीश[14] चरणकेचलों सिधारी॥
दो० कोगुरु अगवा होयसखि, मोहिंलावे पंथमांह।
तन मन धन बलवलकरों, जोरे मिलावे नांह[15]॥
कै कै कारण रोवै बाला। जनु टूटहिं मोतिनके माला॥
रोवत भई न श्वास सँभारा। नयनचुवहिंजनुउरतीधारा॥
जाकर रतन परे पर हाथा। सो अनाथकिमिजीवैनाथा॥
पांच[16] रतन वह रतनहि लागी। वेग[17] आवपियरतन सभागी॥
रही न ज्योति[18] नयनभये खीनी। श्रवण[19] नसुनोंवैन[20] तुमलीनी॥
रसनां[21] रस नहिं एको भावा। नासिक[22] औरवासनहिंआवा॥
तचतचतुमबिनअंग[23] मोहिंलागी। पांचौं[24] दग्ध[25] विरहअबजागी॥

छाती १ पत्थर २ देखना ३ फंद ४ खाविन्द ५-८-१५ रात ६ दुश्मनी ७ सूर्य ९ सारी १० गुदड़ी ११ राह १२-१३ शिर १४ ताक़त देखने, सुनने, सूंघने, बोलने, छूने की १६-२४ जल्द १७ रोशनी कम १८ कान १९ आवाज़ २० ज़बान २१ नाक २२ बदन २३ आग २५॥

दो० बिरह सो जार भस्मकै, चहै उड़ावा खेह।
आय सो धन पिय मिलवे, करलेवे नइ नेह॥

पियबिन व्याकुल व्यापी नागा। बिरहा तपन श्याम भये कागा॥
पवन पानि कहँ शीतल पीउ। जेहि देखे पलुहै तन जीउ॥
कहँ सो बास मलयाँगिरि नाहां। जेहि कल परत देत गलबाहां॥
पद्मिनि ठगनी भइ कित साथा। जेहिते रतन परा पर हाथा॥
होय बसंत आवहु पिय केसर। देखै फिर फूलै नागेसर॥
तुम बिन नाँह रहे हियँ तचा। अब नाहिं बिरह गडुरपे बचा॥
अब अँधियार परा मसि लागी। तुम बिन कौन बुझावै आगी॥

दो० नयन श्रवण[१०] रस रसनौ[११], सबै खीनें[१२] भये नाहँ[१३]।
कौन सो दिन जेहि भेंटके, आय करै सुख छाहँ॥

कंभलनीर[१४] राय देवपालू। राजा केर शत्रु[१५] हियें[१६] शालू॥
उनपै सुनी कि राजा बांधा। पाछल बैर सँवर छल सांधा॥
शत्रु शालँ[१७] तब न्योरे सोय। जो घर आव शत्रु[१८] की जोय॥
दूती एक बृद्ध तेहि ठाँऊँ[१९]। ब्राह्मण जाति कुमोदन नाऊँ॥
वह हँकारँ[२०] के बीरा दीन्हा। तोरे बल मैं बलजिव कीन्हा॥
तुइ कुमदनी कमल के नेरे। स्वर्ग जो चांद बसे तोहि हेरे[२२]॥
चितोर महँ जो पद्मिन रानी। कर बल छल सो दै मुहिं आनी॥

दो० रूप जगत मन मोहन, जेहि पद्मावत नाउँ।
कोटि द्रव्य तुहिं देहों, आन करेसि इकठाउँ॥

कुमदिन कहा देखहों सोहों। मानुष कहा देवता मोहों॥

धूर १ रानी नागमती २-६ हराहोना ३ चन्दन ४ खाविन्द ५-७-१३ दिल ८ सियाही ९ कान १० ज़बान ११ कमज़ोर १२ नाममुल्क १४ दुश्मन १५-१८ दिल दुख देनेवाला १६ दुश्मन दुख देनेवालेने चाहा कि जैसे बनपड़ै १७ जगह १९ बोलाया २० आसमान २१ नज़र २२॥

जस कामरू चमारिन लोना। कौनहिं छल पाढ़त कै टोना॥
बिषहर नाचहि पाढ़त मारी। औघर मूंदे घाल पेटारी॥
वृक्ष चलै पाढ़त के बोला। नदीउलटबहि परबत डोला॥
पाढ़त हरि पण्डित मतिघेरी। औरको अन्धगूंग औशहिरी॥
पाढ़त ऐसे देवतहिं लागा। मानुष का पाढ़त सों भागा॥
पाढ़त कै हठ काढ़त पानी। कहां जाय पद्मावत रानी॥

दो॰ दूती बहुत पैंच कै, बोली पाढ़त बोल।
जाकर सत सुमेरु है, लागे जगत न डोल॥

दूती बहुत पकावन सांधी। मोतिन लडू खरोरा बांधी॥
माठ पेराकैं पेठे पापर। पहिर बूझ दूती के कापर॥
लै पूरी भरडाल अकूती। चितौर चली पैंच कै दूती॥
बृद्ध बैस जो बांधे पाऊं। कहांसोयौवन कित बोसाऊं॥
तन बूढ़ा मन बूढ़ न होई। बल न रहा लालच जें होई॥
कहांसोरूप जगत सबराता। कहांसो गैंदहस्ति जसमाता॥
कहांसो तीर्थ नयन तनठाढ़ा। सबै मार यौवन पुनि काढ़ा॥

दो॰ मुहमद बृद्ध जो नइचलै, काह चलै भुइं टोइ।
यौवन रतन हेरान है, मकु धरती महँ होय॥

आय कुमोदिनि चितौर चढ़ी। जोहँन मोहन पाढ़त पढ़ी॥
पूछ लीह रनवास बरोठा। पैठ पँवँर भीतर बहु कोठा॥
जहँ पद्मावत शशिउजियारी। लै दूती पकवान उतारी॥
हाथ पसार धाय के भेंटी। चीन्हीं नहिं राजा की बेटी॥

सांप १ मन्त्र २-४ पेड़ ३ कीलमज़बूत ५-८ ईमान ६ मोतीचूरके लडुवा ७ खरीदार ६ दुनिया १० लाल ११ यहर १२ हाथी १३ कटेली १४ शायद १५ बहुत तरह के मन्त्र १६ दरवाज़ा १७ चांद १८॥

हौंब्राह्मण जेहिकुसुदिनिनाऊँ। हम तुमउपजी एकहि ठाँऊ॥
नाउँ पिता कर दूबे वेनी। सोइ पुरोहित गन्ध्रपसेनी॥
तुम वारी तब सिंहल द्वीपा। लीन्हें दूध पियायों सीपा॥

दो० ठाँउ कीन्ह मैं दूसर, कम्भलनी रहि आय।
सुनितुमकहँचित्तौरमहँ, कहूँ कि भेटों जाय॥

सुनि निश्चै नैहरकी गोई। गरे लाग पद्मावत रोई॥
नयनगगन रवि बिनअँधियारो। शशिमुखआंशुटूटजनु तारे॥
जगअँधियार गहनदिनपरा। कवलगशशिनखतहितसभरा॥
माय वाप कित जन्मी वारी। ग्रीवँ तोड़ कितजन्मनभारी॥
कित विवाहदुखदीन्हदुहेलों। चितौर पंथ कन्त वँद मेला॥
अवयहिजियनचाहभलमरना। भयो पहार जन्म दुख भरना॥
निकसनजायनिलजयहजीउ। देखों मँदिर सून वँद पीउ॥

दो० कुहुकजोरोवे शशिनखतं, नयनहिंरांतचकोर।
अवहूँ वोले तहँ कुहुक, चातृकं कोकिल मोर॥

कुमुदिन कराठलाग सुठ रोई। पुनिलै रोग डारे मुख धोई॥
तुँइशशिरूपजगतउजियारी। मुखनझांपनिशि होयअँधियारी॥
सुनचकोर कोकिल दुखदुखी। घुँघची भई नयन करमुखी॥
केतो धाय मरै कोई वाटा। सोइपावै जो लिखा लिलाटा॥
जोविधि लिखाआननहिंहोई। कित धावै कित रोवै कोई॥
कितको इच्छाँ कर औ पूजा। जो विधिलिखाहोयनहिंदूजा॥

पैदाहोना १ जगह २ वाप ३ पद्मावत का वाप ४ दूसरा खाविन्द ५ यक़ीन ६ गुइयां ७ आसमान ८ सूर्य ९ चांद१०-११-२३ गर्दन१२ भारी१३ राह १४ खाविन्द १५ क़ैद १६ चांद तथा पद्मावत १७ तथा सखी १८ लाल १९ पपीहा २० नामदूती २१ आफ़ताब २२ रात २४ माथा २५ ईश्वर २६ चाहना २७॥

जेते कुमुदिनि बयनै करेई। तस पद्मावत उतरै न देई॥

दो० सेंदुर चीर मैलतस, सूख रही तस भूल।
जेहिश्रृँगारपियतैंजिगया, जन्मनपहिरेफूल॥

तब पकवान उघारा दूती। पद्मावत नहिं छुई अछूती॥
मोहिं अपने पियकेर खँभारूँ। पान फूल कस होय अहारू॥
मोकहँ फूल भये जस कांटी। बांटे देहु जो चाहेसि बांटी॥
रतनछुवे जेहि हाथहिं सेती। औ न छुओं सो हाथ सकेती॥
दमक रङ्गभय हाथ मँजीठी। मुक्ताँ लेउँ पै घुँघची दीठी॥
नयन करमुखी रांती काया। मोतीहोहिं घुँघची जेहिछाया॥
असके ओछ नयन हत्यारे। देखतगा पिउ गहे न पारे॥

दो० कातोर छुवों पकवान मैं, गुड़ कड़ुवा घिउ रूख।
जेहिमिलहोतसवाद रस, लै पिय गयो सुभूख॥

कुमुदिन रही कमलके पासा। बैरी सूर्य्य चांदकी आसा॥
वह कुँभलान रही भै चूरू। बिकसै रैयनि बातहिंकरभोरू॥
कसतुईबौरिरहेसि कुँभलानी। सूख बेल जस पाव न पानी॥
अनहीं कमल कली तुम बारी। कोमल बैस उठत पौनारी॥
बेनी[18] तोर मैल शिर रूखी। सरवर मांह रहेसि कस सूखी॥
पान बेल विधि[20] कर्यौजमाई। सींचत रही तोह पलहाई॥
कर श्रृँगार मुख फूल तँबोला। बैठ सिंहासन भूल हिंडोला॥

दो० हार चीर नित पहिरो, शिरकी करो सँभार।
भोगमानदिनदशलिये, यौवन गये न बार[23]॥

नामदूती १-१० बात २ जवाब ३ छोड़ना ४ दुख ५ लाख ६ मोती ७ लालबदन ८ पकड़ न सके ६ तथा राजा ११ मुरझाई हुई १२ खिलना १३ रात १४ लड़की १५ मुलायमउमर १६ छाती उठती हुई १७ चोटी १८ तालाब १६ ईश्वर २० वदन २१ शरीर २२ वक्त २३॥

विहँसजोकुमुदिनियौवनकहा। कमल न विकसा[१] सम्पुटरहा॥
ऐ कुमुदिनि यौवन तेहिमाहां। जोआछे पियका सुखछाहां॥
जाकर छत्र सो बाहर छावा। सो उजार घर कौन वसावा॥
अहा जो राजा रतन अँजूरा[२]। केहकसिंहासनकेहक पटोरा[३]॥
को पलंग को पौढ़े मांढ़े[४]। सोवनहार परा वँद गाढ़े॥
चहुँदिशि यह घरभाअँधियारा। सब शृंगारलै साथ सिधारा॥
कायां वेल जान तब जामी। सींचनहार आव घरस्वामी[५]॥

दो० तौलहि रहों झुरानी, जौलहि आवसो कन्त।
यही फूल यह सेंदुर, होय सो उठै वसन्त॥

जन तुइँ बारि[६-७]करेसि असजीउ। जौलहि यौवन[८] तौलहिपीउ॥
पुरुष[९] संग आपन कहु केरा। एक कुहाय दुसर सों हेरा[१०]॥
यौवन जल दिनदिनजसघटा। भँवर छिपान हंस परगटा[११]॥
शुभ्र[१२] सरोवर जौलहि नीरा[१३]। बहु आदर पंखी बहु तीरा[१४]॥
नीर[१६] घटे पुनि पूछ न कोई। परसँजोलीजहाथरहि सोई॥
जबलगकालिंदै[१७] होय विरासी। पुनिसुरसरिहोयसमुद्रपरासी॥
यौवन भँवर फूल तन तोरा। वर्ध पूँछ जस हाथ मरोरा॥

दो० यौवन[२१] कृष्णतन करनै[२२], मयां[२३] गोतनहिं साथ।
छलकै जाय हिवानपै[२४], धनुपै[२५] छांड़दुइहाथ॥

जो पिय रतनसेन मोर राजा। विनपिय यौवन कौनेकाजा॥
जो नहिं जिव तो यौवन कहे। विन जिव यौवन काहसोअहे॥

खिलना १ रोशनी २ कपड़ा ३ मोंढ़ा ४ वदन ५ खाविन्द ६–७ लड़कीं८ जवानी ९ मर्द १० देखना ११ ज़ाहिर १२ भराहुआ तालाव १३ पानी १४–१६ किनारा १५ मुख १७–१९ यमुना तथा जवानी १८ गंगा तथा बुढ़ापा २० जवानी २१ नाम राजा दानी २२ मुहव्वत २३ तीर २४ कमान २५॥

जो जिव तौ यहि यौवनभला । आपहि जैसाकरै निरमला ॥
कुलकरणुरुप सिंह जेहि केरा । तेहिथलै कैसिसियार बसेरा ॥
हियां फाड़ कूकुर तेहि केरा । सिंह तजि सियार मुखहेरा ॥
यौवन नीरँ घटेका घटा । सतके बेर न जाय हिये फटा ॥
सघनं मेघह्वै श्याम बरीसहिं । यौवन नयेतरवरे ह्वै दीसहिं ॥

दो० रावणपाप जो जिवधरा, दोउ जगत मुँहकार ।
राम सत्य जो मन धरा, ताहि छलै को पार ॥

कित पावसि पुनि यौवनराता । मैंमतैंचढ़ा श्यामशिरछाता ॥
यौवन बिना बृद्धि हो नाउँ । बिन यौवन थाकै सब ठाँउँ ॥
यौवन हेरत मिलै न हेरा । तेहिपुनिजाहिंकरहिंनहिंफेरा ॥
अहहिजोकेशनगंभँवरजोबसा । पुनिबकैंहोहि जगतसबहँसा ॥
सेंवर सेवन चेत कर सुवा । पुनि पछतास अंतहो भुवा ॥
रूप तोर जग ऊपर लोना । यहि यौवनपाहुनजलसोना ॥
भोग बिलास केर यह बेरा । मानलेहु पुनिको केहिकेरा ॥

दो० उठत कोप जसतरवैर, तसयौवन तोहिरात ।
तौलह रङ्ग लहो रच, पुनिसो पियरहोपात ॥

कुमुदिनि बैनं सुनतही जरी । पद्मिनि हिये आगजनुपरी ॥
रँग ताकर हों जारों रचा । आपन तजें जो पराये लचा ॥
दूसर करै जाय दुइ बाटा । राजा दुइ न होहिं इकपाटा ॥
जेहि जिय प्रेमप्रीतिदृढ़ होई । सुख सुहाग सों बैठौ सोई ॥

साफ़ १ खाविन्द ब्याहाहुआ २ शेर ३ जगह ४ छाती ५-६ देखना ६ पानी ७ ईमान ८ बादल १० खाविन्द ११ पेड़ १२-१६ लाल १३-२० मस्त १४ मुक़ाम १५ सांप १६ बगुला १७ ख़ूबसूरत १८ नामदूती २१ बात २२ दिल २३ छोड़ना २४ दूसर राह तथा नरक २५ तख़्त २६ मज़बूत २७ ॥

यौवन जाउ जाउ सो भँवरा । पियाकीप्रीतिनजायजोसँवरा॥
यहिजगजोपियकरहिंनफेरा।वहजगमिलहिंजोदिनदिनमेरा॥
यौवन मोर रतन जहँ पीउ । बलै सोपियपर यौवन जीव॥

दो० भरथरि[1] बिछोहैं[2] पिंगला[3], आहकरत जिवदीन्ह ।
हों पापिन जो जियतहों, यही दोष[4] हम कीन्ह॥

पद्मावत सो कौन रसोई । जहँ प्रकारँ दूसर नहिं होई ॥
रस दूसर जेहि जीभहि बैठा । सोजाने रस[5] खटा औ मीठा ॥
भँवर बास वहु फूलहिं लेई । फूल बास वहु भँवर न देई ॥
तुइँ रस पुरुष[6] न दूसर पावा । तेहिजाना जेहिंलीन्हपरावा॥
इक चुल्लू रसभर नहिं हियां । जौलहि नहिं फिर दूसर पिया॥
तोर यौवन जससमुद्रहिलोरा। देख देख जिय बूड़े मोरा ॥
रंग और नहिं पाई वैसे । जन्मे और तुइँ पावत कैसे ॥

दो० देखधनुप तोर नयना, सोहिंलागा विप बान ।
विहँस[12] कमल जो मानै, भँवँर[13] मिलाऊँ आन ॥

कुमुदिनि[14] तुइँ बैरिननहिंधाई। मोहिंमसि[15] बोलछलं[16]वेसिआई॥
निरमल[17] जगतनीर[18] करनासा । जोमसि[19] परैहोयसो श्यामा ॥
जहँवाँ धर्म पाप नहिं दीसा । कनक[21] सुहागमांभजससीसा॥
जो मसि परै होय शशिकारी[22] । सोहँसलाय देहोसिमोहिंगारी॥
कापर महँ न छूट मसि अंकू[23] । सोमसिलायमोहिंदेसकलंकू[24]॥
श्याम भँवर मोर सूरज करा । औरजो भँवर श्याममसिभरा॥
कमल भँवर रबि[25] देखै आंखी । चन्दन पास न बैठै मांखी ॥

मुलाक़ात १ कुरबान २ नामराजा ३ जुदाई ४ नामरानी ५ पाप ६ दुरुतरह ७ मज़ा ८ मर्द ९ दिल १० तथा बुढ़ापा ११ हँसना १२ तथा दूसरा खाविन्द १३ नामदूती १४ कालिख १५ दग़ा १६ पाकसाफ़ १७ पानी १८ सियाही १९ काला २० सोना २१ चांद २२ दाग़ २३ ऐब २४ सूर्य २५ ॥

दो० श्यामसमुद्रमोरनिरमल, रतनसेनजगसेन ।
दूसर सरै जो कहावै, सो बिलाय जस फेन ॥

पद्मिनिपुनिमसिबोल न बैनों । सोमसि देख दुहूँ तोरनयना ॥
मसि शृँगार सब काजर बोला । मसकबुंदतिलसोहिंकपोला ॥
लोनां सोई जहां मसि रेखा । मसिपुतरिनतेहिसेजगदेखा ॥
जो मसिघाल नयनदुहुँलीन्हीं । सोमसि फेरजायनहिंकीन्हीं ॥
मसिमुद्रा दुइ कुच उपराहीं । मसिसँवराजसकमलभवाहीं ॥
मसि केशहि मसिभौंह उरेहीं । मसिबिनदशनशोभनहिंदेहीं
सोकस श्वेत जहांमसि नाहीं । सोकसपिंड न जहँपरछाहीं ॥

दो० अस देवपाल राउ तस, छत्रधरा शिर फेर ।
चितौर राज विसरगा, गयोजोकंभल नेर ॥

सुन देवपाल जो कंभल नेरी । पंकजनयन भौंह धन फेरी ॥
शत्रु मोर पिय कर देवपालू । सो कितपूच सिंहसर भालू ॥
दुखन भरा तन जे तन केशा । तेहेकसँदेशसुनावसि बेश्या ॥
सोननदी अस मोरपियगरवा । पाहन होय परै जो हरवा ॥
जेहि ऊपर अस गरुआ पीउ । सो कस डोलाये डोलै जीउ ॥
फेरत नयन चीर सो छूटी । भइ कूटन कुटनी तस कूटी ॥
नाक कान काटी मसिलाई । मूड़ मूड़के गदहे चढ़ाई ॥

दो० मुहमदगरूजोविधि लिखो, काकोइ तेहिफूंक ।
जेहिकभार जग थिर रहा, उड़ेनपवनकेफूंक ॥

पाकसाफ़ १ दुनिया का देखनेवाला २ बराबरी ३ बात ४ गाल ५ खूबसूरत ६ छाप ७ छाती ८ बाल ९ दांत १० सफ़ेद ११ बदन १२ नाम मुल्क १३ कमल १४ पद्मावत १५ दुश्मन १६ शेरकी बराबरी १७ रीछ १८ पत्थर १९ बहिजाना २० लहँगा २१ सियाही २२ ईश्वर २३ क़ायम २४ ॥

रानी धर्म सारं पुनि साजा । बन्द मोप जेहिं पावहिं राजा ॥
जहँ तक परदेशी चलिआवा । अन्नदान औ पानि पियावा ॥
योगी यती आव जित कंथा । पूछी पियाजान कोउ पंथी ॥
दान जो देत बांह भइ ऊँची । जायशाहपहँ बात जो पहुँची ॥
पातुरिइकहुतयोग सु आंगी । शाहँ उघारे हत वह मांगी ॥
योगिनवेष वियोगिन कीन्हीं । सुनके शब्द मोलततकीन्हीं ॥
पद्मिनिपहँ पठई कर योगिन । वेगँआनकरविरहवियोगिन ॥

दो॰ चित्र कला मन मोहन, परकाया परवेश ।
आयचली चितौरगढ़, होययोगिनकरभेश ॥

खण्ड चालीसवाँ वेश्यागमन ॥

मांगत राज वार चल आई । फेर चेरि यह बात जनाई ॥
योगिन एक वार है कोई । मांगै जैसि वियोगिन होई ॥
अवहीं नवयौवन तप लीन्हीं । फार पटोरैं कन्थाँ कीन्हीं ॥
विरह विभूत जटा वैरागी । छाला कांध जापं कँठलागी ॥
मुद्राँ श्रवणँ नहीं थिरं जीउ । तन त्रिशूल आधारी पीउ ॥
छाता छाहँ धूप जनु मरै । पांयन पँवरी सूझल जरै ॥
शृंङ्गी शब्द धँधारी करा । जरै सो ठाँउँ जहां पग धरा ॥

दो॰ किंगरी गहे वियोग बजावे, वारहि वार सुनाउ ।
नयनचक्रचहुँदिशि निरखि, धौंदरशनकबपाउ ॥

खैरातखाना १ वेषवाले २ मुसाफिर ३ मक्कार ४ शाह ने बुलाया ५ पद्मावतको ल.व इनान पावेगी ६ जर्द ७ तज़बीर ८ दरवाज़ा ९-११-२४ दासी १० दुखी १२ नवजवान १३ सारी १४ गुदड़ी १५ माला १६ वाला १७ कान १८ क़ायम १९ खड़ाऊँ २० शृंगी बजा को तरह आवाज़ मस्ताना २१ जगह २२ पैर २३ तरफ़ २५ देखना २६ ॥

सुनि पद्मावत मँदिर बोलाई। पूछी कौन देश ते आई॥
तरुणवैस[1] तोहि छाज न योगू। केहिकारण असकीन्हबियोगू॥
कहेसि विरह दुख[2] जान न कोई। विरहिनजानबिरहजेहिहोई॥
कन्त हमार गयो परदेशा। तेहिकारणैं हमयोगिनभेशा॥
काकर जिय यौवन औ देहा। जोपियगयोभयो सवखेहा॥
फारपटोरैं कीन्ह मन कन्थाँ। जहँपिउमिलै लेहुँसो पन्थाँ॥
फिरौं करौं चहुँ चक्र पुकारा। जटा परी को शीशँ सँभारा॥

दो० हिरदय भीतर पियबसै, मिलै न पूछे काहि।
सून जगत सब लागै, वह बिनकछु न आहि॥

श्रवण छेदसे मुद्रा मेला। शब्द उनाउँ कहां पियगेला॥
तेहिवियोग सिंही नितपूरी। वारबार किंगरी भइ झूरी॥
को मोहिं ले पियकंठ लगावै। परम अधारी बात जनावै॥
पांवरैं टूट चलतगा छाला। मन न खरै तन यौवनबाला॥
गयों प्रयाग मिला नहिंपीउ। करवट लीन्हदीन्हबलजीव॥
जाय वनारस जाखौं कयां। पारखौं पिण्ड नहायों गया॥
जगन्नाथ चक्रहिं के आय। पुनिसो द्वारका जाय नहाय॥

दो० जायकेदारा दागतन, तहँन मिला तनआंकै।
ढूँढि अयोध्या आय फिर, स्वर्गद्वारी झांक॥

गउमुखे हरिद्वार फिर कीन्हों। नगरकोट कितरसनादीन्हों॥
ढूँढू वालें नाथ कर टीला। मथुरामथ्योनसोपिय मेला॥
सूर्य्यकुण्ड महँ जाखौं देहा। बद्री मिला न जासों नेहा॥

नवजवान १ दुख २-१४ वास्ते ३ धूर ४ सारी ५ गुदड़ी ६ राह ७ शिर ८ दिल ९ कान १० बालों ११ आवाज़ १२ जाना १३ शेर १५ नाम बाजा १६ गले १७ खड़ाऊँ १८ शिरकटाना १९ तप किया २० पता २१ नाम तीर्थ २२ से २८ तक॥

रामकुण्ड गोमति गुरुद्वारू। दाहिनवर्त कीन्ह के भारू॥
सेतुबन्ध कैलास सुमेरू। गयोंअलखपुर जहांगँभीरू॥
ब्रह्मवर्त ब्रह्मावर्त परसी। बेनी संगम सीझों करसी॥
नीलकंठ मिश्रिष कुरुजेटा। गोरखनाथ अस्थान समेटा॥

दो० पटना पूर्ब सो घर घर, हाड़ फिरयों संसार।
हेरत कहूँ न पियमिला, नाकोइमिलवनहार॥

बन बन सब हेरयों नवखण्डा। जलजलनदी अठारहगण्डा॥
चौंसठ तीर्थ कीन्ह सब ठाऊँ। लेत फिरयों वह पियकरनाऊँ॥
देहली सब देख्यों तुरकानू। औसुलतान केर बँदेखानू॥
रतनसेन देख्यों बँद माहां। जरै धूप खनै पावन छाहीं॥
सब राजा बांधे औ दागी। योगिनजान राजपगँलागी॥
कासोंभोगँ जहँअन्त न गयऊ। यहदुखलैसोगयोसुखदयऊ॥
देहलीनाउँ न जानों ढीली। सठबँद गाढ़निकसनहिंगेली॥

दो० देख दगंध दुखताकर, अभो कयों नहिं जीउ।
सो धनै कैसे वह जिये, जाकर अस बँदपीउ॥

पद्मावत जो सुना बँद पीउ। पराअगिनिमहँ जानहुघीउ॥
दौर पांय योगिन के परी। उठी आग योगिनपुनिजरी॥
पांय देहु दुइ नयन न लाऊं। लैचल तहां कन्तजेहिठाऊं॥
जेहि नयनन तुइ देखा पीउ। मोहिं देखाय देव बल जीउ॥
सत औ धर्म देउँ सब तोहीं। पियकी बात कहै जो मोहीं॥
तुइँ मोर गुरू तोर हों चेली। भूली फिरत पन्थ जें मेली॥

नामतीर्थ १ से १४ तक। नामयोगी १५ मकान १६ ढूंढ़ना १७ क़ैदखाना १८ कभूं छाया नहीं पाता १९ पालागन राजाने किया २० लेकिन कथा अख़्तियार जहां दख़ल ग़ैरका न हो २१ भारी क़ैदख़ाना जहां से निकलना मुश्किल है २२ जलना २३ बदन २४ औरत तथा पद्मावत २५ राह २६॥

दण्डएक[1] मायाँ कर मोरे । योगिनहोउँ चलौंसँग तोरे ॥

दो० सखिन कहापद्मावतहि, प्रगट[2] करोना भेशं[3] ।
योगी जुगवे[4] गुप्त[5] मन, लै गुरुकर उपदेश ॥

भीख लेहु योगिन फिर मांगू । कन्त न पाई खीन[6] सुवांगू ॥
यह बड़योग बियोग जो सहा । जैसे पिय राखे तुम रहा ॥
घरही महँ रहु भई उदासा । अंचलखप्पर शृंगी श्वासा ॥
रहै प्रेम मन उरभा लटा । विरह ढँढार[7] परहिं शिरजटा ॥
नयन चक्र लावै लै पन्था[8] । कायाँ[9] कापर सोई कन्था[10] ॥
छालाभूमि[12] गगन[13]शिरछाता । रंगरक्त[14] रहि हिरदे[15] राता[16] ॥
मनमाला पहिरे तंत ओहीं । पाँचौ[17] भूत भस्म तन होहीं ॥

दो० श्रवण[18]कुंडलसुनिपियबचन[19], पाँवर[20] पांयपरेह ।
दण्डके[21] गोरा[22] बादलहि, जाय अधौरी लेह ॥

सखिन बुझाई दग्ध[24] अपारा । गइ गोरा बादल[25] केवारा[26] ॥
चरण कमल भुइँ जन्मन धरी । जात तहां लग छाला परी ॥
निकस आय सुन क्षत्री दोऊ । तस काँपे जस काँप न कोऊ ॥
केश छोर चरणन रज झारी । कहां पाँउ पद्मावत धारी ॥
राखा आन पाट[28] सुन बानी । बिरह बियोगन बैठी रानी ॥
चँवर ढार है चँवर डुलावहिं । माथे छात रजायसु पावहिं ॥
उलट बहा गंगाकर पानी । सेवक बार न आवहिं रानी ॥

दो० का असकष्ट कीन्ह जिय, जो तुमकरत न छाज ।

पकघड़ी १–२१ सेहरवानी २ ज़ाहिर ३ भेद ४ छिपा ५ ओछों के फ़रेब से ६ नामबाजा ७ भारी ८ राह ९ बदन १० गुदड़ी ११ ज़मीन १२ आसमान १३ ख़ून १४ दिल १५ लाल १६ आंख कान नाक ज़बान छूना १७ कान १८ बात १९ खड़ाऊँ २० नाममंत्री २२–२५ सहारा २३ आंग २४ दरवाज़ा २६–२९ सोने का तख़्त २७ हुक्म २८ ॥

आज्ञा होय बेग सो, जीव तुम्हारे काज॥

खण्डइकतालीसवां पद्मावत वा गोराबादल संवाद॥

कही रोय पद्मावत बाता। नयनहिं रक्त देख जगराता॥
उलट समुद्रजस माणिकै भरे। रोवसि रुधिरै आंशुतस ढरे॥
रतनके रंग नयन पै वारों। रती रती के लोहू ढारों॥
कमलहिं ऊपर भँवर उड़ाऊं। लैचलि तहां सूर्य्य जहँ पाऊं॥
हियै कर हरद बदन कै लोहू। जियबलदेउँसोसँवर बिछोहू॥
परहिं आंशुजस सावन नीरू। हरियारि भूमि कुसुंभी चीरू॥
चढ़ी भुवंगिनं लट लटकेशा। भइ रोवत योगिन के भेशा॥

दो० बीरबहूटी भै चलें, तोहू रहहिं न आंस।
नयनहिं पंथ न सूझै, लाग्यो भादों मास॥

तुम गोराबादल खँभ दोऊ। जस रणभारत और न कोऊ॥
दुखबर्षा अब रही न राखा। मूल पतार स्वर्ग भइ शाखा॥
छायारही सकल महि पूरी। बिरह बेल भइ बाढ़ खजूरी॥
तेहिं दुख लेत बृक्षबन बाढ़ी। शीश उघारे रोवहिं ठाढ़ी॥
भूमि पूर सायर दुख पाटा। कौड़ी भई फेर हियै फाटा॥
बेहरि हिये खजूरकर बिया। बेहरिनाहिंमोर पाहन हिया॥
पियजेहिं बँद योगिन ह्वै धाऊं। हों बंधूलों पियमकरॉऊँ॥

दो० सूर्य्य ग्रहण गरासा, कमल न बैठी पाट।

हुक्म १ जल्द २ लाल ३ जवाहिर ४ खून ५ छाती ६-२१ जुदाई ७ पानी ८ ज़मीन ९-१६-१९ नागिन १० राह ११ नाममंत्री १२ जड़ १३ आसमान १४ सब १५ पेड़ १७ शिर १८ तालाब २० फटना २२ दिल २३ पत्थर २४ छोड़ाना २५ तख़्त २६॥

मुहूँ पंथ तहँ गवनब, कंत गये जेहि बाट ॥

गोरावादल दोऊ पसीजे । रोवतरुधिर शीश[३] लहिभीजे ॥
हम राजा सों यही कुहाने । तुमनहिं मिलो धरै तुरकाने ॥
जोमति सुन हम आयकुहाये । सो नियान[६] हम माथे आये ॥
जवलागि जिये न भागहिंदोऊ । स्वामिनजियकितयोगिनहोऊ ॥
उये अगस्त्यँ हस्ति अवगाजा । नीर[८] घटें घर आवैं राजा ॥
वर्षागयो अगस्त्य की दीठी[१०] । परै पलान[११] न तुरँगन[१२] पीठी ॥
वेधों राहु छुड़ाऊँ सूरू[१३] । रहै न दुखकर मूल[१४] अँगूरू ॥

दो० वह सूरज तुम शशिवदन[१५], आनमिलाऊँसोय ।
तसदुखमहँ सुख उपजै[१६], रैंनिमांझ[१७] दिनहोय ॥

लीन्ह पान वादल औ गोरा । गहि[१८] लैदेउँउपम तुम जोरा ॥
तुमसावन्तन[१९] सरवर[२०] कोऊ । तुमहनुमंत[२१] अंगद[२२]सम दोऊ ॥
तुम अर्जुन[२३] औ भीम[२४] भुवारा । तुमबलबीर सो मन्दन हारा ॥
तुम टारन भारन जग जानी । तुमसोंपुरुष औ कर्ण[२५] वखानी ॥
तुम अस मोरे वादल गोरा । काकर मुख हेरों[२६] वँदछोरा ॥
जस हनुमंत राघव वँद छोरी । तस तुम छोर मिलावहु जोरी ॥

दो० जैसे जरत लक्ष घर, साहस[२७] कीन्हा भीउँ[२८] ।
जरत खम्भ तस काढ़ो, कै पुरषारथ जीउ ॥

रामलषण सम दैत्य सँहारा । तुमहीं घरबलभद्र[३०] भुवारा ॥
तुम द्रोनों[३१] औ पितागे गेऊँ[३२] । तुम लेखो ईश्वर सहदेऊँ[३३] ॥

नाममंत्री १ खून २ शिर ३ खफ़ा होना ४ सलाह ५ आखिर ६ नाम नखत ७-८ पानी ९ निगाह १० चारजामा ११ घोड़ा १२ सूर्य्य १३ जड़ १४ चांद १५ पैदा १६ रात १७ जोड़ी मिलादों १८ वहादुर १९ वरावर २०-२१ नामशूरवीर २१-२२-२३-२४-२५-२८-३१-३२-३३ देखना २६ वहादुरी २७ वलभद्रका घर खराब किया ३० ॥

तुमहु युधिष्ठिर औ दुर्योधन[1]। तुमहु भोज[2] नल[3] दोउसम्बोधन॥
तुमराघव[4] परशुराम[5] औ योधा। तुमपरत[6]ज्ञा औ हत बोधा॥
तुमहु शत्रुहन[7] भरत[8] कुमारा। तुम कंसहि[9] चाणूर[10] सँहारा[11]॥
तुमप्रद्युम्न[12] औ अनिरुध[13] दोऊ। तुमअभिमन्यु[14] बोलसबकोऊ॥
तुम सर[15] पूजनविक्रम[16] शाके। तुमहरिचन्द[17] हमीर[18] सत[19] माके॥

दो० जस अतिसङ्कट पांडवन[20], भयो भीम[21] बँदछोर।
तस परवश[22] पर काहहु, राखलेहु ब्रह्ममोर॥

गोरा[23] बादल बीरा लीन्हा। जसहनुमत अंगदबलकीन्हा॥
साज सिंहासन ताना छातू। तुम माथे युग युग अहिवातू॥
कमलचरण भुइँधर दुखपावहु। चढ़ सिंहासनमँदिरसिधावहु॥
सुनसूरजकमलाहिजियजागा। केसर[24] बरन पवन हियलागा॥
जनुनिशि[25] मुँहअबदीन्हदेखाई। भाउदोत[26] मसि[27] गईबिलाई॥
चढ़ी सिंहासन झमकतचली। जानहुँ चांद दुइज निरमली[28]॥
औ सँग सखी कुमोद[29] तराई[30]। ढारत चँवर मँदिर लै आई॥

दो० देख दुइज सिंहासन, शंकर धरा ललाट[31]।
कमल चरण पद्मावत, लै बैठारी पाट[32]॥

खण्ड बयालीसवां गोराबादल गवन॥

बादल केर जसोदी माया। आय गही बादल के पाया॥
बादल राय मोर तुइ बारा। काजानेसिकसहोयजुझारा[33]॥

नामशूरवीर १-२-३ श्रीरामचन्द्रजी ४ नाम महाशूरवीर ५-९-१०-२१ कौल ६ भाईश्रीरामचन्द्र ७-८ मारना ११ बेटा श्रीकृष्ण १२ पोता श्रीकृष्ण १३ बेटा अर्जुन १४ बराबरी १५ विक्रमादित्य १६ नामराजा १७-१८ सचबोलनेवाले १९ राजा युधिष्ठिर २० उसीतरह इस वक्तमें मददकरो २२ नाममन्त्री २३ रंग २४ रात २५ रोशन २६ सियाही २७ साफ़ २८ कोकाबेली २९ नखत ३० माथा ३१ तख्त ३२ लड़ाई ३३॥

बादशाह भूमीपति राजा। सन्मुख है न हमीरहिलाजा॥
छत्तिसलाखतुरी जेहिसाजहिं। बीससहसहस्तीदल गाजहिं॥
जबहीं आय चढ़ै दल ठटा। देखत जैस गगनै घनघटा॥
चमकहिं खड्ग जोबीजैसमाना। घुमरहिंगलगाजहहिंनिशाना॥
बरसहिं सेलैं बानैं घनघोरा। धीरज धीर न बांधे तोरा॥
दो० जहां दलपती दलमलहिं, तहां तोरका काज।
आज गवन तोर आवै, बैठमान सुखराज॥
मातन जानेसि बालकैंआदी। हौं बादला सिंह रन बादी॥
सुनगजजूहैं अधिकजिउतपा। सिंहैं जातकहुँरहैनहिं छिपा॥
तबलग गाजनैं गाजसँडेला। सौंहैं शाहसों जुरौं अकेला॥
को मोहिं सौंह होय मैमन्तौं। फारौं सूँड़ उखारौं दन्ता॥
जरौं स्वामैं सकरे जस टारा। औ बलैं जस दुर्योधनैं मारा॥
अङ्गदकोप पांव जस राखा। टेकौं कटकैं छतीसो लाखा॥
हनुमत सरस जङ्घपर जोरौं। दहौं समुद्र स्वामैं बँद छोरौं॥
दो० जो तुम मात जसोदी; मोहिं न जानो बार।
जहँ राजा बलबांधा; छोरौं पैठ पतार॥
बादल गवन जूझ कहँसाजा। तैसहिंगवन आय घरबाजा॥
लिये साथ गवने कर चारू। चन्द्रबदन रचकीन्ह शिंगारू॥
मांग मोति भर सेंदुर पूरा। बैठ मयूरैं बांक तस जूरा॥
भौहैं धनुष टकोर परीखी। काजरनयनमारशरैं तीखी॥

घोड़ा १ हाथी २ आसमान ३ तलवार ४ बिजुली ५ परहरा ६-१४ गोला ७ तीर ८ बड़े राजा ९ छोटा लड़का १० शेर ११-१३ हाथियों का हलक़ा १२ सामने १५ मस्त १६ मालिक का काम करो १७ नाम महाशूर-वीर १८-१९ फ़ौज २० राजा २१ पहुँचा २२ मोर २३ कमान २४ तीर २५ कटीली २६॥

घाल कचबची टीका सजा। तिलकजोदेखठाउँ जिउतजा॥
मणिकुण्डलडोलैदुइश्रवनी।शीशधुनहिसुनिसुनिपियगवनी॥
नागिनअलकैं झलकउरैहारू। भयो शृंगार कंत विन भारू॥

दो० गवन जो आयो पँवरि महँ, पिय गवँने परदेश।
सखीबुझावहिंकिमिअनलै, बुझैसोकेहिउपदेश॥

मान गवन जस घूँघट काढ़ी। विनवै आय वारि भइ ठाढ़ी॥
तीषी हेरि[11] चीर गहि ओढ़ा। कंतनहेरि[12] कीन्ह जियपोढ़ा॥
तबधनि[14] कीन्ह बेहँसि[15] चषि[16] दीठी। बादलतबहिं दीन्ह फिरपीठी॥
मुख फिराय मन अपने रीसा। चलतनतिरियाकरमुखदीसा[18]॥
भामिनि[19] भेष नारिके लेखे। कसपिउ पीठ दीन्ह मुँहदेखे॥
मकु[20] पिय दृष्टि[21] सयानो चालू। हुलसे पीठ गढ़ाऊँ सालू॥
कुच[23] तोंबी अब पीठ गड़ोऊँ। गहेसि[24] जोहूककाढ़रिसधोऊँ॥

दो० रहुँलजाय तोपिय चलै, कहौतो कहिमुहिं दीठ[25]।
ठाढ़ तेवानी काकरों, भारी दोऊबसीठ[26]॥

लाजकिये जो पिय नहिंपाऊं। तजौंलाज करि जोर मनाऊं॥
कर हठ कंत जाय जेहिलाजा। घूँघट लाज आवकेहिकाजा॥
तब धन बेहँसि[28] कहा गहिफेटा। नारिजो विनवै[29] कंत न मेटा॥
आज गवन हूँ आई नाँहा। तुम न कंत[30] गवनो रनमाहां॥
गवनआव धनमिलनाकिताइं। कौन गवन जो विछुड़े साइं॥

नाम नखत १ कान २ शिर ३ बाल ४ छाती ५-२३ दरवाज़ा ६ जाना लिधारना ७ किसतरह ८ आग ९ ड्योढ़ी १० कटीली निगाहसे देखा ११ खींचना १२ देखना १३-१८ औरत बादल की १४ हँसना १५ आँख १६ नाममंत्री १७ औरतका शकुन बदसगाया १९ शायद २० निगाह २१ पीठ देख तसकीनकी २२ खींचाकि दिलका दुख निकल जावे २४ शोख़ २५ दोनों छाती २६ हाथ २७ हँसना २८ अर्ज़ २९ खाविन्द ३०-३१॥

धन न नयन भर देखा पीऊ। पिया न मिल धनसोभरजीऊ॥
तेहिसव आस भरा है केवा। भँवर न तजे वास रस लेवा॥

दो० पावनधरा ललाट धन, विनय सुनहु हो राय।
अलकें परा फँदवार है, केसहिं तजै न पाय॥

छांड़ फेटे धन वादल कहा। पुरुषगवन धन फेट न गहा॥
जो तुइँगवन आयगजगामी। गवन मोर जहँवाँमोरस्वामी॥
जब लग राजा छूट न आवा। भावै वीर शृँगार न भावा॥
तिरिया भूमि खड्ग की चेरी। जीत जो खड्ग होय तेहिकेरी॥
जेहिं घर खड्ग मूठ तहँ गाढ़ी। तहां न अंड न मूछ न दाढ़ी॥
तब मुँह मूछ जीव पर खेलों। स्वामिकाज इन्द्रासन पेलों॥
पुरुष के बोल टरे नाहिं पाछू। दशनगयन्द ग्रीवं नहिंकाछू॥

दो० तुइँ अवलों धन कुवुधवुध, जानैकहाजुभार।
जेहि पुरुषहि हियँ वीररस, भावैतेहि न शृँगार॥

जो तुमचहो जूझ पिय वाजा। कीन्ह शृँगार जूझ में साजा॥
यौवन आय सौंहैं है रोपा। पिघला बिरहकामदल कोपा॥
भयो वीररस सेंदुर मांगा। रातोरुधिर खड्गजस नांगा॥
भौंहें धनुष नयन शर सांधे। वरुनवीज काजर विषवांधे॥
दय कटाक्ष सों सान सँवारी। औ मुखसेलभाल अनयौरी॥
अलकें फासग्रिवें मेलअसूझा। अधरें अधरसों चाहहिंजूझा॥
कुंभस्थलें कुच्चें दोउ मैमन्ता। पेलों सौंहैं सँभारहु कन्ता॥

कमवक्त १ छोड़ना २ माथा ३ बाल ४ कमर ५ औरत ६ पकड़ना ७ हाथीकी चाल ८ लड़ना ९ ज़मीन १० तलवार ११ मर्द १२-१८ दांतहाथी के १३ गरदन कछुवाकी १४ नादान १५ कमअक़्ल १६ लड़ाई १७ दिल १९ सामने २० लालखून २१ तीर २२ पलक बिजुली की तरह २३ तिरछी निगाह २४ नोकीले २५ बाल २६ गर्दन २७ होंठ २८ हाथी मस्त २९ छाती ३० मुक़ाबिल ३१ ॥

दो॰ कोप शृंगार विरह दल, टूटहोय दुइ आध ।
पहिले मोहिं संग्रामकैं, करहुजूझकी साधै॥

कैसहुँ कंत फिरै ना फेरी । आग परी चितौर धन केरी ॥
उठी सो धूमैं नयन गरवानी । लागे परे आंशु भहरानी ॥
भीजेहार चीरैं हियैं चोली । रही अछूत कंत नहिं खोली॥
भीजेलाग चुवें कंठमुण्डन । भीजै भँवरकमलशिरफुन्दन॥
चुइ चुइ काजर अँचरा भीजा । तवहुँ न पियके रोवँ पसीजा॥
छांड़चला हिरदयँ दयदाहू । निठुरनाहँ आपननहिंकाहू ॥
सबै शृँगार भीज भुइँ चुवा । छारैंमिलायकन्तै नहिं छुवा ॥

दो॰ रोये कन्त न वहुरे, तेहि रोये का काज ।
कन्तधरामनजूझरन, धँनै साजीसवसाज ॥

खण्ड तैंतालीसवां गोरावादलवर्णन ॥

मंते वैठ वादलैं औ गोरा । सोमत कीजे परनहिं भोरा ॥
पुरुषैं न करे नारिमत कांची । जसनौशावाँ कीन्ह न वांची॥
चढ़ा हाथ इसकन्दरैं वैरी । सकँतं छांड़ के भई वँदेरी ॥
सजंगं जोनाहँमारवल कांधा । वुधैं कहियेहँस्ती कावांधा ॥
देवतनचले आय अस आंटी । सुरजनैं कञ्चनैं दुरजनैं माटी॥
कञ्चन जुरै भये दश खांड़ा । फूटन मिलै छारैं कर भांड़ा ॥
जस तुरकहिं राजा छलसाजा । तस हमसाजछुड़ावहिंराजा॥

दो॰ पुरुष तहांही छल करै, जहँवल कैसो न आंटैं ।

लड़ाई १ इरादा २ धुवां ३ सारी ४ छाती ५–७ कुरती ६ जलन ८ काविन्द ९–११ धूर १० औरत १२ सलाह १३ नाममंत्री १४ हँसी १५ मर्द १६ नामशाहज़ादी १७ नाम वादशाह १८ उसको छोड़ दिया १९ होशियार २० अक़्लमन्द २१ हाथी २२ दोस्त २३ सोना २४ दुश्मन २५ माटी २६ पहुँचना २७ ॥

जहां फूल तहँ फूल है, जहां कांट तहँ कांट ॥

सोरह सै चण्डोल सवारी। कुँवर सजोयल तहँ बैठारी ॥
पद्मावत कर साज बेवानू। बैठ लुहार न जानै आनू ॥
रच बेवान सो साज सँवारा। चहुँदिशि चमरकरहिंसबदारा ॥
साज सबै चण्डोल चलाई। सुरँग उहार मोति बहु लाई ॥
भय सँग गोरा बादल बली। कहत चले पद्मावत चली ॥
हीरा रतन पदारथ झूलहिं। देख बिमानं देवता भूलहिं ॥
सोरह सै सँग चलीं सहेली। कमल न रहा और को बेली ॥

दो० राज छुड़ावन रानिचलि, आपहोय तहँ ओल।
तीससहस्र तुरि खींचसँग, सोरहसै चण्डोल ॥

राजा बँद जेहिके सौंपना। गागोरीं तापहँ अगमनो ॥
टका लाख दशदीन्ह अकोरीं। बिनती[13] कीन्हपांयगहिगोरा ॥
बिनवौं बादशाह सो जाई। अब रानी पद्मावत आई ॥
बिनती करै आयहूँ देहिली। चितौरकी मोसों है कीली[16] ॥
बिनती करै जहां है पूँजी। सब भँडारै की मोसों कूँजी ॥
एक घड़ी जो अज्ञा पाऊँ। राजा सौंप मँदिर महँ आऊँ ॥
तब रखवारे गये सुलतानी। देख अकोरे[21] भये जसपानी ॥

दो० लीन्ह अँकोर हाथ जो, जीउ दीन्ह तेहि हाथ।
जो वह कहै करैसो, कहीं छांड़ नाहिं माथ ॥

लोभ पाप की नदी अकोरीं। सत्त[24] न रहै हाथ जो बोरा ॥
जहँ अकोर तहँ नेकै[25] न राजू। ठाकुरकेर बिनाशहिं काजू ॥

बहादुर १ सूर्य २ चारोंतरफ़ ३ औरत ४ राजमंत्री ५-१० जवाहिरात ६ चण्डोल ७ तीसहज़ार ८ घोड़ा ६ पहिले ११ रिशवत-नज़राना १२-२१-२२-२३ अर्ज़ १३-१४-१५-१७ कुंजी १६ ख़ज़ाना १८ हुक्म १६ दारोगा २० ईमान २४ राजअच्छा नहीं २५ ख़राब २६ ॥

भा जिव घिव रखवारी केरा । द्रव्य लोभ चौंडोल न हेरा ॥
जाय शाह आगे शिर नावा । ऐजग सूर चांदचालिआवा ॥
जानवन्त सब नखतैं तराइं । सोरहसै चण्डोल जो आइं ॥
चित्तौर जेत राज की पुञ्जी । लैसो आय पद्मावत कुञ्जी ॥
विनैंती करै जोर करैं खड़ी । लै सौंपों राजा इक घड़ी ॥

दो० यहां वहां के स्वांमी, दोहूँ जगत मोहिं आशँ ।
पहिले दरश देखाव नृपं, तब आऊँ कैलाश ॥

अज्ञा भई जाय इक घरी । छूँछ जो घरी फेर विंधि[10] भरी ॥
चलि विमानें राजापहँ आवा । सँग चौंडोल जगत सबछावा ॥
पद्मावत के वेष[12] लोहारू । निकसकाटिबँद[13] कीन्हजोहारू[14] ॥
उठा कोप जस छूटा राजा । चढ़ातुरङ्ग[15] सिंह[16] असगाजा ॥
गोरा बादलँ खांड़े[18] काढ़े । निकस कुँवरचढ़चढ़ भे ठाढ़े ॥
तीर्ष[19] तुरङ्गगगनं शिरलागा । कौन जुगत कर टेकै बागा ॥
जो जिय ऊपर खड्ग सँभारा । मरणहार सो सहसैंहिं मारा ॥

दो० भइ पुकार शाहसों, शशि[22] औ नखत सो नाहिं ।
छलकैं ग्रहन गिरासा, ग्रहन गिरासी छाहिं ॥

लै राजा चितौर कहँ चले । छूटो मिरग[23] सिंह[24] करवले ॥
चढ़ा शाह चढ़ लाग गुहारी । कटकैं असूझपरी जगकारी ॥
फिर गोरा बादल सो कहा । ग्रहनं[26] छूट पुनि[27] चाहै गहा ॥
चहुँदिशि[28] आवा लोपत भानूं । अब यह गोय यही मैदानू ॥

तलाशलेना १ सूर्य २ सखी-सहेली ३ अर्ज़ ४ हाथ ५ मालिक ६ उम्मेद ७ राजा ८ हुक्म ९ ईश्वर १० चण्डोल ११ सूरत १२ वेड़ी १३ सलाम १४ घोड़ा १५-१९ शेर १६-२४ नाममंत्री १७ तलवार १८ आसमान २० हज़ार २१ चांद तथा पद्मावत २२ हारिण २३ फ़ौज २५ राजा २६ फेर २७ चारोंतरफ़ २८ सूर्य २९ ॥

तुइँ अब राजा लैचल गोरा । हों अब उलटजेरों भाजोरा ॥
वहँ चौगान तुर्क कस खेला । है खिलार रणजरों अकेला ॥
तब पाऊँ बादल अस नाऊँ । जब मैदान गोय लै जाऊँ ॥
दो० आजखड्ग चौगान गहि, करोंशीश रण गोय ।
खेलों सौंहें शाहसो, हाल जगत महँ होय ॥
तब अगमनै है गोरा मिला । तुइँ राजा लै चल बादला ॥
पिता मरै जो सारी साथे । मीचै न देय पूतके माथे ॥
मैं अब आयुं भरी और भूँजी । का पछताव आय जो पूँजी ॥
बहुतहिं मार मरों जो जूझी । ताकहँ जन राखहु मनबूझी ॥
कुँवरसहसै सँगगोरा लीन्हीं । और वीरबादलै सँग कीन्हीं ॥
गोरहि[14] समुद्र मेघअसगाजा । चला लीन्ह आगेकर राजा ॥
गोरा उलट खेतभा ठाढ़ा । पूरुषै देख चाउ मनबाढ़ा ॥
दो० आवकटके[18] सुलतानी, गगनै छिपामसि मांझ ।
परत आव जग कारी, होत आव दिन सांझ ॥
है मैदान परी अब गोय । खेलहार वहँ काकर होय ॥
यौवन तुरी चढ़ी जो रानी । चलीजीत अति खेलसयानी ॥
कटि[22] चौगानगोय कुचै[23] साजी । हियँ[24] मैदान चली लै बाजी ॥
हालै सो करै गोयलै बाढ़ा । गोली दुहूँ पैचकै काढ़ा ॥
भइ पहार वै दोनों गोरी[26] । दृष्टि[27] नेर पहुँचत सुठ दूरी ॥
ठाढ़े बाण चलहिं अस दोऊ । शालहिं[28] हिये[29] न काढ़ै कोऊ ॥

मुकाबिल १ पकड़ना २ शिर ३ सामने ४ आगे ५ नाममंत्री ६–७ बापकी जगह राजा साथहै ८ मरना बेटेका न देखैगा ९ उमर १० हज़ार ११ नाम मंत्री १२–१३–१४–१५ मर्द १६ चाह १७ फ़ौज १८ आसमान १९ सियाही २० घोड़ा २१ कमर २२ छाती २३ सीना २४ हलचल २५ तथा छाती २६ निगाह २७ सूराख २८ दिल २९ ॥

शालहिं तेहिं जानेसि है ठाढ़ी। शालहिं तासु चहै उठ काढ़ी॥

दो० मुहमंद खेल प्रेमका, गहिर कठिन चौगान।
शीश[1] नदीजे गोय जिमि[2], हलनहोय मैदान॥

फिर आगे गोरैं तब हाँकी[3]। खेलों करों आज रणशाकी[4]॥
हों खेलों धौलागिरि[5] गोरा। टरौं न टरे अङ्ग न मोरा॥
सोहल[6] जैस गगन उपराहीं। मेघ घटा मोहिं देख बिलाहीं॥
सहस[7] शीशशङ्करसम[8] लेखों। सहसहिंनयन अन्धिमा देखों॥
चारहुँभुजा[9] चतुरभुज आजू। कंस[10] न रहा और को साजू॥
हों है भीसे[11] आज रण गाजा। पाछे घाल डँकोई[12] राजा॥
होय हनुमंत[13] यमकातरैं[14] धाऊं। आजस्वामि शंकरौंनियाऊं[15]॥

दो० है नल[16] नील[17] आजहों, देउँ समुद्रमहिं मेंड़।
कटक[18] शाहकर टेकों, है सुमेरु[19] रण बेंड़॥

उनई घटा चहूँ[20] दिशि आई। छूटहिं बाण[21] मेघ झरलाई॥
डोलै थाहिं देवजस आँदी[22]। पहुँची तुर्क बांदे[23] कहँ बादी॥
हाथन गहे खड्ग[24] हरवानी। चमकहिंसेल बीजके[25] बानी॥
साज बाण जनु आवे गाजैं[26]। बासुकि[27] डरैशीर्ष[28] जनुबाजा॥
नेजा उठे डरै मन इन्दू[29]। आवहिं पाछजान कवहिन्दू॥
गोरैंसाथ लीन्ह सब साथी। जस मैमन्त सूंड़ बिन हाथी॥
सबमिल पहिलउठौनीलीन्हीं। आवतआय हांक सबकीन्हीं॥

शिर १ बराबर २ ललकारना ३ बहादुरी ४ नामपहाड़ ५ नामनक्षत ६ हज़ार ७ बराबर ८ चारहाथ ९ नाम राजादैत्य १० नाम महाशूरवीर ११ मदद १२ महावीरजी १३ नामकोल्ह १४ मालिकको बचाऊं १५ नामबन्दर जिन्होंने पुल समुद्र में बांधाथा १६-१७ फ़ौज १८ नाम पहाड़ १९ चारों तरफ़ २० तीर २१ पैदाइशी २२ बराबर २३ तलवार २४ बिजुली २५-२६ नाम राजा सांप २७ शिर २८ इन्द्र २९॥

दो० रुण्ड मुण्ड अति टूटहिं, साहिबखतर औ कुंड।
तुरी[1] होहिं बिनकांधे, हस्ति[2] होहिं बिनसुंड॥
उनवतआय सेन[3] सुलतानी। जानहु परलै आवतुलानी॥
लोहे सेन[3] सूझ सब कारे। तिल इक कहूं न सूझउघारे॥
खड्ग फोलाद तुर्क सब काढ़े। हरीबीज[4] असचमकहिं ठाढ़े॥
पीलवान गज[5] पेलसों बांके। जानहु कालकरहिं जियँसाके[6]॥
जनु यमकात[7] करहिं सबभवां। जियपैचीन्हस्वंर्ग[8] अपसवां॥
सेल सांप जनु चाहै डसा। लीन्हकाढ़ जियमुखविषबसा॥
तिन्ह सामहिं गोरा[9] रणकोपा। अंगद[10] सरिस पाउँभुइँरोपा॥
दो० सपुरुष[11] भाग न जाने, भुइँ जो फिरफिरलेइ।
शूर[12] कहैं दो कर[13], स्वामि काज जिउ देइ॥
भइ बगमेल सेल घनघोरा। औगज[15] पेल अकेलसोगोरा॥
सहस[16] कुँवर सहसहुँसत बांधा। भारपहाड़ जूझकहँ बांधा॥
लाग मरैं गोराके आगे। बांग न मोर घावमुख लागे॥
जैस पतंग आग धँस लीन्हीं। एकमुवै दूसर जिय दीन्हीं॥
टूटहिं शीश[17] उधर धर[18] मारी। टूटहिं कंधहि कंध निरारी[20]॥
कोई परहिं रुधिर[21] है राती। कोइ घायल घूमहिंमदमाती॥
कोइ घरखेह[23] कीन्ह है भोगी। भस्म चढ़ायबैठ जस योगी॥
दो० घड़ी एक भारत[24] भई, भइ असवारहिं मेल।
जूझिकुँवर सब बैठे, गोरा रहा अकेल॥
गोरे देख साथ सब जूझा। आपन काल[25] नेरे भा बूझा॥

घोड़ा १ हाथी २ फ़ौज ३-५ पहुँची ४ बिजुली ६ हाथीमस्त ७ लेनेवाले ८ यमदूत ९ आसमान पर लजाना १० नाम मंत्री ११ नाम बन्दर १२ बहादुर १३-१४ हाथ १५ हाथी १६ हजार १७ शिर १८ धड़फेंकना १९ अलग २० खून २१ लाल २२ राख २३ लड़ाई २४ मौत २५॥

कोप सिंह सामहिं रण मेला । लाखन सों ना मरै अकेला ॥
लियो हांक हस्तिन की ठटा । जैसे सिंह विदारै घटा ॥
जेहि शिर देइ कोप तरवारू । सें घोड़े टूटहिं असवारू ॥
टूटकंध शिर परैं निरारी । माठ मँजीठ जानुरण ढारी ॥
खेल फाग सेंदुर छिरकावे । चाचर खेल आग रणलावे ॥
हस्ती घोड़ धाय जो धूका । औतेहि दीन्हसोरुधिर भभूका ॥

दो० भइ अज्ञा सुलतानी, वेगं करहु यह हाथ ।
रतन जात है आगे, लिये पदारथ साथ ॥

सबै कटके मिल गोरा छेंका । गूँजतसिंह जायनहिं टेका ॥
जेहिदिशि उठै सोइ जनुखावा । पलटसिंहतेहिठाउँनआवा ॥
तुर्क बोलावहिं बोलै नाहां । गोरें मीचं धरी जियमाहां ॥
मुवे पुनि जूझ जाज जगदेऊ । जियत न रहा जगतमहँकेऊ ॥
जन जानहु गोरा सो अकेला । सिंहकी मूछ हाथको मेला ॥
सिंह जियतनहिं आप धरावा । मुवे पीछ कोऊ घिसयावा ॥
करै सिंह मुँह सौंहं जो दीठी । जबलग जिये देयनहिंपीठी ॥

दो० रतनसेन जो बांधा, मसि गोराके गात ।
जब लग रुधिर न धोऊँ, तबलग होयनरात ॥

सुरजा वीर सिंह चढ़ गाजा । आय सौंहं गोरा सों बाजा ॥
पहलवान सो बखाने बली । मदद मीरहमजा औ अली ॥
मददअयूब शीश चढ़ कोपी । महाभारथी नाउँ अलोपी ॥

शेर १-३ हाथी २-७ फाड़ना ४ अलग ५ लाख ६ लोहू ८ हुक्म. ९ जल्द १० तथा पद्मावत ११ फ़ौज १२ नाममंत्री १३ शेर १४-१६-१९ तरफ़ १५ मौत १७ ऐबादशाह, वेमरे हाथ न आऊँगा १८ सामने निगाह २० सियाही २१ बदन २२ खून २३ लाल २४ नाम पहलवान २५-२७-२८ सामने २६ शिर २९ बड़े बहादुरों का नाम मिटानेवाले ३० ॥

औ तायाँ[1] सालार सो आये। जेहिं कवरो पांडव बँद पाये॥
लंधौर[2] देव धरा जेहि आवे। औ कोमाल[3] वाद कहँ पावे॥
पहुँचा आय सिंह असवारू। जहां सिंह गोरा बरयारू[4]॥
मारेसि सांग पेटमहँ धसी। काढ़ेसि हुमुकआंतभुइँ खसी॥
दो० भाट कहा धनगोरा, तुइँ भहिशवण राउ।
आंत समेटकर बांधे, तुँरी देत है पांउ॥
कहेसिअंत[5] अबभाभुइँ परना। अंतकोनिच[6] खेह शिरभरना॥
कहिके गरज सिंह असधावा। सुरजा शार्दूल[7] पहँ आवा॥
सुरंजै[8] कीन्ह सांगपर घाऊ। परीखड्ग[11] जनुपरा निहाऊं[12]॥
वज्रकी सांग वज्र का डांड़ा। उठी आगतस बाजा खांड़ा॥
जानहु वज्र वज्र सों बाजा। सबही कहापरी अबगाजों[13]॥
दूसर खड्ग[14] कंधपर दीन्हीं। सुरजेंवह ओड़नं[15] परलीन्हीं॥
तीसर खड्ग कूड़पर लावा। कांधगरजं[16] हत घाव न आवा॥
दो० तस मारा हतगोरें, उठी वज्रकी आग।
कोउ नेरे नहिं आवै, सिंहँ[17] सेंदूरां[18] लाग॥
तस सुरजा कोपा वरबंडा[19]। जान सेंदूर केर भुज दंडा॥
कोप गरज मारेसि तब बाजा। जानहुपरी तुरतशिरगाजों[20]॥
टाटरें[21] टूट टूट शिर तासू। सैं सुमेरु[22] जनुटूट अकासू॥
धमक उठा सब स्वर्ग[23] पतारू। फिर गइ दीठ[24] फिरा संसारू॥
भा परलै अस सबही जाना। काढ़ा खड्ग[25] स्वर्ग[26] नियराना॥

नाम सिपहसालार १ नामदेव २ नाम राजा ३ ज़बरदस्त ४-१९ घोड़ा ५ आखिर ६ हमेशा ७ राख ८ शेरसुर्ख ९ नाम पहलवान १० तलवार ११-१४ निहाई १२ बिज़ुली १३-२० ढाल १५ उछलतलवार पर तलवार परी १६ शेर १७ शेरसुर्ख १८ खुपड़ी २१ पहाड़ २२ आसमान २३-२६ निगाह २४ तलवार २५॥

तस मारेसि सैं घोड़े काटा। धर्ती फाट शेप फणनाथा॥
अतिजो सिंह[1] वरी[2] ह्वै आई। शार्दूल[3] सो कौन वड़ाई॥

दो० गोरापरा खेतमहँ, सुर[3] पहुँचावा पान।
बादल[4] लैगा राजा, लै चितौर नियरान॥

पद्मावत मन रही जो झूरी। सुनत सरोवर[5] हिय[6] गा पूरी॥
अद्रा महँ हुलास[7] जस होई। सुख सुहाग आदरभा सोई॥
नयनजोकुमुदिनि[8] लीन्हअँगूरू। उठाकमलअसउगवासूरू[10]॥
पुरइन पूर सँवारी पाटा[11]। औशिर आनधरा शिरछाता॥
लाग्यो उदयहोय जस भोरा। रयनि[12] गईदिनकीन्हअजोरा[13]॥
अस्त[14] अस्तकै पाई कला[15]। आगेवली कटक[16] सव चला॥
देख चांद अस पद्मिन रानी। सखीकुमोद[17] सवैविकसानी[18]॥

दो० ग्रहन छूट दिनेर[19] कर,शशि[20] सो भयो मिलाव।
मँदिर सिंहासन साजा, वाजा नगर वधाव॥

विहँस चांद दय मांग सेंदूरू। आरत करन चली जहँसूरू[21]॥
औगोहन[22] शशि[23] नखत तराई। चित्तौरकी रानी जहँ ताई॥
जनु वसन्तऋतु फली जो छूटी। की सावन महँ वीरवहूटी॥
भा आनँद वाजा पँचतूरा। जगतरात[24] ह्वै चला सेंदूरा॥
अति मृदंग मन्दिर वहुवाजे। इन्द्रशव्द[25] सुन शव्दजोलाजे॥
देखकन्त जस रवि[26] परकासा। पद्मावतमनकमल विकासा[27]॥
कमल पांय सूरजके परा। सूरज कमल आनि शिरधरा॥

दो० सेंदुर फूल तँवोल सो, सखी सहेली साथ।

शेर १ शेरसुर्ख २ देवता ३ नाम मंत्री ४ तालाव ५ छाती ६ नामनखत ७ खुशी ८ कोकावेली ९-१७ सूर्य १० तख़्त ११ रात १२ रोशनी १३ रामराम कर १४ फल १५ फ़ौज १६ खिलना १८-२८ सूर्य १९-२१-२६ चाँद २०-२३ साथ २२ लाल २४ आवाज़ २५ रोशनी २७॥

धन[1] पूजी पियपांय द्वय, पियपूजी धनमाथ ॥
पूजा कवन देउँ तुम राजा। सबैतुम्हार आवमोहिं लाजा ॥
तनमय यौवन आरति करेऊं। जीव काढ़ न्योछावर देऊं ॥
पन्थ[2] पूरकर दृष्टि[3] बिछाऊं। तुमपग[4] धरो शीश[5] मैं लाऊं ॥
राखतपांयपलकनहिं मारों। बरुनिहि[6] सोरज[7] चरणहिंझारों ॥
हिये[8] सोमंदिर तुम्हरो नाहां[9]। नयन पंथ[10] आवहुतेहिमाहां ॥
बैठोपाट[11] छत्र नव फेरी। तुम्हरे गर्व[12] गर्बी हों चेरी ॥
तुम जियमैंतन जौ लहिमयां[13]। कहै जो जीय करै सोकयों[14] ॥
दो० जोसूरज शिर ऊपर, तबसो कमल शिरछात।
नाहित भरी सरोवरे, सूखी पुरइनपात ॥
परश पांय राजाके रानी। पुनआरत बादल[15] कहँआनी ॥
पूजे बादल के भुज[16] दण्डौं[17]। तुरी[17] केपांउ दावकरै[18] खण्डा ॥
यह गजगवनं[19] गर्व[20][21] सो मोरा। तुम राखा बादल[22] औगोरा ॥
सेंदुरतिलक जो आंकुश रहा। तुम राखा माथे तौ रहा ॥
कालश्याम[23] तुमजियपरखेला। तुमजियआनमँजूषा[24] मेला ॥
राखाछात चमर औ दारा। राखा क्षुद्रघण्ट[25] झनकारा ॥
होय ध्वजा हनुमत तुम पैठी। तब चितौर लै आये बैठी ॥
दो० पुनि गजमत्त[26] चढ़ावा, नेतं[27] बिछाई खाट।
बाजतगाजत राजा, आय बैठ सुख पाट ॥
तस राजें रानी कँठलाई[28]। पिय मरजियानारि जनु पाई ॥

पद्मावत १ राह २–१० निगाह ३ पांउ ४ शिर ५ पलक ६ धूर ७ दिल ८ ख्वाविन्द ९ तख्त ११–२८ गरूर १२ मुहब्बत १३ वदन १४ तालाब १५ नाममंत्री १६–२२ बाजू १७ घोड़ा १८ हाथ १९ हाथी की चाल २० गरूर २१ ख्वाविन्द २३ सन्दूक २४ नाम जेवर २५ हाथी २६ ज़ेरअन्दाज़ २७ गले लगाई २८ ॥

संझै राजा दुख उगसारों। जियत जीव नाकरों निरारों॥
कठिनबन्द तुर्कहिं लैगहा। जो सँवरों जिय पेट न रहा॥
घनगढ़ ऊपर मुहिलै मेला। सांकर औअँधियार दुहेला॥
क्षणक्षण जीउसडासहिं आंका। औनित डोमछुधावहिंबांका॥
पीछे साप रहैं चहुँ पासा। भोजन सोई रहे पर श्वासा॥
पास न तहँवां दूसर कोई। नजनों पवन पानि कस होई॥

दो० आस तुम्हारी मिलनकी, तब सो रहा जियपेट।
नाहितहोत निराश जिय, कितजीवनाकितभेंट॥

तुम पिय आय परे अस वेरा। अबदुखसुनों कमलधर्न केरा॥
छोड़ गयो सरवर महँ मोहीं। सरवर सूख गयो विनतोहीं॥
केलि जो करत हंस उड़गयऊ। भानु निपटसो वैरी भयऊ॥
गइ तजि लहरैं पुरयन पाता। मुयो धूप शिर अहो न छाता॥
भयो मीन तन तड़पै लागा। विरह आय वैठो ह्वै कागा॥
काग चोंचतस सालहि नाहां। जस वँदतोर घालहियँ माहां॥
कहों काग अब तहँ लैजाही। जहँवां पिउदेखै मोहिं खाही॥

दो० काग गृध्र नहिं ऐसो, गढ़ का मारे वहुमंद।
यह पछतायें सठमरों, गयों न पियसँगवंद॥

खण्डचवालीसवां वृत्तांतदेवपाल॥

तेहि ऊपर का कहों जो भारी। विषम पहाड़ परादुखभारी॥
दूती इक देवपाल पठाई। ब्राह्मण वेष छलै मोहिंआई॥

अकेले में १ खोलना २ अलग ३ भारीक़ैद ४ पेचदार क़िला ५ वहुत ६ घड़ीघड़ी ७ शीशागर्म ८ पद्मावत ९ तालाव १० खुशी ११ सूर्य १२ छोड़ना १३ मछली १४ सूराख़ १५ खाविन्द १६ छाती १७ कौवे और गृध्रका वख़ल न था ऐसा क़िला रक्षाका था १८ टेढ़ा १९॥

कहै तोर हों आहि सहेली। चल लैजाउँ भँवर जहँबेली॥
तब मैं ज्ञान कीन्ह सतबांधा[1]। वहकर बोल लागि विषसांधा॥
कहूँ कमल नहिं करत अहेरा[2]। जोहै[3] भँवर करे सें फेरा॥
पांचभूत[4] आतमा नेवारयों। बारहि बार फिरत मनमारयों॥
रोय बुझायों आपन हियरा। कंत न दूर अहै सुठ नियरा॥

दो॰ फूल वास घिव क्षीर[8] ज्यों, नीर[9] मिलाय मिठाइ।
तस लुक्कां[9] घट जेंवरी, हिय दुख नाहिं कहाइ॥

सुनि देवपाल राय करचालू। राजा कठिन परा हियशालू॥
दादुर[11] पुनि सो कमलकर भेखा। गीदरमुख न शूरकर देखा॥
अपने रँग कस नाचि मयूरू[12]। तेहि सर[13] साधककरैतमें चूरू॥
जबलागिआय तुरुक[16] गढ़बाजा। तबलगि धरिआनो तौ राजा॥
नींद न लीन्ह रयँनि[17] सबजागा। होतबिहान आय गढ़लागा॥
कुम्मल[18] नेरअगम[19] गढ़बांका। विषम[20] पंथचढ़जाय न झांका॥
राजा तहां गयो लै कालू। होय सामहिं रोपा[21] देवपालू॥

दो॰ दोउ लड़े होय सम्मुख, लोहे भयो असूझ।
शत्रु[22] जूझ[23] तब न्योरे[24], एक दोउ महँ जूझ॥

खण्ड पैंतालीसवां देवपाल लड़ाई॥

जो देवपाल[25] राउ रण गाजा। मोहितुहिंजूझएकाकी[26] राजा॥
मेलेसि आय सांग विष भरी। मेट न जाय कालकी घरी॥

विचारा १ शिकार २ देखता ३ देखना-सुनना-बोलना-सूंघना-छूना ४ रोकना ५ दरवाज़ा ६ दिलकी आग ७ दूध ८ पानी ६ लुक्का यह कि बदन ने खाया और दिल दुखी परन्तु ज़ाहिर न किया १० सूराख ११ मेढक १२ मोर १३ नाज़ १४ चिरौटा १५ वादशाह पहुँचे १६ रात १७ नामसुल्क १८ जहांजाना मुशकिल है १६ टेढ़ीराह २० आया २१ दुशमन २२ लड़ाई २३ आखिर २४ नाम राजा २५ अकेले २६॥

आय नाभ पर सांग जो बैठी । नाभवेध निकसी नृप पीठी ॥
चला मार तब राजा मारा । टूटकंध धड़ भयो निरारा[1] ॥
शीश[3] काटके पैरी[4] बांधा । पावा दाउँ वैर जस सांधा ॥
जियत फिरा आयो बल भरा । मांफबाट[6] होय लोहे[7] धरा ॥
कारी घाउ जाय नहिं डोला । रहीजीभ यम गहेको बोला ॥
दो० सुधिबुधि तो सब बिसरी, आरपरी मँफ पाट ।
हस्ति[10] घोर को काकर, घर आनी गइ खाट ॥

खण्ड छियालीसवां वैकुण्ठवासी राजा ॥

तौलहि श्वास पेट महँ अही । जौलहि दशा जीउकी रही ॥
काल आय देखलाई सांटी । उठ जियचला छांड़के माटी ॥
काकर लोग कुटुँब घर बारू । काकर अर्थ द्रव्य संसारू ॥
वही घड़ी सब भयो परावा । आपन सोइ जो परसा खावा ॥
रहि जे हितू[13] साथके नेगी । सबैलागि काढ़न तेहिवेगी[14] ॥
हाथझार जस चलै जुवारी । तजो राज है चला भिखारी ॥
जबलग जीउ रतन सब कहा । भा विनजीव न कौड़ी लहा ॥
दो० गढ़सौंपा तेहि बादलै, गयेटेकंत[17] वसुदेव ।
छोड़ी राम अयोध्या, जो भावै सो लेव ॥
पद्मावत पुनि पहिर पटोरी[18] । चलीसाथ पियके है जोरा ॥
सूरज छिपा रैयनि है गई । पूनोशशि[20] सो अमावस भई ॥
छोरे केश[21] मोतिलर छूटी । जानो रयनि नखत सब टूटी ॥

राजा १ अलग २ शिर ३ शिकारबन्द ४ जैसा वैर किया ५ राह में ६ हथियारबन्द ७ मौतने पकड़ी ८ मुरदा की तरह तख़्तपर ९ हाथी १० छुड़ी ११ दौलत १२ दोस्त १३ जल्दनिकाला १४ छोड़ना १५ नाम मन्त्री १६ वैकुंठ गये १७ सारीरेशमी १८ रात १९ पूरनमासी का चांद २० बाल २१ ॥

सेंदुरपरा जो शीश उघारी। आगलाग चहि जग अँधियारी॥
यहादिवस हों चाहत नाहां। चलोसाथ पियदै गलबाहां॥
सारसपंख नहिं जिये निरारे। हौं तुम बिन का जियों पियारे॥
न्योछावर कै तन छहराऊँ। छार होउँ सँग बहुरे न आऊँ॥
दो० दीपक प्रीति पतंगज्यों, जन्मनिबाह करेउँ।
न्योछावर चहुँपास है, कण्ठलाग जियदेउँ॥

खण्ड सैंतालीसवां सतीहोना पद्मावत और नागमतीका॥

नागमती पद्मावत रानी। दोउ महासत सती बखानी॥
दोउ सौत चढ़ खाट जो बैठी। औ शिवलोक परातहँदीठी॥
बैठो कोइ राज औ पाटा। अन्त सबै बैठे पुनि खाटा॥
चन्दन अगर काढ़सरै साजा। औ गतै देय चले लैराजा॥
बाजन बाजहिं होय अगोता। दोउ कन्तलै चाहै सोता॥
एक जो बाजा भयो बिवाहू। अब दुसरे है और निबाहू॥
जियतजलै जो कन्तै कीआसा। मुये रहस बैठे इकपासा॥
दो० आज सूर दिन अथयो, आजरैनि शशि बूड़।
आजनाच जियदीजिये, आज आगिन हमजूड़॥
सरै रच दान पुण्यबहु कीन्हा। सातबार फिरभांवर लीन्हा॥
एक जो भांवर भयो बियाही। अब दूसर है गोहनै जाही॥
जियत कन्तै तुम हमगललाई। मुये कण्ठ नहिं छांड़हुसाई॥

शिर १ दुनियां २ दिन ३ खाविन्द ४ अलग ५ बिथराना ६ राख ७ लौट ८ पद्मावत-नागमती ९ नज़र १० तख़्त ११ आख़िर १२ चिता १३ दाह १४ लड़का १५ खाविन्द १६ सूर्य १७ रात १८ चांद १९ चिता २० साथ २१ खाविन्द २२॥

लै सरं ऊपर खाट बिछाई। पौढ़ी दोउ कन्त गल लाई ॥
और जो गांठ कन्ततुम जोरी। आँदि अन्तलहि जायनछोरी॥
यह जग काह जो अथहि नयाथी।हमतुमनाहँ दोहूजगसाथी॥
लागी कण्ठ आग दै होरी। छार भई जरअंग न मोरी ॥
दो० रांती पियके नेहकी, स्वर्ग भयो रतनार।
जोरेउ वासो अथवा, रहा न कोइ संसार॥
वै सहगवनं भई जिय आई। बादशाह गढ़ छेंका आई ॥
तबलगं सो औसर है बीता। भये अलोपं राम औ सीता ॥
आय शाह जो सुना अखारा। हैगइरात दिवसं उजियारा ॥
छोर उठाय लीन्ह इक मूठी। दीन्हउड़ाय पिरथैवी झूठी ॥
सगरे कटकं उठाई माटी। पुलबांधा जहँ जहँ गढ़घाटी ॥
जौलहि ऊपर छार नाहिं परै। तौलहि यहतृष्णा नहिंमरै ॥
भा दहवां भा जूझ असूझा। बादलं आय पँवरें परजूझा ॥
दो० जून्हरे भईं सब स्त्री, पुरुषं भये संग्राम।
बादशाह गढ़ चूरों, चितौर भा इसलाम॥
मैं यह अर्थ पण्डितन बूझा। कहाकिहमकुछ और न सूझा॥
चौदह भुवनं जो हत उपराहीं। सो सब मानुष के घंट माहीं ॥
तन चितौर मन राजा कीन्हा।हियं सिंहलबुधिपद्मिनिचीन्हा॥
गुरूसुवा जेहि पन्थं देखावा। बिनगुरुजगतं सोनिरगुणपावा॥

चिता १ अव्वल से आखिरतक २ आया था ३ खाविन्द ४ राख ५ बदन ६ लाल ७-६ आसमान ८ जब खाविन्दके साथ जलगई १० गायब ११ हाल १२ दिन १३ खाक १४ दुनियां १५ फ़ौज १६ माटी १७ हवस १८ कोई बाकी न रहा उस भारी लड़ाई में १६ नाम मंत्री २० दरवाज़ा २१ मरना २२ तथा राजा २३ तोड़ा २४ सातपरदा आसमान-सातपरदा ज़मीन २५ भीतर २६ छाती २७ राह २८ दुनियां २६ ॥

नागमती यह दुनियां धन्धा। बांचा सोई न यह चितबन्धा॥
राघव दूत सोई शैतानू। माया अलाउदीं सुलतानू॥
प्रेम कथा यह भांति विचारू। बूझलेहु जो बूझैहि पारू॥

दो० तुरकी अरबी हिन्दवी, भाषा जेती आहि।
जामें मारग प्रेमका, सबै सराहै ताहि॥

मुहमद कवि यह जोर सुनावा। सुना सो प्रेम पीर का पावा॥
जोरे लायँ[3] रक्त लेगये। प्रेमप्रीति नयनहिं जल भये॥
औ मैं जान गीत अस कीन्हा। कीयह रीति जगतमहँ चीन्हा॥
कहां सो रतनसेन अब राजा। कहां सुवा असबुधि उपराजा॥
कहां अलाउदीन सुलतानू। कहँ राघव जेहि कीन्ह बखानू॥
कहँ स्वरूप पद्मावत रानी। कुछ न रही जग रही कहानी॥
धन सोई यश कीरति तासू। फूल मरै पै मरै न बासू॥

दो० कैन जगत यश बेचा, कैन लीन यश मोल।
जो यह पढ़ै कहानी, हम सँवरै दोइ बोल[11]॥

मुहमद वृद्ध[12] बैश जो भई। यौवन[13] हत सो अवस्था[14] गई॥
बल जो गयो कै क्षीण[15] शरीरू। दृष्टि[16] गई नयनहिं दै नीरू[17]॥
दशन[18] गये कै बचा कपोला[19]। बैन[20] गये अनरुच दै बोला॥
बुधि[21] जो गई दै हिय[22] बौराई। गर्व[23] गयो तरिहत शिर नाई॥
श्रवण[24] गये ऊँच जो सुना। स्याही गये शीश[25] भा धुना॥
भँवर गये केशहि[26] दे भुवा। यौवन[27] गयो जीत लै जुवा॥

बूझसको १ बोली २ खून जिगर पीकर ३ दुनियां में निशानी ४ अक़्ल. वताई ५ तारीफ़ ६ नेकनामी ७–६–१० करनी ८ दुआयखैर ११ बूढ़ी उमर १२ जवानी १३–२७ उमर १४ दुबला बदन १५ निगाह १६ पानी १७ दांत १८ गाल १९ आवाज़ २० अक़्ल २१ दिल २२ ग़रूर २३ कान २४ शिर २५ बाल २६॥

जोलहि जीवन यौवन साथा। पुनि सो मीच[1] पराये हाथा॥
दो० वृद्धि[2] जो शीश[3] डुलावै, शीशधुनहि तेहि रीस[4]।
बूढ़ी आयू[5] होहु तुम, कै यह दीन असीस॥

मौत १ बूढ़ा २ शिर ३ गुस्सा ४ उमर ५॥

इति श्रीपद्मावतभाषा मलिकमुहम्मदजायसीकृत समाप्त॥



